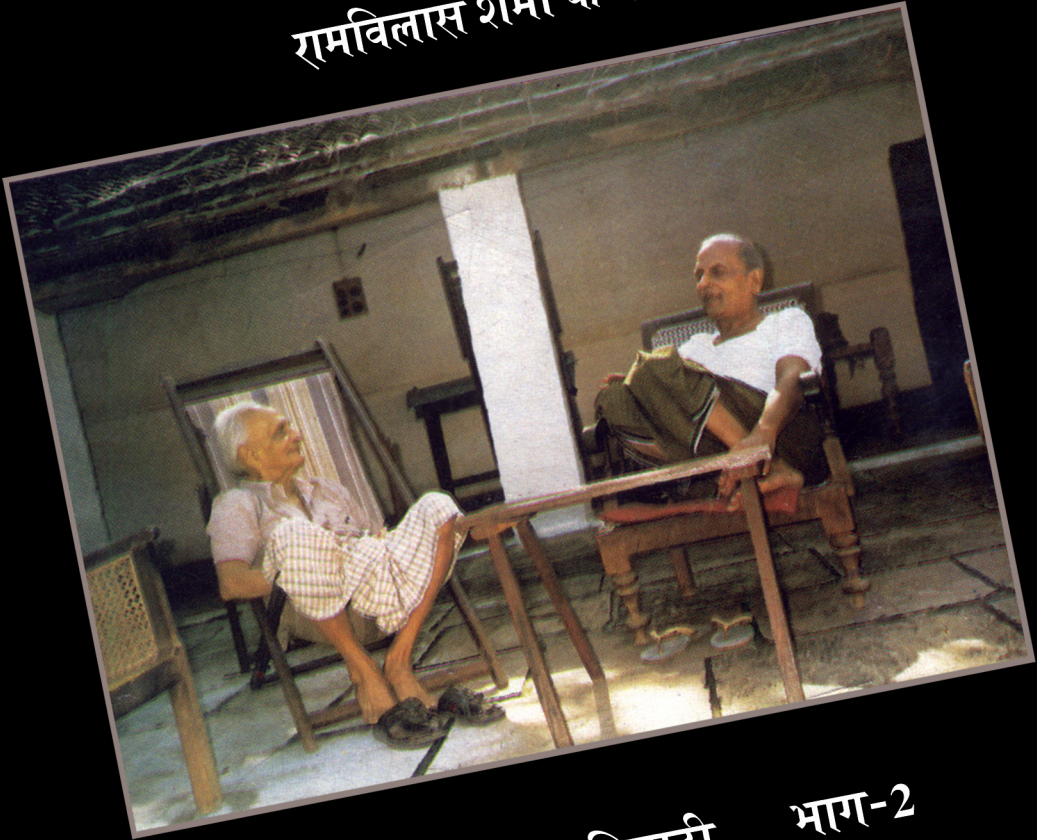


# मित्र संवाद

केदारनाथ अग्रवाल और  
रामविलास शर्मा के पत्रों का संकलन



सम्पादक

रामविलास शर्मा • अशोक त्रिपाठी

भाग-2

## मित्र संवाद

भाग - दो

केदारनाथ अग्रवाल और  
रामविलास शर्मा के पत्रों  
का संकलन



# मित्र संवाद

भाग - दो

केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा के पत्रों का संकलन

सम्पादक

रामविलास शर्मा

अशोक त्रिपाठी



साहित्य भंडार

इलाहाबाद 211 003

ISBN : 978-81-7779-225-6

✽

प्रकाशक

साहित्य भंडार

50, चाहचन्द, इलाहाबाद-3

दूरभाष : 2400787, 2402072

✽

स्वत्वाधिकारिणी

डॉ० विजय मोहन शर्मा

ज्योति अग्रवाल

✽

संस्करण

साहित्य भंडार का

प्रथम संस्करण : 2010

✽

आवरण एवं पृष्ठ संयोजन

आर० एस० अग्रवाल

✽

अक्षर-संयोजन

प्रयागराज कम्प्यूटर्स

56/13, मोतीलाल नेहरू रोड,

इलाहाबाद-2

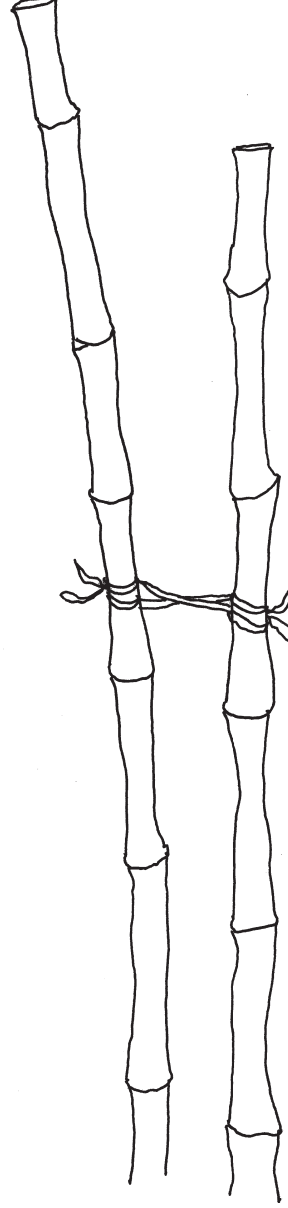
✽

मुद्रक

सुलेख मुद्रणालय

148, विवेकानन्द मार्ग,

इलाहाबाद-3



मूल्य : 400.00 रुपये मात्र

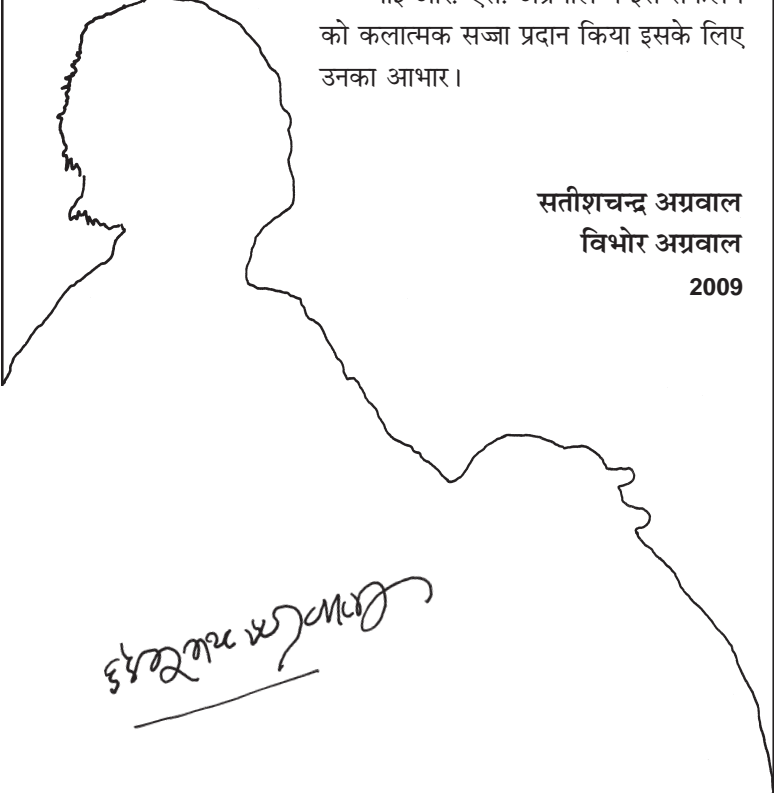
## प्रकाशकीय

इस संकलन का प्रकाशन 'साहित्य भंडार' के प्रथम संस्करण के रूप में सम्पन्न हो रहा है। केदारजी के उपन्यास 'पतिया' को छोड़कर, उनके शेष समस्त लेखन को प्रकाशित करने का गौरव भी 'साहित्य भंडार' को प्राप्त है। केदारनाथ अग्रवाल रचनावली (सं० डॉ० अशोक त्रिपाठी) का प्रकाशन भी 'साहित्य भंडार' कर रहा है।

एक तरह से केदार-साहित्य का प्रकाशक होने का जो गौरव 'साहित्य-भंडार' को मिल रहा है उसका श्रेय केदार-साहित्य के संकलन-संपादक डॉ० अशोक त्रिपाठी को जाता है उसके लिए 'साहित्य-भंडार' उनका आभारी है। यह गौरव हमें कभी नहीं मिलता यदि केदार जी के सुपुत्र श्री अशोक कुमार अग्रवाल और पुत्रवधू श्रीमती ज्योति अग्रवाल ने सम्पूर्ण केदार-साहित्य के प्रकाशन का स्वत्वाधिकार हमें नहीं दिया होता। हम उनके कृतज्ञ हैं।

भाई आर. एस. अग्रवाल ने इस संकलन को कलात्मक सजा प्रदान किया इसके लिए उनका आभार।

सतीशचन्द्र अग्रवाल  
विभोर अग्रवाल  
2009



इस संकलन का प्रकाशन

## सम्पादन-दृष्टि

प्रस्तुत संकलन को संपादित करते समय पहली और अन्तिम कोशिश यही रही है कि पत्र अपने मजमून के साथ, अपनी प्रस्तुति शैली में भी मूल पत्रों की-सी अनुभूति दें। इसके लिए पुस्तक में एकरूपता के सिद्धान्त की बलि देनी पड़ी है।

अगर पत्र-लेखक ने अपना पता और दिनांक पत्र के दाहिने हिस्से में लिखा है तो पुस्तक में भी दाहिनी ओर, बायीं ओर लिखा है तो बायीं ओर और मध्य में लिखा है तो मध्य में ही दिया गया है। पत्र समाप्त होने पर पत्र-लेखक के हस्ताक्षर में भी यही नीति अपनायी गयी है। यह वैविध्य केदारजी के ही पत्रों में अधिक है, रामविलासजी के पत्रों में केवल अपवाद स्वरूप।

दिनांक और अन्य अंक अगर मूल पत्र में रोमन में हैं तो उन्हें रोमन में और अगर देवनागरी में हैं तो उन्हें देवनागरी में ही दिया गया है। कुछ पत्र लेटर-हेड पर हैं। उनमें अक्सर दिनांक के हिस्से में उन्नीस रोमन में छपा रहता है। रामविलासजी ने सामान्यतः देवनागरी अंकों का ही प्रयोग किया है, इस कारण वर्ष उन्होंने देवनागरी में ही दिया है, वैसे ही छपा गया है, जैसे १९५५।

विशेष रूप से केदारजी के पत्रों में, एक ही पत्र में कहीं रोमन अंक का प्रयोग है कहीं देवनागरी का-पुस्तक में भी ऐसा ही दिया गया है।

पत्रों के बीच-बीच में अंग्रेजी के शब्द, वाक्यांश या वाक्य आए हुए हैं उन्हें भी उसी तरह रखा गया है।

कुछ पत्र लेटरहेड पर हैं, कुछ अन्तर्देशीय पत्र, कुछ पोस्टकार्ड पर। जो पत्र लेटरहेड पर हैं, कोशिश की गयी है कि लेटरहेड की मुद्रित इबारत ज्यों की त्यों, उसी शैली में प्रस्तुत हो। हालांकि टाइप की अनुरूपता नहीं हो सकी है-ऐसा तभी हो सकता था जबकि लेटरहेड का ब्लॉक बनवाकर छापा जाता। लेटरहेड में पत्र लेखक के नाम जिस तरह छपे हैं, उसी तरह पुस्तक में भी है। उदाहरण के लिए केदारजी के लेटरहेड में, कुछ में 'केदार' अलग और 'नाथ' अलग छपा है और कुछ में मिलाकर-पुस्तक में भी इसी तरह दिया गया है। कुछ लेटरहेड में बाँदा में अनुस्वार [ ' ] का प्रयोग है और कुछ में अनुनासिक [ 'ँ ] का-इसे भी ज्यों का त्यों दिया गया है।

पत्रों को तिथि-क्रम में संयोजित किया गया है-संवाद शैली में-जिसमें कहीं-कहीं एकालाप भी मिलेगा।

## 8 / मित्र संवाद

पत्र लिखते समय अक्सर कहीं-कहीं बीच में कुछ शब्द छूट जाते हैं, कहीं शब्द के बीच में वर्ण, कहीं वर्तनी में असावधानीवश त्रुटि रह जाती है, कहीं परसर्गों का प्रयोग छूट जाता है, कहीं अनावश्यक प्रयोग हो जाता है, कहीं क्रिया में लिंग सम्बन्धी भूलें हो जाती हैं, कहीं अनुनासिक की जगह अनुस्वार और अपवाद स्वरूप अनुस्वार की जगह अनुनासिक का प्रयोग हो जाता है तथा अक्सर 'ब' की जगह 'व' का प्रयोग होता है-आदि-आदि। 'मित्र संवाद' भी इसका अपवाद नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकालना निरी मूर्खता होगी कि इन्हें भाषा का ज्ञान नहीं है-फिर भी कोई ऐसा निष्कर्ष निकालता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी-अगर वह मूर्ख बनने को प्रस्तुत है। खैर! पत्रों में जहाँ भी ऐसा है वहीं ठीक उसकी बगल में बड़े कोष्ठक-[ ]-में उसके संशोधित रूप दे दिये गए हैं। इससे मूल रूप और संशोधितरूप एक साथ देखे जा सकते हैं। इस तरह की कारगुजारियाँ मैंने ही की हैं, रामविलासजी ने नाममात्र की हैं, इसलिए संशोधन के जोम में अगर कहीं शुद्ध को अशुद्ध कर दिया गया हो तो उस अपराध का सेहरा मेरे ही सिर बाँधा जाय।

पत्रों के बीच-बीच में कुछ शब्द या वाक्यांश या वाक्य छोटे कोष्ठक-( )-में हैं। ये सब मूल पत्रों में ही हैं, संशोधन की सामग्री सिर्फ बड़े कोष्ठक में ही है।

कहीं-कहीं तिथि-सम्बन्धी भूलें भी हुई हैं। उन्हें पत्र के सन्दर्भ के आधार पर या आगे-पीछे के पत्रों के आधार पर या फिर डाक की मुहर के आधार पर या उस पत्र का उत्तर देने की तिथि के आधार पर संशोधित करके संशोधित तिथि [ ] के अन्दर दी गयी है।

पत्रों में कहीं-कहीं कुछ संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए पाद-टिप्पणियाँ दी गयी हैं। ये टिप्पणियाँ रामविलासजी ने और मैंने लिखी हैं। रामविलासजी का आदेश था कि मैं जहाँ टिप्पणियाँ दूँ उसके आगे अपना नाम दे दूँ, ताकि मेरा 'योगदान' पहचाना जा सके। इसलिए जिन टिप्पणियों के आगे कोई नाम नहीं है, वे टिप्पणियाँ रामविलासजी की हैं और जिन टिप्पणियों के आगे [ अ० त्रि० ] लिखा है, वे मेरी हैं। सम्भव है कुछ आवश्यक टिप्पणियाँ रह गयी हों और अनावश्यक टिप्पणियाँ दे दी गयी हों। काम के दबाव में इसकी पूरी गुंजाइश है क्योंकि पत्रों का टंकण, सामग्री का संशोधन, छपाई आदि सारे काम समानांतर रूप से एक साथ चल रहे थे।

पत्रों में 'ब' के स्थान पर 'व' मिलता है। यह प्रवृत्ति केदारजी के पत्रों में बहुत है लेकिन रामविलासजी के पत्रों में अपवाद रूप में है। इनका संशोधित रूप ही दिया गया है क्योंकि अगर मूल और संशोधित दोनों रूप देता तो पत्र पढ़ने के प्रवाह में ये संशोधन 'गति अवरोधक' का काम करते। सिर्फ 'बीवी' का ही मूल और संशोधित रूप दिया गया है-'ब' 'व' की भूलों से सम्बन्धित भूलों के संशोधन में।

इसी तरह अनुनासिक की जगह अनुस्वार का प्रयोग भी प्रचलन में है। पत्र-लेखन में, इनके प्रयोग के सम्बन्ध में भी बहुत सचेतता नहीं बरती जाती। यहाँ भी ऐसा ही है। रामविलासजी ने अनुनासिक [ँ] की जगह अनुनासिक का भी प्रयोग किया है और

अनुस्वार [;] का भी। लेकिन अधिकतर अनुस्वार का ही प्रयोग किया है। केदारजी ने अनुनासिक की जगह अनुनासिक का प्रयोग अपवाद रूप में ही किया है। एकाध जगह अनुस्वार की जगह अनुनासिक का प्रयोग किया है और जहाँ आवश्यक नहीं है, वहाँ अनुनासिक का प्रयोग किया है। ऐसे अपवाद प्रयोगों का तो संशोधित रूप दिया गया है, पर शेष को जस का तस छापा गया है।

विदेशी शब्दों में नुक्ते [.] वाले शब्दों को केवल मूल रूप में ही छापा गया है—संशोधन नहीं किया गया है। एक ही शब्द में अगर एक जगह नुक्ता है और दूसरी जगह नुक्ता नहीं है तो जहाँ जैसा है उसे वैसा ही जाने दिया गया है।

रामविलासजी योजक चिह्न [-] का प्रयोग लगभग न के बराबर करते हैं जैसे 'बार बार', 'क्षण भंगुर' आदि। केदारजी कहीं करते हैं—कहीं नहीं। पुस्तक में भी इन्हें ज्यों-का-त्यों दिया गया है—बिना संशोधन के।

'ए' और 'ये' तथा 'ई' और 'यी' के प्रयोगों में दोनों मित्रों ने सावधानी नहीं बरती है। इसे भी संशोधन-रहित छापा गया है।

विरामचिह्नों का प्रयोग केदारजी जितनी ही उदारता से करते हैं, रामविलासजी उतनी ही कंजूसी से—जरूरत से रंचमात्र भी अधिक नहीं। इसे भी एकाध अपवादों को छोड़कर जस-का-तस छापा गया है।

इस तरह 'व'-'ब', अनुस्वार-अनुनासिक, नुक्ता, 'ए'-'ये', 'ई'-'यी', और विराम-चिह्नों में अपवाद रूप में ही संशोधन किया गया है। इनका मूल और संशोधित रूप दोनों एक साथ न देने का एक कारण तो यह है कि उससे प्रवाह में बाधा पड़ती है और दूसरा कारण यह है कि इससे पूरी किताब संशोधन के घावों से लैस दिखाई पड़ती है।

पत्रों में 'वसन्त' और 'बसन्त' दोनों रूप हैं। दोनों ही प्रचलन में हैं, इसलिए इन्हें संशोधित नहीं किया है।

रामविलासजी सहायक क्रिया 'गा', 'गे', 'गी' का प्रयोग मुख्य क्रिया से अलग करते हैं, जैसे—जाये गी, हो गा, आयें गे आदि। इस बात को प्रारम्भ में लक्ष्य नहीं कर सका, लेकिन बाद में जब इस पर ध्यान गया तो इस बात की सावधानी बरती गयी और प्रयास यही किया गया कि वह अलग ही रहे। केदारजी ने इनका प्रयोग मिलाकर ही किया है। इसे मिला हुआ ही छापा गया है।

रामविलासजी ने 'आगरा' को 'आगरे' लिखा है—इसी रूप में छपा भी है।

सामान्य रूप से 'फरवरी' लिखा जाता है रामविलासजी ने 'फर्वरी' लिखा है—'फर्वरी' ही छापा गया है। रामविलासजी ने 'सुसरे' का प्रयोग किया है और केदारजी ने 'ससुरे' का। इसे भी ज्यों-का-त्यों दिया गया है।

केदारजी ने 'मालूम' को हर जगह 'मालुम' लिखा है और 'तैयार' को 'तयार'। इन्हें मूल रूप में ही दिया गया है।



## 10 / मित्र संवाद

रामविलासजी २७.२.१९८१ तक के पत्रों में पूर्ण विराम [।] का प्रयोग करते हैं, पर आगे चलकर २७.११.१९८१ के पत्र से लेकर उसके बाद के पत्रों में फुलस्टॉप [.] का प्रयोग करने लगते हैं, हालाँकि ५ जून, १९९१ को लिखी भूमिका में पूर्ण विराम चिह्न का ही प्रयोग करते हैं। पुस्तक में सर्वत्र पूर्ण विराम चिह्न [।] का ही प्रयोग किया गया है।

रामविलासजी के छोटे भाई श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' के पास लिखे हुए कुछ पत्र भी 'मित्र संवाद' में संकलित हैं। लेकिन मुंशीजी के लिखे पत्र इसमें नहीं हैं।<sup>1</sup> इनके उल्लेख यथास्थान कर दिये गए हैं।

कुल मिलाकर, कहने का तात्पर्य यही है कि भरसक कोशिश यही रही है कि इन पत्रों को पढ़ते समय यही लगे कि मूल पत्रों का ही रसास्वादन हो रहा है। पाठक और पत्र-लेखक के बीच संपादक का हस्तक्षेप कम-से-कम हो। वह दाल-भात में मूसरचंद न बने। इस प्रयत्न की पूरी सफलता का दावा तो नहीं करता पर इस ओर निरन्तर सचेत रहा हूँ, इसका दावा ज़रूर करता हूँ। यद्यपि, अतिरिक्त सचेतता, कभी-कभी भयंकर भूलें करवा देती हैं।

रामविलासजी ने अपने १२.९.१९९१ के पत्र में मुझे लिखा कि 'पुस्तक के भीतर या बाहर मेरे नाम के साथ 'डॉ०' मत लगाना।' उनके उस आदेश का पालन करते हुए ही मैंने उनके नाम के साथ 'डॉ०' न लगाने की धृष्टता की है—न चाहते हुए भी।

१७ जुलाई, १९९१ के पत्र में उन्होंने लिखा कि 'पत्र-संग्रह के साथ तुम जो परिश्रम कर रहे हो, पत्र पढ़ते समय तुम्हारी जो प्रतिक्रिया हुई, उस पर अपना वक्तव्य पुस्तक में दे दो।' उनके इस आदेश का अनुपालन भी मैं कर रहा हूँ, लेकिन यहाँ नहीं—पुस्तक के अन्त में ताकि पूरी पुस्तक पढ़ने के बाद आप अपनी 'प्रतिक्रिया' और मेरी 'प्रतिक्रिया' का मिलान कर सकें तथा मेरी प्रतिक्रिया से अपनी प्रतिक्रिया और अपनी प्रतिक्रिया से मेरी प्रतिक्रिया की परख कर सकें।<sup>2</sup>

भूमिका में रामविलासजी ने अपनी और विशेष रूप से केदारजी की हस्तलिपि की विशेषताओं की ओर संकेत किया है। आप उसे चाक्षुष रूप में ग्रहण कर सकें इसलिए मित्रद्वय की हस्तलिपियों के अद्यतन नमूने भी पुस्तक में दिये जा रहे हैं।

विजयदशमी, १९९१

—अशोक त्रिपाठी

२२, लाउदर रोड, इलाहाबाद-२११००२

- 
1. साहित्य भंडार से प्रकाशित इस संस्करण में 04 पत्र मुंशी जी के भी दिये जा रहे हैं। (अ० त्रि०)
  2. साहित्य—भंडार, के इस संस्करण में अपनी प्रतिक्रिया 'मित्र संवाद से गुजरते हुए' शीर्षक से रामविलासजी की भूमिका के बाद पुस्तक के प्रारंभ में ही दे रहा हूँ। इस संस्करण में १९९१ के बाद के पत्रों को भी शामिल कर लिया गया है। (अ० त्रि०)

## भूमिका

**मित्र संवाद** अर्थात् दो मित्रों की बातचीत। दो मित्र हैं केदारनाथ अग्रवाल और इन पंक्तियों का लेखक रामविलास शर्मा। यह बातचीत पत्रों के माध्यम से होती है। लिखने और बोलने में थोड़ा फर्क जरूर होता है पर अपना अंदाजा यह है कि हम दोनों के लिखने और बोलने में यह फर्क कम-से-कम होता है। वैसे भी लोग मित्रों और सगे-सम्बन्धियों को चिट्ठियां बातचीत की शैली में ही लिखते हैं, कोई बाहर का आदमी उनकी बातें सुन रहा है या उनकी चिट्ठियां प्रकाशित होंगी, यह भय उन्हें नहीं होता, इसलिए ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत उन्हें नहीं होती। खुलकर बात करने की आदत ही न हो तो जो बेखुलापन लिखने में हो गा, वही बोलने में हो गा। हर हालत में चिट्ठियों की सामग्री को हम संवाद की संज्ञा दे सकते हैं। औपचारिक और व्यावसायिक पत्रों की बात अलग है।

ऐसा कम होता है कि पते पर जिसका नाम लिखा है और जो पता लिख रहा है, दोनों की चिट्ठियां एक साथ पढ़ने को मिलें। **निराला की साहित्य साधना** के तीसरे खंड में निराला के लिखे पत्र हैं और उन्हें लिखे गए पत्र हैं पर ये एक-दूसरे से जुड़े हुए नहीं हैं। जैसे निराला को लिखे नंददुलारे वाजपेयी के पत्र तो हैं पर वाजपेयी जी को लिखे निराला के पत्र नहीं हैं। कहीं किसी को लिखे निराला के दो-चार पत्र उसके पत्रों से जुड़े हों तो वे अपवाद हैं। इसके विपरीत **पाया पत्र तुम्हारा** में नेमिचंद्र जैन और मुक्तिबोध के पत्र परस्पर संबद्ध हैं और इन्हें संवाद की संज्ञा दी जा सकती है। संवाद लगातार चलता रहे, ऐसा कम होता है। पहली अगस्त, १९५७ से लेकर १८ जून, १९५८ तक मुक्तिबोध के पांच पत्र हैं, नेमिचंद्र जैन का एक भी पत्र नहीं है। कहीं-कहीं समय का लम्बा अंतराल आ जाता है जैसे कि १८ जून, १९५८ के बाद ९ जून, १९६२ तक कोई पत्र नहीं है, न नेमिचंद्र का, न मुक्तिबोध का। दोनों तरफ से पत्र-व्यवहार लगातार जारी रहे, ऐसा कम होता है। जारी रहे तो वह पत्र-व्यवहार सुरक्षित रहे, ऐसा और भी कम होता है। फिर भी **पाया पत्र तुम्हारा** में जितना संवाद बच गया है, वह परम उपयोगी है।

**मित्र संवाद** में केदार से मेरी बातचीत जुलाई १९३५ में शुरू होती है और नवम्बर, १९४३ तक अकेले मैं ही बोलता रहता हूं। इसका कारण यह है कि इस बीच केदार के लिखे सारे पत्र नष्ट हो गए हैं। जुलाई १९४३ में जब मैं अध्यापन के लिए आगरे गया तब घर का सारा सामान लखनऊ छोड़ आया था। जब दुबारा लखनऊ पहुंचा तब कमरा

बहुत साफ-सुथरा दिखा, सारा 'कूड़ा' बाहर निकाल कर फेंक दिया गया था। दुख तो हुआ पर बहुत ज्यादा नहीं। निराला को म० प्र० द्विवेदी आदि के लिखे पत्र और तब तक के लिखे निराला के पत्र मैं अपने साथ लेता गया था। यह सोचकर कुछ तसल्ली हुई कि ये भी फेंक दिए जाते तो मैं क्या करता।

आगरे में '४३ से '६१ तक बराबर मकान बदलते रहना पड़ा, इस नये-नये घरों में गिरिस्ती जमाने के क्रम में कुछ चिट्ठियां गुम हो गईं पर उनके खोने का मुख्य कारण मेरी असावधानी थी। और ऐसा भी होता है कि जो चीज मैं बहुत सावधानी से रखता हूँ, वह बड़ी कठिनाई से मिलती है और कभी तो मिलती ही नहीं है। केदार के पचहत्तरवें जन्मदिवस समारोह पर वहां मित्रों को सुनाने के लिए उनके कुछ पत्र साथ ले गया था। लौटकर उन्हें मैंने बहुत संभाल कर रख लिया था। नतीजा यह कि भूमिका लिखने तक तो वे मिले नहीं। मिलेंगे जरूर लेकिन शायद इस संग्रह के छप जाने के बाद!

केदारनाथ अग्रवाल ने जब से बांदा में वकालत शुरू की, वह एक ही मकान में रहते आए हैं। उनके चाचाजी नामी वकील थे, जब तक वह बांदा में थे, तब तक शायद केदार बगल के मकान में रहते थे। उनके जीवन का अधिकांश समय एक ही मकान में बीता है। पर इससे बड़ी बात यह है कि उनका जीवन बहुत ही नियमबद्ध और व्यवस्थित रहा है। सबेरे उठकर किताबों की धूल झाड़ना उनका अटल नियम है। बैठक में बड़ी-बड़ी कानून की जिल्द बंधी किताबें हैं। उन्हें शायद ही कभी पढ़ते हों। पर उनकी धूल जरूर झाड़ते हैं। उनकी साहित्य की पुस्तकें उनके (बांदा के) मित्रों की आंखों से ओझल ही रहती हैं। बैठक की बगल में एक कोठरी है, इसमें ताला लगा रहता है। चिट्ठी-पत्री सब इसी में रहती हैं और इसमें अशोक त्रिपाठी को छोड़कर औरों का प्रवेश वर्जित है। यहां से मेरे कुछ पत्र अशोक इलाहाबाद उठा ले गये थे, केदार से पूछकर ले गए थे बिना पूछे ले गए थे,<sup>1</sup> यह बात महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस संग्रह के प्रकाशन की बात चली, तब उन्होंने पत्रों की फोटो कापी मुझे भेज दी। सन् '३५ से '४४ तक और उसके बाद भी मेरे जो पत्र आप इस संग्रह में देखते हैं, वे बरसों तक उस कोठरी में सुरक्षित बने रहे थे।

सन् '६१ में निराला की मृत्यु के बाद जब मैं उनकी जीवनी लिखने के बारे में सोच रहा था, तब इस बात पर ध्यान गया कि निराला की हालत के बारे में जब तब अपने मित्रों को लिखता रहता था। वे पत्र मिल जायें तो जीवनी के लिए उनका उपयोग किया जा सके गा। केदार ने सूचना पाते ही मेरे सारे पत्र मुझे भेज दिए। इस कारण हमारी मैत्री के प्रारम्भिक दशक के मेरे पत्र आप यहां देखते हैं। यद्यपि इस दशक में केदार ने जो पत्र मुझे लिखे, वे यहां नहीं हैं, पर मेरे पत्रों से आप केदार के बारे में बहुत कुछ

1. पत्र के साथ अन्य सामग्रियाँ मैं पूछकर ही ले गया था। (अ० त्रि०)

जान सकेंगे, इसलिए उन्हें दे रहा हूँ। इस दशक के बाद के पत्रों में कई जगह संवाद क्रम टूट जाता है। कहीं आप समय का अंतराल देखेंगे, कहीं एक साथ केदार के या मेरे ही कई पत्र एक साथ देखेंगे। कभी लगे गा दोनों में एक ने कुछ समय तक पत्र लिखा ही नहीं। हो सकता है, उस समय के पत्र मुझसे खो गए हों। अपवाद रूप में ही कहीं आप देखेंगे कि केदार बोले चले जा रहे हैं और मैं चुप हूँ। हम दोनों में मेरे पत्र ही अधिक सुरक्षित रह पाये हैं। कुछ पत्र डाक की अव्यवस्था से भी खोये हैं। फिर भी इस संकलन में काफी पत्र ऐसे हैं जहाँ बातचीत का सिलसिला टूटता नहीं है और आप देर तक हमारा संवाद सुन सकते हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, इस तरह मित्रों का संवाद सुनने का अवसर आपको अन्य किसी पत्र संग्रह में न मिलेगा।

संवाद एक ही तरह के दो व्यक्तियों के बीच हों तो सुनने वाले को मजा न आएगा। दोनों व्यक्ति एकदम भिन्न स्वभाव के हों तो संवाद होना ही मुश्किल होगा, हुआ तो खटपट के अलावा सहानुभूतिपूर्ण विचार विनिमय की गुंजाइश कम होगी। राग विस्तार के लिए वादी के साथ संवादी स्वर जरूरी हैं; कहीं-कहीं विवादी स्वर झलक दिखा जाए तो उससे राग विस्तार की प्रक्रिया भंग न होगी। इस पत्र संग्रह में जहाँ-तहाँ विवादी स्वर आप सुनेंगे पर आयु के साथ ये स्वर धीमे पड़ते गए हैं और कुल मिलाकर राग विस्तार को स्वर सामंजस्य ही बांधे रहता है। हम दोनों मित्र हैं, अपने-अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं के साथ। इनमें कुछ का पता मुझे अभी लगा इन पत्रों का संपादन-संकलन करते समय। ऐसा बहुत कम होता है कि केदार ने पत्र पर तारीख, महीना और सन् न लिखा हो। कभी-कभी वह लिखने का समय भी सूचित कर देते हैं। इसके विपरीत मेरे बहुत-से पत्र ऐसे हैं जिनमें तारीख और महीना है, सन् गायब है, कुछ में तारीख, महीना, सन् तीनों गायब हैं। इसलिए सन्, महीना आदि का पता लगाने में मुझे काफी समय खर्च करना पड़ा। आमतौर से आपको ऐसा लगेगा कि केदार फुर्सत में चिट्ठियाँ लिख रहे हैं, दरअसल ज्यादा फुर्सत मुझे रही है, केदार को फुर्सत का समय निकालना होता था। वह वकील थे, दिन-भर कचहरी करते थे, रात में उन्हें पढ़ने-लिखने का अवकाश मिलता था। मेरे पास अवकाश ही अवकाश था। सन् '३८ से '४३ तक लखनऊ विश्वविद्यालय में दस बजे गए, डेढ़ बजे लौट आए। सबेरे का समय अपना, तीसरे पहर का समय अपना। कुछ दिन तक आगरे में यही क्रम रहा, फिर सबेरे गए, ग्यारह बजे लौट आए, यह क्रम बरसों चला। पर जल्दबाजी के चिह्न मेरे पत्रों में ही ज्यादा मिलेंगे। मेरे कुछ पत्र, आमतौर से पोस्टकार्ड, बहुत जल्दी में लिखे गए हैं। साहित्यिक आन्दोलन सम्बन्धी लेखन, पत्र-व्यवहार और भाग-दौड़, यह आपाधापी सन् '४६ के पहले कम थी, सन् '५३ के बाद और कम हो गई। फिर भी पत्र न लिखने की ज्यादा शिकायत केदार की ओर से है। पहले तो आलस्य के कारण पत्र लिखने का समय जल्दी न आता था, बाद को लिखाई-पढ़ाई में व्यस्तता के कारण देर हो जाती थी। पर कभी-कभी केदार भी महीनों तक मौन साध लेते थे। उनकी एक ही पेटेन्ट दलील

थी—तुम पुस्तक लिखने में व्यस्त हो गे, इसलिए डिस्टर्ब करना उचित न समझा। एक ही काम केदार ने जल्दी में किया था, वह था मुझे से दोस्ती करना। मैं उनसे कहता था, जल्दी क्या है, मुझे परख लो, मेरी कमजोरियां पहचान लो, जिससे बाद में दोस्ती न टूटे। पर केदार को अपने सहज बोध का भरोसा था। जैसे उनकी कविता सहज थी, वैसे ही उनकी मैत्री थी।

सन् '३५ में जब उनसे परिचय हुआ, तब वह कानपुर में वकालत पढ़ रहे थे, मैं क्लासवाली पढ़ाई पूरी करके रिसर्च में लगा हुआ था। शायद इस कारण मुझमें बड़प्पन का भाव आ गया था। बहुत दिन बाद मैंने इस बात पर ध्यान दिया कि वह उम्र में मुझसे बड़े हैं, बातचीत और पत्र-व्यवहार में मुझे उनके बड़प्पन का ध्यान रखना चाहिए। पर ऐसा कभी हुआ नहीं, अधिक-से-अधिक यह हुआ कि बड़प्पन छुटपन की बात छोड़कर हम लोग बराबरी के स्तर पर आ गए। फिर भी मेरे पत्रों में 'प्रिय केदार' तो बराबर मिले गा, केदार के पत्रों में 'प्रिय रामविलास' एक बार भी नहीं। अधिक-से-अधिक 'प्रिय शर्मा'—वह भी शुरुआती दौर के पत्रों में।<sup>1</sup> वैसे मौका मिले तो मुझे बनाने से कभी चूकते नहीं हैं।

केदार को हास्य-विनोद से सहज प्रेम है। प्रेम ही नहीं, हंसना, प्रसन्न रहना, उनकी सहज वृत्ति है। वह हास्य-विनोद की सामग्री वहां ढूंढ लेते हैं जहां कवियों की निगाह कम जाती है। यहां उनके पत्रों का गद्य उनकी कविता से भिन्न है। कविता में एक छोर पर तीखा मारक व्यंग्य है (इसकी अनोखी मिसालें **कहें केदार खरी-खरी** में हैं), दूसरे छोर पर **फूल नहीं रंग बोलते हैं** की दुनिया है। हंसने-हंसाने के लिए कविता में उन्हें कम समय मिलता है। पर यह उनके व्यक्तित्व का बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है। इस दृष्टि से पत्रों का गद्य उनकी कविता का पूरक है। वह कवि केदारनाथ अग्रवाल का गद्य है, यह तथ्य भुलाकर भी आप उसका आस्वादन कर सकते हैं। और हास्य-विनोद तो उसका एक पक्ष है, बहुत जगह तो वह कविता बन जाता है, छायावादी शब्दावली में रचा हुआ गद्यकाव्य नहीं, यथार्थवादी कविता, ऐसा गद्य जो अपनी गद्य की जमीन नहीं छोड़ता, फिर भी कविता बन जाता है और कहीं-कहीं तो कविता से आगे बढ़ जाता है। केदार जो कुछ भी कविता में कहना चाहते हैं, उसे गद्य में भी कहते हैं और इतने सहज भाव से कहते हैं कि उस अभिव्यक्ति की पूर्णता को कविता नहीं छू पाती। हमेशा ऐसा नहीं होता पर कभी-कभी ऐसा भी होता है।

केदार के गद्य में बहुत-सी भाव दशाएं हैं—'भाव भेद रस भेद अपारा' की उक्ति को चरितार्थ करती हुई। पता लगाना दिलचस्प हो गा कि उनकी कविता में इतनी भाव दशाएं हैं या नहीं। कहीं वह रीझते हैं, कहीं खीझते हैं, कहीं उत्तेजित, कहीं

1. कहीं-कहीं 'प्रिय डाक्टर' भी मिलता है। (अ० त्रि०)

स्थितिप्रज्ञ, कहीं दुखी, कहीं प्रसन्न, कहीं किसी व्यक्ति अथवा वृत्ति से तादात्म्य, आपा खोये हुए, बेसंभाल, कहीं एकदम तटस्थ, विवेकशील, तर्क का सूत कातते हुए मन ही मन हंसते हुए। उनकी अनेक मुद्राएं हैं, अनेक भंगिमाएं हैं, मेरे लिए उनकी सबसे प्रिय मुद्रा वह है जब वह मन ही मन हंसते हैं। सजल नयन गदगद गिरा गहवर मन पुलक शरीर—कभी—कभी यह स्थिति भी होती है। विश्वास न हो तो उनका ५ मार्च सन् '६९ का पत्र पढ़कर देख लीजिए। सारंगी उनका प्रिय वाद्य है (बजाते नहीं, सुनते हैं)। अन्य किसी भी वाद्य यंत्र से ज्यादा सारंगी मनुष्य के स्वरों का अनुकरण करती है। केदार का गद्य सारंगी की तरह उनकी सूक्ष्म भावदशाएं ज्यों की त्यों शब्दों में बांध लेता है। यहां बात केवल उनके पत्रों के गद्य की है, उनमें भी केवल मुझे लिखे हुए उनके सबसे अच्छे पत्रों की। (यहां 'केवल' में गर्वोक्ति का आभास हो सकता है; दूसरों को लिखे हुए उनके बहुत कम पत्रों से मैं परिचित हूँ।) मेरे पत्र उत्तेजक का काम करते हैं—अनेक प्रकार से। मेरे किसी पत्र से उन्हें क्षोभ हुआ तो यह एक तरह का उत्तेजक हुआ। कहीं किसी दुःख की गहराई में उन्होंने मेरी आवाज सुन ली और मन थोड़ा भी हल्का हुआ तो यह दूसरी तरह का उत्तेजक हुआ। केदार को सारंगी प्रिय है, मुझे उसमें नाद की गंभीरता नहीं मिलती। केदार के गद्य में सारंगी के स्वरों की सुकुमारता है, वायलिन का नाद गाम्भीर्य और जहां तहां मृदंग की थाप भी। केदार संघर्ष और चुनौतियों के कवि हैं। गद्य में जहां उदात्त स्तर पर उनके स्वर फूटते हैं, वहां सारंगी की पहुंच नहीं है। 'राम की शक्तिपूजा' की संगीतमय व्यंजना वीणा, वायलिन और मृदंग से सम्भव है, सारंगी से नहीं।

'राम की शक्तिपूजा' को आत्मसात् करने में केदार के सामने कुछ कठिनाइयां रही हैं। उन्हें आप २७-११-५८ के पत्र में देख सकते हैं। प्रश्न उस कविता को आत्मसात् करने का नहीं है, प्रश्न है गद्य में उस कविता के स्तर को छू लेने का। मेरी समझ में जहां-तहां केदार का गद्य 'राम की शक्तिपूजा' के उदात्त स्तर को स्पर्श कर आता है। केदार का मूल स्वर लिरिक कवि का है, वही उनके गद्य का मूल स्वर भी है। कविता में वह बाहर की दुनिया देखते हैं, मन के भीतर झांकते भी रहते हैं। अपने मन के भीतर पैठने की यह क्रिया उनके गद्य में और भी ज्यादा होती है। उनके पत्र आत्मवक्तव्य का श्रेष्ठ साधन हैं। यह आत्माभिव्यक्ति परिवेश से कटी हुई नहीं, दृढ़तापूर्वक उससे जुड़ी है। कवि के व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करना हो तो इन पत्रों से ज्यादा अच्छी सामग्री दूसरी जगह न मिलेगी। व्यक्ति का मन और उसका परिवेश, इनका परस्पर घात प्रतिघात—यह परिदृश्य है इन पत्रों में। कहीं पारिवारिक परिवेश की झलक है, कहीं (कचहरी केन्द्रित) सामाजिक परिवेश की, सबसे अधिक साहित्यिक परिवेश की। यह बांदा का परिवेश है और बांदा से बाहर व्यापक हिन्दी का परिवेश। यदि कहें, केदार के पत्र एक युग का इतिहास हैं तो अत्युक्ति हो सकती है। परन्तु एक युग के साहित्यिक परिवेश में स्वयं केदार के जीवन का अंतरंग इतिहास उनके पत्र निश्चय ही

हैं। यह परिवेश बदलता रहा है, उसके साथ केदार भी बदलते रहे हैं, सदा उसके अनुरूप नहीं। परिवेश की गिरावट से बचने का प्रयास यहां देखा जा सकता है। कुल मिलाकर केदार का व्यक्तित्व निरन्तर विकसित और परिपक्व होता गया है और हर मंजिल में उनके व्यक्तित्व की अपनी पहचान अपरिवर्तनशील रही है।

केदार के कवि जीवन के आदिकाल से मैं उनके गद्य का प्रशंसक रहा हूँ। पद्य की नुक्ताचीनी, गद्य की प्रशंसा बरसों तक—यह व्यापार देखकर केदार ने यह समझा हो कि मुझे उनकी कविता पसंद नहीं है तो इसमें आश्चर्य ही क्या। **केदारनाथ अग्रवाल और प्रगतिशील काव्यधारा** के प्रकाशन के बाद उनका वह भ्रम बहुत कुछ मिट गया है लेकिन शायद पूरी तरह नहीं क्योंकि मैं उनके गद्य का प्रशंसक अब भी हूँ। संभव है कि **मित्र संवाद** की यह भूमिका पढ़कर वह पुराना भ्रम बुढ़ापे में उन्हें फिर सताने लगे। अतः मैं घोषित करता हूँ कि केदारनाथ अग्रवाल अपने युग के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं और मुझे उनकी कविता बेहद पसन्द है। यह भी कि उनका काफी गद्य मुझे नापसन्द है। जब वह दिनकर की **उर्वशी** को लेकर मुझसे जिरह करने बैठ जाते हैं तब मुझे उनका गद्य बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। आप इस मुद्दे पर यों विचार करें, केदार ने जो अच्छी कविताएं लिखी हैं, उनके आस पास नागार्जुन, निराला या किसी अन्य महाकवि की पंक्तियां पहुंच जायेंगी पर केदार ने पत्रों में जो बढ़िया गद्य लिखा है, उस तक किस कवि का बढ़िया से बढ़िया गद्य पहुंचता है, विचार करें। ऐसा नहीं है कि हिन्दी में अच्छे गद्य लेखक नहीं हैं। हैं, और एक से एक बढ़कर हैं। सवाल गद्य के मिजाज का है। केदार अपने पत्रों में जिस तरह का गद्य लिखते हैं, उस तरह का गद्य हिन्दी में और किसी ने नहीं लिखा। दरअसल केदार अपने हुनर से बेखबर हैं। जो सहज है, उसे ऐसा होना भी चाहिए। बहुत से पत्रों में साधारण बातों का उल्लेख मात्र है। सम्भव है, इनका ध्यान आने पर वह सोचते हों, ऐसा इनमें क्या है जो प्रशंसा के योग्य है। मैं भी कहूँ गा, ऐसा कुछ खास नहीं है परन्तु केदार जैसे साहित्यकार के जीवन और परिवेश के बारे में हम जितना ही जानें उतना ही थोड़ा है। हां साधारण बातों का उल्लेख पढ़ते-पढ़ते अचानक आप उनके किसी अनूठे उपमान से चौंक पड़ें, यह सम्भव है। आप चाहें तो ऐसे उपमानों की सूची बना लें, फिर देखें, ऐसे अनूठे सहज उपमान कविता में भी कितने हैं। वैसे तो उन्हें अपनी कविताएं बहुत अच्छी लगती हैं और मैं उनकी अपेक्षित तारीफ न करूँ तो वह नाराज भी होते हैं पर कभी-कभी आत्मालोचन के मूड में वह कविताओं को बटोरकर उसी जगह रख देते हैं जहां उनकी समझ में उनके पत्र हैं। ऐसे में दोनों का स्थानान्तरण बहुत जरूरी है। कविता जाये तो जाये, पत्रों में रचा हुआ गद्य तो रहे! (देखें २८-८-७४ का पत्र।)

केदार में आस पास की चीजों को देखने और उनका वर्णन करने की अद्भुत क्षमता है। निराला से अन्तिम भेंट करके उन्होंने जो अन्तिम पत्र लिखा था, उसमें यह क्षमता देखी जा सकती है। ऐसे पत्रों का ऐतिहासिक महत्व है। वह पुस्तकों के बारे में कम

लिखते हैं, अपने भीतर और आस पास देखकर ही अधिक लिखते हैं। इसके विपरीत मेरे पत्रों में पुस्तक चर्चा बहुत रहती है। मेरी इच्छा रही है कि पढ़ने में जो कुछ मुझे अच्छा लगा है, उसकी जानकारी केदार को भी हो जाये। पर वह काफी पढ़ते हैं; जो पढ़ते हैं, कलाकार के भाव से, सीखते समझते हुए, फालतू चीजें एक तरफ हटाते हुए। मेरे उनके काव्य बोध में अन्तर है, यह आप पत्रों में अनेक जगह देखेंगे। उनकी अपनी कविताओं को लेकर मतभेद रहा है। दिनकर, निराला, सूरदास की रचनाओं को लेकर भी मतभेद रहा है कविता से सामाजिक यथार्थ के सम्बन्ध को लेकर, पुरानी साहित्य-परम्पराओं के मूल्यांकन को लेकर, छंद और काव्य शिल्प को लेकर मतभेद रहा है। दो मित्रों के, एक दूसरे की हां में हां मिलाने वालों के, ये पत्र नहीं हैं। जहां भी ऐसे मतभेदों का विवरण है, आज के आलोचकों और कवियों को अपने काम लायक कुछ सामग्री अवश्य मिलेगी। पर ये मतभेद गौण हैं। उनसे हमारी मैत्री कभी नहीं डममगायी। जीवन में असह्य दुःख के क्षण भी आते हैं। ऐसे क्षणों में हम सदा एक-दूसरे के पास रहे हैं। व्यक्तिगत रूप में यह मैत्री मेरे लिए कविता से भी अधिक मूल्यवान है। ये पत्र उस मैत्री के साक्षी दस्तावेज हैं।

हम दोनों में एक बात सामान्य है—बीते दिनों के बारे में हम बहुत कम सोचते हैं। क्या कर रहे हैं, आगे क्या करना है, अधिकतर ध्यान उसी पर केन्द्रित रहता है। हमारी मैत्री का लम्बा इतिहास है, इस पर भी ध्यान कम ही जाता है। लगता है, सारे तथ्य सिमट कर गुणात्मक रूप से भावशक्ति में परिवर्तित हो गए हैं—यह भावशक्ति जो रचनात्मक क्षमता का स्रोत है।

इस संग्रह में केदार के कुछ पत्र मेरे भाई मुंशी को लिखे हुए हैं। मुंशी पत्रकार हैं। लोकयुद्ध (फिर जनयुग), हिन्दी टाइम्स जैसे प्रकाशित पत्रों के अलावा वह अनेक हस्तलिखित पत्रों के सम्पादक रहे हैं। हमारे पारिवारिक पत्र **सचेतक** को निकालते उन्हें दस साल हो गए हैं। केदार इसके नियमित पाठक हैं। उनकी कुछ कविताएं सबसे पहले **सचेतक** में छपी हैं। इनमें अपनी मां पर लिखी केदार की कविता विशेष उल्लेखनीय है। मुंशी को लिखे हुए पत्रों में सम्प्रेषण की वेव-लेन्थ दूसरी है, आप पढ़ते ही पहचान लेंगे। मुझसे उपन्यासों की चर्चा शायद ही उन्होंने कभी की हो पर मुंशी के नाम एक पत्र में उन्होंने अपने पढ़े हुए उपन्यासों की चर्चा काफी विस्तार से की है। मुंशी से उपन्यासों की चर्चा और मुझसे नहीं— कारण यह हो सकता है कि मुंशी और केदार दोनों ने उपन्यास शुरू किये, पूरा दोनों में किसी ने नहीं किया।<sup>1</sup> तब इन्हें

1. केदार का 'पतिया' उपन्यास 1985 में प्रकाशित हुआ था। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य के अनुसार उनका अधूरा उपन्यास 'बैल बाजी मार ले गये' शीघ्र प्रकाशित होगा—मुंशी का अधूरा उपन्यास 'दीनू की दुनिया' हमारे पारिवारिक पत्र 'सचेतक' में छप रहा है; पर जिस समय केदार मुंशी से उपन्यासों की चर्चा कर रहे थे, उस समय उनके उपन्यास अप्रकाशित थे।



18 / मित्र संवाद

आपस में उपन्यासों की चर्चा करनी ही चाहिए। हां, मुंशी के अधूरे उपन्यास का कुछ अंश सचेतक में छपा है।

केदार का जीवन जितना ही व्यवस्थित है, उनकी लिखावट उतनी ही बहुआयामी है। उनके अक्षर ज्यामिति के अनेक पैटर्न बनाते चलते हैं। अशोक त्रिपाठी उनकी कविताएं कापियों और डायरियों से खोज-खोजकर संकलित और संपादित करते रहे हैं। वह उनकी हस्तलिपि के विशेषज्ञ हैं। प्रेस के लिए पत्र-संग्रह की कापी तैयार करने की जिम्मेदारी उनकी है। यह काम आसान नहीं है। इतनी बड़ी पांडुलिपि की प्रेस कापी उन्होंने पहले कभी तैयार नहीं की। फिर मेरी लिखावट की अपनी विशेषताएं हैं। आमतौर से साफ-सुथरी होने पर भी कहीं-कहीं अपना लिखा खुद से नहीं पढ़ा जाता। कुछ पत्र अंग्रेजी में हैं, वहां अशोक को और अधिक कठिनाई हो सकती है। हिन्दी से अलग हम लोगों की अंग्रेजी की लिखावट की अपनी विशेषताएं हैं। सुपाठ्य रूप में यह संग्रह आप तक पहुंच जाये, तो इसका श्रेय आप अशोक त्रिपाठी को दें। मैंने पत्रों की फोटो कापी कराके कालक्रमानुसार उन्हें व्यवस्थित कर दिया है, जहां जरूरत समझी, वहां आवश्यक सूचना देने वाली छोटी-छोटी पाद टिप्पणियां लिख दी हैं। अशोक से मैंने कहा है, जरूरत समझो तो अपने नाम से और टिप्पणियां भी लिख सकते हो।

एक बात और। केदार से बातें करते समय कहीं-कहीं मेरी भाषा असंयत हो गई है। इसके लिए पाठकों से मैं क्षमा मांगता हूं।

पहली अप्रैल १९९१ को केदार ने अस्सी पूरे किए। आशा है, साल पूरा होने के पहले वह संग्रह उनके हाथों में हो गा।

सी-३५८, विकासपुरी,  
नयी दिल्ली  
५ जून, १९९१

रामविलास शर्मा

**पुनश्च :**

मित्रों को सुनाने के लिए जो पत्र मैं बांदा ले गया था, सौभाग्य से पुस्तक छपने से पहले ही वे मिल गए। पुराने महारथियों के कुछ पत्रों के साथ मैंने इन्हें संभाल कर रख दिया था।

केदार के गद्य शिल्प के बारे में मुझे और बहुत कुछ लिखना चाहिए पर वह एक भूमिका में सम्भव नहीं है। उसके लिए अलग एक पुस्तक चाहिए। मैं आशा यह करता हूं कि गद्य को भाष्य की जरूरत नहीं है, पाठक उसकी खूबियां खुद ही पहचान लेंगे। पत्र पढ़ते समय आप यह न भूलें कि वे प्रकाशित होने के लिए न लिखे गए थे। 'तुम

जानते हो कि मैं किसी अन्य से इस तरह खुलकर बात नहीं करता।' (८-२-५७)। ये पत्र इतने आत्मीयतापूर्ण हैं कि इन्हें प्रकाशित करने में मुझे संकोच होना चाहिए था। केदार का व्यक्तित्व अब अकेले उनका नहीं रहा, कविता के माध्यम से वह उसे हिन्दी जनता को सौंप चुके हैं। कविता में वह खुलकर बोलते हैं, फिर भी जो वहां नहीं कहा, वह यहाँ है। जिस कारखाने में उनकी कविता ढलती है, उसे आप भीतर से यहाँ देख सकते हैं। जो सामग्री कविता में नहीं ढाली गई, पर कविता से घटकर नहीं है, वह भी आपको यहाँ मिलेगी। 'सामने नल चल रहा है। बाल्टी भर रही है। पानी बोल रहा है। आंगन के कच्चे कोने में, पहले की कटी, रातरानी ने पत्तियाँ निकाल दी हैं।' (२३-७-५८)। अदृश्य काल के एक क्षण को उसके पार्थिव परिवेश के साथ लेकर केदार ने अमर कर दिया है।

बहुत साल पहले उन्होंने कहा था, 'सांस का जोर पंक्तियों में आवे, मेरी यह साधना है।' (५-११-४३)। आदमी के सांस लेने की तरह उनकी कविता सहज है; उनके सांस लेने की आवाज आप उनके पत्रों में सुन सकते हैं। जब वह कचहरी से बाहर होते हैं तब उनकी हर सांस कविता होती है। लेकिन सताकर भी कचहरी उन्हें कविता दे जाती है। '११/५ से सुबह की कचहरी हो जाएगी। साढ़े छः बजे सुबह से १ बजे दिन तक। तब तो समझो कि घिर जाऊंगा। चूर-चूर हो जाऊंगा। पर किया [क्या] जाये। पेट को लिए लिए गर्भवती की तरह जिऊंगा। न खा पाऊंगा, न घूम-फिर सकूंगा।' (४-५-६४)। विरोधी परिवेश से लम्बी टक्कर-यह है केदार का जीवन। पर वह इस परिवेश को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते। और केवल कचहरी का परिवेश नहीं, साहित्य का परिवेश भी अक्सर उनके प्रतिकूल होता है। वह उससे दूर नहीं भागते, निगाह जमाकर उसे देखते हैं। और यहाँ भी उनकी प्रतिक्रिया कविता बन जाती है। 'प्रतीक' श्मशान का रंगीन धुआं रहा।' (११-८-८७)। धुआं रंगीन है पर है श्मशान का।

जो अप्रत्याशित है, अनपेक्षित है, पत्र में अकस्मात् वह सामने आकर हमें चौंका देता है। साधारण बातें करते-करते अचानक ऐसे बोल फूटते हैं कि सुनकर हम दंग रह जाते हैं। ऐसे बोल कब कहां सुनने को मिल जायेंगे, आप कुछ कह नहीं सकते। 'मैं तो अपने को खोजता रहा हूँ कि कहां हूँ और क्या सच है और मैं उसे पकड़कर जी रहा हूँ अथवा नहीं। मुझे काठ होकर या रहकर मरने में दुःख होगा। मरो तो इस शान से कि मौत भी ऐसे फूले-फले पेड़ को कंधे पर रखकर चले कि जिधर से निकले रूप-रस और गंध बरस पड़े। हमें यश न चाहिए। हमें चाहिए पूर्ण विकसित मनुष्य की मौत।' (१७-१२-५८)। पूर्ण विकसित मनुष्य की मौत-मानव जीवन का यह सबसे बड़ा दार्शनिक सत्य है। केदार ने उसे अपने अनुभव से, चिन्तन और मनन से प्राप्त किया है।

इति।

20 / मित्र संवाद

शिवकुमार सहाय हिन्दी प्रकाशकों में परम सौभाग्यशाली हैं कि केदारनाथ अग्रवाल की सारी पुस्तकें उन्हीं ने छापी हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि यह पत्र संग्रह भी वही छाप रहे हैं। मैं उनके प्रकाशन कार्य की सफलता के लिए मंगल कामना करता हूँ।

१८ जून, १९९१

—रामविलास शर्मा

## ‘मित्र संवाद’ से गुज़रते हुए

(एक)<sup>1</sup>

भूमिका में रामविलासजी ने लिखा है ‘प्रेस के लिए पत्र संग्रह की कापी तैयार करने की जिम्मेदारी उनकी [अशोक त्रिपाठी की] है। यह काम आसान नहीं है।’

मुझे लिखे हुए अपने 18-7-91 के पत्र में लिखते हैं—‘पत्र संग्रह के साथ तुम जो परिश्रम कर रहे हो, पत्र पढ़ते समय तुम्हारी जो प्रतिक्रिया हुई, उस पर अपना वक्तव्य पुस्तक में दे दो।’

सबसे पहले ‘यह काम आसान नहीं है’ का खुलासा।

‘यह काम आसान नहीं है।’—पढ़कर शुरू में लगा कि रामविलासजी इसे शायद औपचारिक स्नेहवश लिख गये होंगे। यह कौन-सा मुश्किल काम है! पर ज्यों ही पत्र मैंने प्रेस को दिखाये, मुश्किल शुरू! प्रेस ने कहा कि इसे टाइप करा के दीजिए। मैंने कहा—आप ही व्यवस्था करा दीजिए। उन्होंने हामी भरी और हम निश्चिन्त हो गए। पत्र लेकर मैं चला आया और प्रेस-कॉपी की जगह टंकण-कॉपी तैयार करने में लगा। जो पत्र लेटरहेड और अन्तर्देशीय या सादे कागज पर थे, उन्हें तो वैसे ही तिथि-क्रम में संवाद-शैली में संयोजित किया, पर जो पोस्टकार्ड पर थे, उन्हें अलग-अलग सादे कागज पर इस तरह चस्पा किया कि इबारत भी खराब न हो और वे दोनों तरह पढ़ लिए जायँ।

टंकण-कॉपी प्रेस<sup>2</sup> मालिक श्री मिश्रीलाल शर्मा को दी गयी। उनके टंकणकर्ता ने माफ़ी माँग ली। कहा—मेरे बूते का नहीं है, इसे टाइप करना। मिश्रीलालजी के सुपुत्र रमेशजी ने कहा मैं इसे सीधे कम्पोज कराता हूँ। मैं बड़ा खुश हुआ—सोचा एक बार के संशोधन की मेहनत से निजात मिली। प्रूफ आया। पूरा प्रूफ संशोधन से भर गया—तिल रखने को भी जगह न बची—फिर भी कुछ संशोधन अंकित होने से वंचित रह गये। प्रूफ प्रेस गया। कम्पोज़ीटरों ने भी तोबा कर ली—टंकित कराये बिना काम नहीं होगा। कुछ टंकणकर्ताओं से बात की—उन्होंने भी कापी देखकर पनाह माँग ली। अन्त में मेरे मित्र सोमदत्त शर्मा ने बाँह गयी और मुझे उबार लिया—आभारी होना ही पड़ेगा। उन्होंने अपने प्रभाव से एक टाइपिस्ट को तैयार किया। बेचारा तैयार हो गया पर परिणाम वही—

1. परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित 1991 का संस्करण।

2. शांति मुद्रणालय, दिल्ली।

‘नौ दिन चले अढ़ाई कोस’—दिन-भर में 8-10 पेज से ज्यादा नहीं कर पाता था। मैं अपने को बड़ा तीसमारखाँ समझता था और टाइपिस्ट पर खीझ रहा था पर कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर रहा था कि कहीं उसने भी मना कर दिया तो, सारी प्रेस-कॉपी मुझे हाथ से लिखनी पड़ेगी—पुस्तक तो छपनी ही थी। लेकिन जब संशोधन करने बैठा तो रात को डेढ़-दो बजे तक संशोधन करता और जब पेज गिनता—7-8 पृष्ठ से अधिक नहीं हो पाता था—दिन में चाकरी करता था। रात में ही काम कर पाता था। छुट्टियों में बहुत किचकिचाता था तो 20-22 पृष्ठ निकाल पाता था। कारण यह था कि दोनों मित्रों की ‘लिखावट’ की जो अपनी ‘विशेषताएँ’ हैं, [केदारजी की हिन्दी-अंग्रेजी दोनों की और रामविलासजी की अंग्रेजी की] वही अक्सर मुझे ललकार देती थीं—और मैं उन्हें अनसुनी न कर देने के लिए बाध्य था। एक-एक शब्दों को लेकर घंटों सिर खुजलाना पड़ता था—अंग्रेजी शब्दों के लिए शब्दकोश छानना पड़ता था [इसी काम के लिए मैंने आक्सफोर्ड डिक्शनरी खरीदी]। इस पर भी जब वे ललकारते ही रहते थे तो फिर रामविलासजी की शरण में जाता था। उन्हें पत्र लिखता था। वह तुरन्त पत्र से मेरी पीठ थपथपाते हुए, उबार लेते थे। उन्होंने मुझ नौसिखिये को समुद्र में तैरने के लिए फेंक तो दिया था पर कगार पर खड़े रहकर बराबर कनखियों से ताकते रहते थे कि अगर कहीं डूबने लगूँ तो उबार लें। उनके निर्देशों का अनुपालन करते हुए, समुद्र पार तो कर गया हूँ, पर खूबसूरती से तैरकर या यूँ ही हाथ-पाँव चलाकर, यह तो रामविलासजी और इस पत्र के सुधी पाठक ही बता सकते हैं; क्योंकि मेरी अपनी समझ की सीमाएँ भी तो हैं।

अब मेरी ‘प्रतिक्रिया’!

‘मित्र संवाद’ की प्रेस कॉपी तैयार करने से लेकर मुद्रणादेश देने तक इन पत्रों को कम-से-कम साढ़े तीन बार मैंने पढ़ा। एक बार टंकित प्रतियाँ संशोधित करते समय, दो बार प्रूफ संशोधित करते समय और आधी बार इन पत्रों को टंकण के लिए टंकण-कॉपी तैयार करते समय। पत्रों को संवाद-शैली में तिथिवार संयोजित करते समय अक्सर पत्रों को पढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर पाता था। मैं बार-बार अपने को सचेत करता था। [क्योंकि समय कम था और एक निश्चित समय-सीमा के अन्दर ही काम पूरा होना था] पर अपने को रोक नहीं पाता था—मैं क्या करता, ये पत्र ही इतने दिलचस्प हैं। इन पत्रों में मुझे एक नये केदारजी और नये रामविलासजी दिखाई पड़ रहे थे—अपने लेखन से अधिक खुले हुए, अनौपचारिक सहज और प्राणवंत, निजी-पारिवारिक जिन्दगी के इन्द्रधनुषी रंगों के साथ दमदमाते हुए, सुख-दुख, हर्ष-विषाद की धूपछाँही में सीना तानकर खिलखिलाते हुए—दुख और विषाद को ठेंगा दिखाकर महाकाल को डपटते हुए, मस्ती से रूट मार्च करते हुए।

‘मित्र संवाद’ के पत्र महज पत्र नहीं हैं—आज के युग के लिए दुर्लभ, अकुंठ और अनाविल मैत्री के जीवन्त दस्तावेज हैं। इन पत्रों से गुजरना मेरे लिए ब्राह्ममुहूर्त की,

फूलों की ताज़ी ख़शबू से भरी, विलम्बित लय में चलने वाली बयार से गुज़रना था। छप्पन वर्षों की परवान चढ़ती मैत्री, हर सोपान पर एक प्रीतिकर ताज़गी से उत्फुल्ल कर देती थी—अन्दर तक सराबोर हो जाता था। पत्र पढ़ते-पढ़ते भावोद्रेक में गला रूँधा है, आँखों में पानी की चादर बुन उठी है और अक्सर कब होठों पर मुस्कराहट खेल गयी—पता ही नहीं चला।

दोनों मित्र-पुरुषों में एक-दूसरे के प्रति इतना अपनापा, एक-दूसरे की एक-एक साँस की अनुभूति करना, मन की आँखों से हर क्रियाकलाप पर नज़र रखना, एक के मन में क्या हो रहा है, बिना कहे ही उसे सुनते रहना, एक की चोट पर दूसरे को उसकी पीड़ा होना, एक-दूसरे के खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने, घूमने-टहलने, रोज़ी-रोज़गार, दवा-दारू, लिखने-पढ़ने, आने-जाने, परिवार के सभी सदस्यों, मित्रों के बारे में लगातार सरोकार रखना, एक-दूसरे की उपलब्धि को अपनी ही उपलब्धि मानना—आज व्यवहार में कहाँ मिलेगा इस लेन-देन वाली संस्कृति में! कुछ उद्धरण देने का मोह मैं छोड़ नहीं पा रहा हूँ—मालकिन [रामविलासजी की पत्नी] को चोट लगने पर केदारजी लिखते हैं—‘मालकिन को चोट आई। हमें भी दर्द हुआ।’ [8-4-74]

रामविलासजी के हाथ में फ़ैक्चर होने की सूचना अख़बार में पढ़कर केदारजी तड़फड़ा जाते हैं। न पहुँच पाने की बेबसी पर खीझते हुए लिखते हैं—‘न पहुँचने पर भी तुम्हारे पास हूँ। तुम्हें देख रहा हूँ। तुम रात को सो रहे हो, मैं आंखें खोल-खोलकर तुम्हारे हृदय की धड़कनें और उस घायल हृदय की दृढ़ता को देख-सुन रहा हूँ। यह न समझो कि कान ही सुनते हैं। आंखें भी ऐसे क्षणों में सुनने लगती हैं। कान तो दिन-भर के कोलाहल से सुन्न पड़ जाते हैं। तुम हंस भी रहे हो। यही ज्ञानदार आदमी की सबसे बड़ी पहचान है; तुम मेरी तरह रो नहीं देते.....ज़रूर कहीं-न-कहीं मेरे दिल पर कुछ आक्रांत होकर बैठ गया है और अपनी (दिल की) स्थिरता गवां चुका है। सब घर के लोग परेशान होंगे, व्याकुल होंगे। वह बड़ा घर जैसे स्वयं पट्टी बांधे पड़ा होगा।’ (17-3-63)

डाक से ‘निराला की साहित्य साधना’ पाने पर, केदारजी की आत्मविभोरता—‘देखा मेज़ पर ‘निराला की साहित्य साधना’ रखी है। बड़ी देर तक बार-बार आदि से अंत तक पन्ने खोल-खोलकर देखता रहा—न जाने क्यों पढ़ कुछ न सका। इतना भावोद्रेक हो गया कि सिवाय मुग्ध होने के कुछ न कर सका। मैं पुस्तक तो इस उद्रेक के कम होने पर पढ़ूँगा ही। अभी तो इसे रातभर बार-बार छुँगा-देखूँगा-पलटूँगा और उसी तरह सूँघूँगा जैसे कोई अपने लगाए पेड़ के बेले के फूलों को सूँघता है। बड़ी महक मारते हैं। खुश हूँ।...यकीन जानो कि मेरी मनोदशा इस समय वैसी ही है, जैसी एक मां की होती है, जिसने पुत्र को अभी-अभी जन्म दिया है और मुँह देखकर बार-बार चूम लेती है। हालांकि तुमने जनम दिया है; इस पुस्तक को। क्या खूब हूँ कि ममता उमड़ पड़ी है।’

हमारी नयी पीढ़ी इनसे क्या कुछ सबक लेकर अपने मनुष्य होने की प्रतीति करा सकेगी?

बाँदा में बैठकर केदारजी लखनऊ, आगरा, दिल्ली, बनारस में रह रहे राम-विलासजी का और इन जगहों पर रहते हुए रामविलासजी बाँदा और मद्रास में रह रहे केदारजी का मुज़रा लेते रहते हैं। जब चाहते हैं दोनों मित्र अपने-अपने हृदय को एक-दूसरे की फ्रीक्वेन्सी पर समस्वरित कर लेते हैं और एन्टिना की दिशा घुमाकर एक-दूसरे को देख-सुन लेते हैं।

स्वर्ण जयन्ती की सीमावधि पार करने वाली मैत्री की इस ऊर्ध्वमुखी यात्रा में, सान्निध्य के अवसर विरल ही हैं—मैत्री की गहराई और विस्तार को देखते हुए लगभग अविश्वसनीय, लेकिन मन के स्तर पर शायद ही कोई ऐसा अभागा दिन होगा जबकि दोनों गले न मिले हों, बतियाये न हों। रामविलासजी ने कई जगह उल्लेख किया है कि जब वे लिखते हैं तो केदारजी बराबर उनके ध्यान में उपस्थित रहते हैं। और केदारजी तो माला की तरह जपते ही रहते हैं कि 'रामविलास ने ही मुझे विवेक दिया—आदमी बनने में मदद की'।

ऐसा नहीं है कि उनकी मित्रता किसी स्वार्थ या 'परस्पर-प्रशंसा' की नीति की उपज है या उसके सहारे जीवंत है। इन पत्रों से आपको इस गिजगिजे-लिजलिजेपन की हवा भी न लगेगी। रामविलासजी साफ-साफ लिखते हैं—'तुम मेरे कहने से कुछ लिखने लगे यह तो अन्याय हो गा, दोनों के साथ। तुम अंचल नहीं हो। मेरी राय एक दोस्त की राय है। उसे सुनो—झगड़ो। करो हमेशा वही जो जंचे। कलाकार की यही परख है।' [8-12-43] केदारजी करते भी यही हैं। रामविलासजी केदारजी के हृदय में किस ऊँचाई पर विद्यमान हैं, हम-आप कल्पना से भी वहाँ नहीं पहुँच सकते, फिर भी वह रामविलासजी की हर बात को आप्तवाक्य मानकर नहीं स्वीकार करते। 'मुक्त छंद' और 'उर्वशी' को लेकर दोनों मित्रों के बीच जो कटाजुज्झ हुई है और रामविलासजी को अन्त में चाहे खीझकर या रीझकर पनाह माँगनी पड़ी, वह इसका दिलचस्प प्रमाण है। मुक्त-छंद वाली बहस तो बहुत ही दिलचस्प दौर से गुज़री, इतनी दिलचस्प कि केदारजी की मुक्त छंद के प्रति आसक्ति देखकर रामविलासजी को उन्हें एक पत्र में 'फ्रीवर्स मेरी जान' सम्बोधित करना पड़ा और 'उर्वशी' पर प्रहार-दर-प्रहार देखकर रामविलासजी ने लिखा 'उर्वशी के बारे में तुमसे आकर ही बातें करूँ गा।' [10-5-62]। एक पल में रीझते-से लगते हैं तो दूसरे में खीझते-से।

इस तरह के अनेक प्रसंग हैं। स्वयं केदारजी की कविताओं को लेकर दोनों के बीच जमकर धर्मयुद्ध हुआ है। केदारजी की कविताओं के जितने निर्मम आलोचक रामविलासजी रहे हैं, उतने तो उनके ईर्ष्यालु विरोधी भी नहीं रहे होंगे। लेकिन एक की निर्ममता के पीछे चिकित्सक की सदाशयता है तो दूसरे की निर्ममता के पीछे परपीड़क की रुग्ण तुष्टि।

दोनों मित्रों के बीच कई बार वैचारिक संघर्ष हुआ है और खुशी यह रही है कि जितना ही द्वन्द्व हुआ है, मित्रता की नींव उतनी ही पुख्ता हुई है, उसकी इमारत और बुलन्द हुई है। जहाँ कहीं मौका मिला है, एक दूसरे की जमकर खिंचाई की है, ताने-मेहने भी दिये हैं, शिकवा-शिकायत भी की है—पर अंतर्धारा के रूप में प्यार-ही-प्यार उमड़ता रहा है; जितनी तीखी शिकायत, उतना ही गहरा लाड़; बेतकल्लुफी ऐसी कि फागुन भी शरमा जाये, बड़े-बड़े मुँहफट पानी भरें। गजब यह कि इन सबमें रामविलासजी चार हाथ आगे। पर एक दूसरे के प्रति संवेदनशीलता की मर्यादा यह कि क्या मजाल कि एक दूसरे की कथनी-करनी से किसी के भी मन पर ‘दर्पण पर पड़े सांस के निशान’ जैसे दाग भी पड़ सकें।

दोनों मित्र एक दूसरे की चिन्ता उसी प्रकार करते हैं, जैसे कि कोई माँ अपने बच्चे की चिन्ता करती है। बच्चे को छींक भर आई नहीं माँ छटपटाने लगती है कि कैसे इसे इस तकलीफ से उबार लें—वह बच्चे की सारी पीड़ा अपने अन्दर भोगने लगती है। वही व्याकुलता यहाँ भी देखने को मिलती है। केदारजी को मोच आने की ख़बर पाते ही दिल्ली से रामविलासजी पोस्टकार्ड पर दौड़े हुए आते हैं और दवाइयों, सुझावों, हिदायतों की झड़ी लगा देते हैं। लगता है जैसे वे केदारजी को नादान बच्चा समझते हों। एक दूसरे और एक दूसरे की पत्नी की अस्वस्थता की ख़बर मात्र से दोनों मित्र आकुल-व्याकुल हो जाते हैं और तनिक भी सुधार की ख़बर सुनकर आनन्द से विभोर हो जाते हैं—दोनों ही मित्र आस्था और संघर्ष के उपासक जो हैं।

माँ अधिक परेशान न हो, इसलिए समझदार और संवेदनशील पुत्र अपनी तकलीफ़ अक्सर अपनी माँ से छिपाता भी है। यह प्रवृत्ति दोनों ओर दिखाई देती है। ठीक होने पर लिखते हैं—‘तुम्हें इसलिए नहीं बताया कि तुम चिन्तित होते।’

वैसे चाहे दोनों लोग महीनों पत्र न लिखें लेकिन जब किसी को किसी तकलीफ़ में महसूस करते हैं तो तुरन्त पत्र लिखते हैं और तब तक लगातार लिखते रहते हैं जब तक कि आश्वस्त नहीं हो जाते कि अब ‘सब कुछ ठीक-ठाक’ है।

‘मित्र-संवाद’ में केदारजी के स्वर में रामविलासजी के प्रति आश्वस्तपरक निर्भरता का स्वर सुनाई पड़ता है। कुछ-कुछ उस तरह की आश्वस्ति कि जैसे कोई अपने सरपरस्त से अपने मन की शंका-आशंका, चिन्ता-दुश्चिन्ता आदि कहकर निश्चित भाव से हल्का हो जाता है कि मैंने उन्हें बता दिया, अब वह जानें और उनका काम जाने। इस आश्वस्ति भाव की रक्षा रामविलासजी पूरे अपनापे और सम्मान से करते हैं, बिना बड़प्पन बघारे हुए—बहुत ही सहज आत्मीयता से, प्यार से उनकी शंकाओं, चिन्ताओं का समाधान करते हैं। समाधान मिल जाने पर केदारजी पूरी उत्फुल्लता से, बच्चों की निश्छल ईमानदारी के साथ आभारी होते हैं। यह आभार औपचारिकता का निर्वाह मात्र नहीं होता, मनुष्य होने का सहज और अनिवार्य प्रमाण होता है। बड़ी



दुःखद और चिन्ताजनक स्थिति यह है कि यह कृतज्ञता धीरे-धीरे गायब होती जा रही है और हम धीरे-धीरे मनुष्य न होने की ओर बढ़ रहे हैं।

रामविलासजी के प्रति केदारजी ने अक्सर कृतज्ञता ज्ञापित की है—अपने लेखों में, वक्तव्यों में, साक्षात्कारों में। पहले मैं इसे यूँ ही, मानता था। लेकिन इन पत्रों को पढ़ने के बाद, मैं इस कृतज्ञता के मर्म को समझ सका। सचमुच जिसे कहते हैं अँगुली पकड़कर सिखाना, कुछ-कुछ उसी प्रकार रामविलासजी ने केदारजी की चेतना को विकसित करने के लिए, अतुल जलराशि के नीचे कविता के खिले हुए फूल को हस्तगत करने के लिए, पग-पग पर स्कूलिंग की है और केदारजी ने बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उसे आत्मसात् किया है। यह कृतज्ञता आज की काम निकालू चापलूसी का पर्याय नहीं है, हृदय से निकली हुई सच्ची स्वीकारोक्ति है। कौन करता है, किसी के लिए इतना, और कोई करे भी तो कौन कृतज्ञ होना जानता है इस व्यावसायिक संस्कृति के युग में! आज की पीढ़ी अगर इनसे कुछ सीखना चाहेगी, तो ये पत्र उसे पूरी आत्मीयता से सिखाएँगे।

अपनी प्रिया प्रियम्बद श्रीमती पार्वती देवी को, मद्रास के विजय नर्सिंग होम में, महाकाल से संघर्ष करते हुए देखकर केदारजी बार-बार हिल जाते हैं, ऐसे में रामविलासजी लगातार पत्र में ऐसे-ऐसे उद्धरण बराबर लिखते रहते हैं जिनसे मनुष्य टूटने से अपने को बचा सकता है। वह अपने विवेक से केदारजी को बार-बार सहायता देते हैं, उन्हें ताकत देते हैं, कुछ-कुछ वैसे ही जैसे कृष्ण अर्जुन को उबारते हैं। यहीं रामविलासजी हमें यह भी बताते हैं कि शोक कैसे ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सकता है। निराला की 'राम की शक्तिपूजा' और वाल्मीकि के 'शोकः श्लोकत्वमागतः' का हवाला देते हुए वह लिखते हैं—'शोक, प्रेम से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ शोक, कर्म की ज़बरदस्त प्रेरणा बन सकता है।' [23-1-86] इसके पहले के एक पत्र में लिखते हैं—'वह [कवि] परिवार का है इसके साथ वह देश का है। देश का ध्यान उसे टूटने से बचाता है।' [22-12-85]

ये पत्र हैं तो सिर्फ दो व्यक्तियों के लेकिन इनमें दुनिया-जहान की बातें मिलेंगी—तटस्थता के साथ नहीं एक गहरे सरोकार के साथ। दुनिया में क्या हो रहा है और मनुष्यता के साथ उसका कैसा रिश्ता बन रहा है—मनुष्य पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, इस चिन्ता के साथ पड़ोस की घटना से लेकर विश्व के किसी भी कोने में घटने वाली घटना इन्हें उत्तेजित करती है। इन घटनाओं पर इनकी सार्थक टिप्पणियाँ हैं। ईराक पर अमरीका की अगुआई में बहुराष्ट्रीय सेनाओं के आक्रमण से केदारजी के मन में अमरीका की अमानवीय चौधराहट के प्रतीक राष्ट्रपति 'बुश' के प्रति कितनी नफरत और कितना गुस्सा है इसके लिए एक शब्द पर्याप्त है और वह है 'बुश' का हिन्दी रूपान्तर 'झाड़ी'। इस सन्दर्भ में केदारजी के 3-4 पत्र हैं और सबमें उन्होंने बुश को 'झाड़ी' ही कहा है। पढ़कर मज़ा आ गया।

वैसे तो दोनों मित्र एक दूसरे से लम्बे पत्रों की ही दरकार रखते हैं। छोटे पत्र मिलते हैं तो सन्तुष्ट नहीं होते—शिकायतें करते हैं। ये शिकायतें बड़ी मजेदार हैं। शिकायत भरे पत्र खूब गुदगुदाते हैं। भाषा को एक नयी दीप्ति देते हैं—शैली को एक नया अन्दाज़। रामविलासजी कहते हैं, मुझे ‘Quality’ के साथ ‘Quantity’ भी चाहिए। लेकिन जब दोनों मित्र किसी गहन वेदना में होते हैं, तो पत्र तो ज़रूर चाहते हैं, लेकिन सिर्फ दो पंक्तियों का, विस्तार की अपेक्षा नहीं करते।

दोनों प्रकृति के अन्यतम प्रेमी हैं। बहुत कम पत्र ऐसे हैं जिनमें मौसम का, हवा का, बादल का, वर्षा का, गर्मी का, सर्दी का, बसंत का, आस-पास के पेड़-पौधों का, फूलों का, गिलहरी का, बया का, धूप का, चाँदनी का जिक्र न हो और उन पर एक संक्षिप्त लेकिन टिकाऊ टिप्पणी न हो। कुछ पत्रों में तो जिक्र से आगे जाकर सुन्दर चित्रण तक मिलता है। गेंदा दोनों को बहुत प्रिय हैं और सरसों तो बारहों मास दोनों के हृदय में सरसराती झूमती रहती है। मौसम की सुघड़ रंगीनी दोनों को बावला बना देती है। नदियाँ इन्हें अंक में भरती हैं और समुद्र इन्हें बेसुध कर देता है। धूप तो दोनों मित्रों के प्राणों में बसती है। आगरा में जब यूक्लिप्टस के पेड़ों वाला मकान छोड़ना पड़ता है तो उसकी कचोट बहुत दिनों तक मन को सालती रहती है। दोनों मित्र प्रकृति की एक-एक हरकत को बड़ी पैनी निगाह से देखते हैं। ओस की बूँदें जब पत्तों से टपकती हैं उस पर रामविलासजी केदारजी को लिखते हैं ‘आम के पत्ते, पीपल के पत्ते, बरगद के पत्ते, सबसे ओस की बूँदें टपकने का स्टाइल अलग-अलग था।’ [17-12-82]

प्रकृति की ही तरह दोनों मित्रों के मित्रगण भी इनकी ज़िन्दगी के अनिवार्य हिस्से हैं। अमृतलाल नागर, नागार्जुन, शमशेर, नरोत्तम नागर आदि इनके अनेक मित्रों को इन दोनों मित्रों के नज़रिये से देखने का मज़ा ही कुछ और है। नागार्जुनजी के बारे में केदारजी लिखते हैं—उनकी घुमक्कड़ी और हर परिस्थितियों में रच-बस जाने को लक्ष्य करके—नागार्जुन ‘हिन्दुस्तान का नक्शा हो गये हैं। हर एक प्रदेश के अंक में हिल रहे हैं।’ [2-2-83]

इन पत्रों में कब, कहाँ, कोई दुर्लभ, सटीक और सीधा लक्ष्य बेध करने वाला कोई वाक्य मिल जाएगा, कहना बड़ा मुश्किल है। भारत में क्रान्ति के भविष्य को लेकर आज की क्रान्तिकारी पार्टियों पर रामविलासजी की यह चपत, हमें सोचने को विवश करती है—

‘भारत में क्रान्ति तो हो गी पर जरा देर से। क्रान्तिकारी पार्टियों के केन्द्रीय दफ्तरों में, उनके केन्द्रीय संगठनों में अंग्रेजी चलती है और अंग्रेजी के चलते मजदूरों की पार्टी में मजदूर कभी नेता नहीं बन सकता। सांस्कृतिक क्रान्ति हो गी, तब हर विश्वविद्यालय में एक बड़ा तालाब हो गा जिसमें सैकड़ों कमल खिले होंगे। इसमें और भी देर है।’ [24-7-78]

केदारजी मानते हैं—‘क्रान्ति भी अतीत के अन्दर से अपनी जड़ें निकालती है और

अंकुरित होकर जो भी है उसी से शाखें फैलाती है। Contradiction के साथ ही क्रान्ति का सौन्दर्य फूटता है—मन मोहता है।' [12-4-76]

उ० प्र० हिन्दी संस्थान पर रा० वि० जी का यह रद्दा बहुत सटीक है—'हिन्दी संस्थान कोई साहित्यिक संस्था नहीं है, इससे उसके पुरस्कार का महत्व हम आर्थिक दृष्टि से आंकते हैं।' [31-7-78]

पाश्चात्य आलोचना पर भी उनकी यह टिप्पणी दिलचस्प है—'पाश्चात्य आलोचना जहां शास्त्र है, वहां दरिद्र है। जहां कवियों के अनुभव प्रस्तुत करती है, वहां वह मनन के योग्य है।' [6-4-78]

पैसे का फूहड़ प्रदर्शन करने वाली दावतों पर भी एक झन्नाटेदार तमाचा—'ब्याह बारात में जाने पर असभ्यता की नुमाइश देखने को मिलती है। जी घिनाता है, हम पैसे वाले हैं, हमारे ठाठ देखो, महिलाओं की चमकदार साड़ियां देखो, दालदा में सना पक्वान्न चखो। भीतर से सब खोखले।' [12-12-88]

इसी संदर्भ में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय पर रामविलासजी की और दिल्ली पर केदारजी की टिप्पणियाँ बड़ी झनाकेदार हैं।

इन टिप्पणियों की ही तरह कब कहाँ चुपके से कोई चीज परिभाषित हो जायेगी शायद पहले न वह जानते थे और न हम जान सकते हैं। कला की यह परिभाषा इसी तरह फूट पड़ी है—

'मौत से आदमी की कभी न खत्म होने वाली लड़ाई का नतीजा है कला। जो अशाश्वत है, उसे दूसरों के लिए अपेक्षाकृत शाश्वत बनाकर छोड़ जाती है कला—शाश्वत का चित्रण करके नहीं, अशाश्वत को उसी क्षण में हमेशा के लिए बन्दी बना कर।' [रा० वि० 12-5-77]

इन पत्रों में बहुत सारे सन्दर्भ और बहुत सारी टिप्पणियाँ ऐसी हैं, जिन पर इन दोनों मित्रों ने शायद यहाँ पहली और अन्तिम बार प्रस्तुत की हों। जिगर साहब की शायरी पर, उनके कुछ शेरों के साथ केदारजी का चार-चार हाथ करना एक ऐसा ही वाक्या है। जिगर की शायरी को इतनी बारीकी से पहचानने और विश्लेषित करने की कोशिश, कविता की विश्लेषण शैली को एक नयी यथार्थपरक रोशनी देती है। दिलचस्प है यह लेखनुमा पत्र [4-3-61]

कीट्स, मिल्टन, वाल्ट ह्विटमैन, कालिदास, भवभूति, वाल्मीकि, कबीर, सूर, तुलसी आदि पर दोनों मित्रों की टिप्पणियाँ, इन कवियों की रचनाओं के कई नये आयाम उद्घाटित करती हैं। ये टिप्पणियाँ साहित्य की अनूठी निधियाँ हैं। सूर के एक छंद को लेकर दोनों मित्रों के बीच जो संवादनुमा विवाद चला, उससे उस छंद के अर्थ-दर-अर्थ खुलते चले गए, उसे एक नयी अर्थ-दीप्ति मिली। कबीर के दो दोहों की जो व्याख्या रामविलासजी ने की है वह कबीर को परखने की एक दूसरी ही कोशिश की

और संकेत करती है। भवभूति के बारे में यह कहना कि ‘केवल भवभूति को पढ़ने के लिए संस्कृत सीखनी चाहिए’—वाल्मीकि और कालिदास को ही सर्वश्रेष्ठ मानने वालों के लिए किसी चुनौती से कम नहीं हैं। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि रामविलासजी वाल्मीकि या कालिदास को कमतर आँकते हैं। वाल्मीकि की तो वह बराबर प्रशंसा करते हैं और कालिदास को पढ़ने के लिए केदारजी से कहते हैं ‘ससुरे संस्कृत पढ़’।

मैं इन पत्रों के गद्य पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं दर्ज कर रहा हूँ। रामविलासजी के गद्य पर केदारजी ने अपने पत्रों में कई जगह अपनी राय जाहिर की है। मैं तब लिखूँ जब मैं उससे अलग कुछ कहने की हैसियत रखूँ। केदारजी के गद्य पर स्वयं रामविलासजी ने टिप्पणियाँ की हैं अपने पत्रों में भी और कुछ विस्तार से उनका खुलासा किया है अपनी भूमिका में। लेकिन यहाँ मैं केदारजी के गद्य पर, रामविलासजी की जो प्रतिक्रिया है, उस प्रतिक्रिया पर, केदारजी की जो प्रतिक्रिया है, उस बारे में एक निवेदन जरूर करना चाहूँगा।

अपने गद्य की तारीफ केदारजी को पसन्द नहीं है और रामविलासजी हैं कि बार-बार उनके पत्रों के गद्य की तारीफ करते हैं। आज से नहीं—मैत्री और पत्राचार के प्रारम्भिक वर्षों से ही। 31-8-38 के पत्र में ही रामविलासजी केदारजी के गद्य से प्रभावित होकर, इनके प्रकाशन पर बल देते हैं—‘तुम्हारा पत्र बहुत सुन्दर था। गद्यकाव्य। गद्य पर सुन्दर आधिपत्य। बाद में ये पत्र प्रकाशित होने चाहिए।’ अपनी गद्य-प्रशंसा को केदारजी अपनी कविता को उपेक्षा महसूस करते हैं, तभी तो एक पत्र में लिखते हैं कि पता होता कि मेरे गद्य के आगे मेरी कविता को महत्त्व न मिलेगा तो मैं पत्र ही नहीं लिखता। खैर अब तो गलती कर ही बैठे। अभी तक तो केवल रामविलासजी ही प्रशंसा करते थे, अब तो अनगिनत प्रशंसक हो जाएँगे। एक गलती तो यह की कि पत्र लिखे—जैसा कि उन्होंने खुद कहा है—और दूसरी गलती यह की कि इन पत्रों को छपने दिया—यह मैं कह रहा हूँ।

कविता की प्रशंसा पर खुश होना और गद्य की प्रशंसा पर चिढ़ना! आखिर क्यों? दोनों उन्हीं की संतति हैं। मुझे लगता है चूँकि केदारजी कविता के लिए हाड़-तोड़ किस्म की मेहनत करते हैं, उसके लिए कलकते हैं, उसे बार-बार पकड़ने की कोशिश करते हैं और वह बार-बार फिसल जाती है, पकड़ में कभी-कभी ही आती है—इसलिए इससे उन्हें प्यार की इन्तिहा तक प्यार है—मशक्कत से मिली है न! और गद्य! यह तो अनायास मिल गया है, इसलिए इसे वह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं समझ पाते। केदारजी में कविता के लिए इतनी निष्ठा, तड़प और समर्पण है कि उसके सामने प्रिया प्रियंवद तक को महत्त्व नहीं देते, और यही उन्हें अपने गद्य की प्रशंसा पर खिझवाता है। कविता लिखते समय यदि कवि-प्रिया बिना कुछ कहे भी पलंग पर आ विराजती हैं तो केदारजी कहते तो कुछ नहीं पर उन्हें नागवार जरूर लगता है और इसकी निरीह,

शिकायत रामविलासजी से करने से नहीं चूकते। हालाँकि एक बार मद्रास से लिखते हैं—  
'अब गद्य ही गद्य दागूंगा।' पर भविष्यकाल के लिए किया गया यह संकल्प भविष्य की ही प्रतीक्षा में है।

इन दोनों मित्रों के गद्य को पढ़ने के बाद हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना-क्षमता का एक नया आयाम खुलता है। जो लोग अज्ञानवश या सिर्फ चालाकीवश यह कहते हैं कि हिन्दी अभी समर्थ भाषा नहीं बन सकी है—उनके लिए वैसे तो रामविलासजी का ही अकेला गद्य चुल्लू भर पानी मुहैया करा देता है—बशर्ते की उनमें तनिक भी हया बाकी हो, तो फिर दोनों की सम्मिलित गद्य-शक्ति की चकाचौंध में उनकी क्या स्थिति होनी चाहिए, कल्पना की जा सकती है।

इन पत्रों में लिखित भाषा का व्याकरण पानी भरता नज़र आता है। लगता हम उन्हें पढ़ नहीं रहे हैं, बल्कि सुन रहे हैं। तभी तो केदारजी पत्र लिखते-लिखते चौंककर पूछ बैठते हैं—'सुन रहे हो न?'

उम्र के लिहाज़ से वैसे तो दोनों मित्र बूढ़े हो चले हैं, मित्रता भी पचासा पार करके साठा के नजदीक पहुँच रही है, पर पत्रों में कहीं, इनके बुढ़ापे की झलक तक नहीं मिलती। उसमें तो यौवन की वही छलछलाती उमंग, यौवन का वही उल्लास, उत्फुल्लता, साहस, जिन्दादिली, संघर्ष और महाकाल को हड़काए रहने का दबंग स्वर ही गूँजता है। इन पत्रों से हम एक सार्थक और सम्पूर्ण जीवन जीने का रहस्य हस्तामलकवत् कर सकते हैं। जिन्दादिली तो इन पत्रों का प्राण है—पढ़िये और मन ही मन गुदगुदी से भीजते रहिये।

मित्रता एक महत्त्वपूर्ण जीवन मूल्य है—इसे हम इन पत्रों से ही प्रमाणित पाते हैं। मित्रता करने के पहले हमें अपने सम्भावित मित्र की कमज़ोरियों से परिचित होना अनिवार्य है। अगर हम उन कमज़ोरियों से भी उतना ही प्यार कर सकें जितनी उसकी अच्छाइयों से तब तो हमें मित्रता का हाथ बढ़ाना चाहिए, अन्यथा हाथ खींचे रहना ही दोनों के हित में है। अपेक्षा मित्रता का दूसरा बड़ा शत्रु है। मित्रता के बीच में इसे कभी नहीं आने देना चाहिए, इसके आते ही मित्रता शत्रुता में तब्दील होने लगती है। ये सारी बातें ये पत्र हमें बताते हैं। इन दोनों मित्रों की मित्रता, केदारजी की कविता के शब्दों को उधार लेकर कहूँ तो कहूँगा कि 'फल के भीतर फल के पके स्वाद' की—सी तृप्ति देती है—मन में बार-बार हुड़क-सी उठती है कि काश मैं भी ऐसी मित्रता जी सकता। हम भले ही ऐसी मित्रता न जी सकें लेकिन मैं अपने को बड़भागी मानता हूँ कि मैं ऐसी मित्रता को जीते देख रहा हूँ और उससे प्रेरित हो रहा हूँ—मनुष्य होने का और मनुष्य होकर जीने का रहस्य मेरे सामने खुल रहा है। मैं अन्दर तक मित्रता-रस से भीज और सीझ रहा हूँ।

दोनों मित्र-पुरुषों में—को बड़ छोट? कहत अपराधू।

दोनों मित्र एक दूसरे को पाकर धन्य हैं और गौरवान्वित हैं—यह इन्हीं की स्वीकारोक्ति है। मैं अपने को इनसे दुगुना भाग्यवान और गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मुझे दोनों गौरव-पुरुषों का अकुंठ स्नेह प्राप्त है। इन्हीं के साथ अगर मैं अग्रज तुल्य, इस यज्ञ के सम्पन्नकर्ता श्री शिवकुमार सहाय के स्नेह को शामिल कर लूँ तो मेरी गर्वोक्ति है कि—मो सम कौन इहाँ बड़भागी?

‘मित्र संवाद’ जिन-जिनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग से आप तक पहुँच सका, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित न करना मनुष्यता का अपमान करना होगा। इसके प्रकाशक सहायजी के प्रति कृतज्ञता का कोई तुक नहीं है क्योंकि यह सब तो उन्हीं की माया है। लेकिन इसके मुद्रक शान्ति मुद्रणालय के रमेशजी ने जिस लगन और निष्ठा से अनेक असुविधाओं को सहते हुए इस काम को एक निश्चित समय-सीमा में सम्पन्न किया इसके लिए निश्चय ही मैं उनका आभारी हूँ। इम्पैक्ट के भाई राधेश्यामजी अग्रवाल ने इस पुस्तक के आवरण को अतिरिक्त तवज्जो देकर, अपनी कला से सजाया, सँवारा और सार्थक आकर्षण प्रदान किया—मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

इस पुस्तक के सम्पादन-प्रकाशन के दौरान मैं अपने कई मित्रों और सम्बन्धियों के पत्रों का सम्मान नहीं कर सका—इससे उन्हें जो तकलीफ पहुँची होगी, उसके प्रति मैं क्षमा-याचना के साथ कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पत्नी श्रीमती सावित्री, पुत्र सौरभ और पुत्रियाँ श्रुति व स्मृति के प्रति भी इधर बहुत उपेक्षा बरती है। इनको मिलने वाले समय में से कटौती की है—दशहरे के अवकाश में मेरी प्रतीक्षा ही उनके हाथ लगी—इसलिए इनका ऋणी हूँ।

अन्त मैं यही मंगल कामना है कि इन दोनों श्रेष्ठ मित्र-पुरुषों की स्नेहिल छाया हम सबको आगे आने वाले अनेक वर्षों तक मिलती रहे। दोनों ही मित्रों को कर्मठ और सार्थक अस्सी वर्ष जीने के लिए हार्दिक बधाई और आशीष की आकांक्षा में विनत प्रणाम!

विजयदशमी, 1991,

—अशोक त्रिपाठी

## दो

‘मित्र संवाद’ का पहला संस्करण अक्टूबर, 1991 में प्रकाशित हुआ था। साहित्य भण्डार, इलाहाबाद से यह नया संस्करण 18 वर्ष बाद जनवरी 2010 में प्रकाशित हो रहा है। 1991 के संस्करण में उस समय उपलब्ध 25.4.1991 तक के पत्र प्रकाशित हैं। इस नये संस्करण में 25.4.1991 के पहले के 28 पत्र और शामिल किये गये हैं जो उस समय उपलब्ध नहीं हो सके थे। इन 28 पत्रों में रामविलासजी के 16 पत्र हैं और केदारजी के 08 पत्र। इनके प्रकाशन से संवाद में कहीं-कहीं जो गतिरोध था उसमें काफी हद तक गतिशीलता आ गयी है। रामशरण शर्मा ‘मुंशी’ के 04 पत्र हैं। मुंशीजी के इन

04 पत्रों के प्रकाशन से, इनके साथ केदारजी का एकालाप कुछ हद तक संवाद में तब्दील हो गया है।

25.4.1991 के बाद 97 पत्र इसमें और संकलित हैं। इनमें से रामविलासजी के 60 पत्र हैं और केदारजी के 37 पत्र अंतिम पत्र रामविलासजी का है जो 19.7.1991 का लिखा है। केदारजी का अंतिम पत्र 28.7.1998 का है। इसके बाद 20.8.1998 से लेकर 19.7.1999 तक के 06 पत्र केवल रामविलासजी के हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि केदारजी ने पत्र लिखे ही नहीं। केदारजी ने रामविलासजी के सभी पत्रों के जवाब दिये हैं, पर वे उपलब्ध नहीं हो सके।

इस नये संस्करण में एक नया अध्याय 'परिशिष्ट' का जोड़ा गया है। इसमें रामविलासजी और केदारजी के उन पत्रों को संकलित किया गया है, जो 'मित्र संवाद' के 1991 के संस्करण के प्रकाशन के दौरान मेरी शंकाओं के समाधान या स्पष्टीकरण के लिए दोनों मित्रों ने मुझे लिखे थे। मैंने जो पत्र दोनों मित्रों को लिखे थे प्रयास के बावजूद, वे मुझे नहीं मिल सके। इसलिए 'परिशिष्ट' में केवल समाधान या सुझावपरक पत्र ही हैं—शंकापरक नहीं। इन पत्रों की संख्या-22 है—14 रामविलासजी के तथा 08 केदारजी के। इस तरह नये संस्करण में कुल 147 पत्र ऐसे हैं जो 1991 के संस्करण में नहीं थे।

'मित्र संवाद' के इस संस्करण के प्रकाशन के दौरान, दोनों मित्रों के पत्रों को फिर से पढ़ने का मौका मिला। इस पत्रों से दुबारा गुजरना यह अहसास नहीं देता कि इन्हें तो पहले 3-4 बार पढ़ चुका हूँ। लगा कि जैसे पहली बार पढ़ रहा हूँ। चिर नूतनता की अनुभूति कराने वाले इन पत्रों से गुजरना अपने आपको एक नयी अनुभूति के साथ आपको आविष्कृत करना भी है। जितना ही हम एक नये रामविलासजी और नये केदारजी को इसमें अनुस्यूत पाते हैं उतना ही अपने को कसने और परखने के लिए एक कसौटी और चुनौती भी पाते हैं। एक ओर जहाँ इन पत्रों में बहुत ही अनमोल-अछूता और अनुभव प्रसूत जीवन और चिंतन का गंभीर निचोड़ मिलेगा, बिना किसी औपचारिक भूमिका के सहज स्फुरण के रूप में, वहीं भाषा की ऐसी रवानगी मिलेगी, ऐसी-ऐसी उपमाएँ, रूपक, मुहावरे, शब्दों की अजब-गजब गठन मिलेगी, बिना किसी बनाव-शृंगार के—कि क्या कहने। और ये सब आपको कब कहाँ और कैसे हस्तामलकवत् हो जायेंगे पूर्वानुमान नहीं किया जा सकता। ऐसी बेलौस और अकुंठ भाषा बड़े से बड़े नामीगिरामी गद्यकारों के यहाँ भी नहीं मिलेगी। क्योंकि यह कीमियागीरी का कमाल नहीं है। यह दिमागी पच्चीकारी की भाषा नहीं है—यह दिल की अतल गहराइयों से निकली सहजोन्मेष की भाषा है, अपने ठेठ देसी बनक और ठसक के साथ। यहाँ कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं बिना किसी हस्तक्षेप के, ताकि पाठक अपने तरीके से इनका आस्वाद ग्रहण कर सकें वैसे भी बकौल रामविलासजी 'गद्य को भाष्य की ज़रूरत नहीं है।' कविता और साहित्य पर ये टिप्पणियाँ 'अवस देखिये देखन जोगू' :—

- ◆ डियर वकील साहब कविता और तर्क में अंतर है।.....कविता की भाषा इंद्रियों की भाषा है। संगीत और मूर्ति विधान द्वारा कवि वह सब कह देता है जो तर्क द्वारा दार्शनिक नहीं कह सकता। (रा० वि० शर्मा : 25.12.1956)
- ◆ सांस का जोर मेरी पंक्तियों में आवे, मेरी यही साधना है।  
(के० ना० अ० 5.12.1943)
- ◆ शुद्ध साहित्य की आवाज़ गलत है। इससे न जीवन का कल्याण होता है, न समाज का। फिर जब भौतिक जगत का ही अंश यह मस्तिष्क है तब हमारी विचार और भावधारा भी तो भौतिक जगत की अंश है। मानसिक जगत ऐसी कोई जगह है नहीं। फिर यह कहना कि उस जगत की ही सत्ता की वजह से यह भौतिक जगत स्थित है, सर्वथा भ्रम मूलक है। थोड़े में कहूं तो यही कहूंगा कि पिनक का साहित्य ही शुद्ध साहित्य है।.....वर्णहीन समाज की ओर अग्रसर करने वाला निर्वैयक्तिक साहित्य ही अपनी महत्ता रखता है। शेष साहित्य तो शून्य साहित्य है।  
(के० ना० अ० : 26.8.1947 का पत्र मुंशी को)
- ◆ तुम साहित्य में उस प्रक्रिया (आर्थिक प्रक्रिया) को घुमाव-फिराव के साथ रूप बदल कर साहित्यिक रूप में व्यक्त किये जाने की बात लिखते हो। मैं उसे साहित्यिक रूप में नहीं, जीवन के रूप में व्यक्त होने देना चाहता हूं। सम्भवतः यही मतभेद है। बिना ऐसे किये हमारी पिछड़ी जनता हमारे स्तर तक नहीं आ सकती। पहले वह यहां आ जाये फिर आगे बढ़िये। इसलिए आज का साहित्य जीवन को अधिक अपनाये और उसी के अनुरूप हो चाहे उसे साहित्यिकता खोनी ही पड़े, तो मैं लाभ ही लाभ देखता हूं।  
(के० ना० अ० 5: 18.10.1947)
- ◆ कविता में तस्वीर बननी चाहिए, सूक्ति काफी नहीं।  
(रा० वि० शर्मा : 17.4.1958)
- ◆ नयी कविता की समस्या दूसरे को स्पर्श न कर सकने की समस्या है।  
(के० ना० अ० : 24.2.1959)
- ◆ अच्छी कविता तभी बनती है, जब कवि उसी में डूब जाता है और आये हुए आषाढ़ी बादल की तरह बरस पड़ता है। मैं इतनी तन्मयता की अवस्था में—योगावस्था में—नहीं रह पाता। यह मेरे व्यक्तित्व की दुर्बलता है। मैंने अपने जीवन को इतने गहरे जा कर आज तक नहीं देखा, जिसका जिक्र तुमने आगे में इस बार मुझसे किया था।  
याद है न। तुमने कहा था कि अतल में भी फूल खिला पाया जाता है। टनों पानी के बोझ के नीचे। वही फूल है सच्ची सुन्दर कविता।.....मैं वह फूल वाली



#### 34 / मित्र संवाद

- कविता नहीं दे पाता। पर निराशा नहीं हूँ डियर! लालसा तो वैसी ही कविता लिखने की है। (के० ना० अ० : 13.3.1959)
- ◆ साहित्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, चाहे वह मेरे विरुद्ध हो या किसी अन्य के। (के० ना० अ० : 19.1.1970)
  - ◆ कोई कविता हो वह वरण से पायी जाती है हरण से नहीं।..... यहां तो कविता वाले सोच-विचार से काम नहीं लेते। झट से पालने में पड़े बच्चे की तरह जो भी हाथ में आया मां का स्तन समझ चिचोरने लगते हैं। (के० ना० अ० : 29.10.1970)
  - ◆ विचार भूमि पर निरन्तर रहने वाला व्यक्ति, जहां उसकी फसल चरता है, वहां वह भरपूर चरा भी जाता है। (के० ना० अ० : 10.11.1961)—संदर्भ : जब 'निराला की साहित्य साधना' का दूसरा खण्ड पूरा करते-करते रा० विलासजी दुबले हो गये थे।)
  - ◆ कविता कोई फैशन की नयी आयी साड़ी नहीं है कि जो चाहे देख कर आंख मुलमुलाने लगे। (के० ना० अ० : 14.12.1973)
  - ◆ नई कविता के प्रवाह में हमारे कवियों की वर्णन क्षमता का हास हुआ है। (रा० वि० श० : 6.4.1978)
  - ◆ क्रांति की तरह कविता सुविचारित योजना और स्वतःस्फूर्त कार्यवाही का परिणाम होती है। इन दोनों का अनुपात हर कविता या क्रांति में एक-सा नहीं रहता।.....कविता अपना मर्म शब्दों के भीतर छिपाये रहती है और उस तक लोग धीरे-धीरे पहुंचते हैं। Never seek to tell thy love. Love never told can be. (रा० वि० श० : 9.11.1982)

#### कुछ और टिप्पणियाँ :-

केदारजी और रामविलासजी प्रचलित अर्थों में, प्रेम को जिस रूप में जाना समझा जाता है, उस प्रेम को नहीं समझ पाते—ऐसी घोषणा केदारजी करते हैं, पर सच्चाई कुछ और ही नज़र आती है—

‘तुम्हारी समझ में प्रेम नहीं आता और मेरी भी समझ में प्रेम नहीं आता।’ (के० ना० अ० : 11.4.1944) लेकिन आगे इसी पत्र में लिखते हैं—‘आगरा के ताजमहल के संगमरमर पर अपना हाथ फेरना चाहता हूँ और मुमताज की शीतलता को गरमाना चाहता हूँ।’

केदारजी उन वकीलों में नहीं थे, जो मुक्किलों को केवल चारा समझते हैं। रा० विलासजी ने पत्र लिखकर बुलाया कि 10 मार्च को शिवमंगल सिंह सुमन आ रहे हैं, वह भी आ जाएँ। 8.3.1945 को अपनी असहायता इन शब्दों में व्यक्त करते हैं—

‘छोड़कर जाता हूँ तो मुवक्कल मरता है।’ क्योंकि उस दिन एक केस की बहस करनी थी।

- ◆ भाषा विज्ञान लिखों चाहे जो लिखो : तुम लिखोगे तो कमाल का। अब फुरसत ही फुरसत है तुम्हें। डटकर काम करोगे। अरे भाई एकाध कविता तो काँख मारो।  
(के० ना० अ० : 8.3.1956)
- ◆ वैज्ञानिक कवि हृदय होते हैं, वरना सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रकृति के स्पन्दनों को ग्रहण ही कैसे कर सकते और उनसे नियमों की खोज करते। डरविन क्या सभी वैज्ञानिक ऐसे ही होते हैं। परन्तु सौभाग्य तुम्हारा कि तुम उन लोगों के ग्रन्थ पढ़ लेते हो। हम हैं यहां कि भूसा खाते रहते हैं। (के० ना० अ० : 8.3.1957)
- ◆ किसी से मिले भी कि यों ही सटक आये। (के० ना० अ० : 24.3.1957)
- ◆ महादेव साहा ने जब केदारजी को रा० विलासजी के 1857 के काम पर कुछ लिखने को कहा तो इन्होंने रा० विलासजी को अपनी असमर्थता बताते हुए लिखा—‘विला वजह’ 57 के कान में तिनके से कुरेदना होगा।’ (18.7.1957)
- ◆ नये साल की बधाई लो। इस वक्त सबेरे का सूरज बादलों का लिहाफ ओढ़े अपने आसमानी घर में शायद चाय पी रहा है। वहां कोई पकौड़ी बनाने वाला या मुंगौड़ा बनाने वाला नहीं है; इससे वह केवल चाय पी रहा होगा। अगर बादल जरा भी फटा तो वह फौरन धरती की ओर मुंगौड़ेवाली की दुकान तक आ जाएगा।  
(के० ना० अ० : 1.1.1958)
- ◆ घर में औरतें चूल्हा को गरमाये खुद गरम हो रही हैं। (वही) 1.1.1958 का पूरा पत्र ही भाषा के ऐसे ही टकसाली अंदाज़ से अँटा पड़ा है।
- ◆ हिन्दी के प्रकाशक निराला को चाभ बैठे। (के० ना० अ० : 11.8.1958)
- ◆ यहां गरमी रानी दिन में धूप की जलेबी बनाने लगी हैं।  
(के० ना० अ० : 7.5.1958)
- ◆ इस समय दीवाल घड़ी में ४.४५ हुआ है। फिर भी बाहर लू लपट मार रही है और जमीन की देह चाट कर पानी सोख रही है।  
(के० ना० अ० : 22.5.1966)
- ◆ गर्मी तो तेज धार की तरह लगती है और खून न बहा कर पसीने- पसीने कर देती है। पानी भी बरसता है तो जैसे मुरदों पर चांदी के गुलाबपाश से गुलाबजल छिड़का जा रहा है। हद्द हो गयी मेघराज तुम्हारी दया दक्षिणा। वह भी सरकारी हो गये हैं।  
(के० ना० अ० : 29.7.1966)
- ◆ यहां गरमी ऊंट पर चढ़ गयी है। (के० ना० अ० : 14.5.1969)
- ◆ सूरज ने 11 बजे दिन को अपनी मुड़िया निकाली तो हमने धूप लोकी और

कपड़े उतार कर नहाये; पर फिर वही मुंह चोरव्वल और अब भी नजर नहीं आ रहे गरम मिजाज सूर्य। (के० ना० अ० : 3.3.1982)

- ◆ दिन गरम होने लगा जैसे तुम्हारे घर का गरम हलवा। (के० ना० अ० : 23.2.1960)
- ◆ इधर चुनाव का दमकला दहाड़ रहा है—हटो बचो करके दौड़ रहा है। बांदा बैल को हुरेटता है या बैल उसे। देखो क्या हो।..... दिन तो धूप लपेटकर गरमाता रहता है। (के० ना० अ० : 20.1.1967)
- ◆ पंतजी को लखटकिया पुरस्कार मिला। अब सोने की डाल पर सुक बैठेगा। (के० ना० अ० : 1.5.1969)
- ◆ मेज पर रखा हुआ तुम्हारा बंद लिफाफा मेरी उंगलियों से खुलने के लिए लालायित पड़ा था। मैंने उसे अपने दिल की तरह खोला। मैंने पढ़ा नहीं—वह खुद ही बोलने लगा। (के० ना० अ० : 13.3.1959)

इस तरह के अनेक अंश इन पत्रों में बिखरे पड़े हैं। विषय-वस्तु के साथ-साथ भाषा की अनेक अर्थगर्मित, भावभरित, बहुरंगी छवियाँ, इन पत्रों में बिना किसी भाषाई पाखंड में सहज-स्वाभाविक रूप में उपलब्ध होती हैं।

ये पत्र हिन्दी साहित्य की अनूठी धरोहर हैं। सूचना-क्रांति के इस दौर में, आज संचार माध्यमों की बाढ़ में पत्र-साहित्य, साहित्य की विलुप्त प्रजाति में तब्दील होने की कगार पर है। ऐसे में इस विलुप्त होती प्रजाति को संरक्षित और प्रसारित करने की नीयत से मित्र-संवाद जैसी नायाब पूँजी को एक नये रूप में, कुछ नये पत्रों के साथ इसे तथा समूचे केदार-साहित्य ('पतिया' को छोड़कर) को फिर से प्रकाशित करने का जो स्तुत्य कार्य साहित्य भंडार के स्वत्वाधिकार श्री सतीष चन्द्र अग्रवाल ने किया है, इसके लिए वह सचमुच बधाई के पात्र हैं।

14 जनवरी, 2009  
दिल्ली

अशोक त्रिपाठी

मित्र संवाद  
भाग-दो

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट  
बांदा (उ० प्र०)

दिनांक ८-३-१९६४<sup>१</sup>

प्रिय डाक्टर,

कल पोस्टकार्ड महोदय हाथ आये। हमने उनसे बात की। बड़े संकोच से बोल रहे थे। बोले भी तो बहुत कम। खैर हमने तो उनका स्वागत किया ही। बहुत अर्से के बाद मुलाकात हुई थी न। उन्हीं ने बताया कि तुम्हारा फ्रैक्चर ठीक हो गया है। हमें खुशी हुई कि मेरे यार को दण्ड पेलने का बल-बूता मिलेगा। लेकिन शायद अब भी कुछ मजबूत नहीं हुआ क्योंकि लम्बा लिखने से जी चुराता है। और पोस्टकार्ड की पीठ पर कुछ ही नीले [नीली] खरोंचे [डाल] सका है। हाथ ही तो है। फिर तुम्हारा हाथ है न। उसकी आदत पोथी लिखने की रही है। पत्र नहीं। मेरे लिए तो तुम्हारे [दो] अक्षर ही मेरे भाग्य का निबटारा कर देते हैं—करते रहे हैं।

कविता के लिए कच्चा माल खूब जमा कर चुके हो। चाहो तो हमारे मनः प्रदेश में भेज दो। हम ले लेंगे। हमारे यहां खपत हो जायेगी। 'हम अच्छा ही नहीं—खराब माल भी तैयार करते हैं [और] अच्छे के भाव में अखबारों में टेल देते हैं।' [अब तुमसे] कविता न लिखी होगी—चाहे तुम जितनी बकवास करो। विचार के क्षेत्र में पहुंच कर आदमी विवेक से काम लेता है—भावना से नहीं। तो जनाब तो गांव की अमराई से कूच कर गद्य के अखाड़े में कुशती लड़ने चले गये हैं। वहां तो बाजियां जीतने का सेहरा मिल सकता है। किसी के अन्दर की आंख की छवि नहीं मिल सकती।

'धर्मयुग' में हमने देखा 'हिन्दी में दुष्टों की कमी नहीं है'। ....कि हाथ मिलायें और खाने पर बुलायें। ....कि तुम दावत [पर] नहीं आ सकते। यह सब अदालती दुनिया के हथकंडे लग रहे [हैं]....। हम उस लेख के लबेद यहां पर भी उद्धृत करते पर हमारे यहां [के] सबसे धनी सेठ श्री हरीकृष्ण उसे [उस] अंक को उठा ले गये। हम उनसे न मांग सकते हैं—न मंगा सकते हैं—न वे भेज सकते हैं। इसलिए डियर विवश हूं कि उसके बारे में कुछ प्रसंगवश कह सकूं।

1. पानी गिरने से इस पत्र के कुछ शब्द मिट गये हैं। [ ] के अन्दर के शब्द अनुमान से दिए गए हैं। जहाँ अनुमान नहीं लग सका उसे वैसा ही छोड़ दिया गया है। जहाँ....ऐसे निशान हैं, वे ऐसे ही स्थल हैं।  
[अ० त्रि०]

कचहरी ने मेरे कच तो नहीं हरे? मेरा समय ज़रूर हर लिया है। बड़ी पेटू है। पेट ही नहीं भरता चाहे जितना समय दो। खाये चली जाती है। मालूम होता कि जनम की भूखी रही है। शायद यह इसी तरह हमेशा से सबका समय खाती चली आयी है और खाली चली जायेगी। इस पर भी हम कुछ-न-कुछ लिख ही लेते हैं। एक उपन्यास पढ़ा 'Helen of Troy'। दूसरे पर चल रहे हैं 'The Age of Reason.' D. H. Lawrence की पुस्तक 'Mornings in Mexico and Etruscan Places' भी पलटते चलते हैं। कुछ novels by Albarto Moravia के पढ़ चुके हैं। मगर दोस्त! वाह रे प्रेमचंद-तुम सा दूसरा कोई न मिला। कलम है कि सबको मात देती है। कल ही कचहरी में एक क्लर्क 'गोदान' पढ़ते-पढ़ते बोला कि ऐसा सजीव चित्रण करते हैं [कि पढ़ता हूँ तो एक-एक स्थल] पढ़ता रह जाता हूँ। [यह प्रति] वही है जो तुमने मुझे आगरे की दूकान से अपने नाम दाम डलवा कर ८ वर्ष पहले दी थी।

सरसों को देखा तो है लेकिन जी भर कर नहीं। इस बार हम खेतों के साथ लहराये नहीं-न हवा के साथ झूमे। मन पर मुकदमों के (की) पदचाप रखे एक खास अदा से कचहरी जाते-आते हैं और पेट को अर्थ से भरते हैं। मगर मौसम अब भी हावी हो जाता है। हम बेतरह बेताब हो उठते हैं। मगर आदमी [अपने] कर्तव्य के मुगदल भाँज कर मौसम को पछाड़ देते हैं। बड़ा दर्द होता है पर करें तो क्या करें।

तुम तो आओगे नहीं। हमारे घर में हमें तुम न मिलोगे। मगर आना पड़ेगा। जब मेरी बीमारी तुम्हें पुकारेगी। वह भी तो ससुरी जल्दी नहीं आ सकती। अब दो ही चार दिन में हमारी घरवाली इलाहाबाद जाने वाली है। तब हम और हवा साथ-साथ झूमेंगे।

सस्नेह, तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

[अगर] शमशेर आयें तो प्यार [कह देना]। बड़ा ही निश्चल [आदमी है]। देखो, स्नेह से-पास से बोलना-दूर कहीं विदेश से न बोलना। वरना वह बात न कहेगा। मेरा सलाम देना।

केदार

R. B. Sharma

M. A. Ph. D. (Luck)

HEAD OF THE DEPARTMENT OF ENGLISH

B. R. College, Agra

प्रिय केदार,

30, NEW RAJAMANDI

AGRA

१-५-६४

पहली मई का अभिवादन। जब विश्व सर्वहारा आन्दोलन में भयानक फूट पड़ी हुई है और भारतीय साम्यवादी अपने मतभेद लेकर कचहरी पहुँच रहे हैं। काम करने

के जो ढंग रहे हैं, मार्क्सवाद को समझने का जो तरीका रहा है—यानी प्रचार ज्यादा, कार्यकर्ताओं में समझ कम, मौलिक चिन्तन का अभाव—उसका यह सब लाजमी नतीजा है। चीनी नेता साम्राज्यवाद के खिलाफ गर्म लफ्फाजी करके उसकी बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं। त्रात्स्की का विश्व क्रांतिवाद वहाँ पुनः अवतरित हुआ है।

यहां शमशेर आये और गये। साथ में नयी कविता लाये थे। उम्र २५-२६ साल। सुना है कि उसके बाप शमशेर से एक साल छोटे हैं। कुछ बीमारी वगैरह का चक्कर है। इसलिए इश्क मजाजी के मामले में वह फ्रीलांसर शमशेर के गले पड़ गई हैं और उनसे चप्पलें उठवाती हैं और पेटिकोट धुलवाती है। यहाँ के लोग शमशेर से जितना प्रेम करने लगे, उतना ही उस नयी कविता से घृणा। उसे कुछ लिखने का ग़रूर भी है यद्यपि अभी महज बी० ए० पास है और यहाँ एम० ए० प्री० का इम्तहान देने आई थी। कुछ दिन यहाँ अमृतलाल नागर रहे। रोज़ साथ रहता था। दो चार बाल पक चले हैं। शरीर कुछ और भारी हो गया है। ज़िन्दादिल पहले जैसे हैं। लेकिन ज़िन्दादिली पर बोझ बहुत भारी है। शरद के पथरी थी, आपरेशन हुआ। खैर ठीक है। बड़े लड़के की बहू के टी० बी० था। ब्याह के पहले मालूम न था। दो आपरेशन हुए हैं। उसके एक बच्चा भी है। लड़के को कोई सुख नहीं है। भरी जवानी में अकेला रहने पर मजबूर है। इससे अमृत काफी परेशान रहते हैं। कुछ दिन हुए, वह लखनऊ वापस गये।

दो दिन के लिए मुंशी आये। सर के बाल मुझसे ज्यादा गिर गये हैं। स्वास्थ्य यों ही है। एक दिन बरामदे में बैठे हुए मैंने तुम्हारे बहुत से पत्र उन्हें पढ़ कर सुनाए। तुम्हारे गद्य के हम दोनों ही कायल हैं। और एक खत में तुमने लिखा था निराला जी पर मेरी कविता के बारे में—मार हाथी और स्यार भर दिए हैं, इस पर हम दोनों इतना हंसे कि आधा पन्ना दस मिनट में न पढ़ पाये।

आजकल शेक्सपियर पढ़ रहा हूँ। एक समस्या है। घृणा, भय, शोक आदि के भाव जीवन में अच्छे नहीं लगते। साहित्य में इनका रस क्यों लेते हैं?

तुम्हारा  
रामविलास

केदार नाथ अग्रवाल  
एडवोकेट  
बांदा (उ० प्र०)  
प्रिय डाक्टर,

दिनांक : ४-५-१९६४  
सायंकाल ६-३० बजे

१-५ के अभिवादन का पत्र मिला। हृदय मुरझाया था, प्रसन्न हो गया। आशा न थी कि तुम्हारा पत्र आयेगा। वह क्या आया जैसे किसान के खेत में बादल आया। आंखें निहारती रह गयीं।

यह एक दुर्भाग्य की बात है कि विश्व के सर्वहारा आन्दोलन में इतना संकट आ गया है कि जीवन असहाय-सा महसूस कर रहा है। ऐसा उदाहरण अन्यत्र न मिलेगा। भारतीय दल में भी ऐसी छीछालेदर होनी थी, इसकी कल्पना कोई नहीं कर सकता था। पर हुई। यह भी बढ़ रहे चरणों को खूंटे से बांध कर जन-साधारण को बैल की तरह बधिया बनाने की दुखद घटना है। चिन्तन के नाम पर सब भाड़ झोंकते हैं। वहां तो कुजड़ों की सी लड़ाई हो रही है। कभी बटेर लड़ते देखा था मैंने रायबरेली में सन् १९२१ ई० में। अब यह देख रहा हूँ। लड़ाई भी होती है तो एक शान की होती है—सिद्धान्त की होती है। यह तो दंगा-फसाद का नमूना है। वास्तव में सब नंगे होकर नाच रहे हैं। अफसोस है।

शमशेर के बारे में मैंने कुछ समय पहले उड़ती-उड़ती ऐसी ही बातें सुनी थीं। पर विश्वास न हुआ था। वैसे मैं उन दोनों को शमशेर के घर में ही देख आया था—कई बार। पर मैंने उसका कोई अर्थ नहीं लगाया था। अनर्थ के डर से। पर 'अब तो बात फैल गयी जानें सब कोई।' मेरा दोस्त है। दिल से मज़बूर है। उसने नहीं उसके उल्टे लिंग वाले ने उसे मेमना बना कर बांध लिया है अपने पल्लू से। उम्र से क्या होता है। पका पहलवान जब मुंह के बल जमीन पकड़ता है, तब ऐसी ही दशा होती है। बेचारे यार का व्यक्तित्व तो अलग रह ही नहीं सका। वह चाहे तो जो सेवा ले और हमारे मित्र को करना पड़ेगा [करनी पड़ेगी]। परन्तु बहुत पहले ऐसा न था। तब तो मैंने शमशेर की सेवा करते उसे देखा था। यह उल्टी गंगा बही है। चप्पलें प्रियतमा की हों तो वह उसकी ऐन इनायत की बदौलत मिलती हैं। सौभाग्य है उनका जो प्रेम के फंदे में पड़ कर पेटीकोट धोते हैं। शमशेर को कुछ नहीं कहा जा सकता। वह सैदव रूप का दासानुदास रहा है। मैं इलाहाबाद नहीं जा सका वरना उसको देखता और अपने मियां मिट्टू से बातें करता।

चक्कर में डाल दिया है दूसरों ने। तरह-तरह के लोग हैं। सीधे के गले में संसी लग गयी है। पर वह शमशेर की हो कर रहे तब भी कुछ ठीक है। कहीं इस आड़ के पीछे दूसरों के साथ शिकार न हो। पर किया क्या जा सकता है? तुमने तो शमशेर से बातें की होंगी। कहा नहीं कुछ। बीमारी क्या होगी? पेट में कोई आ न गया हो।

श्री अमृतलाल नागर के समाचार मालूम हुए। वह परेशान हैं तो हम भी उनकी परेशानी सुन कर परेशान हैं। ठहरा तो अपना पुराना लंगोटिया यार। लेकिन विश्वास है कि वह सब झेल जायेगा। मेरा सलाम भेज देना अपने पत्र में रख कर।

मुंशी—त्रिनेत्र जी—से मेरी भेंट बहुत अर्से से नहीं हुई। शायद अब कभी मुलाकात हो। दिल्ली ससुरी बड़ी दूर है। बांदा से मुहब्बत नहीं करती। हम यहीं कचहरी की धूल छानते रहते हैं। गद्य के कायल हो—कृपा हो [है]। हम गद्य के कायल हैं। उसी से जगजाहिर हुए हैं। पर यकीन रखो। हम कुछ नहीं लिखते। हम तो कभी मूसर मारते हैं, तो कभी जूते गांठते हैं, तो कभी किसी के केश सहलाते हैं, तो कभी कला की बला



में मच्छर मारते हैं और अपने खून से जमाने की नजर में शहीद बनते हैं। सब चलता है। कोई रंज नहीं है। कोई गम नहीं है। इतने पर भी यह उमंग तो है ही कि मरते दम तक कविता का साथ दूंगा-छोड़ूंगा नहीं। भले-बुरे की पहचान समय करेगा।

निराला की मृत्यु ने एक शून्य छोड़ दिया है। जो पूरा न होगा। अब उनके साथ के सपेरे नाग नचा रहे हैं—मउहर बजा रहे हैं और पैसे और नाम कमा रहे हैं। यह भी हो रहा है। खूब है। रंग है। मगर यार, न वैसा जानदार कवि पैदा होगा।

शेक्सपीयर पढ़ो। खूब पढ़ो। समस्या टेढ़ी है। तुम्ही हल करोगे। हमारा तो दिमाग मुकद्दमों के दायरों में रहता है। अवकाश कहां कि समस्या सुलझाएं।

इधर अकेले हैं। खूब पंखा चलाते हैं। पांव पसार कर एकाध बार उनका नाम लेकर सोते हैं। कहीं कुछ खाली लगता है पर करें तो क्या करें। इधर लखनऊ गर्मी हैं। अशोक भी वहीं है। मद्रास से Film का एक वर्ष समाप्त करके लौटा है। हजरत हमारी हजामत बनायेंगे। हम तयार हैं। अपनी तो कट गई। अब क्या। देखो वह किस घाट लगते हैं।

किरण के पति का तबादला दिल्ली हो गया है। गौहाटी में थे। अब महानगरी में ही रहेंगे। यह अच्छा हुआ। उसके बच्चा होने वाला है। शायद बांदे में ही हो। १० मई या १५ मई तक आ जायेगी।

वीरेश्वर यहीं है। वही हाल है। कुछ परेशान रहते हैं। हमारे हाथ में कुछ नहीं है कि हम मदद करें। केस वर्क कम है न।

मौसम तो तपा-तपन का है। जमीन जलती है—हवा जलती है—जूते-कपड़े तलवे सब गरमते हैं। गरज कि प्यास के मारे बुरा हाल रहता है। शायद सेरों पानी पी जाता हूं। ११/५ से सुबह की कचहरी हो जायेगी। ६ १/२ [साढ़े छः] बजे सुबह से १ बजे दिन तक। तब तो समझो कि पिर जाऊंगा। चूर-चूर हो जाऊंगा। पर किया [क्या] जाये। पेट को लिए लिए गर्भवती की तरह जिऊंगा। न खा पाऊंगा—न घूम फिर सकूंगा।

अब हाथ थक गया है। बस। सलाम लो। सबको मेरी नमस्ते देना। हाल लिखना। चुप न रह जाना।

इधर Agony and Ecstasy पढ़ रहा हूं। माइकलेन्जलो के जीवन पर आधारित इरविंग स्टोन का उपन्यास। बड़ा रम कर लिखता है। पहले भी Lust for Life पढ़ा था। वह भी मनोयोग से लिखा गया था। मुझे तो इन दोनों व्यक्तियों में निराला के जीवन के दर्शन मिलते हैं। वही तपस्या और समाधिस्थ मन। किसी के लिए लीन हुआ मन।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

इन दिनों बहुत-सी बातें याद आईं। लखनऊ युनिवर्सिटी में हमने वृद्धा स्वरूप रानी नेहरू का भाषण सुना था। तब वह उतनी ही वृद्ध रही होंगी जितने वृद्ध इस वर्ष जवाहरलाल नेहरू थे। हमें मोतीलाल नेहरू की शवयात्रा याद आई। युनिवर्सिटी की सड़क पर हजारों की भीड़ थी। शव खुली गाड़ी में ले जाया गया था। साथ कुछ दूर तक दौड़ने वालों में मैं भी था। और अब रेडियो पर हम दिल्ली की शवयात्रा का वर्णन सुनते रहे। साइमन कमीशन के दिनों से लेकर राजघाट की चिता तक देश के जीवन का लम्बा इतिहास आँखों के सामने घूम गया।

शेक्सपियर के महानाटकों में जैसे मानवीय विघटन के साथ प्राकृतिक उथल-पुथल भी दिखाई जाती है, वैसे ही दिल्ली में भूचाल आया, उस दिन आंधी पानी का दौर रहा और तीन आगामी ग्रहणों की छाया मानों पहले से पड़ने लगी।

लोगों के हृदय में जवाहरलाल नेहरू के लिए बड़ा प्यार था। राजनीतिज्ञ जब समझते थे कि नेहरू की साख उठ गई है, मन भर कर गालियाँ दो, जनता ने अपने शोक प्रदर्शन से मानों कह दिया—लाख दोष होते हुए भी यह विश्व पैमाने का नेता था, तुम सब अपनी असंख्य अच्छाइयों के बावजूद बौने हो।

मेरे यहाँ उस दिन बहुत-से लोग मिलने आये, उदास चेहरे लिये, धीमी आवाज़ में बोलते हुए ठीक जैसे किसी के यहाँ गमी में शोक प्रदर्शन के लिए जाते हैं। और हर एक के मन में यही आशंका थी—आगे क्या हो गा।

इधर पेट में गैस बनने से अक्सर रात को नींद टूट जाती थी और दिल धड़कने लगता था। काम बन्द है, आराम और घूमना मुख्य कार्यक्रम है।

तु० रामविलास

केदार नाथ अग्रवाल

एडवोकेट

बांदा (उ० प्र०)

दिनांक : ५-६-१९६४

प्रिय डाक्टर,

मैं स्वयं तुम्हें पत्र लिख कर अपने मनोभाव प्रकट करने की बात सोच ही रहा था कि तुम्हारा पत्र आज ही दोपहर ११/२ [डेढ़] बजे मुझे मिला, जब मैं अपनी कचहरी से लौटा। लेकिन उसी समय न पढ़ सका क्योंकि पता तुम्हारे हाथ का न था—किसी दूसरे की लिखावट थी। इससे ज़रा सुस्ताने के बाद खोल सका। देखता क्या कहूँ कि तुम विराजमान हो। अफसोस हुआ विलम्ब से पढ़ने के कारण।

नेहरू का निधन सम्पूर्ण देश को शोक मग्न कर गया है। वह पूरे भारत का था। और अब तो भारत से बढ़ कर पूरे एशिया का व्यक्तित्व हो गया था। उसकी साख कहां नहीं थी। वह एक ही अपने जैसा व्यक्ति था। उसके निधन पर कौन नहीं रोया। ऐसा कोई न बचा होगा जो कई दिन तक—और अब तक—उसके लिए न तड़पा हो। मेरे इस पिछड़े नगर में भी सभी गमगीन थे। अब भी हैं। वह एक शून्य छोड़ गया है। कुछ काम करने को जी नहीं चाहता। बस उसी की चरचा करने का माहौल है। और उसकी वसीयत के अंश सुन कर तो उसकी महत्ता विशेष रूप से ज़ाहिर हो गयी है। क्या बात है कि वह भारत भूमि के खेतों की मिट्टी में अपनी मिट्टी मिला कर फसल बन कर उगना चाहता है—मेहनतकशों की मशक्कत के आगे वह अपना तन-मन-धन भूल कर न्यौछावर हो गया है। बड़ा महान व्यक्ति है। ऐसा नेता न हुआ है—न होगा। हम तो मान गये। मस्तक झुकाते हैं उसके लिए। वह है अपनी जनता को प्यार करने वाला नेता। देखें दूसरे तथाकथित नेता कि वह इस व्यक्ति के आगे अब कहां ठहरते हैं। किसी एक का पता नहीं चलेगा कि किस खेत की मूली हैं वह।

नेहरू एक कवि भी था। बड़े मर्म से जिया और मरा। प्रकृति ने उस दिन दिल्ली को डगमगा दिया था। नेहरू का शरीर प्रकृति के साथ सांस लेता था। जब वह न रहा तब प्रकृति भी घबड़ा उठी और उसके प्रयाण के समय अधीर रही।

हमने भी पं० मोतीलाल नेहरू के मरने पर उनकी शवयात्रा को देखा था। इलाहाबाद में लखनऊ से शव आया था। इतनी भीड़ थी कि एक पुल के पास तो उनका शव जनता के सिरों पर तैरता हुआ यात्रा कर रहा था। वे दिन हमारे देश के बड़े प्यार और पुलक के दिन थे। उन दिनों सब के दिलों में कोई दाग न थे। उनकी मृत्यु पर सभी विह्वल हुए थे। ठीक उसी तरह जिस तरह जितेन्द्र की मृत्यु पर। नेहरू ने अपने पिता को पछाड़ दिया। जीवन में ही वह उनसे आगे बढ़ गया था—अब मरने के बाद तो बहुत आगे बढ़ गया है।

उसकी बुराई होने लगी थी। यहां भी लोग बौखलाये थे। वही प्रतिक्रियावादी लोग थे जो नेहरू को दिल्ली से उठा कर एक कमरे में बन्द करने के पक्षपाती थे। मगर वह अपना कर्तव्य जानता था—वही वह कर रहा था। उसने लांछन की परवाह नहीं की और न उन टुच्चे राजनीतिज्ञों की। मरते दम तक सही दिल और दिमाग से भारत को आगे बढ़ा रहा था। इधर कल या परसों National Herald में पढ़ा कि राममनोहर लोहिया ने अमेरिका में नेहरू की मृत्यु का समाचार सुन कर, बे सिर पैर का (की) बकवास किया (की) है। हैरत [में] हूं कि वह पागल तो नहीं है। कहता है कि नेहरू का कुछ भी योग नहीं है। धत्तरे सिरफिरे की। उफ़! जी चाहता है कि ऐसे लोगों का दिमाग दुरुस्त कर दिया जाये। बेहयाई की लिमिट हो गई। द्वेष और दम्भ की यह घोषणा बिल्ली की खिसियाहट के सिवाय कुछ नहीं है। हम नेहरू को देवता नहीं कहते—न मानते हैं। मगर जानदार जीवट का व्यक्ति मानते हैं कि उसने ईमानदारी के

साथ भारत के देशवासियों का माथा ऊंचा उठाया। अब तो वह किसान के हृदय में और उसके खेत में बस गया है।

रेडियो की कमेंट्री-हिन्दी और अंग्रेजी में-आई थी। अशोक वाजपेयी की मार्मिक थी। अंग्रेजी कमेंट्री भी मार्मिक थी। हम लोग भी सुनते रहे थे। कई दिन तक अब भी नेहरू छाये हैं। छाये रहेंगे।

दिल्ली की कल्पना कर रहा था कि वहां गोटें शतरंजी चाल में चलायमान होंगी। न जाने कितना खुराफात न हुआ होगा-निधन के बाद। पर चिता की लपटों ने उसे भी चट कर दिया। नेहरू ने मर कर शंकर बन कर, विष पी लिया और अब देवताओं को जीने की राहत दे गये।

उसकी मृत्यु में एक युग मरा और एक युग अवतरित हुआ। उसकी वसीयत भविष्य का संदेश सुना गयी है। अब भी अगर नेता न चेते तो हमारे प्रिय भारत की खैर नहीं।

सम्प्रदायवाद-पुनरुत्थानवाद आदि-आदि सब रावण की तरह जल गये। ऐसा चुप हुआ है दुष्टों का गला कि कहीं तू-तड़ाक नहीं सुनायी देती।

निराला का निधन भी ठीक ऐसा ही था। वह कवि था। नेहरू नेता था। दोनों में जो अन्तर वही अन्तर उनके शोक-प्रदर्शन में व्यक्त हुआ है। निराला की मृत्यु का दिन नहीं भूलता। अब निराला ने नेहरू का स्वागत किया होगा और दोनों गंगा के किनारे रोज शाम को साथ-साथ टहलते होंगे। निराला मजाक भी करते होंगे नेहरू से कि नेहरू जी ने उन्हें प्रयाग में दर्शन नहीं दिये थे जैसे कोई बड़े देवता रहे हों। नेहरू जी जवाब देते होंगे कि अब तो आ गया हूं दर्शन करने। यह कल्पना बड़ी मार्मिक है। पर मन में कहीं ऐसा भाव था, जो उभर कर इस पत्र में व्यक्त हो गया।

बेटा आया था। मद्रास के लिए प्रयाग गया। किरण और उसके बच्चे यहीं हैं। गरमी खूब है। दनादन पंखे चलते रहते हैं। गायें दूध नहीं देतीं। भगवानदास की दूकान में बैठ कर रात ९ या १० बजे बड़ा गिलास-बरफ डाल कर पीते हैं। हमें भी अपने पद का ख्याल नहीं रहता। लोग समझते हैं कि हम बड़े हो गये हैं। हम हैं कि हमें बड़प्पन का एहसास ही नहीं होता। वही हाल है जैसा पहले था। अब एक साल को फिर Contract पर गवर्नर के यहां से काम करने का कागज आ गया है। अर्थात् हम हर साल जियेंगे-हर साल मरेंगे। वाह रे, हमारी ज़िन्दगी। सब ठीक है।

सस्नेह, तु० केदार

पुनश्च:-पेट में गैस बनती है-खाने में तबदीली करो। अब घी-दूध छोड़ो। फल-सब्जी खाओ। घूमना अच्छा है। दिल धड़कना अच्छा है पर बीमारी के रूप में नहीं है। मुझे विश्वास है कि तुम उस पर काबू पा लोगे। सबको यथायोग्य।

केदार

R. B. Sharma

30, NEW RAJA MANDI

M. A., Ph. D. (Luck)

AGRA

HEAD OF THE DEPTT. OF ENGLISH

23-6-64

B. R. College, Agra

प्रिय केदार,

रात को भगवानदास की दुकान पर बरफ डाल कर दूध पीते हो और मुझसे कहते को कि दूध-घी छोड़ दो। बहरहाल सलाह तुम्हारी नेक है और आजकल हम उसी पर चल रहे हैं। अलबत्ता खालिस दूध के बदले कभी-कभी खीर खा लेते हैं। दूध पीने पर पेट के बाईं ओर हवा जोर करती है, न पीने पर साधारण भोजन के कुछ समय बाद बीच पेट में उठती है। खैर, दिल का तेजी से अचानक धड़कना तो बन्द है यद्यपि दिल पर हमले में असफल होकर वायु इधर-उधर भागती है। विश्वास है कि कुछ दिन में उस पर पूरी तरह काबू पा लूँगा।

गर्मी भयंकर पड़ रही है। दोपहर को खाट पर लेटो तो तकिया चादर सब गरमाये रहते हैं। शाम को नहाने चलो तो नल से उबला हुआ पानी निकलता है। लेकिन सबेरे १०-११ बजे तक तरावट रहती है। रात भी कट ही जाती है।

अगर हम यह मान लें कि सरकारी वकील बनने से पहले तुम बड़े आदमी नहीं थे तो बड़प्पन के अहसास की समस्या पर कुछ कहा जाय। तुम्हारी कविता और गद्य दोनों के बल पर लोग तुम्हें याद रखेंगे, वही सच्चा बड़प्पन है। धर्मयुग के पिछले एक अंक में हमने समुद्र पर तुम्हारी एक कविता पढ़ी जो बहुत अच्छी लगी।

एक मेरे सहयोगी अपना [अपनी] थीसिस Ph. D. के लिए Submit कर रहे हैं। इधर रोज़ सबेरे उठ कर उसी का संशोधन करता था। जितना परिश्रम संशोधन में करना पड़ता है, उतने में वैसे-और उससे कुछ अच्छे ही-दो थीसिस में लिख डालता। नाम रिसर्च का; विचार अध्ययन, लेखन-कौशल-सभी में दिवालियापन। Guide क्या करे? कल यह कार्य समाप्त हो जाय गा, तब ज़रा खुल कर साँस लूँ गा। शेक्सपियर वाली कितबिया छूट गई थी, फिर शुरू करूँ गा।

क्या तुमने बाँदा की गर्मी या लू पर कोई कविता लिखी है?

तुम्हारा

रामविलास शर्मा

48 / मित्र संवाद

बांदा (उ० प्र०)

६-७-६४

प्रिय डाक्टर!

इधर मैं पत्र नहीं लिख सका था।

व्यस्त था।

पानी बरस गया है। अब मौसम ठीक है

अब घर की बीमारी का क्या हाल है? पत्र देना।

आजकल क्या लिख रहे हो? हम कुछ नहीं लिख रहे। तुमने 'समुद्र' की सराहना की। खुशी हुई।

अब आगरा भी ठंढा होगा।

शायद कालेज खुल गया होगा।

शुरू के दिन हैं। व्यस्त होंगे।

अपने समाचार देना। तबियत लगी है।

बच्चों को प्यार।

सस्नेह तु०

केदार

बांदा (उ० प्र०)

२२-७-६४

६ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

आज के 'भारत' के द्वितीय संस्करण में इलाहाबाद, २० जुलाई का समाचार छपा है कि 'विवेचना' की एक गोष्ठी ६<sup>१</sup>/<sub>४</sub> [सवा छः] बजे शाम वहां एनीबीसेंट हाल में हुई। हरदेव बाहरी अध्यक्ष थे। उस गोष्ठी में श्री विद्यानिवास मिश्र ने तुम्हारे ग्रन्थ 'भाषा और समाज' पर अपना आलोचनात्मक निबन्ध पढ़ा। अनेक वहां पर उपस्थित हुए साहित्यकारों ने विचार-विमर्श किया। अध्यक्ष ने ग्रन्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। निबन्ध की भी सराहना की। बधाई स्वीकार हो। अब किसी मेरे जैसे एक और साहित्यकार ने तुम्हें परखा। मैं भी फूल कर कृपा हो गया हूं। फिर बधाई स्वीकार करो। जरा, सीना तान कर टहलो। हां, अब ठीक है।

हम अच्छे हैं।

---

1. यह पत्र पोस्टकार्ड पर दो कालम में लिखा गया है। [अ० त्रि०]

आशा है कि तुम सब लोग भी अच्छे होंगे। घर में बीमारी का क्या हाल है? लिखना। तुम्हारा स्वास्थ्य भी कैसा है? हम जानने को लालायित हैं। बेटियाँ और बच्चे तो सब ठीक ही चल रहे होंगे। सबको मेरा यथायोग्य नमन् और स्नेह स्वीकार हो।

इधर पानी नहीं बरसा। आज पढ़ी हमने 'निराला' की—'पारस मदन हिलोर न दे तन'। मस्ती रही।

बोलो कब आओगे बांदा? अब शायद डिग्री कालेज खुल जाये बांदा में।

प्रिय बेटा किरण के, यहीं घर पर ६/७ दिन हुए बिटिया पैदा हुई है। दोनों ठीक हैं। सरकारी काम चल रहा है। मुकदमे में जैसी दृष्टि से तहकीकात करनी चाहिए वैसी तहकीकात दारोगा नहीं करते। इससे सफलता नहीं मिलती और अधिकतर अभियुक्त छूट जाते हैं, जो दोषी भी होते हैं। गवाहान भी वैसी [वैसे] होते हैं, और झूठ का अम्बार लगा देते हैं। यहां भी कातिल आल्हा-ऊदल की परम्परा में अब भी काम करते हैं। अदालत में न्याय न पाकर लोग बाहर स्वयं न्याय कर लेते हैं। हत्याएँ होती रहती हैं। अदालत तो एक विशिष्ट प्रणाली और सिद्धान्त से काम करती हैं। इससे वह विवश होकर छोड़ती है।

हां तो बस,

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा  
५-८-६४ सबरे ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

पिछले 'धर्मयुग' में प्रिय अमृतलाल नागर पर तुम्हारा लेख देखा। बहुतों ने पढ़ा। नागर का व्यक्तित्व उभर कर सब पर छा गया। टोह-टोह कर तुमने, छेनी मार-मार कर, नागर की मूर्ति खड़ी की है। बोलती है। बधाई।

मैंने एक पत्र लिखा था पहले। विद्यानिवास मिश्र ने तुम्हारे प्रमुख ग्रन्थ भाषा शास्त्र को लेकर [लेख पढ़ा था]। बेहद तारीफ की थी। मैंने तो अखबार में रिपोर्ट पढ़ी थी। मिश्र जी को बधाई भेजने वाला हूँ।

आशा है तुम सब लोग घर में कुशलपूर्वक होओगे। हम लोग ठीक हैं।

कल थोड़ा पानी झरा था। फिर निकल गया। आसमान भी सिर घुटाये नजर आने लगा।

मंहगाई कुतुब मीनार से भी ऊंचे पहुंच गयी है। मनुष्य चींटी की तरह छोटा हो गया है। और कन-कन की तलाश में दिन-रात जुट गया है।

सस्नेह तु०  
केदार

50 / मित्र संवाद

R. B. Sharma  
M. A., Ph. D. (Luck)  
HEAD OF THE DEPTT. OF ENGLISH  
B. R. College, Agra

30, NEW RAJA MANDI  
AGRA  
6-8-64

प्रिय केदार,

सबेरे ९ बजे एक हल्की बदली आई, दस मिनट तक रिमझिम करके निकल गई। कुछ देर को तीन पर रिमझिम के घमाघम से पढ़ाना बन्द हो गया था। अब सवा बारह बजे नहाने के बाद ठंडी हवा से देह को सहलवाते हुए तुम्हें पत्र लिख रहे हैं।

तुम्हारे दो कार्ड और एक पत्र मिले और हम आजकल करते हुए जवाब देने की बात सोचते ही रहे। इस वर्ष Dean का काम फिर गले पड़ गया। सात बजे सबेरे रोज़ कालेज में पढ़ाई का आरम्भ; १० से ११ तक डिपार्टमेंट में डीन के काम के लिए हाज़िरी! इधर लड़कों की आधी-पूरी फीस माफ करने के लिए शाम को यानी साढ़े चार से इन्टरव्यू के लिए फिर जाना पड़ता है! हैमलेट पर १६ पन्ने टाइप किये हुए पड़े हैं; अध्याय पूरा करने की नौबत नहीं आती। बीच में दिल्ली गया था। लोगों का आग्रह था कि मैं भाषा-समस्या पर एक लेख New Age monthly के लिए लिखूँ। वह भी भेजना है। परीक्षा की कापियाँ अलग रखी हैं, अभी बंडल नहीं खोला। तिस पर मेरा फाउण्डेन पेन परसों से मिल नहीं रहा, यानी खो गया है। लड़कियाँ अपने-अपने कलम लेकर कालेज गई हैं। नतीजा यह कि हम एक पुराने कलम कुठार से इस सुन्दर कागज पर दावात में निब डुबो-डुबो कर यह गोदना गोद रहे हैं।

आज कल बेला खूब फूल रहा है। छोटे गुलाब जैसा तेज़ बैंगनी रंग का लोनिया का फूल जोरों से दमकता है। चाँदनी के सफेद फूल घने हरे पत्ते वाली डालों पर बर्फ जैसे छितरे हुए हैं।

तुम्हारा कार्ड और उससे पहले वाला पत्र पढ़ कर हम खूब मगन हुए। तुमने विद्यानिवास मिश्र की आलोचना पर जो प्रसन्नता प्रकट की, उस पर हमें खूब आनन्द आया; इससे भी अधिक हर्ष की बात यह कि इन पत्रों में तुम्हारी उमंग देख कर हमारा मन भी उमंग से भर गया। इस उमंग में ही आदमी बढ़िया लिखता है। आशा है तुम्हारी कलम भी मिसिलों-फाइलों से बच कर कविता की पंक्तियों में दौड़ चलती हो गी!

लगता है कि हिन्दी के दिन फिरने लगे हैं। लोग किसी पुस्तक का विवेचन करने के लिए हाल में इकट्ठे हों और इसकी खबर अखबार में छपे-आश्चर्य! विद्यानिवास जी से प्रत्यक्ष परिचय नहीं है; वैसे भी उनके बारे में कुछ विशेष नहीं जानता। किन्तु यदि हरदेव बाहरी जी को भी पुस्तक पसन्द आई तो वह पहले भाषा शास्त्र के स्वीकृत विद्वान होंगे जिन्होंने 'भाषा और समाज' की प्रशंसा में कुछ कह कर एक झमेले में अपने को फँसा दिया है। 'माध्यम' के एक अंक में 'विवेचना' गोष्ठी में नरेश मेहता के



‘यह पथ बंधु था’ की आलोचना और विवाद का सारांश छपा है, सम्भवतः मेरी पुस्तक पर वह लेख भी छपे।

अमृत वाला लेख पसन्द आया, प्रसन्नता हुई। अमृत मारे आनन्द के—हिन्दी सेवा के योग्य, सब युनिवर्सिटियाँ पास कहे जाने पर—अपने पत्र के अनुसार, कुछ समय के लिए साश्रुनयन हो गये। मैंने उनकी थकन के बारे में जो कुछ लिखा है, उसमें उन्हें रंग कुछ ज्यादा गहरा दिखाई दिया। अभी उन्हें उत्तर नहीं दिया।

झांसी के भगवानदास जी माहौर ने हिन्दी साहित्य पर गदर के प्रभाव पर अपना थीसिस पूरा कर लिया है। दो दिन तक—उनके यहां आने पर—साहित्य और इतिहास की चर्चा रही।

अब कमरे में पंखा चला दिया गया है। श्रीमती जी नहा कर खाना लिये मेज के पास बैठी है। जब तुम्हारा पत्र आता है तो तुम्हारी श्रीमती जी को बड़े प्यार से ज़रूर याद करती हैं।

अच्छा, टा-टा-

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा

३०, नयी राजामंडी  
आगरा  
७-१०-६४

प्रिय केदार,

सितम्बर के ‘माध्यम’ में शायद तुमने श्री विद्यानिवास मिश्र का लेख देखा हो। तुमने ‘भारत’ के समाचार से जो नतीजा निकाला था, स्थिति उससे बिल्कुल उल्टी है। खैर, हमें तो खुशी इस बात की है कि लोग चर्चा तो करते हैं, किताब को चर्चा के लायक समझते हैं, चुप नहीं लगा जाते क्योंकि यह हिन्दी है जिसके लेखकों—पाठकों के दिमाग में यह संस्कार जड़ जमाए हुए है कि जो कुछ कहने लायक है, वह अंग्रेजी में ही कहा जाये गा या कहा जा चुका है।

इधर तुम्हें अर्से से लिखना चाहता था लेकिन कालेज की फिज़ूलियात से छुट्टी न मिलती थी। अक्सर सुबह शाम दोनों वक्त कालेज जाना पड़ता था। दिन में थोड़ा समय मिल गया तो दो-चार पन्ने शेक्सपियर वाली किताब के टाइप कर लेता था। शायद इस महीने के अन्त तक पूरा हो जाय। कल मुझे एक आवश्यक कार्य से दिल्ली जाना है। १३ अक्टूबर को लौटूँ गा। किताब खत्म न कर पाने से छुट्टियों में यहीं बँध गया हूँ। प्रकाशक से पेशगी रुपये लिये हैं। इस साल किताब ज़रूर छप जानी चाहिए।

बाँदा में भी लोग गेहूँ, दाल-चावल के भाव की बातें करते होंगे। गल्ले की कमी हो सकती है लेकिन माल होते हुए भी मिलता नहीं है, चोरी छिपे भले लोग ले आयें। दिन पर दिन हालत खराब होती जाती है। लड़ाई के ज़माने से हमारा अर्थ तंत्र हर झटके के बाद कुछ सँभलता है और उसके बाद दूसरा झटका पहले से तगड़ा लगता है। श्रीमती इन्दिरा गांधी लोगों को समझा रही हैं कि देश के उन्नति करने में ऐसा होता ही है। काँग्रेस से गाड़ी संभल नहीं रही है। राजनीतिक और आर्थिक संकट दोनों हैं। क्रान्तिकारी परिस्थिति में जब क्रान्ति नहीं होती तब प्रति क्रान्ति होती है। भविष्य कुछ ऐसा ही है। अपना हाल देना।

तु० रामविलास शर्मा

चाचाजी नमस्ते  
स्वाति<sup>1</sup>

बांदा

१९-१०-६४

७ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

७/१० का पत्र सामने है। उत्तर अब इसलिए दे रहा हूँ कि तुम दिल्ली से वापस आ गये होओगे। मैंने भी माध्यम में विद्यानिवास मिश्र का लेख पढ़ा। मैं स्वयं उनकी राय से सहमत नहीं हूँ। पर चर्चा तो हुई।

शेक्सपियर पर पुस्तक पूरी कर लो। तब छुट्टी मिलने पर मुझे खत लिखना। तुम्हारे खतों का बहुत इन्तज़ार रहता है। कभी-कभी तो तुम महीनों समाधि में चले जाते हो।

यहां भी गेहूँ-चावल इत्यादि अपनी चरम भाव-सीमा पर चढ़ चुके थे। धर पकड़ हुई तो कुछ नीचे उतरा हुआ है। बड़े जानलेवा व्यवसायी होते हैं। इन्दिरा गांधी को अभी जनता से पूरी वाकफ़ियत नहीं है। वरना वह भी अपना विचार बदलतीं। देश की राजनीति और अर्थ नीति दोनों ही साधारण जन के लिए संकटमय है। भविष्य भयंकर लग रहा है। पर जीवन और जन में विश्वास कम नहीं हुआ। देर होगी। पर अंधेर मिटेगा।

रूस में [ने] फिर ख़ुश्चेव को पलट कर नया पलटा लिया है। चीन ने विस्फोट किया है। अनेकानेक परिवर्तन हो रहे हैं। हमारी बैलगाड़ी कहां जायेगी पता नहीं।

---

1. यह नमस्ते, अन्तर्देशीय के दूसरे मोड़ के हिस्से पर अंकित है। [अ० त्रि०]

प्रिय स्वाति<sup>1</sup> का नमस्ते हमें मिला। हम खुश हुए। उसे तथा अन्य बहनों को मेरा प्यार। शेष खैरियत है।

सस्नेह तु०  
केदार

१४-११-६४

प्रिय केदार,

पिछले दिनों बांदा में डिग्री कालेज के प्रिंसिपल मिले। यानि हमारे यहां के मछिन्दर नाथ दुबे। उन्होंने बांदा आने का निमंत्रण दिया है। यदि कार्यक्रम तै हो गया तो मैं २४ या २६ दिसम्बर को उधर आऊं गा। झांसी और सागर जाने का कार्यक्रम भी बना रहा हूं और सब ठीक।

आजकल घर में फ्लश का काम चालू है—खट्, खुट्, घट्ट टट्ट। इति।

तु० रामविलास शर्मा

बांदा (उ० प्र०)

१३-१२-६४

प्रिय डाक्टर,

पहले तो तुमने लिखा था कि तुम यहां आ रहे हो। अब तक कुछ खबर नहीं भेजी। आखिर, कब और कितने दिने के लिए आ रहे हो? बड़ी तीव्र लालसा है कि तुम यहां आओ और हम लोग फिर कविताएं पढ़ें—सुनें और काव्य पर खूब ढेर—सी बातें करें। जी मचल रहा है। हां, कल Illustrated Weekly (नयी) में तुम्हारी बढ़िया पुस्तक पर, पूरे पेज की टिप्पणी छपी है। देख तो चुके ही होओगे। भाषा का भजन अब हो रहा है।

कब सागर की तरफ जाओगे? कि न जाओगे?

सरदी बरस रही है। इधर दो दिन से धूप भी ठंडा रही है। रातें तो कमरे में भी गरम नहीं हो पातीं। पर जब तुम आओगे तब अवश्य ही इतनी सरदी न रह जायेगी। फिर हमारी-तुम्हारी सांसें बांदा की हवा में नशा भर देंगी। सच कहता हूं झूठ न मानना

**जरूरी;**

तुम्हारे मछीन्द्रनाथ जी कल मिले थे। पूछते थे कि तुम कब यहां आ रहे हो? वह डिग्री कालेज में तुम्हारे भाषणों से साहित्यिकी का शुभारम्भ करना चाहते हैं। मैं भी यही

---

1. स्वाति—मेरी सबसे छोटी बेटा।

54 / मित्र संवाद

चाहता हूँ। बच्चे उत्सुक ही नहीं तयार बैठे हैं—तुम्हें देखने-सुनने और समझने के लिए। देखो, धोखा न देना। जैसे गंगा जी जटाजूट से जमीन पर आयी हैं वैसे आओ। पत्र देकर लिखो ताकि आमंत्रित कर सकें। पर जल्दी ही न सटक देना। हम सारे काम छोड़ कर घूमेंगे। पैसा न कमाऊंगा। तुमसे गन्ने पिरवाऊंगा। बच्चों को प्यार।

तु० सस्नेह  
केदार

१५-१२-[६४]

प्रिय केदार,

मछिन्दरनाथ! गुरू ठहरे! यहां कह गये थे, जाकर निमंत्रण भेजूँ गा। सो अभी तक आ रहा है। सोचा हो गा, बुलायेंगे तो पैसे देने पड़ेंगे। इसलिए हमने सोचा है कि बांदा तब आयेंगे जब वहां का कालेज बन्द हो गा।

२२ दिसम्बर को हम झांसी में होंगे, २३-२४ को सागर में, २५ को वहां से चल कर २६ को दिल्ली और वहाँ से २९ के आसपास यहाँ। अब छुट्टियों में हम आना भी चाहें तो दो दिन से अधिक नहीं बचते। इसलिए ज़रा फुर्सत से ही आने का विचार है। दिल्ली जाने का कार्यक्रम अचानक बनाना पड़ा। वर्ना २६ के आस-पास अभी बाँदा आते।

इलस्ट्रेटेड वाला लेख देखा है। लिखने वाला विद्यानिवास से ज्यादा समझदार है।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा

६-५-६५

प्रिय डाक्टर,

इधर उधर-सर्वत्र मौन-साकर [साकार]-निराकर सब प्रकार का मौन-विराजमान है। इस मौन के महासागर में हम छोटी मछली से पड़े हैं। इस के तट के पास से आततायी पाकिस्तान का आक्रमण उत्पात किये हैं और हमारे फेफड़े में बारूद की दुर्गन्ध भर रही है। काश हम भी मछली न हो कर सैनिक होते।

दिल्ली १०/५ के पूर्व पहुंचूंगा। वहां भेंट होगी। आशा है कि पहुंच रहे हो-नागर जी के यहां बेटी के ब्याह में।

‘धर्मयुग’ में श्री किशोरी दास पर लेख पढ़ा-अच्छा लगा।

सस्नेह तु० केदार

---

1. मछिन्दरनाथ—गोरखनाथ द्विवेदी।

R. B. Sharma  
M. A. Ph., D. (Luck)  
HEAD OF THE DEPTT. OF ENGLISH  
B. R. College, Agra

30, New Raja Mandi  
AGRA  
२९-७-६५

प्रिय केदार,

इस बीच हम दिल्ली भी हो आये। नरोत्तम के घर गाये। नागार्जुन से मिले। उग्र जी के दर्शन कर आये।

नागार्जुन में ताजगी है। कहीं भी खा सकते हैं, कहीं भी सो सकते हैं, इस मामले में पूरे संत हैं। और व्यंग्य उनकी नस-नस में भरा है। एक पत्रिका निकालने की बात हो रही है।

उग्र जी बुढ़ा गये हैं। बत्तीसी बरकरार है। ६५ की उम्र में खाल झूलने लगी है लेकिन ज़िन्दादिली कायम है। बोले-देखो मैं अभी ज़िन्दा हूँ। जो सचमुच गर्व करने की बात है।

इधर जनशक्ति में एक भाषा-विवाद चला। उसमें फँसे रहे। कम्युनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस की तरह केन्द्र में अनिश्चितकाल के लिए अंग्रेजी जारी रखने की नीति अपना ली है। इसी की आलोचना की थी।

२३ जून के धर्मयुग में शमशेर पर लेख शायद देखा हो गा।

कालेज शुरू हो गया। सबेरे का कीमती समय अंग्रेजी में बकवास करते बीतता है। शेक्सपियर पर एक पुस्तक छप रही है। शायद अगले महीने निकल जाय।

समय मिलता है तो थोड़ा बहुत निराला जी की जीवनी में कुछ लिख लेते हैं। लेकिन इधर कुछ नहीं लिखा।

पानी हल्का बरसा है। अनाज महँगा है। देश में हर तरफ विघटन है। विदेश में युद्ध के बादल उड़ते दिखाई दे रहे हैं। इन्डोनीशिया ने भी ऐटम बम फोड़ने की धमकी दी है। गोआ को लेकर पुर्तगालियों से इतना न लड़े थे जितना आपस में लड़ रहे हैं। जय हो!

अपने कुशल-समाचार देना।

तुं  
रामविलास

बांदा

१-८-६५

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा २९/७ का पत्र सामने है। तुम न आये-न सही, पत्र तो आया। खुशी हुई। जब मैं दिल्ली गया था गरमी में, तब जवाहर चौधरी ने कहा था कि तुम और वह बांदा

आओगे, जल्दी ही। वचन पूरा नहीं हुआ। कोई बात नहीं है। बांदा ससुरा बेहद दूर है। दिक्कत भी काफी है। यह शिकायत नहीं—अपनी खीझ व्यक्त कर रहा हूँ। वश में होता तो आगरे से बांदा की दूरी कम कर देता और तुम्हें ला पटकता।

तुम दिल्ली हो आये। नरोत्तम, नागार्जुन और उग्र से मिल आये। बड़ा अच्छा हुआ। सब बुढ़ा तो गये ही हैं। नागार्जुन में व्यंग [व्यंग्य] कूट-कूट कर भरा है। सच है। वह संत है। यह गलत है। संत तो पंत हैं। यह बच्चनोवाच है। मेरा कथन नहीं है। वह सबका है—इस घर—उस घर का—चाहे जहां खाये, सोये या बतियाये। वह बिहार की मिट्टी का सत्यभाषी, जनता का कंठहार है। पत्रिका निकले तो सही। बात तो पूरा हिन्दुस्तान करता है। लेकिन बातें पूरी हों तब समझें।

उग्र जी बुढ़ा गये हैं, तभी 'हिन्दी टाइम्स' में हर हफ्ते सामने आकर कुछ-न-कुछ जोर भर जाते हैं। मगर जवानी का वह तनाव व तेवर नहीं है। मामला उखड़ा-उखड़ा चल रहा है। यही क्या कम है कि मैदान में आकर पुराने सरकसिया की तरह भूखे ज़िद्दी शेरों पर चाबुक सटका देते हैं। मैंने दर्शन नहीं पाये, कभी आज तक। भविष्य में सम्भव हुआ तो सौभाग्य समझूंगा।

अंग्रेज़ी के हिमायती बुद्धू हैं। नौसिखिये हैं। पार्टी उन्हीं के हाथ में है—चाहे जो करें। सही समझने और कहने के लिए, राजनीति में बड़ा दमखम चाहिए। वह बजाजी की दुकान नहीं है कि वही गज है, चाहे जो कपड़ा नाप दो। राम रक्षा करे। भगवान बचायें इन नासमझों से। तुमने ठीक किया कि उनके कान उमेठते रहे।

शमशेर पर लेख<sup>1</sup> पढ़ चुका हूँ। क्या कहूँ दोस्त, बढ़िया रहा। पास होते तो सलाम मार देता। खूब खुल कर तुमने उबारा है उस व्यक्तित्व को,—वह तो खंडहर के मलवे में दबा रहता है। लोग उसके दब्बूपन को सराहते हैं। उसकी जाटिया हड्डियों को सब लोग भूले रहते हैं। चाहे जैसा हो, आदमी बड़ा प्यारा है। मेरा मित्र जो है।

पढ़ा है कि पंत ने तुम्हें 'वाग्विलास' व निराला को 'माधो' से स्मरण किया है। ऊल जलूल भी कह गये हैं। तुम तो जीवित हो—शायद जवाब दे लोगे। मगर वह निराला तो चला गया। अब उसको इस तरह याद करना जलालत है। उसके रहते दम हिम्मत न पड़ी। जब वह मर गया तब लगे मेंढक राम कूदने। यह भी संत होने का नया पैतरा है। हम तो नहीं सराहते। बच्चन सराहें चाहे उनके अन्य भक्त।

घर—बाहर देश—विदेश—सब कहीं विघटन है। पर उसका जो उस योग्य है। यह सब भविष्य के संघटन के लिए है। और हम मौज में हैं। जो कमाते हैं उसका अधिकांश बेटे को भेज देते हैं। उतना ही अपने पास बचता है जितना यहां खर्च है। इससे हम वहीं हैं जहां थे।

1. शमशेर पर लेख—'धर्मयुग' में प्रकाशित।

पानी बरसा है। मस्ती है मौसम में। कबरई से आज सबेरे लौटा हूँ। सब ठीक है।  
बेटियों को प्यार।

सस्नेह तु० केदार

७-१०-[६५]

प्रिय केदार,

अभी इलाहाबाद के एक निमंत्रण पत्र से मालूम हुआ कि तुम्हारा वृहत् कविता-  
संकलन वहाँ से निकल रहा है।

बधाई।

१० अक्टूबर को मेरे जन्म दिवस पर उसकी धूमधाम से परिचर्चा होगी-बड़ी  
प्रसन्नता की बात है। फूलों फलो, वकील और कवि दोनों रूपों में। फूल भी बोलें, रंग  
भी बोलें।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा

१३-१०-६५

रात, ११ बजे

प्रिय डाक्टर,

पाई चिट्ठी/हुआ प्रसन्न/

तुमने तोड़ा मौन/मैंने खाई खीर/स्वाद बन गया/वक्ष तन गया/गया इलाहाबाद/ पुस्तक  
देखी/आंखें चमकीं/बहुत समय पर मेरी कविता बाहर आयी/छपने पर वह और हो  
गयी/सब को भायी/समारोह भी रहा सुहाना/सबने मुझको, मैंने सब को जाना/मन गाता  
था गाना/मैं पढ़ने था माला/चलता था चौताला/लेख पढ़े लोगों ने डटकर/ सबने काव्य  
सराहा/पंत, महादेवी के भाषण भाव भरे थे/दास<sup>1</sup> हुलास भरे थे अमरित<sup>2</sup> ने अमरित  
बरसाया-/

अब फिर बांदा-/वही कचहरी-/वही वकालत-/वही कटाकट।

शेष कुशल है।

मैं केदार तुम्हारा।

---

1. श्रीकृष्णदास [अ० त्रि०]

2. श्री अमृतराय। [अ० त्रि०]

बांदा (उ० प्र०)

१-११-६५

प्रिय डाक्टर,

Essays on Shakesperian Tragedy की प्रति परसों प्राप्त हुई। पढ़ना शुरू कर दिया है। निश्चय है कि मुझे उससे अवश्य ही अपने विचारों को शुद्ध करने में सहायता मिलेगी। सरसरी तौर से प्रत्येक पृष्ठ सूँघ गया हूँ। मेरे लिए अन्तिम २-३ लेख अधिक उपयोगी होंगे। बधाई ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक के लिए। प्रकाशक भी बधाई का पात्र है। पर उसने जिल्द ऐसी बांधी है कि अन्दर से सिलन खीस निपोर चुकी है। ठोस जिल्द भीतर के पहले पृष्ठ को फाड़ कर बायें हाथ की तरफ चट से अलग हो गयी है। बीच में दरार पड़ गयी है।

सुना था कि करबी में चौबे की तैनाती हुई है। दिल्ली में मुंशी ने कहा था। क्या यह सच है? कुछ पता न चला तब से आज तक।

मेरी पुस्तक पहुंच ही गयी होगी। प्रकाशक को बहुत पहले लिख चुका था। इधर कब आ रहे हो? धूप और हवा दोनों खाने को मिलेंगे [मिलेंगी]। घर के सब लोग ठीक हैं।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

१०-११-६५

प्रिय केदार,

हमारी Tragedy वाली किताब की जिल्द फट गई, यह भी एक छोटी-मोटी Tragedy हो गई। खैर, फुर्सत में जब कभी मन भाये, पन्ने पलट कर देखना। तुम्हारे प्रकाशक ने तुम्हारा कविता-संग्रह नहीं भेजा। दिल्ली में नामवर सिंह मुझे अपनी प्रति देने वाले थे लेकिन जब मिले तब घर भूल आये थे।

इधर अमृतलाल नागर ८-१० दिन आगरे रहे। एक उपन्यास-५०० पृष्ठों से ऊपर का-समाप्त किया है। बेगम समरू पर एक छोटा उपन्यास लिखने के डौल में हैं। इलाहाबाद में तुम्हारे समारोह की चर्चा कर रहे थे। इधर बायरन पढ़ रहा था। सूर्य पर बहुत सुन्दर कविताएँ लिखी हैं।

तु० रामविलास शर्मा



**‘चिन्तन’**  
**साहित्यिक-संस्था, बाँदा ( उ० प्र० )**  
**फोन नं० २५**

अध्यक्ष-

केदारनाथ अग्रवाल

मंत्री

देवकुमार यादव

प्रिय डाक्टर,

कार्यालय

स्टेशन रोड, बाँदा

दिनांक १६-१-६६

नेहरू डिग्री कालेज बाँदा में २६/१ को बसन्त पंचमी के अवसर पर ‘निराला’ जयंती मनायी जा रही है। प्रमुख वक्ता जनाब रामविलास शर्मा हैं। फर्स्ट क्लास का रिटर्न टिकट का व्यय मिलेगा। इस व्यय के देने की जरूरत न थी पर देना उत्तरदायित्व से मुक्ति पाना है।

डिग्री कालेज के प्रिंसिपल महोदय स्वयं पत्र लिख चुके होंगे। न मिला हो तो मिल रहा होगा।

यहां लोगों की उत्सुकता बढ़ गयी है तुम्हें देखने-सुनने की। नौजवान लोग खूब बात करना चाहते हैं-सोचना-समझना चाहते हैं। न आये तो उनकी भावनाओं का निधन होगा। यों ही वे शास्त्री जी के निधन से उबर-उबर रहे हैं।

मौन टूटेगा कि नहीं? आगमन होगा कि नहीं?

वैसे वादा बहुत पुराना है। उसके पूर्ति की कोई मियाद नहीं है। परन्तु अत्यधिक समय बीत चुका है। शुभागमन Long due है। ‘टूटें न तार तने जीवन-सितार के’<sup>1</sup>। कुछ ऐसी ही आशा है और विश्वास है।

निराला के जीवन पक्ष को समेट कर उसके सुगम और कठिन काव्य-पक्षों को उधार कर, नये युग बोध के सन्दर्भ में, तुम्हें दृढ़ता पूर्वक तकरीर करनी है-सोदाहरण। उनकी रचनाओं की महत्ता आज तो और भी अधिक सत्य को साकार करती है। देखते हो न कि ‘नयी कविता’ किधर धकेल रही है नयी पीढ़ी को-भूखी पीढ़ी की ओर और कविता बजाय जिन्दगी के निकट आने के, उससे दूर खिसकती चली जा रही है-अहित की ओर। क्या नवोन्मेष अन्तर्मुखी होकर गुहा गर्त में नहीं घुसता चला जा रहा है। युगबोध भी वैसा नहीं है जैसा चित्रित किया जा रहा है। केवल उधार ली गयीं काव्य-शैलियां भारतीय भाव-भूमि पर खेत में खड़े धोखार का प्रदर्शन करती हैं-महा कुरूप-निर्जीव। यह जो नये के नाम पर नकारात्मक रचनाएं धुएं की जैसे फैलती जा रही

---

1. केदारजी के एक गीत की पंक्ति। [अ० त्रि०]

60 / मित्र संवाद

हैं वह वास्तव में यथार्थ की सहज मानसिक प्रक्रियाओं को व्यक्त नहीं करतीं। डूबते-टूटते मनो-खंड मात्र ही दिखते हैं।

वैसे ठीक हूं। तब तक पूरा ठीक न हो सकूंगा जब तक तुम न आओगे।

बच्चों को प्यार।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

पुनश्च-

प्रिंसपल महोदय से अभी बात करके लौटा हूं कि उन्होंने आज ही पत्र लिखा है। वह भी शायद इसी पत्र के साथ मिले। अपनी स्वीकृति तार से भेज दो।

विषय चाहे जैसा हो-अपने मन के विषय पर ही बोलना। कोई प्रतिबन्ध नहीं है। कम से कम ३ दिन लगेंगे। एक दिन निराला। एक दिन शेक्सपियर। एक दिन और चिन्तन में।

सस्नेह तुं  
केदार

## 6 पैसे का तार

२०.१.६६

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। हम आयेँगे। २४ को ईद है। इसलिये उस दिन का उपयोग हम बाँदा के लिये कर सकते हैं। हम चाहते हैं कि २६ को बाँदा से चल दें जिससे २७ को ८ बजे क्लास ले सें। इसलिये अच्छा हो कि कालेज में वहाँ कार्यक्रम २५ को रखो। यदि यह संभव न हो तो लिखना। हम २६ को हर अयेँगे और २७ चल देंगे। कालेज में एक दिन से ज्यादा छुट्टी नहीं लेना चाहते। २४-२५ जनवरी वहाँ बिताने में सुविधा है। उत्तर जल्दी देना। प्रिंसपल का पत्र अभी नहीं मिला।

तुम्हारा  
रामविलास

२०.१.६६

प्रिय केदार,

श्रीमती जी को दिल धड़कने की बीमारी है। दिल सभी के धड़कते हैं लेकिन इन्हें [इनकी] रात में सोते समय नींद टूट जाती है-कभी-कभी-और दिल जोर से धड़कने लगता है। आज Blood Pressure चेक करायेँगे। कल रात इन्हें नींद न आई और परेशान रहीं। यद्यपि मैं जानता हूँ कि मेरे बाँदा जाने से इनका कुछ न बिगड़े गा, फिर

इनकी हिम्मत नहीं बँध रही है। यहाँ केवल लड़कियाँ हैं, लड़के सब बाहर हैं इसलिए घबड़ा जाती हैं—जल्दी।

इस मजबूरी में बाँदा आना स्थगित! अब जब कोई लड़कों में यहां हो गा, हम तभी आयेंगे। और बाँदा के लिए निमंत्रण की जरूरत नहीं।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

२०.१.६६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। मैंने फोन पर अभी २१/४ [सवा दो] बजे दिन डिगरी कालेज के प्रिंसपल से बात की। उन्होंने कहा २६/१ को निराला जयन्ती है। समारोह उसी दिन होगा।

अतएव तुम २४.२५/१ को यहां आ कर रहो। २६/१ को भी रह कर जयन्ती मनाओ। फिर २६/१ को समारोह के बाद चले जाना। पर आगरा २७/१ को पहुंच कर ८ बजे कैसे क्लास में पहुंचोगे।

अब तक प्रिंसपल का पत्र मिल ही गया होगा। आज वह फिर लिखेंगे।

आ रहे हो। तार देना ताकि हम लोग सटेशन में पहुंच कर मिल लें।

सस्नेह तु०  
केदार

प्रेषक : केदारनाथ अग्रवाल

वकील

बांदा (उ० प्र०)

बांदा

२२-१-६६

सबेरे ९ बजे

प्रिय डाक्टर,

२०/१ का पत्र मिला—अभी ही। यह जान कर हम लोगों को दुःख हुआ कि मिसेज शर्मा को दिल का दौरा<sup>1</sup> हो गया है। हम कैसे कहें कि ऐसे में तुम यहां आओ। फिर कभी देखा जायेगा।

---

1. दिल का दौरा—अभी दिल का दौरा न पड़ा था पर उन्हें स्थायी हृदय रोग था, नाड़ी की गति विषम रहती थी। रक्तचाप के कारण बेचैनी और बढ़ जाती थी।

62 / मित्र संवाद

परंतु बीमारी का हाल कभी-कभी लिख दिया करो। राहत हो जाती है। सुख-दुख बांट कर जीने का जीवन और ही होता है।

डिगरी कालेज वाले भी उदास होंगे। खैर

अब हम लोग ही निराला जयन्ती मनायेंगे। जैसा होगा-उल्टा-सीधा पढ़े-पढ़ायेंगे। शेष कुशल है।

कल प्रोग्राम बना कि आगरा पहुंच कर ही मोटर से ले आयें।

पर फिर स्थगित कर दिया। व्यर्थ की तकलीफ होती।

बच्चियों को प्यार

सस्नेह तुम्हारा केदार

**केदार नाथ अग्रवाल**

एडवोकेट

बांदा ( उ० प्र० )

दिनांक १७.२.६६

प्रिय डाक्टर,

तुमने पत्र न दिया कि अब तुम्हारी मलकिन की तबीयत कैसी है। मन में खटका लगा है। विश्वास यही है कि अब वह ठीक हो गयी होगी।

मेरे अपने नगर के मित्र ने कुछ कविताएं अंग्रेजी में हिन्दी से अनूदित की हैं। वह तुम्हें भेज रहे हैं। देख लो कि वे कहां तक सफल हुए हैं। बड़े परिश्रम से इस कार्य में लगे रहते हैं अध्ययन-अंग्रेजी का-अच्छा है। उद्धव-शतक-द्वारा रत्नाकार-का यह अनुवाद है। निःसंकोच दो-चार पंक्तियों में अपनी सम्मति देना ताकि वह उसे प्रकाशित भी कर सकें। आशा है कि व्यस्त समय का कुछ अंश इस दिशा में लगा कर यह सम्मति-दान का यज्ञ समाप्त करोगे। इनका नाम है श्री इन्द्रजीत सिंह। हम लोग ठीक हैं।

तुमने नहीं लिखा कि मेरी पुस्तक आज तक तुम्हें मिली भी या नहीं। केवल जानना चाहता हूं। तुमने पत्र नहीं दिया कि पा गये हो।

सुबह ठंड रहती है। रात भी गलती है। दिन में अवश्य धूप की गरमी घेरे रहती है।

उपनिषद् पढ़ना शुरू किया है-कल से। बड़ा मजा आ रहा है। ऐसा लगता है कि समय और काल से परे का चिंतन चल रहा है। किन्तु देखने की बात है कि यह चिंतन भी साफ-सुथरा, संयत और सहज स्वरूप में व्यक्त हुआ है। दुरूह नहीं है।

आशा है कि पत्र दोगे और हालचाल लिखोगे।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

२४.२.६६

अंग्रेजी विभाग से एक सज्जन रिसर्च करने गये हैं; एक सेशन के बीच में दूसरी जगह प्रिंसिपल हो कर चले गये। नतीजा : काम की भरमार। आजकल पढ़ाई के बदले कोर्स खत्म कराने पर जोर है।

तुम्हारी कविता पुस्तक मिल गई थी। तुम्हारे मित्र के अनुवाद भी मिले। मालकिन ठीक हैं। चिन्ता का कोई कारण नहीं है। अब होली के बाद फुर्सत से लिखूंगा। तुम्हारी होली सफल हो।

तु० रामविलास

Banda

25.2.66

प्रिय डाक्टर,

एकदम मौन—कोई पत्र नहीं—कारण अज्ञात। सन्नाटा टूटेगा, क्या ऐसी आशा करूं?

अब बीमारी का हाल क्या है?—आशा है कि वह ठीक हो गयी होगी। हमलोग इस विषय में समाचार जानने के लिए व्यग्र हैं।

कल धर्मवीर भारती यहां से चित्रकूट—कालींजर—वृहस्पत कुंड—खजुराहो के लिए सपत्नीक, अपने बच्चों के साथ, सूचना विभाग के अधिकारी के साथ, उसी विभाग की मोटर में प्रातःकाल १० बजे रवाना हुए हैं। परसों शाम ७ बजे वह बांदा आये थे। उन्हें सोल्जर्स बोर्ड के विश्राम गृह में ठहराया गया था। मैं मिलने गया था। वह लौट कर यहां २६/२ को आ रहे हैं—यहां से २७/२ को प्रयाग जायेंगे।

यहां सब पूर्ववत् है।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)

१२.३.६६

प्रिय डाक्टर,

इस बार दो पेजी पत्र मिला। पढ़ गया। अपने बारे में लिखा गया पढ़ कर प्रसन्न भी हुआ और अवसन्न भी। प्रसन्न इसलिए हुआ कि जनाब ने कुछ अच्छा कहा है। अवसन्न इसलिए हुआ कि विद्वान डाक्टर ने मेरी रचनाओं के बारे में कोई ऐसी बात नहीं कही जिससे मैं खुश होऊं। बात यह है कि समेड्डा (यानी एकजाई) भाव से अच्छाई—बुराई लुक—छिप कर चली आई है। ऐसी दाद का मैं भूखा नहीं हूँ। अरे, खुल

कर होली खेलते और सब कह डालते कि हमारी उपलब्धि Zero है। हम कतई बुरा न मानते। कभी अपने प्यारे दोस्त का बुरा माना जाता है। हमने तो तुम्हें इसीलिए दिल में जगह दी है कि वहां कुटी छाये बने रहो और हमें आगाह किये रहो। खैर जब मिलेंगे हम लोग निबट लेंगे।

मेरे पत्र तुम्हें अच्छे लगते हैं। यही तो वजह है कि तुम्हें मेरी कविताएं नहीं रुचतीं। मैं जानता तो पत्र ही न लिखता और तब देखता कि कविताएं कैसे नहीं अच्छी लगतीं। भूल तो हो गयी न। इसका पछतावा रहेगा।

जनाब ने हिन्दी टाइम्स और जनयुग ही पढ़ा होगा। और इसी पर शान से कह रहे हैं कि हमारे मान-सम्मान को पढ़-पढ़ कर रस लेते रहे। यह तो केवल मुझे फुसला रहे हो-दम दिलासा दे रहे हो। जब तुमसे-विद्वानों से वाह निकले तब जन्म सार्थक समझूंगा। कलम का कच्चा हूँ-कला में बच्चा हूँ-इससे वाकिफ हूँ। पर अधिक ऊपर उठना असम्भव है-चाहे जो करूं।

श्री इन्द्रजीत सिंह अभी नहीं मिले। मिलने पर उन्हें पत्र सुना कर गुब्बारा कर दूंगा। प्रति रक्खे रहो।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला।

तुम्हारी अच्छी कविताएँ मुझे इतनी अच्छी लगती हैं कि मैं उनसे अच्छी कविताओं की कल्पना नहीं कर सकता। इस तरह की रचनाओं का एक नमूना है-धूप धरा पर उतरी। कविता लगभग धूप के समान ही निरलंकार और सुन्दर है। प्रकृति संबंधी कविताओं में कहीं कहीं Conceils हैं जैसे-

जल रहा है  
जवान हो कर गुलाब;  
खोल कर होंठ :  
जैसे आग  
गा रही है फाग।

यह Conceil बहुत ही सुन्दर है क्योंकि उसमें इन्द्रियबोध का पूर्ण उदात्तीकरण है-आग से जलते हुए रंग का बोध है।

तुम्हारी व्यंग्य वाली कविताएँ मुझे बेहद पसन्द हैं जैसे धोबी गया घाट पर (पृ० ९६)-इसकी वक्र व्यंजना में अगाध वेदना छिपी हुई है-इसीलिये इतनी मार्मिक है।

व्यंग्य हीन उदात्त घोषणाएँ व्यक्तित्व के [की] सामर्थ्य से ही कविताएँ बन गई हैं जैसे "मैं हूँ अनास्था पर लिखा" आदि (पृ० १४८)।

कानपुर, बुन्देलखंड के आदमी जैसी कविताओं में घन की चोट है : यथार्थ का रंग, सादगी में भी वीरतापूर्ण। तुम्हारी कविताओं की भाषा शैली व्यंजना का ढंग सब ऐसे हैं जो एक लोक कवि को ही—और संसार के थोड़े से बहुत बड़े-बड़े कवियों को ही—सुलभ होते हैं। इनमें जहाँ तहाँ—एकाध पंक्ति में—कुछ भारी भरकम शब्द आ जाते हैं जो लोक रस में बाधक होते हैं। ऐसा बहुत कम होता है—यद्यपि होता अवश्य है।

तुम्हारा इन्द्रिय बोध तगड़ा है; वैसा ही दृढ़ भाव बोध भी है किन्तु इनके साथ विचार और चिन्तन की वह गहराई नहीं है जो दान्ते, शेक्सपियर आदि उच्चतम कवियों में है। इसलिये कि तुम सहज कवि हो, दार्शनिक नहीं। आधुनिक हिन्दी में: नयी पीढ़ी और दिनकर-बच्चन वाली पुरानी पीढ़ी दोनों में—तुम सर्वश्रेष्ठ कवि हो। इन्द्रियबोध के टक्कर की विचार-गरिमा हो तो तुम शेक्सपियर और दान्ते की तरह विश्ववन्द्य हो जाओ। अब तुम कहो कि इससे मुझे खुशी नहीं हुई, तो संभव है, न हुई हो। लेकिन मेरा आशय स्पष्ट नहीं है, यह शिकायत न रहे गी।

और सब ठीक—

तुम्हारा

रामविलास शर्मा

पत्रों में गद्य अच्छा लिखते हो, इसका मतलब यह नहीं है कि कविताएँ अच्छी नहीं हैं। तुम कवि होने के साथ एक बहुत अच्छे गद्य लेखक हो—इतना ही।<sup>1</sup>

रा० वि०

बांदा

२१.३.६६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। और तो सब ठीक ही है। वह दर्शन कौन सी बला है जो मुझे पकड़ में नहीं मिल रहा। “चिन्तन की गम्भीरता” भी कठिन है। खैर देखा जायेगा। चिट्ठी रख ली है। जनाब की राय है। शायद कभी किसी पर इसका रोब पड़े।

हम ४/५ दिन से बीमार पड़े हैं। ज्वर है,—दर्द है—कचहरी नहीं जा रहे। प्रतिदिन ४०/- रु० का आराम कर रहे हैं। दवा हो रही है। ठीक हो जायेंगे। आशा है कि अब तो कापियों के ढेर उलटने-पलटने का जोर होगा।

बच्चों को प्यार। यानी बेटियों को।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

1. रा० वि० जी० के 14.3.66 के पत्र में उल्लिखित पृ० सं० ‘फूल नहीं रंग बोलते हैं’ से उद्धृत हैं।  
[अ० त्रि०]

३०, नयी राजामंडी,  
आगरा  
४.५.६६

प्रिय केदार,

जवाहर-राजेन्द्र यादव एंड कंपनी ने जो पुस्तकें प्रकाशित की हैं, वे तुम्हें प्राप्त हुई [हुई] या नहीं? उनमें मेरा एक निबन्ध संग्रह<sup>1</sup> भी है।

तुम्हारे स्वास्थ्य का क्या हाल है? मुझे दो दिन से दस्त आ रहे हैं। और कुशल है। इधर अंग्रेज आलोचकों<sup>2</sup> पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ।

समाचार देना।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा (३० प्र०)

७.५.६६

प्रिय डाक्टर

जवाहर-राजेन्द्र यादव एंड कंपनी ने मुझे कोई पुस्तक या पुस्तकें नहीं भेजीं। न मैंने स्वयं प्राप्त कीं। मुझे मालुम है कि तुम्हारी एक पुस्तक उस सेट में है। जब समय आयेगा तब मिल जायेगी। वरना मैं बाहर गया तो ले आऊंगा।

हां, कान्ता<sup>3</sup> ने मुझे अज्ञेय का काव्य-संकलन-‘सुनहले शैवाल’-ज़रूर भेंट में भेजा है। मैंने उस संग्रह को भेजने के लिए लिखा था। उस बेचारी ने अपने दाम से मुझे भेज दिया। देखी पुस्तक। मुझे तो एक भी कविता कविता न लगी। गुरु-गम्भीर आरोपण हरेक में व्याप्त है। कविताएं नहीं बोलती हैं। अज्ञेय बोलते हैं। दाम भी काफी जूतामार है। पता नहीं क्यों इन जवाहर एंड को ऐसा कवि भा गया है? भगवान इन्हें भी आंख-कान और सुमति दे। ऐसी रचनाएं कोई भी नहीं रुचि से पढ़ता। नाम देख कर छाप लिया है, ऐसा लगता है।

हम तबियत से ठीक हैं। कल एक डाढ़-बायीं-नीचे की उखड़वाई है। ठीक है।

अब दस्त बंद हो गये होंगे। तबियत निरमल हो गयी होगी। अंग्रेज आलोचकों पर एक पुस्तक लिख रहे हो-लिखो। अरे, हिंदी वालों पर भी तो कलम चले।

1. ‘भारत की भाषा समस्या’ जिसे ‘राष्ट्रभाषा’ की समस्या के नाम से अक्षर प्रकाशन ने छपा था।
2. पुस्तक पूरी नहीं हुई।
3. ‘कल्पना’ पत्रिका वाले श्री बद्रीविशाल पिप्ती की सगी बहन और ‘कृति’से सम्बद्ध कवयित्री! दो कविता संकलन छपे हैं। अब दिवंगत। [अ० त्रि०]



‘दिनमान’ में प्रगतिशील लेखक संघ के दिल्ली अधिवेशन पर बहुत करारी चोट छपी है। देखना। शायद संघ वालों को बाहोश करे। कब आओगे?

सस्नेह तु. केदार

२१.५. [६६]

प्रिय केदार,

कार्ड मिला। मैंने जवाहर को लिखा था कि तुम्हें ‘रा. भा. की समस्या’ भेज दे। उसका पत्र आया है कि पुस्तक तुम्हें भेज दी गई है। लिखना, मिली कि नहीं।

लू जोरों पर है।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

२२.५.६६

प्रिय डाक्टर,

इस समय दीवाल घड़ी में ४ : ४५ हुआ है। फिर भी बाहर लू लपट मार रही है और ज़मीन की देह चाट कर पानी सोख रही है। ऐसे में कमरे में ऊपर टंगा चल रहा पंखा और उसकी हवा दोनों ही जी-जान की रक्षा किये हैं।

‘राष्ट्रभाषा की समस्या’-पुस्तक परसों आ गयी। प्रकाशक ने भेजी है। पढ़ रहा हूँ। ५० पेज से कुछ ऊपर गया हूँ। कुछ लेख पहले के पढ़े हैं। याद आ रहा है। मुझे तो इन विचारों में तर्क और सत्य दोनों ही जी रहे मिलते हैं। जो कहते हैं कि यह विचार प्रतिक्रियावादी हैं वह सरासर गलत कहते हैं और वह स्वयं उस वाद के शिकार हैं। अपने विचार और भी व्यक्त करूंगा। पुस्तक हरेक हिन्दी भाषी पढ़े तब है। वरना, दूसरों के विचार ठीक न होंगे। इसका प्रचार होना चाहिए। ऐसी पुस्तक की बड़ी जरूरत थी। रविशंकर शुक्ल की खूब बखिया उघड़ी है। वैसे सभी चोट खाये कराहते दिखते हैं। वाह रे डाक्टर। तुम्हारी हिन्दी जनता की हिन्दी है जो उसके हाथ में तेग-तलवार तो है ही-ऐटमी शक्ति भी है। भारतेन्दु इत्यादि की परम्परा में तुम चल रहे हो। दूसरे नहीं। बधाई।

सस्नेह तु० केदार

२४.७.६६

प्रिय केदार,

इधर समाचारों में बाँदा की बड़ी चर्चा रही। सुना, वकीलों ने कचेहरियाँ जाना बंद कर दिया। अब क्या हाल है?

यहाँ गर्मी बेहद है, वर्षा के नाम पर दो चार छींटे। बस। इस महीने हाथ में बाल तोड़ हो गया था। कुछ दिन बुखार भी रहा।

चीनी भाई भी खूब हैं। भारत से लड़ने को इतनी उतावली थी; अमरीका से लड़ने को पैतरा ही दुरुस्त कर रहे हैं।

तु० रामविलास शर्मा

बाँदा (३० प्र०)

२९.७.६६

प्रिय डाक्टर,

हाँ, इधर अब तक बाँदा समाचार पत्रों में खूब जोर शोर से छप रहा है। सोता नगर भभक पड़ा है। लपटें लव कुश की तरह बढ़ रही हैं। अभी तक वकीलों की हड़ताल चल रही है। बड़े-बड़े लोग आते और बोल-बाल कर चले जाते हैं। मैंने भी उनके दर्शन किये हैं। मैं कचहरी जाता हूँ। हाज़िर रहता हूँ। मुझे छूट है जाने की। और सब लोग कोर्ट्स नहीं attend करते।

गर्मी तो तेज़ धार की तलवार की तरह लगती है और खून न बहा कर पसीने-पसीने कर देती है। पानी भी बरसता है तो जैसे मुरदों पर चांदी के गुलाब पाश से गुलाब जल छिड़का जा रहा है। हद्द हो गई मेघराज तुम्हारी दया-दक्षिणा। वह भी सरकारी हो गये हैं।

बुखार में पड़ रहे होओगे। पढ़ना तब तो छूटा होगा। वरना तुम्हें चैन कहां। खुशी हुई कि अब अच्छे हो गये हो।

चीनी भाई के पैतरे सब खुल गये हैं। वह अपने पैतरों से ही अपना सत्यानाश करेंगे।

मुंशी जनयुग के सम्पादकत्रय में आ गये हैं। और सब ठीक है।

सस्नेह तु० केदार

केदारनाथ अग्रवाल

एडवोकेट

बांदा (उ० प्र०)

१२.९.६६, रात ९ बजे

दिनांक.....१९

प्रिय डाक्टर,

यह पत्र अपनी प्रिय भतीजी लता अग्रवाल के हाथ तुम तक भेज रहा हूँ। वह तुमसे मिलने आ रही है। इसलिए मेरे पत्र की जरूरत थी। अतएव मैंने उसके लिफाफे में रख कर उसी के पास, इसे भेजना मुनासिब समझा। फिर तुम्हारे पते से भेजता तो डर भी था कि शायद देर से मिले या किवाड़ों के पीछे, पहले की तरह, दबा-दुबका न रहे जाये।

हां तो वह रिसर्च करना चाहती है। एम. ए. है—हिन्दी में। पता नहीं विषय क्या होगा। बात कर लेना। अपने व्यस्त समय में से उसे भी अपना समय दे देना। और जो सहायता पढ़ने-लिखने में दे सको दे देना। पुस्तकें भी सुझा देना। synopsis भी तयार कर ले तो ठीक मार्ग दर्शन कर देना। वह तुम्हारी भी तो भतीजी है। मैं तो गदहा ताऊ हूँ। तुम विद्वान आलोचक पंडित ताऊ हो। वह जाये तो कहां—किसकी शरण।

वह अपने यहां—मुरादाबाद के डिग्री कालेज में—तुम्हारा भाषण कराना चाहते [चाहती] हैं [है]। यदि उचित समझो और अनुचित न हो तो वहां जा कर भाषण देना स्वीकार कर लेना। हां, अपना पारिश्रमिक तय कर लेना। मैंने लता को अभी पारिश्रमिक के विषय में कुछ भी नहीं लिखा। वह तो implied है ही। फिर मेरा यह पत्र भी तो वह पढ़ लेगी और समझ जायेगी।

हम लोग इस आशा में हमेशा रहते हैं कि जनाब बांदा तशरीफ ला रहे हैं। हमारी आशा झूठी नहीं है, ऐसा तो श्रीमान् भी समझते हैं। फिर क्या वजह है कि आगमन नहीं होता।

तुम तो लिख ही रहे हो। हम कलम नहीं घसीट पा रहे। वह चलती ही नहीं। कचहरी हमारा हरण किये हुए है।

साहित्य में भी हर नगर अपनी चहल-पहल से जी रहा है। खेद है कि नागरिक साहित्य में एकता का सूत्र नहीं बन सका। इधर प्रयाग में अपने भाई जान अमृतलाल नागर का अभिनंदन हुआ था। हमें सूचना नहीं मिली थी। वरना हम चले जाते।

बेटे-बेटियां मजे में होंगी। जो बेटा बीमार थी वह अब तो ठीक हो गयी होगी। धर्मपत्नी जी की तबियत कैसी है? हम लोग ठीक हैं। पत्र देना।

सस्नेह तु० केदार

70 / मित्र संवाद

बांदा  
९.१०.६६

प्रिय डाक्टर,

मैं दिनांक २०/९ को दिल्ली पहुंचूंगा। २२/९ तक वहां रहूंगा। बेटी को लेने जा रहा हूँ।

क्या तुम दिल्ली तो नहीं रहोगे?

पत्र देना। यदि सम्भव हुआ तो दिल्ली में मिल लूंगा। आगरा उतरना तो सम्भव न होगा क्योंकि बच्चे रहेंगे।

सस्नेह तुं  
केदार

प्रिय केदार,

मैं अभी १२-१० को दिल्ली ले लौटा हूँ। २४-२५/१० को इलाहाबाद हूँ गा-विवेचना गोष्ठी में। इस अवसर पर बाँदा आने का विचार था किन्तु उसके बाद ही बड़ौदा और उज्जैन जाना है। कुछ अन्य आवश्यक कार्य हैं जिनसे २४ के पहले निकल नहीं सकता। यदि २३ को यहाँ आ जाओ तो साथ इलाहाबाद चल सकते हैं। यदि ट्रेन का नाम लिख दो तो स्टेशन (राजामंडी) पर मिलूँ। रास्ता तो यही हो गा। शेष कुशल।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा

२३.१२.६६

प्रिय भाई,

कई दिन से सोच रहा था कि आगरे चलूँ। वहीं बड़े दिन की छुट्टियाँ बिताऊँ। पर न हो सका। कल मद्रास जा रहा हूँ, बेटे के पास। ३१/१२ तक लौटूँगा। उसको फिल्म की शूटिंग के लिए २९/१२ को केरल जाना है। 'जन्मभूमि' नाम है। National Integration का विषय है।

अब बांदा कब आओगे?

भूल गये क्या?

इधर दौरा तो काफी कर रहे हो। प्रयाग भी गये थे। दिनमान में पढ़ा था मैंने। बच्चे अच्छी तरह से होंगे। मालकिन की तबियत ठीक होगी।

हम लोग ठीक हैं।

मौसम ठंडा है।  
सब को हम लोगों का नमस्कार।  
नागार्जुन दिल्ली हैं। नागर का पत्र आया था।

सस्नेह तु० केदार

प्रिय केदार,

५.१.६७

आशा है, मद्रास से लौट आये हो गे और साथ में कुछ कविताएँ—या उनके लिये सामग्री भी लाये हो गे। आजकल यहाँ बेहद ठंड है। पहले मुझे सर्दी हुई, उसके बाद पत्नी को। इस बार विद्यार्थियों के संघर्ष के कारण कालेज काफी दिन बन्द रहा। बड़े दिन की छुट्टियाँ नहीं हुईं। अब फरवरी के अंत तक यह चर्खा चले गा। इसलिये बांदा आना खटाई में है। वैसे भी जब तक यहाँ कोई लड़का छुट्टियों में न हो, बाहर निकलना नहीं हो पाता। शायद गर्मियों में, या दशहरे में ....

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा  
२०.१.६७

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिल गया था। गर्मियों में या दशहरे में तुम्हारा आना सम्भव होगा—यह भविष्य की बात है।

वैसे मैं स्वयं जब चाहूंगा तब आगरा आ धमकूंगा। कोई बात ऐसी नहीं है कि मुझे चिन्ता हो।

मद्रास तो कविताएं नहीं दे सका—क्योंकि व्यस्त रहा था उन लोगों में जो फ़िल्म बनाने की योजना में लगे थे। केरल जाना था;—अवकाश न था। वहां जाता तो जरूर कविताएं लिख लाता। शायद कभी जा सकूं और वहां की प्रकृति समेट ला सकूं। इधर पता चला था कि तुम इलाहाबाद अक्टूबर में रहे हो और वहां कुछ विचार विनिमय हुआ था। अच्छा रहा होगा। वैसे घूमते रहा ही करते हो। औरंगाबाद इत्यादि नगरों में।

इधर चुनाव का दमकला दहाड़ रहा है—हटो-बचो करके दौड़ रहा है। बांदा बैल को हुरेठता है या बैल उसे। देखो क्या हो। ठंड है—रात में जोर की। दिन तो धूप लपेट कर गरमाता रहता है।

सस्नेह तु० केदार

72 / मित्र संवाद

३०, नई राजामंडी

आगरा-२

८-५-६७

प्रिय केदार,

एक सज्जन श्री सुभाषचंद्र शर्मा अतर्रा में Sociology में Lecturer है। इनके पिता हमीरपुर में Inspector of Schools हैं। यदि तुम सुभाषचंद्र के बारे में कुछ जानते हो तो सूचित करना। इसकी संभावना कम है कि तुम उन्हें जानते हो, इसलिये अतर्रा में अन्य किसी को लिख कर उनके बारे में जानकारी प्राप्त करना—शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, स्वभाव, अध्यापक स्थायी या अस्थायी इत्यादि। शोभा के विवाह के लिये वर की खोज में हूँ।

अतर्रा में किन्हीं सज्जन ने लोकगीतों पर कुछ काम किया था। वह तुम्हें जानते हैं, मिले हैं। मैं नाम भूल गया हूँ। तुम्हें नाम याद आये तो लिख भेजना। शेष कुशल।

तुम्हारा

रामविलास शर्मा

बांदा

२०.५.६७

प्रिय डाक्टर,

८/५ का पत्र सामने है। आज अतर्रा डिग्री कालेज के प्रिंसिपल से पूछताछ करने पर पता चला कि श्री सुभाषचंद्र शर्मा वहां Temporary थे। जुलाई में फिर वहीं उनकी नियुक्ति होने की सम्भावना है। वह गोरे रंग के—शरीर से लम्बी गठन के स्वस्थ स्वभाव के युवक हैं। उनका Pay Scale 400 to 800 का है। वह धूम्रपान भी नहीं करते। मैं स्वयं वहां जा कर उनसे मिलना चाहता था पर डिग्री कालेज के बंद होने से वह वहां से चले गये हैं। जुलाई में जा कर देख सकता हूँ।

चि० विजय के शुभ विवाह का मुद्रित निमंत्रण मिला। प्रयास करूंगा कि इस भंयकर 'भीमा' गरमी में भी यहां से जलता-भुनता अलीगढ़ पहुंचूँ या आगरे ही। लेकिन सब कुछ निर्भर है कचहरी पर। न पहुंचने पर गालियां न देना। पहुंचने पर शीतल जल और मिष्ठ भाषण देना। क्या बताएं कि शादी की साइत भी बनी तो अच्छे मौसम में न बनी और किसी लम्बी छुट्टी के दिनों में न बनी। बहरहाल पके आमों के दिनों की शादी ही ठेठ हिन्दुस्तानी शादी है। तभी सब ब्याहे जाते हैं।

तुमने भी तो आग का घर आगरा रहने के लिए चुना है।

कुटुम्बियों को नमस्कार। मुंशी को भी।

सस्नेह तु०

केदार

२.६.६७

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। अतर्रा वाले युवक के संबंध में बातचीत का सिलसिला खत्म हो गया है। इसलिये उसके बारे में और जानकारी पाने की कोशिश न करना।

विजय का विवाह पिछली जनवरी में करने वाले थे किन्तु इससे परीक्षा की तैयारी में व्यस्त लड़कियों को न पढ़ने का एक बहाना मिलता, -१०-१५ दिन तक चाहने पर भी वे न पढ़ पातीं-इसलिये मजबूरन गर्मियों में रखना पड़ा। २३ मई को लखनऊ में भतीजी का ब्याह, २७ को विजय का-खूब लू खाई, खूब जगे, खूब थके, बुढ़िया पुराण के हामियों को खूब गालियां दीं।

२६-२७ को किशोरीदास जी वाजपेयी कनखल (हरिद्वार) में रामचंद्र वर्मा का अभिनंदन कर रहे हैं। शायद मैं जाऊँ। तुम्हारा उन दिनों दिल्ली की ओर आने का कार्यक्रम हो तो लिखना; मसूरी-देहरादून की हवा खाई जाय।

तुम्हारा  
रामविलास

३०, नयी राजामंडी

आगरा-२

३१.१२.६७

प्रिय केदार,

नया वर्ष फले। खूब कविताएँ लिखो।

तुम्हारे पिछले कार्ड में 'अमृत और विष' की आलोचना पर राय थी कि विस्तार बहुत है। नतीजा यह कि निराला जी की जीवनी के तीन अध्याय जो सौ-सौ पन्ने के थे, मैंने काट कर पचास-पचास के किये।

इन महीने के शुरू में मैं दिल्ली गया था। शमशेर से मिला। तुम्हारे लंबे पत्र की बात सुनी। देखने को नहीं मिला। भीड़-भाड़ थी। नामवर से मैंने कहा कि वह पत्र आलोचना में छाप दे। शमशेर गद्य बहुत अच्छा लिखते हैं; मैंने उनके कई पुराने लेखों की तारीफ की। तुम्हारे ऊपर उनका लेख मुझे बहुत पसन्द आया। अब भीड़ छटने लगी है। नयी कविता का नयापन पुराना हो गया। कविता चमकने लगी। शमशेर का लेख उसी का प्रमाण है।

नागार्जुन इलाहाबाद हैं। मिले तो न होंगे? शायद जनवरी में दिल्ली आयें। नरोत्तम एक नया वार्षिक पत्र निकाल रहे हैं-"ठिठोली"। शायद विज्ञप्ति मिली हो। आज यहाँ कई दिनों की वर्षा के बाद आसमान खुला है।

आशा है, सपरिवार प्रसन्न हो।

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा

प्रिय डाक्टर,

नये वर्ष की शुभकामनाएं मिलीं। मैं भी शुभकामनाएं भेजता हूं। निराला की पुस्तक भरपूर शक्ति से तयार कर लो। प्रकाश में आये। फिर से कविता जगमगाये।

काट पीट करना तो तुम्हारा पुराना काम है। लोग ऐसा कहते रहे हैं। हां, अपने लिखे को काट रहे हो, यह नया श्रेयस्कर काम है। वैसे बहुत फैलाव का मैं कभी कायल नहीं रहा। न गद्य में—न पद्य में। पुस्तक पढ़ने वाला तह में डूबे और फिर उबरे और नयी प्रतीति से सब कुछ आसपास का ग्रहण करे।

दिल्ली के लोग या तो हल्ला मचाना जानते हैं— या विसंगति में सने सुनसान में चले जाते हैं, जहां वही-वही रहते हैं। कविता को उन्होंने अपने हाथों से मसल कर फेंक दिया है और अपने खुद को 'थेगड़ही' शक्त में खड़ा कर दिया है— धोखार की तरह। हमें ऐसा काम अच्छा नहीं लगता। नया भी ऐसा गया [गुजरा] हो सकता है हम नहीं सोचते थे। बस दिलासा इसी से मिलती है कि वह खुद गिर पड़ रहे हैं और कविता फिर गरम-गरम सांस ले कर जीने-जागने और गाने लगी है। समय सब कुछ कूड़ा करकट फेंक देता है और उसी को संवारता-सजाता और जिन्दा रखता है जो इस योग्य होता है। धैर्य की कमी से ही हमारे भाई लोग भटक जाया करते हैं। वही हुआ है।

शमशेर का लेख तुम्हें पसन्द आया तो कोई वजह नहीं है कि हमें क्यों न पसन्द आये। बस बात इतनी है कि कुछ Facets ही पर कुछ-कुछ विचार किया गया है। Formalist होने का खंडन जो किया गया है वह अज्ञेय के लिए दृष्टि दी गयी है। बहरहाल जब सब चुप हों तब शमशेर का लेख अवश्य ही महत्त्व और महत्ता रखता है। हम तो अपने बारे में चुप ही रहेंगे। तभी बोलेंगे जब कोई छत्ता छेड़ेगा [छेड़ेगा]। मैं तो कविता को खुद जीने देना चाहता हूं और अपनी उम्र खोजने देना चाहता हूं। ठोंक-पीट का काम कुछ ही लोगों के लिये जरूरी होता है। वैसे मैं बताऊं मेरा [मेरी] रचनायें बहुत से लोगों ने पसंद की हैं। बहुतों ने नापसन्द की हैं। पर मैं स्वयं आस्थावान हूं। अभी उस पर नयी पीढ़ी ज़रा ध्यान से गौर कर सकती है कि हम कहां खड़े हैं। खैर। नामवर शायद ही कुछ लिखें। वह दोनों तरफ दांव पेंच से देखते हैं। बरसों से ऐसा कर रहे हैं। नये के प्रति आग्रही हो कर नया क्या है—इसे पकड़ने में इधर उधर झूलते रहते हैं।

मैं [ने] तुम्हारी भाषा विज्ञान वाली पुस्तक को दो विद्वान व्यक्तियों को पढ़ाया। मान गये वे दोनों। बधाई लो।

नागार्जुन इलाहाबाद हैं। भेंट क्या होगी? न तुमसे होती है—न उनसे। क्या आसकोगे बसंत पंचमी में? यदि हां तो कैसे और क्या लेकर? कुछ विद्यार्थी पूछते हैं। मैंने



कह दिया दिया है कि मेरी सामर्थ्य के बाहर है तुम्हें बुलाना। जैसा लिखोगे बता दूंगा। यह डिगरी कालेज की ओर से नहीं कह रहा। अलग के लोग हैं।

केन खूब जानदार रवानी से बह रही है। मंगल के दिन ४ घंटे सैर कर के देख आया। मौसम में वही मस्ती है जो पहले पाया करता था। एक तरफ कचहरी खाती चली जाती है दिन पर दिन मेरी उम्र-दूसरी तरफ वह प्रकृति बढ़ाती चली जाती है। अभी जिऊंगा। शौक से।

और जो हाल हो लिखना। नरोत्तम का पत्र आया था। 'ठिठोली' निकलेगी। देखो, चले तो जानें। बेचारा परेशान है ही। बच्चों को प्यार।

सस्नेह तु० केदार

३०, नई राजामडी,  
आगरा-२  
२८-१-६८

प्रिय केदार,

बसन्त पंचमी पर तो न आ सकूँ गा पर इस वर्ष आऊँ गा ज़रूर-अप्रैल या मई में और दो-तीन दिन रहूँ गा। निश्चित।

दिल्ली से नरोत्तम ने यह समाचार दिया है कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। इधर वह बेहद मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहे। हिन्दी टाइम्स बन्द हो गया; वह सिलसिला भी टूट गया। बुढ़ापा और अनिश्चित जीवन; अकेलेपन और टूटने की बातें करते हैं डालमिया के वेतन भोगी पत्रकार।

इधर सदी बहुत पड़ी। कुछ सदी, कुछ व्यर्थ के सांस्कृतिक समारोह। बड़ा समय नष्ट हुआ। अब पुस्तक में फिर जुट रहा हूँ। 'धर्मयुग' में मेरा लेख न देखा हो तो देखना। शेष कुशल।

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा

[फरवरी १९६८]

सुना तुमने-अब नरोत्तम नहीं रहे। ५/२ को ४<sup>१</sup>/२ [साढ़े चार] बजे शाम घर छोड़ कर अनंत की यात्रा में चले गये। यह क्या हो गया? अब मौत हम लोगों की तरफ बढ़ रही है। जुझारू दोस्त को अचानक ले गयी। वह शायद बेकार होते ही दिल तोड़ बैठे थे। वैसे दमदार आदमी थे और अभी जीने की इच्छा रखते थे। उनके बेटे प्रिय विजय का पत्र कल शाम मिला और तभी यह शोक संवाद मिला। तुम्हारे पत्र से यह तो मालुम

76 / मित्र संवाद

हुआ था कि वह बहुत परेशान हैं पर यह आभास नहीं हुआ था कि परेशानी जानलेवा परेशानी हो चुकी है। तुम भी उनके बेटे को धैर्य बंधाना। समय मिलते ही वहां जाना चाहूंगा। यह बड़ा अक्खड़ और फक्कड़ था। पुरानी यादें ताजी हो गयी हैं। एक-एक बात याद कर रहा हूँ और उनका चलचित्र देख रहा हूँ। अन्त में वह टिटिहरी शरीर टूट ही तो गया। कोई भी दिल्ली में उस टूट रहे शरीर को टूटने से न बचा सका। बस।

तुम्हारा सस्नेह,  
केदार

१५-२-[१९६८]

हां, भाई सुना। विजय नागर के कार्ड से ही मालूम हुआ। न रेडियो पर कोई खबर न अखबार में। पूंजीवाद में लेखक की स्वाधीनता के शिकार नरोत्तम नागर। जिसके साथ हमारे तुम्हारे प्रारंभिक साहित्यिक जीवन की स्मृतियाँ जुड़ी हैं। मुंशी दाह कर्म में शामिल थे। एक हार्ट अटैक जनवरी में हुआ था। उससे बचे गये थे। दूसरा ले गया। कुछ गृहस्थी संबंधी चिन्ताएँ ऐसी थीं जिन पर उनका या उनके मित्रों का बस न था। खैर, जो रह गये हैं, उन्हें अभी रहना है और लड़ना है।

रामविलास

३०, नयी राजामंडी,  
आगरा  
१२.३.६८

प्रिय केदार,

मैं २७ मार्च की शाम को झांसी से बांदा चलूंगा। २८ मार्च (वृहस्पति) के सबेरे बांदा पहुँचूंगा। दिन भर बांदा रहूंगा; तुम्हें अवकाश हुआ तो चित्रकूट भी चल सकते हैं। दूसरे दिन सबेरे किसी बस या ट्रेन से इलाहाबाद जाऊंगा। यहां उस तरफ का टाइम टेबल नहीं मिला। बांदा से इलाहाबाद सबेरे कोई गाड़ी जाती हो तो बांदा से चलने और उसके इलाहाबाद पहुंचने का समय लिख देना। मैं नागार्जुन को लिख रहा हूँ कि वह भी २८ को बांदा में हों। तुम वहां मेरा कोई कार्यक्रम रखना चाहो तो रख लेना। वैसे कचहरी से बचा सारा समय हमें मिले। यही तमन्ना है। प्यार।

तुं  
रामविलास

बांदा (३० प्र०)

१४.३.६८

प्रिय भाई,

इलाहाबाद से रेडियो होली गा रहा है, 'मोहे न मारो पिचकारी गिरधारी'। मैं सिर झुकाए जनाब को पत्र लिखा रहा हूँ और सामने पड़ा है आगरे से आया और कल ही मिला पत्र। बेहद खुशी हुई कि २७/३ की शाम को झांसी से चल कर रात को बांदा पहुंच रहे हो और इससे ज्यादा खुशी इस बात की हुई कि २८/३ को बांदा में ठहर कर २९/३ को सबेरे इलाहाबाद वापस जा रहे हो। यह एक दिन का यहां ठहरना कंजूसी का ठहरना है। फिर भी संतोष कर लूंगा यदि तुम नहीं ठहरोगे २/१ दिन और। २९/३ को सबेरे ६ बजे यहां से बस जाती है जो इलाहाबाद उसी दिन ११ बजे दिन तक पहुंचा देगी। ट्रेन तो दोपहर को १.३० बजे मिलेगी। मानिकपुर होकर-९/१० बजे रात तक इलाहाबाद पहुंचेगी।

नागार्जुन भी आयेंगे-यह और सुखद बात है। वह भी व्यस्त और व्यग्र हैं। लेकिन दिन एक में चले जाने की बात कुछ न्याय-संगत नहीं लगती। कार्यक्रम भी हो और चित्रकूट भी हो-यह सब कैसे होगा। ज़रा कुछ तो सोचो।

कचहरी से बचा समय ज़रूर मिलेगा। मैं तो ४० रुपये का भी नुकसान करूंगा और उस दिन कचहरी गोल करूंगा। यदि इसकी आवश्यकता हुई। 'तमन्ना' खूशबूदार है और हमारी आत्मा में बस गयी है। होली की अबीरी-गुलाली बंदगी।

सस्नेह  
केदार

१९.३.६८

प्रिय केदार

१४/३ का कार्ड मिला। दो-तीन ठहरते तो ज़रूर ज्यादा मज़ा आता लेकिन हम लोग प्रसार की जगह घनत्व से काम ले लेंगे। और कोई कार्यक्रम नहीं, केवल तुम्हें देखना, तुम्हारी बातें सुनना। चित्रकूट वगैरह फिर देखा जाए गा। नागा० का जबाब नहीं आया। इससे उनके बांदा आने के बारे में थोड़ा संशय हो रहा है। इलाहाबाद वहां से बस द्वारा पांच घंटे दूर है, मालूम न था। क्या रात को कोई गाड़ी नहीं जाती मानिकपुर में बदले बिना, कोई सीधी बोगी? हो तो २८ मार्च की रात के लिए (फर्स्ट में) इलाहाबाद का रिजर्वेशन करा लेना। दूसरे दिन शाम को इलाहाबाद से लौटूंगा, इसलिए वहां के लिए एक दिन मिल जाय तो ठीक। वर्ना सबेरे की बस। बस

तुम्हारा  
रामविलास

**तुम्हारे बांदा आने पर**

न देखा था  
मैंने  
देवदार !  
तुम आये और दिख गया मुझे;  
दृढ़ स्तम्भ पेड़  
मेरी आंखों में खड़ा  
अटूट आस्था में  
हो गया बड़ा

दिन हो गया  
इंद्रियों के अंदर  
सूर्य को पा गयीं  
सिंधु की लहरें  
पानी के अस्तित्व में

मैं और कविता  
जी भर बटोरते रहे धूप का धन  
एक साथ,  
एक साथ जीने के लिए

खुल कर बंद हो गयी  
चिरौंटे की लाल चोंच  
और तुम  
आये और गये हो गये ।

बांदा

१९.१०.६८

८ बजे सुबह

प्रिय डाक्टर,

कल फिर आर्य-कन्या पाठशाला बांदा के नव निर्मित खुले नाट्य गृह में उसी पाठशाला की छात्राओं द्वारा 'राम की शक्तिपूजा' का सपाठ मूक अभिनय प्रदर्शित किया गया। अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ यह भी दिखाया गया। इस बार पिछले वर्ष से अधिक सफल रहा इसका अभिनय और पाठ [-] और प्रकाश व्यवस्था भी भाव-भंगिमा के बदलने पर बदलती रही। जन-समूह आकाश की क्षत्रछाया में तारों की झिलमिलाहट में, स्तब्ध बैठा दृश्य देखता रहा और भरपूर प्रभावित होता रहा। निस्संदेह यह प्रदर्शन अत्यधिक सफल रहा। प्रयाग से अतिरिक्त शिक्षा निर्देशक श्री रामकुमार बाउंडरा [बाउंट्रा] बांदा आये थे। इस प्रदर्शन को समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ उन्होंने भी ७ बजे से १० बजे रात तक देखा। टिकट लगा कर यह आयोजन किया गया। बात यह थी कि विज्ञान-भवन के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है और किसी के दबाव से या असर डाल कर पैसा बलात खींचना अनुचित होता इसीलिए टिकट लगाया गया। काश, तुम होते और तुम भी इसे देखते। अफसोस है कि मेरा कोई भी साहित्यिक मित्र न उस साल रहा, न इस साल। मजबूरी है। कभी-कभी जी कचोट उठता है कि इस बेबसी को तोड़ा जाये। पर वह नहीं टूटती और परिस्थितियां हरेक को दूसरे से अलग किये रहती हैं। इस बार डा० बच्चन और श्री सुमित्रानंदन पंत आने वाले थे। सबने स्वीकृति दे दी थी। पर अभाग्यवश बच्चन बीमार पड़ गये और इसीलिए फिर पंत जी भी न पधार सके। वह भी देख लेते कि आंशिक पाठ के साथ भी मूक अभिनय कितना मार्मिक हो सकता है। लोगों को यह सूझता ही नहीं कि यह कविता कितनी नाटकीय है और इसका स्वभाव तो प्रदर्शित हो कर तन-मन-प्राण पर छा जाता है। 'है अमा निशा...' का अंश 'उगलता गगन घन अंधकार-[ ]' की गेय-गूंज अब भी प्रभावित किये है। रामायण का यह निचोड़-युग के यथार्थ के इस जन-समूह के लिए प्रेरणा और स्फूर्ति देता है और कुंठा से उभरने [उबरने] की ललक पैदा करता है। जब मैं देख रहा था तब अपने मनोविकारों को भी पढ़ रहा था और आज की कविता के स्वरो के साथ परख रहा था। ऐसे में लग रहा था कि हम नये भले ही हो गये हों, हमने जीवन जीने की क्षमता को किसी भी ढंग से ग्रहण नहीं किया। ऐसा लगता था कि न मौत मार सकती है- न आसुरी शक्तियां मनुष्य को परास्त कर सकती हैं, हां यदि वह केवल जीवन की जैविक लालसा को दूसरों के हित में कर्म और कर्तव्य से जोड़ देता है। राम ने संशय किया-आज के आदमी को भी ऐसा ही संशय आये दिन सताता है। आज के कवि तो इसके बेहद शिकार हैं। पर अंतर यह है कि राम अपनी जैविक शक्तियों को कर्तव्य और कर्म की ओर लगा सके थे और एक सार्थकता

को सिद्ध कर रहे थे। लेकिन आज का आदमी और आज का कवि यह कुछ नहीं कर रहा। वह अपने में मर रहा है और कवि तो अपनी जैविक शक्ति को कैद में मार रहा है—न वह काम करता है—न संघर्ष करता है—न देश देखता है—न दिशा। वह है कि खुद में खोया—सोया अस्तित्व के दिशाहीन देश में रहता है। क्या खूब हैं वे जो नंगे नाचते हैं और कहते हैं कि हम स्वतंत्र हैं और अपने अस्तित्व की रक्षा कर रहे हैं और अपनी आदिम मूल प्रवृत्तियों का स्वाभाविक प्रदर्शन कर रहे हैं—और जीवन इस प्रदर्शन के सिवाय कुछ नहीं है। जैसे नाचना और नंगा होना उन्हें कोई आदिम व्यक्ति बता गया है। आदिम अस्तित्व की शहर में प्राप्ति भी तो एक तरह का आरोपण है। अपने सामने के दृश्य में जी कर भी अतीत के दृश्य में खिसकने का प्रयास करना और फिर वहां पहुंच जाने का प्रकाशन करना—यह सब कितना झूठ है। दृश्य—आज का परिवेश—तो जकड़े है—अतीत का परिवेश तो मृत क्रिया शून्य हो चुका है। उसमें फिर जीना नितांत भ्रामक है। खैर यह सब “‘राम की शक्तिपूजा’ ने मुझे याद दिला दिया।

तुमने कविता लिखी थी न कि केन किनारे निराला के स्वर गूंजें। वह हो रहा है। दिन—ब—दिन होगा। बांदा की रुचि को बदलना है। उसे उसकी शक्तियों का ज्ञान कराना है। ज़रूर कराना है। यदि आंशिक रूप से भी यह क्रिया सम्पन्न हो सकी तो भविष्य उसे और समग्रता के साथ उभार कर सामने लायेगा। ज्ञान का अर्जन कर्म के साथ जोड़ना ही जीवन जीने की दिशा में वैज्ञानिक गमन है। अच्छा तो नमस्कार।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

८.११.६८

प्रिय केदार,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा पत्र मिला। इससे पहले तुम्हारा कविता वाला पोस्टकार्ड मिला था। उसका उत्तर तुम्हें मिला या नहीं, पता नहीं। मैंने भेजा अवश्य था।

तुम्हारे यहां निराला कविता समारोह सफल हुआ, यह जान कर प्रसन्नता हुई। इस वर्ष हमने निराला जी की जीवनी पूरी कर डाली। जून के अंतिम सप्ताह में राजकमल<sup>1</sup> के हवाले कर आये थे पर अब भी छपने का काम शुरू नहीं हुआ। उसका पहला अध्याय ‘आलोचना’ में छपा था। नामवर शायद तुम्हें आलो० नहीं भेजते, नहीं तो तुम मुझे उसके बारे में लिखते अवश्य।

इन दिनों मैं एक निबन्ध लिखने की तैयारी कर रहा हूँ—हिन्दी कविता (‘३८-’६८)। हंस के पन्ने पलटते हुए एक अंक में त्रिलोचन, माचवे और वीरेश्वर की लिखी

1. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। [अ० त्रि०]

‘युग की गंगा’ की आलोचनाएँ पढ़ीं। ‘हंस’ के और अंकों में उस समय की कविताएँ पढ़ कर लगा कि छायावाद के बाद हिंदी कविता को विकसित करने का श्रेय प्रगतिशील कवियों को है जिनमें तुम्हारी भूमिका प्रमुख है।’ नयी कविता-वादी इस तथ्य को खूब मूँद-ढाँक कर रखते हैं। नामवर सिंह ‘नयी कविता’ के नये वकील हैं। एक किताब लिखी है—‘कविता के नये प्रतिमान’। इसमें भी उस सारे विकास को दरकिनार किया गया है। बहर हाल नरेन्द्र-सुमन-वीरेश्वर आदि उस समय के यशस्वी कवि या तो खामोश हो गये या दल बदल कर निर्जीव हो गये। तुम मैदान में अब भी डटे हो, यह मुझे जैसों के लिए विशेष प्रसन्नता का कारण है।

घर गृहस्थी के जंजाल के कारण बाहर निकलना नहीं हो पाता। तुम से मिलने को बहुत जी करता है। इस समय विश्व समाजवादी आंदोलन संकट से हो कर गुजर रहा है। हिंदुस्तान में राजनीतिक संकट के साथ सांस्कृतिक संकट भी है। फिर भी कलम में बड़ी ताकत है। संकट आयेंगे, जायेंगे; कलम की उपज बनी रहेगी। बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा

११-११-६८

प्रिय डाक्टर,

८/११ का पत्र दोपहर कचहरी में मिला। पढ़ अब सका ५ बजे शाम, काम के बाद घर लौटने पर।

तुम्हारा वह पत्र मुझे मिल गया था जिसमें तुमने मेरे पोस्टकार्ड की कविता पर अपने उद्गार व्यक्त किये थे। पर उसके बारे में जानबूझ कर चुप इसलिए रह गया था क्योंकि वह उद्गार मेरे बारे में थे। अपनी तारीफ सुन कर खामोश रहना—यही मैंने सीखा है।

हां, नामवर मुझे न आलोचना भेजते हैं, न याद करते हैं। यह खूबी है। मैं उनका शुक्रगुजार हूँ कि वह मुझे मरा हुआ समझ चुके हैं। उनके विचारों का मुझे पर कोई असर नहीं पड़ता। वे खुश रहें अपनी राह चलें—अपनी आंखों से देखें—सुनें और समझें और जनवादी अभिव्यक्ति दें। मुझे उनसे गिला न तब थी, न अब है। समय सबको परखता है। सब कुछ खुल कर सामने आता है। काव्य में कृत्रिमता बरकरार नहीं रही—न रहेगी। जो वह करते हैं वह उन्हीं के योग्य है। हमने तो लड़कपन से कविता से आंख लड़ाई है और अब तक और मरते दम तक—उसके रहे हैं और रहेंगे। गलत—सही जो हमने समझा है उसे हमने दिया है। हमने इश्क इसलिए नहीं किया कि हम [हमें]

यश मिले या इनाम मिले या कोई हमारे नाम की माला जपे। इश्क का मजा है। वह हम पा रहे हैं। सारी दुनिया खिलाफ हो जाये हमें हमारी कविता सबसे अच्छी लगती है। अब तो मैं कविता पकड़ रहा हूँ।

तुम हिन्दी कविता ('३८-६८) पर निबंध लिख रहे हो। यह शुभ है। बहुत शुभ है। जो उचित समझो-लिखो। न मेरा लिहाज करो-न किसी का। नामवर की पुस्तक जैसी होगी वैसी हमें मालूम है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण लेकर विवेचन करना मुश्किल और मशक्कत चाहता है। वहां तो बाहर से आये विचारों का उद्घाटन रहता है।

मिलने की बलवती लालसा मेरी भी है। पर करूं तो क्या करूं। वही चक्कर है और मक्कर से घिरा जी रहा हूँ। देखो मैं ही प्रयास करूंगा आगरा आने का।

राजनीतिक संकट घनघोर हैं। सांस्कृतिक संकट भी वैसा है। पर दोस्त सब कुछ सामने आयेगा जो जैसा गलत-सही है। हाँ, हमने आर्य कन्या पाठशाला (इंटर) के लिए उसी के प्रांगण में Open Air Theatre बनवाया है। अभी हाल में लखनऊ से श्री खंडे (Arts School Professor) आये थे। उनसे एक Panel में सीमेंट पर कुछ उम्दा चित्रांकन कराये हैं। वे चाकू से तराश कर बनाये गये हैं। खूब जोरदार के हैं। आने पर देखोगे ही। वह बड़ा अच्छा काम हुआ है।

और सब ठीक है।

सस्नेह तु०  
केदार

पुनश्च :-सुना है कि जवाहर चौधरी अक्षर-प्रकाशन से निकल गये। चलो ठीक हुआ। मैं तो तभी यह सोच रहा था। अब क्यों और कहां हैं? शायद वह भूल गये।

केदार

प्रिय केदार,

तुम्हारा ११/११ का पत्र मिला। चौधरी अक्षर प्रकाशन से अलग हो गये हैं, और अब अपना अलग प्रकाशन खोल रहे हैं-'शब्दकार'; पता है, २२०३ गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली।

मुंशी की आंतों में छाले पड़ गये थे। रूस गये थे, महीने भर बाद लौट आये। अभी विस्तृत समाचार नहीं मिले। तुम्हारे पास 'युग की गंगा' की कोई फालतू प्रति हो तो भेज दो। न हो तो उसके प्रकाशन का साल लिख भेजो।

शेष कुशल।

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा



बांदा

२२.११.६८

शाम ५ बजे

प्रिय डाक्टर,

अभी अभी घर आने पर पोस्टकार्ड मिला। तत्काल ही डायरी देख कर अपनी पुस्तकों की जन्मतिथियां लिख रहा हूँ।

१. 'युग की गंगा' मार्च १९४७ में—बम्बई से

२. 'नींद के बादल' अगस्त १९४७ में—बम्बई से

३. 'लोक और आलोक' मई १९५७, में—प्रयाग से

४. 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' अक्टूबर १९६५ में [प्रयाग से]

सिवाय अंतिम पुस्तक के अन्य किताबों की प्रतियां मेरे पास नहीं हैं। न प्रकाशक हैं—न मिल सकती हैं।

मुंशी का हाल लिखना। मैं एक पत्र जवाहर चौधरी को भी लिख रहा हूँ। और सब ठीक है। बेटा मद्रास है। बम्बई गया था—शायद मद्रास लौट गया हो। 'जन्मभूमि' पूरी तैयार हो गयी है। प्रदर्शन होगा वहीं केरल में। सूचना अभी नहीं आयी।

बिटियों का क्या हाल है? अब तो सब पढ़ चुकी होंगी? सबको नमस्ते।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

७-१२-६८

प्रिय केदार,

नवंबर' ६४ की 'कल्पना' में नई कविता पर तुम्हारा जोरदार लेख कल पढ़ा। तुमने इधर कोई और गद्य-रचनाएँ प्रकाशित की हों, तो उनकी सूची भेजना। कविता-पुस्तकों की तिथि-सूची मिली।

मुंशी मथुरा प्रसाद की स्मृति में जो ग्रंथ निकाल रहे हो, उसके लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। यदि उसमें कविताएँ छापना चाहो तो कुछ भेज दूँ गा किन्तु उनका संबंध मुंशी जी से न हो गा।

तुम्हारा

रामविलास शर्मा

84 / मित्र संवाद

बांदा

१८.१२.६८

प्रातः ६ बजे

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिले अरसा हुआ। तुमने गद्य के बारे में ब्यौरा पूछा है। यह तो कठिन है। वैसे तमाम गद्य जो मैंने लिखा है मेरे पास है। वह सब भेज सकता हूँ। लेकिन आखिर इस सबकी महत्ता ही क्या है। व्यर्थ समय बरबाद करोगे मेरे बारे में।

बड़े दिन में मद्रास जाऊंगा या बरौनी या फिर तुम्हारे यहां आऊंगा। देखो क्या प्रोग्राम बनता है। श्री जवाहर चौधरी का पत्र आया है।

पता नहीं मुंशी का क्या हाल है, अब? लिखना। आशा है कि बेटियां ठीक हैं और पढ़ रही हैं।

हां, गृह-स्वामिनी को हम दोनों का नमस्कार।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

२-१-६९

प्रिय केदार,

नये साल में पहला पत्र यह तुम्हें। कल धर्मयुग में तुम्हें सूर्य के साथ देख कर मन प्रसन्न हुआ। कविता सुन्दर थी।

तुम्हारा गद्य देखना चाहता था अपने लेख के सिलसिले में—हिन्दी कविता, ३० वर्ष। तुम चाहो तो सब भेज दो, चाहो तो कुछ छाँट कर। जैसी सुविधा हो। पानी नहीं बरसा। ठंड भी कम है। दो चार दिन में शायद कुछ बूँदाबांदी हो।

तुम्हारा

रामविलास शर्मा

बांदा

११.१.६९

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। मैंने सोचा कि तुम्हें कोई लाभ न होगा मेरे अन्य लेखों के देखने से। एक तो वह arranged नहीं हैं—दूसरे उन्हें पढ़ कर भेजने में बहुत समय लगेगा। अतएव अब इन्तजार न करना। मेरे विचार 'नयी कविता' के संबंध में वही हैं जो एक विवेकी व्यक्ति के होने चाहिए। तुम्हें तो उस खेमे के लोगों के विचारों की विवेचना करनी है। और सब ठीक है। मौसम सुधर गया है।

बेटे-बेटियां ठीक होंगे। योग्य सेवा लिखना। प्रिय मुंशी के क्या हाल हैं? लिखना जरूर।  
सस्नेह तु०  
केदार

१३.१.६९

प्रिय केदार,

मुंशी का हाल अच्छा है। रूस गये थे। वहां से तगड़े हो कर लौटे हैं। पेट के छल [छाले] दब जाते हैं, पूरी तरह मिटते नहीं। मुंशी अपने जीवन में नियमित नहीं हो पाते—न समय पर खाना, न समय पर सोना—और रहते बहुत गलत जगह हैं। बदलने का वादा करते हैं लेकिन वादा कोई और पूरा करते हो गे, मुंशी नहीं।

तुम्हारा एक लेख निराला के गीतों पर बिहार की 'रश्मि' पत्रिका में देखा। बढ़िया था।

और सब ठीक है। पत्नी को थोड़ा हाई ब्लड प्रेशर है। कम हो रहा है। बेटियाँ ठीक हैं।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

१.३.६९

शाम ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े सात]/ बजे

प्रिय डाक्टर,

आज एक शादी थी—४ बजे। कचहरी से सीधे वहां गया था। ५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े पांच]/बजे वहां से घर लौट कर आया। देखा मेज पर 'निराला की साहित्य साधना' रखी है। बड़ी देर तक बार-बार आदि से अंत तक पन्ने खोल-खोल कर देखता रहा—न जाने क्यों पढ़ कुछ न सका। इतना भावोद्रेक हो गया कि सिवाय मुग्ध होने के कुछ न कर सका। मैंने समझा यही सहृदयता मेरी पूंजी है। यह बनी है—बरकरार है—मेरे लिए यही सब-कुछ है। मैं पुस्तक तो डट कर इस उद्रेक के कम होने पर पढ़ूंगा ही। अभी तो इसे रात-भर बार-बार छुंऊंगा, देखूंगा—पलटूंगा—और उसी तरह सूंघूंगा जैसे कोई अपने लगाये पेड़ के बेले को सूंघता है। बड़ी महक मारते हैं। खुश हूँ—हृदय से दुआ देता हूँ कि तुमने जो मेहनत की है वह दूसरों को सही रास्ता दे और निराला सब पर छा जाये—सब पर बरस कर सब को सदाबहार की तरह हरा कर दे।

बेकाबू मन विवेक को पास नहीं फटकने देता। यकीन जानो कि मेरी मनोदशा इस समय वैसी ही है जैसी एक मां की होती है जिसने पुत्र को अभी-अभी जन्म दिया है

86 / मित्र संवाद

और मुंह देख कर बार-बार चूम लेती है। हालांकि तुमने जनम दिया है इस पुस्तक को। क्या खूब हूँ कि ममता उमड़ पड़ी है। फिर लिखूंगा।

सस्नेह तु०  
केदार

५.३.६९

प्रिय केदार,

तुम्हारा १/३ का कार्ड मिला। आराम से, फुर्सत में पढ़ना।

विवेक तो बहुतों के पास है। सहृदयता की पूंजी बहुत कम लोगों के पास है। इसी के सहारे भविष्य को देखते हैं और जी रहे हैं।

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा

बांदा

५.३.६९

रात ९<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े नौ] बजे

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारी पुस्तक: निराला की साहित्य साधना : पीले शब्दों में छपी-रामविलास शर्मा की साधना : मिल गयी थी। एक पत्र भी उस दिन मैंने तुम्हें लिखा था। वह जरूर मिल गया होगा।

तब से अब तक मैं इसी पुस्तक से चिपका हुआ हूँ। होली की छुट्टी भी है। इससे कचहरी से पिंड छूटा रहा है। मगर अब मेरी मनोदशा वही बनी हुई है जो मनोदशा Lear पढ़ने के समय होती थी। मैं गर्क हूँ इसके अन्दर। यह मुझे बाहर नहीं आने देती। मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व अपार मानव सहानुभूति से द्रवित है। मैं एक तरह से जड़ता खो चुका हूँ। स्थल-स्थल पर करुणा से भर-भर कर रो पड़ा हूँ। कहीं-कहीं क्रोध और आवेश से कुठारवत तमक उठा हूँ। बड़े मार्मिक ढंग से तुमने निराला का वस्तुपरक अंकन किया है। एक साथ पिछला सारा Scroll of time खुल कर सामने आ गया। निराला सदेह चलते-फिरते, बैठे, हंसते, गाते, कविता लिखते, पढ़ते, बातें करते, जूझते और तड़पते दिखायी देने लगे। एक के बाद एक नगर और फिर गढ़ाकोला और महिषादल दिखे और उनकी अंतिम यात्रा का दृश्य भी दिखा। यकीन करो, आज मैंने कई परिच्छेद जोर-जोर से श्री भगवानदास गुप्ता को, मुरारी को, और अपने बेटे अशोक

को पढ़ कर सुनाये। गला भर-भर आया। आंसू झर-झर गिरे। दुख में भी-निराला की पीड़ा में भी-सुख के आंसू बरसे। वाह! खूब है तुम्हारी कलम। गद्य कविता से अधिक प्राणवान और जीवंत हो गया। वास्तव में गद्य गद्य नहीं रह गया। वह पूरे युग का, दिक और काल में पुनः अवतरण हो गया है। तुमने जो तथ्य दिये हैं-जो पत्रों के उद्धरण दिये हैं-जो बातें और लेखांश उद्धृत किये हैं और जो विवेक के रंग चमकाये हैं वे सब-के-सब 'नायगरा फाल' की तरह साकार हो गये हैं। तर्क क्या हैं-अकाट्य हैं। पंत और निराला का मनोविश्लेषण एक सिद्धि हो गयी है। मूल्यांकन में कोई ऋषि बोलता दिखा है। जहां-जहां तुमने चोट भी मारी है वहां-वहां तुमने धर्म और कर्तव्य समझ कर ही राम की तरह राक्षसों पर बाण चलाये हैं। तुमने, युद्ध की भाषा में कहूँ तो कहूँगा कि कौरवों की सेना को विध्वंस किया है। तुमने कृष्णोपदेश के बाद के निःसंशयी अर्जुन की तरह, प्रहार किया है। सब कुछ पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ प्रचलित और प्रचारित भ्रांतियों को और विसंगतियों को तुमने एक साथ परास्त किया है। बड़ा जरूरी था। और खूब सफल हुए हो। देखता हूँ कि विवेचन का स्तर इतना न्यायिक है कि कहीं भी कोई अन्याय तुमने नहीं होने दिया-निराला के विरोधियों के साथ भी। ऐसा लगता है कि यह पुस्तक तुम्हारे शरीर से पक गयी फसल की तरह निकल पड़ी है। कहीं भी कोई प्रयास के चिह्न नहीं मिलते। जो कुछ तुमने लिखा है सहज हो कर व्यक्त हुआ है। काम बड़ी मेहनत का है। तुमने कितना परिश्रम न किया होगा। सोच कर ही दंग रह जाता हूँ। सच पूछो तो ऐसे ग्रन्थ से ही बातें साफ नजर आने लगती हैं। इसका महत्व बहुत है। आज नहीं कल इसकी साख तुम्हें गौरवान्वित करेगी। निराला की सही शकल तुमने दिखा दी है। अब लोग देखें-समझें और गुनें।

यह भी लगा कि तुम्हारी कलम लिखते-लिखते उत्तरोत्तर उदात्त होती चली गयी है। सच में तुमने यह पुस्तक जी में डूब कर वृहमा [ब्रह्मा], विष्णु और महेश की तरह लिखी है। इसके पढ़ने में वही टीस और आनंद मिला जो मुझे Lust for life पढ़ने में मिला था कभी। शिवमंगल सिंह सुमन ने निराला के पत्र तुम्हें न दे कर अपराध किया है। वे देते तो न जाने कितना कुछ और सामने आ जाता। सुमन स्वयं क्या लिखेंगे इस तरह का। भावुकता और बात है। कविता और बात है। विवेक-बोलता हुआ विवेक चिंतन से तर्कायित होकर निकले इसके लिए अध्यवसाय, संयम, अन्तर्दृष्टि और क्षमता चाहिए। तुममें एक न्यायाधीश की बुद्धिमत्ता है और एक कुशल शिल्पी की सिद्धि। दोनों ने अतीत को पकड़ कर उसे वर्तमान बना कर भविष्य में जीने के लिए प्रस्तुत कर दिया है। तीनों काल एक होकर बोल रहे हैं। लोगों को निराला प्रिय लगेंगे। वह सब के सिर पर चढ़ कर बोलेंगे।

मैं तुम्हें-हृदय से बधाई देता हूँ। दूसरा भाग भी ऐसा ही जोरदार निकालो। भाषाविज्ञान की पुस्तक भी इससे कम महत्व की नहीं है। उसे भी पढ़ कर ऐसा ही move हुआ था। वह दिन याद है। अभी तो रोज इसे पढ़ूँगा।

मैं घर में ही कैद रहा। होली खेलने कहीं नहीं गया। अफसरों से भी मिलने नहीं गया। होली खेलने से ज्यादा मज़ा इसके पढ़ने में आया है।

एक बार फिर तुमको लाख-लाख बधाई।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

११.३.६९

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। हमारा बस चलता तो हम इसे संसार का सर्वश्रेष्ठ जीवन चरित बना देते किन्तु [ ' ] मति अति ऊँचि नीच रुचि आछी; चहिय अमिय जग जुँरे न छाँछी। [ ' ] तुलसीदास तो अपने इष्टदेव पर लिख रहे थे, ज़रूर बहुत नर्वस रहे होंगे। हम तो निराला पर लिख रहे थे, अपने मित्र और गुरु पर, उनकी कमज़ोरियों को उजागर करते हुए, उन्हें मनुष्य रूप में समझने का प्रयास करते हुए। लेकिन अगर हमारा मठा हमारे दोस्तों को रुचे तो अमृत की तलाश कौन भकुआ करे गा?

इतनी मेहनत हम दूसरी किताब पर तो अब कर नहीं सकते, न इससे पहले किसी और किताब पर की है। सबसे ज्यादा मेहनत पढ़ी सामान बटोरने में, जो बातें याद थीं, उन्हें भी तरतीब से सजाने में। पंत से मिलने के लिए इलाहाबाद का परीक्षा कार्य स्वीकार किया था। युनि० के गेस्ट हाउस में मई की वह लू खाई-सबेरे छह बजे नल के खौलते पानी में जो स्नान किया-तो तबियत प्रसन्न हो गई। यहां के एक पुस्तकालय जाते हुए ही हाथ में फ्रैक्चर हुआ था। गृहस्थी के अनेक झंझट-कभी पत्नी अस्वस्थ, कभी बेटी के लिये वर की असफल तलाश। हमने मन से कहा-सबेरे शाम आधा घंटा चिन्ता कर लिया करो, उसके बाद बस निराला के साथ रहो।

यह किताब लिखते समय, निराला के साथ जो समय न बिताया था, वह भी बिताया, उनका जो दुख न देखा था, वह भी फिर देखा। उनकी मृत्यु के बाद उनके साथ महीने दर महीने इस तरह रहना बहुत ही कष्ट कर था। मन ने साथ दिया, दुख और चिन्ता से ऊपर उठा रहा, मुझ से किताब लिखाता गया। और अब जब किताब छप गई, तुम्हें पसंद आ गई, तब सारा दुख, संसार की समस्त चिन्ताएँ मैं भूल गया हूँ। तुम्हें गले लगाता हूँ, निराला को फिर अपने पास पाता हूँ।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

१.५.६९

रात ९ बजे

प्रिय भाई,

इलाहाबाद रेडियो से आज ८ बजे रात तुम्हारी पुस्तक पर श्री लक्ष्मीसागर वार्षीय की टिप्पणी सुनी। श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय ने सूचना दी थी। मुझे कतई अच्छी न लगी। बहुत सतही और जांगरचोर आलोचना थी। मैंने अपनी प्रक्रिया [प्रतिक्रिया] नर्मदेश्वर को अभी-अभी लिख भेजी है।

पंत जी को ज्ञानपीठ का लाखिया पुरस्कार मिला। अब सोने की डाल पर शुक बैठेगा।

बधाई देने का मन होता है। पर पता नहीं मालूम। इसलिए चुप हूँ।

नागार्जुन इलाहाबाद हैं। मैंने बुलाया था। न आये। न पत्र ही आया। मैं निराला मेरे प्रिय कवि पर एक वार्ता दूंगा जून में। रिकार्डिंग २५/५ को इलाहाबाद में होगी। स्क्रिप्ट भेजूंगा। और सब ठीक है। आशा है कि सब कोई प्रसन्न होंगे।

सस्नेह तु०  
केदार

प्रिय केदार,

१२.५.६९

विश्वविद्यालयों के द्वारपाल निराला के विरुद्ध लाठी लेकर खड़े रहे कि कहीं भीतर न घुस आये। जब वह न रहे, तब सन्त और ऋषि बना कर उन्हें पूजने लगे। सत्य से आंखें मिलाने का साहस उनमें नहीं है। इसलिये लक्ष्मीसागर वार्षीय ने मेरी किताब पर जो कुछ कहा हो गा, जरूर सतही रहा हो गा। पंत जी ने लिखा था कि उनके संबंध में अतिरंजना से काम लिया गया है, मेरी पुस्तक में, और उसका निराकरण करते हुए वह कुछ लिखेंगे। ज्ञानपीठ पुरस्कार पर बधाई भेज दी थी। पता : १८/बी० ७, कस्तूरबा मार्ग, इला० है। और सब ठीक है।

तु०  
रामविलास

बांदा

१४.५.६९

प्रिय डाक्टर,

आज अभी दोपहर को पत्र मिला। 'दिनमान' में तुम्हारी किताब की review पढ़ी। उसमें भी अधिक तटस्थता की अपेक्षा की गयी है। पता नहीं—कहां तटस्थता का

90 / मित्र संवाद

अतिक्रमण किया गया है। खैर। हां, कल 'हिन्दुस्तान' साप्ताहिक में तुम्हारा लेख पढ़ा—पहली किश्त है। दूसरी किश्त के आने पर ही कुछ समझ सकूंगा। वैसे तुमने पर्याप्त सामग्री खोज निकाली है। नया प्रकाश तो पड़ता ही है। लोगों के चेहरे भी खुलते हैं। यहां गरमी ऊंट पर चढ़ गई है। जमीन प्यासी हो गई है। हरियाली कुम्हलाने लगी है।

मैं इलाहाबाद गया था। पंत जी से मिलने गया। वह शाम घर पर न थे। न मिल सका। महादेवी जी बीमार थीं। समयभाव के कारण न मिल सका। नागार्जुन मिले थे। कहते थे : तुम्हारी किताब से पंत जी अनमने थे। सब ठीक है।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

१०.६.६९

प्रिय केदार,

१४/५ का कार्ड मिल गया था। सा० हि० के अलावा 'आलोचना' में 'अस्तित्ववाद और नई कविता' लेख आये गा। इसके बाद लिख रहा हूँ : नई कविता : अस्तित्ववाद से हट कर। इसके बाद एक लेख की योजना और है : नयी कविता और नये प्रतिमानों की खोज।

इलाहाबाद में पंत जी और शान्ता जोशी मेरी पुस्तक से बहुत असंतुष्ट हैं। अमृत राय ने पंत जी को यह भी सुझाया कि राजकमल ने आपकी किताबों से इतना कमाया, अब आपके ही विरुद्ध यह सब छापा। निराला की रजाई पर वह सोये—यह भी उन्हें अस्वीकार है क्योंकि निराला तो बेहद गंदे थे! यह सब राजकमल की श्रीमती संधू से मालूम हुआ। दिनमान की सी चलतू आलोचना मुक्त धारा में निकली है।

तु०  
रामविलास

बांदा

२६.९.६९

प्रिय डाक्टर,

२८.९.६९<sup>1</sup> का साप्ताहिक हिन्दुस्तान देखा। तुम्हारा लेख—हिन्दी आलोचना में बाजरे की कलंगी—नयी कविता : नये प्रतिमानों की खोज—पढ़ा। यह लेख कलई—उघाड़ लेख है। तुम्हारी पैनी दृष्टि से कोने—कोतरे में भी तहलका मच गया है। वे छद्म धांधली धारण किये—मंच पर विराजमान—नये की गोहार में गला फाड़ कर कनबहरा

---

1. तिथि 26 सितम्बर के पहले की होनी चाहिए। [अ० त्रि०]



कर देने वाले—अमूर्तन के मूर्तिकार हताहत हो गये हैं। न वे उठ पा रहे हैं—न बच पा रहे हैं। सब-के-सब तीन-तेरह हो गये हैं। पता नहीं उन्हें अब कहां किस 'झोल' में विलीन होना पड़ेगा। यह काम बढ़िया हुआ। इसलिए नहीं कि कोई मारकाट हुई है बल्कि इसलिए कि सही दृष्टि और दिशा को प्रशस्त होने और कविता को पकड़ने का और उसे आंकने का अच्छा अवसर मिलेगा। मेरा विश्वास है कि इस लेख की व्यापक प्रतिक्रिया होगी। वे सब तिलमिलायेंगे जो दूसरों को धकेल कर जबरन काफिले के आगे हो गये थे। अब वे पायदान पर सिर रख कर अपनी ही धूल चाटेंगे। भला हो तुम्हारा। तुमने तो नयी कविता के दक्षिणी विप्लवनाम में अमरीकियों पर छापामारी की है और उत्तरी विप्लवनाम की जिन्दादिली का लोहा मनवा दिया है। हम तुम्हें यहां से दोनों हाथों का दमदार सलाम ठोंकते हैं। मैं देख रहा हूँ हर जगह चूँ-चपड़ मच गयी होगी। लेकिन वाह रे दिग्गजो कि सच में आंख मिला कर नहीं झूठ के पांव पा कर भूगोल को दबा बैठे हैं। ख़ैर मनायें।

सस्नेह, तुम्हारा केदार

पुनश्च—साप्ताहिक हिन्दुस्तान का सम्पादक भी बधाई पाने का बेशक अधिकारी है।  
दे देना।

केदार

१६.१०.६९

प्रिय केदार,

तुम्हारा २६/९ का कार्ड मिल गया था। इस बीच हम एक हफ्ते को दिल्ली चले गये थे। इसलिये उत्तर में विलंब हुआ।

दिल्ली में काफी लोग मेरे लेखों से प्रसन्न हैं किन्तु स्वभावतः एक दल बैठे-बैठे दांत भी पीस रहा है। सुना है कि नेमिचन्द्र जैन जवाब देने की तैयारी कर रहे हैं। नामवर सिंह सोवियत लेखक संघ के आमंत्रण पर मौस्को गये हैं।

'आलोचना' के ताजे अंक में नेमिचन्द्र जैन ने 'निराला की साहित्य साधना' पर काफी क्षोभ प्रदर्शन किया है। दो अन्य लेख अमृतलाल नागर और विष्णुकान्त शास्त्री के हैं। न देखे हों तो देखना।

इलाहाबाद से मार्कण्डेय 'कथा' निकाल रहे हैं। उसके अंक में भगवतशरण उपाध्याय ने 'नि० की सा० सा०' के प्रकाशन पर यथेष्ट खेद प्रकट किया है। प्रकाशचंद्र गुप्त भी काफी दुखी हैं—पंत-प्रसंग में। एक लेख है बिना सिर पैर का—लेखक हैं रमेश कुंतल मेघ।

हवा में अब ठंडक है, धूप में वह तेजी नहीं, ढलते सूरज का सोना और गाढ़ा हो गया है, कमरे के बाहर सबेरे हर सिंगार के फूल बिछ जाते हैं। शरद ऋतु आ गई है—

92 / मित्र संवाद

तुम्हारी कविता में सूर्य की तरह-बसन्त की मादकता से दूर, मन की धरती पर दमकते शान्त प्रकाश की तरह। केन का थिराया पानी इस समय बहुत अच्छा लगता हो गा।

प्यार।

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा

बांदा (३० प्र०)

१८.१.७०

रात ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों पर पत्र लिख रहा हूँ। सोचता था अब लिखूँ तब लिखूँ पर न अब लिख सका, न तब। समय सरपट दौड़ गया। लम्बी मंजिल तय कर गया। आज सन्नाटे में-पानी बरस रही रात में-यह पत्र लिख रहा हूँ। आशा है कि तुम जल्दी ही उत्तर दोगे। वैसे तुम अत्यधिक व्यस्त जान पड़ते हो लेखन के कार्य में। इधर साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में और 'धर्मयुग' में तुम्हारे कई लेख पढ़ने को मिले। मैंने सभी पढ़े। पहली बात तो यह है कि तुम्हारी ऊर्जा जागृत हुई है। बहुत जोर शोर से हलचल कर सकी है। एक तरह से यह कहूँ कि तुमने इस कुंठित लेखकीय विघटन के युग में नाटकीय जीवन दायिनी स्फूर्ति की 'पयस्विनी' बहा दी है। यह पय और स्वन की धारा चेतना की सक्रिय विद्युत धारा है। बड़ी प्रसन्नता हुई। 'जड़ता जाड़' तो लोगों का दूर होगा ही। साथ ही-साथ दिशा और दृष्टि का विवेकीय परिवेश भी उभरेगा। बधाई है महाराज!

'कविता के नये प्रतिमान' में तुमने बाजरे की कलंगी को लेकर जो विवेचन प्रस्तुत किया है। वह तथ्यों पर आधारित तो है ही न्यायसंगत भी है। मैं प्रयाग गया था कुछ महीने पहले। वहां मुंशी यानी लक्ष्मीकांत वर्मा मिले थे। वह खिसियाये-से थे। उन्होंने संक्षेप में मौन तोड़ कर कहा था कि रामविलास ने बरसों बाद जवाब दिया है उनके लिखे का। 'धर्मयुग' का नया लेख जो १८/१ के अंक में छपा है वह भी सामने है। इसका भी असर चौतरफा होगा। तुमने तीक्ष्णता से तराशा है। छिलके उतरे हैं तथाकथित प्याज की गांठों के। चाहिए तो कि लोग बाग अब अपनी आलोचना करें। मगर माहौल ऐसा है कि लोग बाग यह कह कर तुम्हारा कहा-सुना दरकिनार कर देते हैं कि यह तो पटा-बनैती का खेल है-रचनात्मक आलोचना नहीं है। मुझे इस कथन में सत्य नहीं मिलता। हारे हुए की राजनीति मिलती है। खैर। बहरहाल-यह सब अच्छे साहित्य की रचना के लिए सूझ-बूझ की उम्दा बातें हैं-उपेक्षित न होंगी। असर होगा चाहे उनके मन में हो-और देर से हो।

एक हफ्ते हुआ फिर इलाहाबाद गया था। इकबाल यानी अजित पुष्कल (कवि) ने बताया था कि पंत जी तुम्हारी पुस्तक की वजह से बेहद बौराये हैं। निराला के सन्दर्भ में

तुमने उन्हें धर पटका है। वह महादेवी से भी और दीगर मिलने वालों से इसी बात को लेकर दिन-प्रति दिन चर्चा करते रहते हैं। बताया गया कि महादेवी ने कहा भी कि पंत जी छोड़िये इसे-निराला की एक मूर्ति बन गयी है-आप क्या कर सकते हैं। पर इस कहने का असर न हुआ।

हां, अमृत<sup>1</sup> के लेख भी (Interviews) 'धर्मयुग' में देखे। मेरी राय में तो पंत जी ने तुम्हारी सब बातें स्वीकार कर ली हैं। फिर भी उनसे मुकरने की उनकी रुचि-अपने हित में-स्पष्ट दिखाई देती है। कुत्सित और कुरुचिपूर्ण कह कर वह तुम्हारे कहे को मिटा नहीं सके। साफ मालूम होता है कि यह interview खास तौर से 'संयोजित' की गयी [किया गया] है ताकि निराला की और तुम्हारी मूर्तियां विकृत हो जायें। यह भी सम्भव नहीं हुआ। बात असल में यह है कि ऐसी बातों के लिए पंत जी तयार न थे। वह अपने को कुछ-का-कुछ समझते थे। वह भ्रम को सत्य माने थे। जब भ्रम तोड़ा गया तो संतुलन चला गया। विवेक-विवेक न रह गया। तपस्या और साधना को यों गलते देख शिखरासीन छवि भी गल गयी। भला कैसे बर्दास्त हो अपना विगलन। लेकिन इसे उन्हें व्यक्तिपरकता से नहीं जांचना चाहिए। यथार्थ को ग्रहण करने से कतराना कमजोरी होती है। वह कमजोर सिद्ध हुए हैं। भला कौन मानेगा कि माधो गुरु कालाकांकर के कोई पुराने कवि थे और वाग्विलास तुम न होकर कोई अन्य महाशय थे। सफाई दी गयी पर दी गयी सफाई चलती नहीं-। बातें वहीं-की-वहीं हैं। तुमने सत्य उद्घाटित किया है। बहुत उम्दा काम हुआ है।

मेरी तो सदैव यह धारणा रही है कि साहित्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी ही चाहिए चाहे वह मेरे विरुद्ध हो या किसी अन्य के। साहित्य न मेरी बपौती है न किसी और की। वह सार्वजनिक कृतित्व होता है। अपना होकर भी सबका हो जाता है। तब फिर उसका वास्तविक मूल्यांकन होना ही चाहिए। कोई भी कवि या महाकवि आलोचना से बच कर कैसे जी सकता है [,] मैं नहीं समझ पाता। आलोचना तो कवि या महाकवि का भीतर-बाहर सब सामने लाकर रखती है।

'आलोचना' में भी तुम्हारी पुस्तक की चर्चा हुई। नेमिचंद्र जैन ने भी लिखा है। स्वर वही है। पंत का मुलम्मा उतारा गया है यह देख कर वह भी बौद्धिक क्षोभ से भर गये से हैं।

मैंने यहां भी तुम्हारी पुस्तक पढ़ाई। उन लोगों ने लोगों के लेख भी देखे। वह भी मेरी तरह सोचते हैं।

तुम्हारा मुक्तबोध [मुक्तिबोध] वाला दो अंकीय लेख भी हम लोगों ने देखा। वह भी खूब जोरदार गया है। सभी को प्रसन्नता हुई है। हालांकि मैं अपने इस कवि को

---

1. श्री अमृतराय। [अ० त्रि०]

शंका की दृष्टि से देखता हूँ। वजहें हैं। और फिर इस सबसे लोगों के दिमाग से कूड़ा तो हटता है। यही महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। कूड़ा हटाना स्वस्थ काव्य के लिए रास्ता तयार करना है। 'आलोचना' में नयी कविता और अस्तित्ववाद पर भी तुम्हारा लेख मंगा कर पढ़ा। वह भी धारदार है। ऐसा तो सबको पहले से भी जानना चाहिए था।

साहित्यिक ईमानदारी की ज़रूरत है। ईमानदारी के लिए समझ की ज़रूरत है। कविता बेईमानी का ब्याह नहीं कि 'मंडपेतर' से किसी की बेटी ले आये, चाहे खुद योग्य हों या न हों, या कि वह योग्य हो या न हो।

कोई कविता हो, वह वरण से पायी जाती है, हरण से नहीं। हरी हुई सीता स्वयं विकसित होती हैं और राम की भी नहीं रहती। काश लोग बाग-हमारे लोग-और दूसरे लोग भी इसे समझ पाते और कविता लिखने में जी-जान लगा देते। मैं नहीं कहता कि कवि गलती ही नहीं करेगा-मेहनत करने पर भी कभी कभार गलत लिख सकता है। इस पर भी तो अधिकांश तो सही दृष्टि से लिखें। फैशन और नकल और नयापन कभी भी स्वयमेव कोई महत्व नहीं रखता। पचा कर ही पराये को अपनाया जा सकता है, उन्हीं परिस्थितियों में पड़ कर। यहां तो कविता वाले सोच-विचार से काम ही नहीं लेते। झट से पालने में पड़े बच्चे की तरह जो भी हाथ में आया मां का स्तन समझ कर चिचोरने लगते हैं। वास्तव में बड़ा बौद्धिक दिवालियापन है। राम ही रक्षा करें।

और सब ठीक होगा ही।

हम सब लोग ठीक हैं। बहुत याद आते हो हम लोगों को।

इधर राजनीति भी-सत्तारूढ़-एक से दो हुई है। यह शुभ है। विघटन आवश्यक था। आगे कुछ हो चाहे न हो, रास्ता उस ओर मुड़ा है जिस ओर श्रमिक हैं। कारण चाहे जो भी हों, परिवर्तन हुआ-ऐसे ही होते भी हैं।

आगरे का हाल तो बहुत सद्द होगा।

सस्नेह तु०  
केदार

Dr. Ram Bilas Sharma

M. A., Ph.D (Luck)

PROF & HEAD OF THE DEPTT. OF ENGLISH

& Dean Faculty of Arts

R. B. S. College, Agra.

प्रिय केदार,

आज सबेरे यहां बेहद घना कुहरा है। कालेज बन्द है। हम बाबू काछी के यहां से दूध ले आये हैं और चाय पीने के बाद तुम्हें पत्र लिख रहे हैं। कालेज बन्द है वरना इस

New Rajamandi

AGRA

Dated : 22-1-70

समय (८ बजे) क्लास में होते। हमारे प्रिंसिपल को बुखार आ गया था। सोमवार की रात वह फिसल कर गिर पड़े और सर में चोट आई। लड़कों ने परसों हड़ताल की। उनकी बहुत सी मांगें हैं जिनका सम्बन्ध पैसे वसूलने और खरचने से है और अपना वहां दखल नहीं, न वह अपने अधिकार क्षेत्र में है। मैंने लड़कों को समझाया कि उनकी मांगें मानना न मानना मेरे हाथ में नहीं है। प्रिंसिपल साहब ठीक हो जायं तब जो मन में आये करें। लेकिन नेता लोग इसके लिए तैयार न थे। नतीजा यह कि कल फिर हड़ताल हुई, नारे बाजी शोरगुल, वगैरह पहले से ज्यादा। हमने तीन दिन के लिये कालेज बन्द कर दिया; इतवार को छुट्टी, सोमवार को २६ जनवरी। इस तरह पांच दिन बन्द। आशा है, तब तक प्रिंसिपल सा० ठीक हो जायं। लड़कों के नेता कहते हैं, कालेज खुला रहे, हड़ताल भी करें। न खुले गा तो भूख हड़ताल करेंगे।

ये सब वाइस प्रिंसिपली के मजे हैं। खैर, हमने इन मजों से जल्दी ही छुट्टी पाने का फैसला कर लिया है।

कानपुर का I. I. T., अमरीकी पैसा, बड़ी-बड़ी इमारतें, बड़े-बड़े प्रोफेसर, शहर से दस मील दूर, उत्तर प्रदेश के लड़के अनुपात में सबसे कम। एक प्रो० स्टोक्स-बाबा अमरीकी, दादी पंजाबिन, यहां की इंडो-ऐंग्लियन या इंडो अमेरिकन संस्कृति के प्रतीक जैसे। इनकी [इनके] कल्चरल फेस्टिवल में विभिन्न कलाओं के अंग्रेजी भाषी भारतीय विशेषज्ञ आते हैं। भारतीय साहित्य पर दस मिनट हम भी बोले।

२२ फरवरी को शोभा का ब्याह है। लड़का दिल्ली के एक कालेज में वनस्पति शास्त्र का अध्यापक है। उसके पिता कानपुर में रहते हैं। उनके दर्शन करने थे, इसलिए I. I. T. का निमंत्रण स्वीकार किया था। लेकिन नई हवाएं I. I. T. के कुछ कमरों में भी घुस ही गई हैं।

निराला वाली किताब खत्म करने के बाद साल भर की कमाई ये नई कविता वाले लेख हैं। साप्ता० हिन्दु० में जो छपे थे उन्हें देख कर, भारती ने लिखा था, कुछ हमें भेजो। मैंने उन्हें 4 लेख भेज दिये। अज्ञेय पर एक लेख १ फरवरी के अंक में आयेगा। साप्ता० हिन्दु० के सम्पादक ने पूछा-और हमारे लिये क्या लिख रहे हैं। मैंने कहा-शमशेर, नागार्जुन और केदार पर ३ लेख हैं। उन्होंने लिखा-अब यह सब नई कविता पर रिपीट परफॉर्मैन्स हो गा, कुछ और लिखें।

मैंने और कुछ लिखने से फिलहाल इन्कार किया। 'लहर' वाले नागार्जुन पर विशेषांक निकाल रहे हैं। उन्हें नागा० पर लेख भेज दिया है। फरवरी के बाद निराला वाली किताब का दूसरा भाग लिखेंगे। पंत जी की अप्रसन्नता का मूल कारण निराला पर इतनी बड़ी पुस्तक का लिखा जाना है।

२७-५-७०

प्रिय केदार,

मई में भयानक लू चलने के बाद अकाल बौछारें आईं, आंधी लगभग हर रोज़। राजस्थानी रेत आंगन में और बरामदे में उड़-उड़ कर जमा होती रहती है। हम इधर कापियां जाँचने में लगे थे। अब निराला वाली किताब फिर उठायेंगे।

तु० रामविलास

बांदा

३०-५-७०

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला। बहुत कम पंक्तियों वाला। ऐसी भी क्या कंजूसी कि इतने दिन बाद भी इतनी कम पूंजी लिख कर भेजी।

'मेलजोल' (पाक्षिक पत्र, ६०९, कटरा, इलाहाबाद २) के ३/७ के ३० पेजी मैगजीन साइज के अंक में मेरे कृतित्व और व्यक्तित्व को लेकर विशेषांक निकालना चाहते हैं। मेरे प्रकाशक श्री शिवकुमार सहाय का पत्र आया है। ज़रूरत [होगी] तो सम्पर्क करें [गे]।

कापियां जंच गयी होंगी। बहुत से लड़के-लड़कियां पास-फेल हुई होंगी।

यहां भी बड़ी गरमी रही। अब भी है। दो-तीन दिन मौसम मजे का हो गया था।

निराला पर जब जुटोगे तो मुझे बक्स में बन्द कर दोगे। याद भी न आऊंगा। ज़रूरत है।

६-७ के बाद मुक्त रहूंगा। देखो तब धंधा धोखा देता है या पेट पालता है। सरकार की खिदमत में ७ साल बीत रहे हैं। ६० के चल रहे हैं।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

२०-६-७०

प्रिय डाक्टर,

आज अभी इलाहाबाद से नागार्जुन का पत्र दिनांक १८-६-७० का मुझे मिला। लिखा है कि 'आखिर मैं बांदा पहुंच रहा हूँ-निश्चित तौर पर।'

कृपया आओ।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

ललित जयपुर गये, विजय दिल्ली में हैं, भुवन अपनी पत्नी को ससुराल घुमाने ले गये हैं, लौट कर बनारस जायँगे। शोभा अपने पति के साथ बम्बई घूम रही है। स्वाति किसी नौकरी के लिए मेरठ जाने वाली है, इंटरव्यू के लिए। सेवा इधर-उधर अर्जियाँ भेज रही है, इंटरव्यू के बुलावे की राह देखते हुए। मेरी पत्नी को ब्लड प्रेशर है।

अब अगर विजय यहां ६-७ जुलाई को आ गये तो बाँदा आऊँगा, वर्ना कोई सूरत नहीं है वहां पहुँचने की। यद्यपि पत्नी कहती हैं, चले जाओ किन्तु सेवा अकेले घबड़ा न जाय-इनके स्वास्थ्य में किसी तरह की गड़बड़ी से-इसलिए मैं इन्हें, यहां किसी लड़के के आये बिना, छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहता। दो एक Ph. D. के Viva थे। मैंने युनिवर्सिटियों को लिख दिया, छात्र और दूसरे परीक्षक को यहीं भेज दो। अंचल जी इसी सिलसिले में दर्शन दे गये हैं। एक अध्यापक अंग्रेजी के मेरठ से आ चुके हैं। एक हिन्दी के मसूरी से आने वाले हैं।

एक दिक्कत छोटी-सी यह भी है कि पहली जुलाई से हमारे यहां भर्ती शुरू होती है; बी० ए०, एम० ए० के बहुत से फार्म निपटाने होते हैं।

खैर, 5 जुलाई के 'धर्मयुग' में अपनी और मेरी निगाहों से खुद को देखना। 'मेलजोल' को भी एक छोटा-सा लेख भेजा था, पर उन लोगों ने पहुँच की सूचना नहीं दी। याद तो तुम्हें हम रोज़ करते हैं, या यों कहो, निराला पर लिखते समय तुम रोज़ याद आते हो लेकिन लगता है, दीदार में थोड़ी देर है अभी।

तुम्हारा-रामविलास

बाँदा

१-७-७०

रात १० बजे

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। तुमने न आ सकने के समर्थन में जो तथ्य दिये हैं और जिस तर्क से दिये हैं वे असमर्थता के पहाड़ खड़े करते हैं। पर मेरे जीवन के सबसे सच्चे एकमात्र स्नेही, यह जान लो कि यदि तुम ६-७-७० को दोपहर तक यहां न आये तो हम सब

मरणासन्न हो जायेंगे। सब कुछ होते हुए भी तुम्हारे बिना मैं डाल से टपक पड़ी चिड़िया की तरह जमीन पर चेतना शून्य हो जाऊंगा। यह अतिशयोक्ति नहीं है। अक्षरशः सत्य है। आओ अवश्य आओ। मेरे लिए तुम्हारा आना मुझे नयी उम्र देगा। वह सुख अपरिमेय होगा। शायद उसी सुख को लेकर मरते दम तक सन्तोष से जी सकूँ। मुझे चाहे कोई जितना मान दे—धन—कुछ भी अच्छा न लगेगा। मैं बड़ों की बड़ाई पाकर भी कोरा कागज रह जाऊंगा। फिर—और फिर यही हार्दिक कामना है कि तुम सब काम छोड़ कर जरूर से जरूर बांदा पहुंचो और इस समारोह में ६ जुलाई की शाम को रहो। मेरा दृढ़ विश्वास है कि तुम्हारा कुछ भी अनर्थ न होगा। मलकिन से भी मेरा आग्रह है और बेटी से भी कि वह तुम्हें बांदा भेज दें। मुझे भी मलकिन की उतनी ही चिन्ता है जितनी तुम्हें। अभी तो आगरे आकर सबसे मिलना है। ५/७ को सरकारी कार्यभार से मुक्त होऊंगा। हां तो सुन रहे हो। तार देकर सूचित करो कि आ रहे हो। सब लोग तुम्हें सुनना चाहते हैं। मुझे तुम्हारी दृष्टि से परखने के लिए।

अब अपनी मजबूरियों को भूल जाओ। एक—दो दिन का मामला है।

मुझे विश्वास है कि तुम आ रहे हो। मेरा बेटा भी मद्रास से आ रहा है। वह भी तुमसे मिलने को उत्सुक है। मेरी वाइफ भी तुमसे अपनी ओर से आग्रह कर रही हैं। नागार्जुन इलाहाबाद से आ रहे हैं।

सस्नेह तुम्हारी प्रतीक्षा में तुम्हारा  
केदार

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)  
दिनांक १८-७-७०

प्रिय डाक्टर,

‘देवताओं की आत्महत्या’.... भेज रहा हूँ। तुमने भेजने को कहा था न!

‘हंस’ का प्रगति अंक अभी नहीं मिल सका।

आशा है कि वापसी में कष्ट न हुआ होगा। सही—सलामत पहुंच गये होओगे। कष्ट के लिए आभार मानता हूँ। तुम आ गये। बहुत ठीक रहा।

पुस्तकों में अशुद्धियाँ हैं। जल्दी—जल्दी में छपी हैं। शायद इसी वजह से।

बहरहाल प्रकाशक ने उस दिन तो उन्हें दे ही दिया। बरसों बाद गद्य की किताब छपी।

और सब ठीक है।

‘धर्मयुग’ ने तो शोर मचा दिया।



मलकिन को मेरी ओर से मेरा [मेरी] कृतज्ञता देना। अब तबियत कैसी है? बच्चों को प्यार।

तु० सस्नेह  
केदार

२१-८-७०

प्रिय केदार,

तुम्हारा १८/७ का पत्र यथा समय मिल गया था। उस समय कालेज खुला ही था, इसलिए बहुत-सा काम आ पड़ा था। उसके बाद मैं भवभूति के चक्कर में फँस गया, साप्ता० हिन्दु० वालों ने लेख मांगा था। सोचा, एक हफ्ते में लिख डालूंगा। उनके तीन नाटक-महावीर चरितम्, मालती माधवम् और उत्तर रामचरितम् मैंने एक साथ पढ़े। कुछ रहस्यों का पता लगा। एक विशेष अनुभूति के बीज पहले नाटक में हैं, दूसरे में वह अनुभूति विकसित है, तीसरे में उसका संस्कृत रूप है। मजे की बात यह कि भवभूति अपने श्लोक, श्लोक की कुछ पंक्तियाँ, गद्यांश एक नाटक से उठा कर दूसरे में सजा लेते हैं। यह सज्जन निराला से दस गुना ज्यादा अहंकारी थे, कुछ दशाओं में अति विनम्र। सानुप्रास सघोष वर्णयुक्त संस्कृत पदावली उन्हें प्रिय थी लेकिन जब सहज लिखते हैं तब 'नयनों के डोरे लाल' हो जाते हैं। शेक्सपियर के चार बड़े नाटकों में जिस शोकाभिभूत अर्द्ध विक्षिप्त अवस्था का वर्णन किया गया है, वह भवभूति में है। वह एक-पत्नी अथवा एक प्रेमिका वाले प्रेम के अनुपम कवि हैं। जैसा उत्कट प्रेम है, वैसा ही घनघोर उनका मर्म भेदी शोक है। हमने उनकी वर्क शाप देख ली जिसमें उन्होंने माइकेल एंजेलो की तरह प्राथमिक रेखाचित्र बनाये हैं। वे पूर्ण अभिव्यक्ति के साथ-साथ मालती माधव में सजा दिये गये हैं। सुकुमार भावों और रक्त रंजित क्रूर दृश्यों-दोनों की पराकाष्ठा है। केवल भवभूति को पढ़ने के लिए मनुष्य को संस्कृत जानना चाहिए। कालिदास की वहां गति नहीं है; बाल्मीकि से वह अनुभूति की विषतिक्तता में आगे हैं। उनमें काफी बचपन है, सजावट का प्रेम। और इसके साथ वह जो-परिच्छेदातीतः सकल वचनानामविषयः है। उसका विश्लेषण सम्भव नहीं, शब्दों में अभिव्यक्ति सम्भव नहीं। Concentration और Compactness जहां है, वहां दान्ते और मिल्टन मात हैं; उनका Imagination ऐसा प्रबल है कि परोक्ष को प्रत्यक्षवत् देखता है। Hallucination की सीमा को छूता हुआ। Hamlet : Me thinks I see my Father. Heratio : Where my Lord ? Ham.—In my imagination. वैसा। लेख में तीन हफ्ते लग गये। पत्नी का ब्लड प्रेशर दो हफ्ते पहले काफी बढ़ गया था, अब कुछ कम हुआ है।

तु०-रामविलास

100 / मित्र संवाद

बांदा

२४-९-७०

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला था। लम्बा अरसा हुआ। २१/८ का है। सामने है। भवभूति की [का] महावीर चरितम नहीं मिली [मिला] शेष दो उपलब्ध हो गया है। खरीद ली है। पढ़ रहा हूँ। वैसे एक बार नजर दौड़ा चुका हूँ। इस बार जम कर पढ़ना चाहता हूँ। इसी सबसे उत्तर नहीं दे सका।

अब इस उम्र में संस्कृत जानने का समय नहीं है। जितना जान चुका वही बहुत है। आजकल तो वह जानो जिसे जानना जिन्दा रहने के लिए जरूरी है। बड़ा मखौल है यहां इस व्यवस्था में। कोई कुछ नहीं सुधार करता। बड़े-से-बड़ा स्वार्थ से प्रेरित है दूसरे को हड़प लेने के लिए। खैर।

आशा है कि घर में सब ठीक होगा। अब ब्लड प्रेशर का क्या हाल है?

दशहरा कहां बीतेगा? पत्र देना।

तु० सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

५-१०-७०

प्रिय केदार,

कार्ड मिला। जुलाई से ही श्रीमती जी गड़बड़ा रही थीं। सितम्बर में बुरा हाल हो गया। अस्पताल में भर्ती करा के गुर्दे, दिल, खून, पेशाब वगैरह की जांच का कार्य दो हफ्ते से चल रहा था। अब छुट्टी मिली है। मुख्य बात यह है कि इन्हें पहली स्टेज वाली डायबिटीज़ है और ब्लड प्रेशर २०० से ऊपर पहुंचता है। काम-धाम सब बन्द करा दिया गया है। कल इंजेक्शन के दर्द से रात को सोई नहीं। खैर, तात्कालिक खतरा नहीं है। ब्लड प्रेशर नीचे लाने के लिए तगड़ी दवाइयां हैं लेकिन वे अपना असर कुछ समय तक दिखाती हैं और शायद बाद में बेअसर भी हो जाती हैं। आंखों में ट्रेकोमा भी है लेकिन उसका इलाज बाद में देखेंगे। यहां एक डाक्टर मित्र बड़ी सहायता कर रहे हैं वरना यह सब जांच पड़ताल अपने बस की नहीं थी। आजकल हम निराला के उस अद्वैत पर लिख रहे हैं जिसमें ब्रह्म नहीं है, केवल शक्ति है और उसकी अव्यक्त अवस्था अनादि अंधकार है: कौन तम के पार-रे कह?

अपने जवाब में इनकी बीमारी के बारे में कुछ न लिखना

रामविलास

बांदा

१५-१०-७०

प्रिय डाक्टर,

४/१० का पत्र सामने है। उत्तर विलम्ब से दे रहा हूं।

तुम्हारे भवभूति वाले लेख को देखने को लालायित हूं। हिन्दुस्तान साप्ताहिक के दिवाली अंक में शायद छप कर आयेगा। यहां उसे खरीदूंगा। धर्मयुग में भी शायद एक लेख आया था पर वह अंक यहां मिल नहीं सका। न देख सका।

—निराला का अद्वैत काफी चिन्तन चाहता है। विस्तार भी। तभी पाठक उसे समझ सकेगा।

—इधर अज्ञेय की पुस्तक 'सागर मुद्रा' देखी। बड़ी सतही कविताएं हैं। वहां नदी का पुल अपने से पीड़ित है कि उसे रौंदा जा रहा है और दूसरे उससे पार उतर रहे हैं। शायद यहां उनकी ही व्यक्तिगत मानसिक पीड़ा उभरी है। हम होते तो पुल का रूप लेते तो इसीलिए कि सबको पार उतार कर अपने को भी कृतकृत्य समझते। अज्ञेय सतह पर रह कर कलम चलाते हैं। चूंकि शब्दी हैं—शिल्प का प्रयोग जानते हैं। इसलिए बात कह जाते हैं। विवेक से विवेचन करने पर पक्ष की कमजोरी उभरती है। पहली कविता भी वैसी ही है। उसमें भी अज्ञेय उस आग से रात में डर कर सोते-सोते जग पड़े हैं और स्वप्न में उस आग से निगले जाने की स्थिति में पहुंच गये हैं। बाहरी आग से डर-भीड़ का डर है।

सस्नेह केदार

१७-१-७१

प्रिय केदार,

पिछले महीने निराला की साहित्य-साधना के प्रथम खंड में कुछ अंश जोड़े घटाये, प्रूफ की गलतियां ठीक कीं। प्रकाशक दूसरा संस्करण निकालने को कहते हैं।

दूसरा खंड नवम्बर से अलमारी में बंद था। विचारधारा वाला हिस्सा करीब-करीब पूरा हो गया था। उसे अब आगे बढ़ा रहे हैं। कोई व्यवधान न पड़ा तो मार्च के अन्त तक समाप्त हो जायगा। शान्ति जोशी ने सुमित्रानन्दन पंत पर एक किताब लिखी है। उसका एक खंड राजकमल द्वारा ही प्रकाशित हुआ है। उसका काफी हिस्सा हमारी किताब पर है यानी निराला को क्षुद्र, घृणित और अहंकारी तथा पंत को सिद्ध अध्यात्मवादी सिद्ध करने के लिए लेखिका ने काफी प्रयास किया है। धर्मयुग की [के] इंटरव्यू से सन्तुष्ट न हो कर पंत ने शान्ति जोशी की पुस्तक के लिए वक्तव्य भी दिया है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रामविलास के माध्यम से पंत का नाश करने के लिए निराला ने तांत्रिक प्रयोग किया!

यहां एक खबर ज़ोरों से फैली हुई है कि डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, कन्हैयालाल माणकलाल मुंशी विद्यापीठ के निदेशक के रूप में आ रहे हैं और मेरी नियुक्ति वहां प्रौफेसर के रूप में हो रही है। अभी लिखित सूचना नहीं मिली। सम्भव है, अगले कुछ दिन हिन्दी पढ़ायें! लेकिन लोगों का कहना है कि डा० द्विवेदी की उम्र ज़्यादा है और रामविलास के पास बेसिक क्वालिफिकेशन नहीं है। यह विद्यापीठ गन्दी राजनीति का दलदल है और यहां सफल निदेशक वह माना जाता है जो इधर-उधर से पैसा ले आये, खाये और खिलाये, काम का प्रदर्शन खूब करे, काम चाहे कुछ न करे।

सुना है, गोरखनाथ द्विवेदी इधर आये थे। हमारे कालेज के कोआपरेटिव स्टोर का कुछ रुपया उन्हें देना था जो नहीं दे रहे थे।

चुनाव की धूम शुरू हो गई है। आगरे से शायद कृपलानी खड़े हो रहे हैं। मेरी पत्नी का स्वास्थ्य पहले से थोड़ा बहुत अच्छा है। अब अपना हाल लिखो।

तुम्हारा—रामविलास

बांदा

५-२-७१

प्रिय डाक्टर,

दिनांक १७/१ का पत्र मुझे परसों रात १० बजे मिला जब मैं मद्रास से इलाहाबाद होता हुआ यहां उस समय घर पहुंचा।

विद्यापीठ में तुम्हारी नियुक्ति की खबर सच हो जाये तो मज़ा आ जाये। हिन्दी तुम पढ़ाओ तो पढ़ने वाला भी समझे कि हिन्दी क्या है और कैसे पकड़ी जाती है। कम से कम मैं तुम्हारे [तुमको] पढ़ाते देख कर बहुत-बहुत खुश होऊंगा और खुशी के मारे नाच उठूंगा। वह दिन आये तो। अभी से बधाई देता हूं।

पंत जी महाराज हैं चाहे जो करें। सुना है कि शान्ति जोशी वाली किताब स्वयं पंत जी ने लिखाई है। खुद बोल कर। ऐसा इलाहाबाद वाले कहते थे। यार मेरे, यह कमज़ोरी न होती तो उनकी कविता क्या से क्या हो जाती है। दुर्बलता यदि मन में कहीं होती है तो वह कृतित्व में कविता को उभरने नहीं देती। मुझे तो उन पर दया आती है। छोड़ो भी उन्हें। निराला बहुतों को धूल चटा गया है।

हां, मालुम हुआ कि साहित्य अकादमी ने तुम्हें पुरस्कार दिया है—निराला वाली पुस्तक पर। उसने अपने को गौरवान्वित किया है—तुम्हें देकर। फिर भी बधाई देता हूं कि उसने सही पुरस्कार देकर अच्छा काम किया है और तुम तो उसके अधिकारी थे ही। पर उसने भाषाविज्ञान वाली पुस्तक पर पुरस्कार क्यों नहीं दिया था यह आज तक समझ में नहीं आया।

अशोक की शादी मद्रास में २७/२ को है। बारात इलाहाबाद से २४/२ को काशी एक्सप्रेस से जायेगी। १/३ को वहां से चल कर ३/३ को इलाहाबाद आयेगी। ४/३ को वहां खाना पीना है।

यह सूचना दे रहा हूं। लड़की मथुरा की है। इसकी बड़ी बहन चाचा के पुत्र को ब्याही है। परिचित लोग हैं। लड़की शिक्षित है। बेटे के उपयुक्त है। सब कुछ ठीक है। मुझे वहां जाना पड़ेगा ही। क्या यह आशा करूं कि तुम भी साथ दोगे?

श्री गोरखनाथ द्विवेदी यहां से चले गये। लखनऊ कान्यकुब्ज कालेज में हैं। वैसा ही आदमी था। खैर।

चुनाव की चाल अभी तो धीमी है। जोर पकड़ेगी। कृपलानी जी तो शायद आगरे से न लड़ेंगे। ऐसा समाचार पत्र में पढ़ा था।

यह बहुत खुशी की बात है कि अब आपकी मलकिन की तबियत पहले से ठीक है। उन्हें मेरा सलाम दो। और कौन बच्चा तुम्हारे पास है? कि अकेले हो? न जाने क्यों बेटे की शादी करने में बेहद खुशी हो रही है। ऐसी खुशी कम हुआ करती है। तिरुपती का मन्दिर देख आया हूं। हाल फिर लिखूंगा।

सस्नेह

केदार

निराला जी वाली किताब का दूसरा खंड भी निकले और बहुत-सी बातें साफ-साफ उभरें। भ्रम दूर हों। लोग निराला को सही समझें।

केदार

बांदा

१५-३-७१

५ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

एक पत्र पहले लिख चुका था। मिला ही होगा। वैसे मैं भी बेटे के ब्याह में व्यस्त रहा और तुम भी तमाम तरह से व्यस्त ही रहे हो। Award मिलने की औपचारिक बधाई तो पहले ही भेज चुका था। दिनमान में यह देख कर कि तुमने अंग्रेजी में बोलने का आग्रह ठुकरा कर वहां दिल्ली में हिन्दी की दो टूक शैली में निराला पर अपना भाषण दिया [,] मेरा जी जी उठा। इसकी हार्दिक बधाई लो। यही तो वे अवसर हैं जब आदमी अपनी मान्यताओं को साकार करता है। तुमने खूब किया। निराला याद आ गए।

अब शायद अवकाश मिलेगा और मैं कुछ लिखने का प्रयास करूंगा। वैसे यह जीवन जो मैं जी रहा हूं यहां, वह समय और शक्ति खाऊ जीवन है जिसमें आदमी

टूट हो जाता है। हम वकील कुछ करते-धरते तो हैं नहीं-बस हवाई बान छोड़ते रहते हैं और मरे गले समाज की ढहती नीवों को जबान दे दे कर, अक्ल बूंक-बूंक कर बरकरार किये रहते हैं। सच कहता हूँ-हमारे वकील जीवन का इस समाज में मुझे तो बहुत ही तुच्छ योगदान दिखता है।

इधर इन्द्रा जी [इन्दिरा जी] की दुंदुभी बजी और सब-के-सब धराशायी हो गयी [गये]। वोटों ने तो ठहाका मार कर सबको मार दिया। जनता का मन बोला है-इन्द्रा [इन्दिरा] के इशारे पर। एक मोड़ लिया है देश की पीड़ित जनता ने। हिम्मत खुली है वोट मार कर मारने की। यदि यही प्रक्रिया चली तो शायद भविष्य के कमंडल से गंगा जल बरसे।

बेटा और बहू आज बांदा आये हैं। अभी इलाहाबाद थे। वहीं से बारात मद्रास ले गया था। खुश हूँ जैसे किसान बहुत खुश होता है आकाश के बादलों से वर्षा का भरपूर जल पा कर।

और क्या हाल हैं?

पुस्तक कहां तक पहुंची? दिल्ली में तो वही पुराना माहौल रहा होगा, जब तुम पुरस्कार लेने गये होगे।

मुंशी की याद अक्सर आती है पर वह नहीं आता।

मलकिन को हम सबका नमस्कार देना। उनका रक्तचाप कैसा जा रहा है। आखिर इसका इलाज भी है या नहीं?

दिल फिर मिलना चाहता है। आगरा आने का मग [मन] हो रहा है। अब तो मुंशी संस्थान में स्थान पा लिया होगा। कैसा रहा यह नया रोजगार है। बुरा न मानना-यह रोजगार तो है ही। बधाई। बेकारी दूर हुई। उत्तर देना। सस्नेह

केदार

R. B. Sharma  
M. A.; Ph. D. (Luck)  
Head of the Department of English  
माई डियर,

R. B. S. College  
AGRA  
Date १७-३-७१

बहुत दिन बाद तुमने फिर इतना बढ़िया खत लिखा है। हमने सबेरे घर-मालकिन को सुनाया। खाना खाकर विद्यापीठ भागे, लौट कर ८ गुड़िया खाई, दो गिलास दूध पिया, अखबार में शेख मुजीब का फोटो देखा, फिर तुम्हें पत्र लिखने बैठे।

यह कैसे हो सकता था कि निराला पर किताब लिखने के लिए मुझे सम्मान मिले और मैं उस अवसर पर भाषण अंग्रेज़ी में करूँ। हम ज़रा तैश में थे, बगल में अजित कुमार थे जिनके अनुसार प्रकाशकों ने निराला का शोषण न किया था सामने दो-चार

प्रकाशक थे। साहित्य अकादमी का माहौल, दिन के चार बजे हाल में बिजली, हमने भी दायें-बायें देखे बिना दो-चार हाथ झाड़ दिये। उस शाम को आंखों में निराला थे। मैं अपने मन में उन्हें याद करता हुआ सारा सम्मान उन्हें अर्पित करता जाता था। काफी जनता इकट्ठा हुई थी। बधाई देने, हाथ मिलाने, हाथ जोड़ने वालों का अन्त न था। बाकी पुरस्कार विजेता एक तरफ़ खड़े थे, लगता था सारा मजमा हमारे लिए इकट्ठा हुआ है। मैंने कहा—लो गुरु तुमने अपने कवि कर्मों से कन्या का तर्पण किया था, मैं हिन्दी जनता के इस स्नेह और सम्मान से तुम्हारा तर्पण करता हूँ।

२२-३-७१

इतना लिखने के बाद कोई मित्र आ गये, तार टूट गया। आज फिर इसे जोड़ने बैठे हैं। भाई, इंदिरा गान्धी ने खूब किया। खुशी इसी बात की है कि गालियों की बौछार से वह दबी नहीं। यद्यपि वह निराला जी की तरह क्रान्तिकारी नहीं, फिर भी कुछ समय के लिए उसने निराला जी की तरह संगठित विरोध का सामना किया।

लेकिन सबसे ज्यादा खुशी तो शेख मुजीब की हिम्मत देख कर होती है। साम्प्रदायिकता को आधार बना कर साम्राज्यवादियों ने जो दुरभि-सन्धि की थी, वह अब टूटने लगी है। धर्म के नाम पर बंगाली मुसलमान यह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा कि पंजाबी मुसलमान उसका शोषण करें। पूर्वी बंगाल में मुस्लिम साम्प्रदायिकता की पराजय और दिल्ली में हिन्दू साम्प्रदायिकता का—दोनों एक ही जन अभियान की गति हैं। विश्वास है कि जाग्रत जनता को अफीम की पुरानी घूंटियों से सुलाया न जा सके गा।

भाई लाओस, में 'जन तंत्र' के रक्षकों को लेने के देने पड़ गये। हैलिकाप्टरों में लटक-लटक कर भागे। एक भागने वाले वियतनामी, दूसरे मार भगाने वाले वियतनामी। एक अतीत की सड़ी गली तलछट, दूसरे अनागत की उठती हुई, दुर्धर्ष लहर। एशिया करवट बदल रहा है।

हम सबेरे से दोपहर तक निराला के साथ रहते हैं। उनकी कविताएँ पढ़ते हैं, कुछ लिखते हैं, अक्सर दूसरे दिन उसे काट देते हैं, खीझते हैं, रीझते हैं, फिर आगे बढ़ते हैं। दोपहर के बाद भाषाविज्ञान की दुनिया में पहुँच जाते हैं। अभी क० मुंशी विद्यापीठ के इतिहास, उद्देश्य, उपलब्धि आदि का अध्ययन कर रहे हैं। गर्मियों बाद अध्यापन कार्य शुरू करेंगे। बहुत-सी अच्छी पत्रिकाएँ आती हैं, बहुत सी पढ़ने लायक किताबें हैं। कुछ दिन जमे रहे तो, शायद कुछ काम हो जाये। वैसे कालेज से साल भर की छुट्टी ली है, न मन लगे तो लौट जायँ।

कल पं० उमाशंकर शुक्ल मिले थे। हि० अकेडेमी<sup>1</sup> में लिखित भाषण पढ़ने को कहते थे। अभी कुछ तै नहीं किया। यदि इलाहाबाद आया तो बांदा पास ही है....

तुम्हारा—रामविलास

1. हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद। पं० उमाशंकर शुक्ल उस समय इसके सचिव थे। [अ० त्रि०]

बांदा

१९-१०-७१

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूँ। अब तो नये पद भार का काम हाथ में आ गया होगा। और अवकाश भी मिलने लगा होगा। इसलिए अब डिस्टर्ब कर रहा हूँ कि कुछ हाल-चाल लिखो।

मैं ठीक हूँ।

इधर बाँग्ला देश पर एक लम्बी कविता लिखी थी। मुक्त छंद में। अपने और अपने नगर के Reactions लेकर। गुरिल्ला War को ही सराहते हुए। भेजूंगा। कुछ और भी छोटी-छोटी रचनाएं लिख सका हूँ।

यह Political settlement क्या हो सकता है जिसका धोखा फैलाया जा रहा है। वह देश तो मुक्त हो तभी तो खूबी है। मैं इस बिचवानी की स्थिति से सहमत नहीं हूँ।

पंत जी ने बच्चन पर दीवानी का केस चलाया इलाहाबाद में—पहले नोटिस देकर। उसमें बच्चन ने बयान तहरीरी दी। शान से जमे रहे। झुके नहीं। अन्त में मुकदमें में जान न देख कर पंत जी ने मुकदमा खारिज करा लिया। मुंह के बल गिर गये। उन्हें केस दायर ही न करना था—बच्चन को पत्रों के छापने की अनुमति स्वयं दो बार दे चुके थे। न जाने क्या हो गया था उन्हें कि कचहरी की शरण में दौड़ गए। भले मानस लोग कचहरी नहीं जाते। जो जाते हैं वह बहुत विवश होते हैं या सताने वाले होते हैं। इसके बाद पंत जी बच्चन से मिलना चाहते थे प्रयाग में। पर बच्चन नहीं गये। खैर।

आज धर्मयुग में बच्चन की नई कविता 'अक्लमंदाना इशारा' पढ़ी। सम्भवतः पंत जी से सम्बन्धित है। देखना जरा। काफी तीव्र प्रतिक्रिया बच्चन के मन में हुई है पंत जी के व्यवहार से।

और सब पूर्ववत् है।

आशा है कि मालकिन जी का स्वास्थ्य ठीक होगा। उन्हें मेरी नमस्ते देना।

बच्चे सब कहां-कहां हैं? लिखना।

आना चाहता था दीवाली में, पर इलाहाबाद चाची के घर चला गया। न पहुँच सका तुम तक। पत्र लिख कर पूछना चाहता था कि तुम रहोगे या नहीं। पत्र न लिख सका था इसी से अनिश्चय में आना न हो सका।

क्या-क्या दिनचर्या रहती है। लोग याद करते हैं तुम्हें।

मौसम बदल रहा है। सबेरे सुहावना रहता है।

सस्नेह तु०

केदार

पुनश्च : इलाहाबाद में नागार्जुन मिले थे। मास्को हो आए हैं। केदारनाथ अग्रवाल



K. M. INSTITUTE OF HINDI STUDIES & LINGUISTICS  
AGRA UNIVERSITY, AGRA

no.....

Dated ३१-१०-१९७१

प्रिय केदार,

जिस दिन तुम्हारा पत्र मिला, उसके एक दिन पहले हम घनश्याम के यहां सोम ठाकुर से तुम्हारी चर्चा कर रहे थे, इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कि वकालत में अपनी कविता तुम कैसे बचाये रहते हो। तो वकालत का क्या हाल है।

हमने निरालावाली किताब का दूसरा खंड-अनेक अध्यायों को कई बार लिख कर और पूरी किताब दो बार रिवाइज करके अगस्त में प्रकाशक को दे दिया। पहले खंड से अलग यह निराला के मन की थाह लेने का नया प्रयास है : दुस्साहस भी। बड़ी मेहनत पड़ी। जिसे देखो वही कहता था-बड़े दुबले हो गये हो, क्या बीमार हो? किसी को क्या समझाएँ। अब आलोचना लिखना बन्द।

सोचा था-दो महीने आराम करेंगे। किन्तु यहां कुछ ऐसा योग घटा कि क० मुं० विद्यापीठ से इस्तीफा देना मैंने ठीक समझा। इस्तीफा मंजूर होने से पहले मैंने भाषाविज्ञान में अपनी नई खोज की पुष्टि के लिए कुछ सामग्री बटोरना उचित समझा। आजकल उसी में लगा हूँ-शायद नवम्बर के अन्त तक कालेज लौट आऊंगा। तब कुछ दिन आराम।

इस बीच हम ग्वालियर और शिवपुरी घूम आये। शिवपुरी के निकट भूरा खोह है-कोलरिज के कुब्लारवां में वर्णित enchanted chasm का प्रतिरूप है। कभी उधर जाओ तो जरूर देखना। ग्वालियर में हिन्दी प्राध्यापकों के अध्ययन-चिन्तन-भाषण-स्वार्थ पूर्ण व्यवहार देख कर समझ में आया हिन्दी भाषी जाति क्यों पिछड़ी हुई है। देहरादून गया। वहां कुछ लोग पर्वतीय राज्य-गढ़वाल-कुमायूँ को मिलाकर-बनाने के फेर में हैं। यहां आगरे के पास लोगों ने रुनकुता में सूरकुटी ढूँढ़ निकाली है। कहते हैं, इसकी ईंटें और गारा देख कर जान मार्शल ने कह दिया था-यह सूरकुटी ही है। राष्ट्रपति आकर अंग्रेजी में भाषण कर गये-मुख्यमंत्री ने सूर-गोष्ठी में व्याख्यान दिया। करीब एक लाख अभी भाई लोग सरकार से प्राप्त कर चुके हैं। ७० लाख की योजना बनाई है सूर स्मारक निर्माण के लिए। कुछ लोगों ने ब्रज प्रदेश का अलग राज्य बनाने की मांग भी सामने रखी। सुन्दर बात है, बंगाल के दो भागों में जातीय चेतना का ज्वार आया है; हिन्दी भाषी प्रदेश में उसका भाटा है। हर तरफ उतार, हर तरफ बिखराव। राजस्थानी और भोजपुरी साहित्य एम० ए० के लिए कुछ वि० विद्यालयों में स्वीकृत विषय है। मैथिली पहले से।

108 / मित्र संवाद

बंगाल का विभाजन-साम्राज्यवादी षड्यंत्र का फल है। धर्मान्धता के बल पर कायम की हुई एकता को जातीय चेतना ने तोड़ दिया है। यह कहने का साहस-या बुद्धि-किसी में नहीं है। कारण, इसकी परिणति पूर्व-पश्चिम बंग की एकता है। बंगाल का विभाजन भारत का विभाजन भी था, इसलिए पूर्व-पश्चिम बंग की एकता भारत के विभाजन का नाश भी है।

हां, बच्चन ने वह कविता पंत जी पर ही लिखी है। 'सौम्य सन्त' को श्रद्धांजलि है।

पत्नी पहले से अच्छी हैं।

अपने हाल लिखना।

तु० रामविलास

बांदा

१७-११-७१

प्रिय डाक्टर,

दिनांक ३१/१० का पत्र सामने है। उत्तर दे रहा हूँ अब। विलम्ब हो ही गई [गया]। पिता जी यहां आए हुए हैं। बीमार हो गये थे। अब संकट दूर हुआ है। ठीक हो गए हैं। तब यह पत्र लिख रहा हूँ। वैसे मैं तो ठीक ही हूँ। आशा है कि तुम सपरिवार ठीक होओगे।

हां, आराम करना भी जरूरी है। major work करके चैन की सांस लो और हमें भी माल खाते समय याद कर लो। सेहत अच्छी करो। विचार-भूमि पर निरन्तर रहने वाला व्यक्ति जहां उसकी फसल चरता है वहां भी वह स्वयं भरपूर चरा जाता है। दुबले तो पड़ोगे ही। बीमार तो लगोगे ही। लोग ऐसा कहते हैं तो सही ही कहते हैं। अब हाल लिखना कि कैसे चल रही है तबियत महरानी। हम तो वहीं हैं-पीठ में दर्द रहता है। बुढ़ाई अंगों में उतर आई है। वैसे जी से पक्के हैं।

भूरा खोह देखने का मौका लगा तो देखेंगे। पर जल्दी तो आशा नहीं है।

सूरदास बाबा मरणोपरान्त दूसरों का पेट पाल रहे हैं। वह तो जन्म से ही अन्धे कहे जाते हैं। भला ऐसा क्यों न हो।

बंगाल का जातीय चेतना ज्वार वाक्रई में कमाल का है। वियतनाम बनेगा निश्चय है। हां यदि समझौतापरस्तों ने बाजी मार कर खून पी लिया तो दूसरी बात है। अभी तो वाहिनी सर किये हैं। और क्या हाल है? वकालत ही तो पेट पालती है। साधारण है।

सस्नेह-केदार

२१-१-७२

प्रिय भाई,

वसंत की बधाई लो। बराम्दे में आधी धूप, आधी छाया में तुम्हें कार्ड लिख रहे हैं। कार्ड लिखते समय याद आया, इस बार खेतों में सरसों देखने नहीं गये। आज जायँ गे। सबेरे घूमने जाते हैं। मुहँ अंधेरे। शाम को क० मु० विद्यापीठ से लौटते हैं ६ बजे तक जब फिर अँधेरा हो जाता है। इसीलिए सरसों-दर्शन से वंचित रहे। दो साल से गेंदे भी नहीं लगाये। गुलाब अलबत्ता गहगहा रहा है। आजकल हम कुछ भाषाविज्ञान की पढ़ाई कर रहे हैं। उस भाषा का इतिहास समझने के लिए जिसे हम तुम लिखते बोलते हैं। तुम्हारी बुढ़ाई का क्या हाल है? कितने अंगों में उतरी? पीठ का दर्द अब कैसा है? शरीर की मालिश कब से नहीं कराई? मुजीब का ढाका वाला भाषण सुना था? भाव विह्वलता की हद थी; फिर भी भीतर से उसका मन सधा हुआ था।

तु० रामविलास

बांदा

१५-१-७२

प्रिय भाई,

२१/१ का पत्र आज मिला। बेहद खुशी हुई। एक लम्बा समय पत्रहीनता का बीच [बीत] चुका है। अब इस वसंत के आते ही हमारे पत्र प्रकट हुए हैं। यह शुभ है।

धूप-छाँह में मेरी याद आई। गहगहे गुलाबों के मुँह से उड़ी सुगन्ध ने तुम्हें अवश्य ही मेरी याद दिलाई। न सही गेदें। हमारे इस पत्र को ही इस बार गेंदों का पेड़ समझ लेना। सरसों तो मन में बसी ही रहती है। चाहे देखें या न देखें। बाहर बड़ी ही खुशियों की उछाल चल रही है—बांग्ला देश की विजय की। अभी भी प्रवाहित रक्त प्रेरणा दे रहा है नये सूर्य को आगे के दिनों को उजागर करने के लिए। देखो ज़माना कहां से कहां जाता है।

मैं बुढ़ा तो रहा ही हूँ। पर पत्र पाते ही हवा में उड़ने लगा हूँ जैसे जवान के हाथ से सितार बजे। मैं इस उम्र में भी अपने भीतर बाहर कहीं भी क्षरण या मरण के चिह्न नहीं देखता। पोर-पोर से पुष्ट और पवित्र हूँ। संसार छोड़ कर चलने का विचार आता ही नहीं। सचमुच मैं भी गहगहा रहा हूँ। न दर्द है, न दवा की जरूरत है। मालिश तो मैंने कभी कराई ही नहीं। मुजीब क्रैद रहे, भाग्य से रहे। छूटे तो भाग्य से रहे। सरताज मिला। अब देखो कहां ले जाते हैं। मुझे मुक्त वाहिनी ने मोह लिया। तभी धर्मयुगवाली कविता लिख सका। लिफाफा नहीं है इससे यह हरकत<sup>1</sup> है।

तु० केदार

1. पोस्टकार्ड के अगल-बगल, ऊपर-नीचे लिखने को 'हरकत' कहा गया है। [अ० त्रि०]

बांदा

३०-4-७२

प्रिय डाक्टर,

यार बहुत चुप हो-एक भी खत नहीं। मैंने लिखा भी तब भी उत्तर में एक पंक्ति भी नहीं। क्या माजरा है? भाषा पर काम कर चुके होओगे। तुम तो पिल पड़ते हो कोई न कोई जरूरी काम लेकर और हमें भुला देते हो। यह सब हमें तो अच्छा नहीं लगता। हम यहां तपस्या करते हैं और तुम एक भी नहीं सुनते।

अब तो मेरे मद्रास के पते पर पत्र दो। मैं वहां ८/५ को यहां से जाऊंगा, झांसी होता। १०/५ को पहुंच जाऊंगा। पता है-

मेरा नाम

16, Thirmurthy Street

'T' Nagar

Madras-17

यदि इस तारीख से पहले उत्तर दो तो ८/५ तक यहीं मिल जायेगा।

सस्नेह तु० केदार

३०, नई राजामंडी

आगरा-२

१२-५-७२

प्रिय केदार,

तुम्हें शायद मैंने लिखा था कि क० मु० विद्यापीठ से मैंने पिछले सितम्बर में इस्तीफा दे दिया था। किस्सा कोतह-मैं वहां अभी ३० जून तक हूँ। इस बीच मैं भाषा विज्ञान का अपना अध्ययन पूरा कर लेना चाहता हूँ। आज कल यहां काफी गर्मी पड़ रही है। सबेरे तीन-चार घंटे चाहे जो काम कर लो, उसके बाद रेडियो, संगीत, खबरें, पुराने कागजों को व्यवस्थित करना वगैरह। सोचते हैं, आज सबेरे का समय किताब पढ़ने और नोट्स लेने में लगाओ, दोपहर या रात को चिट्ठी लिखेंगे। दोपहर हुई-अभी तो खाना हजम नहीं हुआ। खाना हजम हुआ-इस समय तो गर्मी बहुत है। कल सबेरे लिखेंगे। सबेरा हुआ-अच्छा दो घंटे पढ़ लें, साढ़े आठ बजे लिखेंगे। फिर देखा-साढ़े आठ की जगह साढ़े दस बज गये हैं। अच्छा दोपहर को...

इस समय दोपहर के पौने तीन बजे हैं। दो बजे की न्यूज़ के बाद कुछ देर म्यूज़िक सुना। फिर बत्ती जला कर चिट्ठी लिखने बैठे। सामने खाट पर मालकिन लेटी हैं। इन दिनों-बहुत दिनों के बाद-वह अपने आप घर से निकल कर पास-पड़ोस में आने जाने लायक हो गई हैं। सबेरे थोड़ी दूर टहलाने ले जाता हूँ। इच्छा होती है Love at 60 पर

एक गद्य पुस्तक लिख डालूं। सबेरे चार बजे छत से दूर आगरा मथुरा रोड के घने पेड़ों से कोयल की आवाज़ सुनाई देती है। पांच बजे स्टेशन के सामने वाली सड़क पर अमलतास की पीली डालें कहीं भीतरी आग से दमक उठती हैं। हमारी कौलोनी में जहां व्यापारियों ने नन्हें पौधे उखाड़ नहीं डाले थे, गुलमुहर के लाल झंडे आसमान की तरफ उड़ते से लगते हैं। और हमारे प्रेम में अब लपटें नहीं हैं, निर्धूम दहक है जिसे कहे सुने बिना हम चौबीस घंटे-प्रतिक्षण-अनुभव करते हैं। सो कर उठने पर एक दूसरे से कुछ कहे बिना मुँह देख कर समझ जाते हैं-कैसी नींद आई। और कभी कहीं से अचानक आ कर कहें गी-सन्दर्भ बताये बिना-उसका हाथ नहीं उठता। मैं समझ लेता हूँ, पड़ोसी की बात है जिसे लकवा मार गया है। अब इच्छा होती है-ऐसा कुछ लिखें जिसमें मनुष्य के मन की गहराई दिखाई दे। लेकिन लिखने के पहले ज़रा यह भाषा समझ लें जिसमें लिखना है। जिसके शब्द हजारों साल से हमारे बाप दादे बोलते आये हैं और जिनका इतिहास अभी हमने समझा नहीं है। बस, यह आखिरी साल-फिर विदा-भाषा विज्ञान, विदा आलोचना। हम सिर्फ वह लिखेंगे जिसमें हिन्दी भाषा का छिपा हुआ सौन्दर्य, उसकी भाव शक्ति उजागर हो। मद्रास के समुद्र और हवा का हाल सुनाओ, अब हमारा आल्हा समाप्त हुआ।

तुम्हारा-रामविलास

बांदा

२४-७-७२

प्रिय डाक्टर,

गरमी के दिन निकल गए-गरम न होओ दोस्त कि मैंने तुम्हारे पत्र का उत्तर नहीं दिया। अब-लो यह पत्र, सेवार्षित है।

भाषा पर काम खत्म हो गया होगा। अवकाश मिला कि नहीं? क्या कुछ लिखा तुमने उसकी एक झलक हमें भी दे दो। शायद मज़ा आ जाये।

जून में ही मद्रास रहा। जुलाई से यहीं हूँ। मौसम बरसाती नहीं शुरू हुआ वही गरमी चल रही है पर गरम तवे वाली नहीं। कुछ कमज़ोर पड़ी है। पानी अन्यत्र बरसा है। इधर-उधर। उसी की ठंडक है।

इधर कुछ लिख नहीं सका।

अब कभी-कभी हड्डियों के जोड़ों में जकड़न सी महसूस होने लगी है पर दिक्कत नहीं होती। चेहरा बुढ़ा गया सा है। नीचे के सब दांत निकल गये हैं। पर बनावटी नहीं लगवाये। अब तो श्री सी० बी० राव आगरे के वाइस चैंसलर हैं। खूब साहित्य चर्चा करते होओगे।

बच्चों का और घर का क्या हाल है? मालकिन को हमारा साष्टांग दंडवत देना।

अब आगरे कब बुलाते हो हमें? कब रहोगे वहां निश्चय ही?

इधर छुट्टियों में कहीं बाहर न गये होओगे। गरमी तो बेहद पड़ी थी। तिलझ गये होओगे। पर तुम्हारा बेंत देख कर वह भीतर न पैठी होगी।

यहां अब जगदीश राजन<sup>1</sup> डी० जी० सी० (क्रि०) हो गये हैं। उसी पद पर जिस पर मैं था। ठीक रहा। बेईमान कोई न आ सका। कभी-कभी सरकार भी समझ से काम कर देती है।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

१५-९-७२

प्रिय केदार,

हम इंतज़ार कर रहे थे कि तुम तमिलनाडु की धरती से महाबलिपुरम् के समुद्र का गहरा नीला रंग लिए हुए पत्र लिखो गे लेकिन पत्र तुम्हारा बाँदा से आया जिससे लगा कि काफी दिन से केन किनारे भी नहीं गये हो। खैर, कोई बात नहीं।

अपने दो दाँत बनावटी हैं जो नीचे वाले तीन की जगह काम देते हैं। पहले अटपटा लगता था पर अब उनके बिना बोलना, खाना-पीना सब नकली मालूम होता है। हमारी हड्डियों के जोड़ तो दुरुस्त हैं लेकिन पैरों की नसें उभर आई हैं और कभी-कभी चलने में दर्द-सा होने लगता है और इच्छा होती है कि पुलिया पर बैठ कर आराम कर लें। चेहरा बहुत तो नहीं बुढ़ाया पर दाढ़ी की खाल नापसंद ढंग से ढीली हो गई है। ऐसी-तैसी साले बुढ़ापे की।

राव साहब बम्बई गये थे। वहां दमे का ज़बर्दस्त दौरा पड़ा। दिल्ली आये। परसों आगरे। कल भेंट हुई। बोलने में अब भी सांस उखड़ आती है। दिल्ली में बुखार भी था, अब नहीं है। साहित्य-चर्चा? साहित्य विश्वविद्यालयों के बाहर की चीज़ है। यहां गुटबन्दियां हैं, सीनियोरिटी-जूनियोरिटी के झगड़े हैं और फाइलों के अंबार हैं।

कल राव साहब एक सज्जन दशरथ राज की बात कर रहे थे। मैं समझा-कह रहे हैं, दस[चत राज। मैंने कहा : आप ठीक कह रहे हैं, यहां दसखत राज है, काम कुछ नहीं होता, सिर्फ फाइलों पर दस[चत होते हैं।

खैर, अभी भाषा वाला काम साल-दो-साल और चले गा। हम एक तिलस्मी खोह में फँस गये हैं जिसके बाहर आना जल्दी मुमकिन नहीं।

---

1. अवकाश प्राप्त सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली। कुछ दिनों तक उ० प्र० लोकसेवा आयोग के भी सदस्य रहे। (अब दिवंगत) [अ० त्रि०]

हमारा कहीं जाने का प्रोग्राम नहीं है। प्यारे, जब आ सको, आ जाओ। भाषा विज्ञान की बात न करेंगे, बस कविता पढ़ेंगे, गुनँगे, सुनँगे।

तुम्हारा-रामविलास

२७-१०-७२

प्रिय केदार,

तुम्हारी परेशानी समझ कर चित्त दुखी हुआ किन्तु फिर सोचा, समाज में गुंडागर्दी इतना [इतनी] बढ़ गई है कि साहस पूर्वक उसका मुकाबला करना अत्यावश्यक है और जो ऐसा करते हैं, वे अभिनन्दनीय हैं-परिणाम कुछ भी हो। जिये तो मर्द की तरह वरना जिन्दगी से मौत अच्छी। जिन्दगी में ऐसे क्षण कभी-कभी अचानक आ ही जाते हैं जब मर्द मौत की परवाह न करके सम्मान पूर्वक जीते रहने के लिए शत्रु से भिड़ जाता है। परिणाम कुछ भी हो, तुम्हारे भतीजे ने काम वीरता का किया।

मन में धैर्य रखो क्योंकि वीरता से अधिक अब उसी की आवश्यकता अधिक हो गी। शुभ परिणाम के लिए मेरी हार्दिक, मंगलकामनाएँ।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा  
९-१२-७२  
रात ९ बजे

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड आज मिला।

नागार्जुन पटना हैं। पत्र आया है। तुम्हें भी याद किया है। दिल्ली जाने पर वहाँ से आगरा आ कर तुमसे मिलने को लिखा है।

पढ़ कर यह जानने पर ज़रा चिन्ता हो गयी कि तुम न जाओगे तो क्या करेंगे हम लोग। तुम्हारा आना तो बहुत ज़रूरी है। ऐसा न करना भाई। वरना जान निकल जायेगी। सारा काम छोड़ कर आना ज़रूर।

यह तो लिखो कि इस सम्मेलन में लेख किन-किन विषयों से सम्बन्धित होने चाहिए। फिर प्रगतिशीलता के अब तक क्या-क्या रूप हुए हैं या नहीं हुए उस विषय पर भी तो एक लेख होना चाहिए। पिछले बीस-बाईस साल में जो साहित्यिक विस्तार और विकास हुआ है उसके मूल्यांकन का भी प्रश्न महत्वपूर्ण है। वह भी विचारने योग्य है। इस पर कौन लिखेगा? संगठन का सवाल भी आयेगा। उसका कितना व्यापक

क्षेत्र समेटा जायेगा यह कम महत्वपूर्ण नहीं है। अलावा इन बातों के तमाम नये अप्रतिबद्ध या और नये लोग लिख रहे हैं—वह सब कैसे और कहां तक इसमें सहयोगी बनाये जायेंगे, इस ओर भी सविशेष ध्यान देना होगा। प्रकाशन का कार्यभार P. P. H. लेगा या नहीं या कैसे किस प्रकार कराया जायेगा? बड़ी संकटपूर्ण समस्या है। इसे हल होना चाहिए। फिर राजनीति की ओर और सरकार की ओर सब का कहां तक कैसा रुख रहेगा?—प्रस्ताव कैसे पास होंगे?—झगड़े के ये प्रश्न मुंह बाये खड़े हैं!

लेखकों की अपनी समस्यायें हैं। उन पर भी कहा सुनी होनी ही चाहिए।

तुम्हारा भरपूर योगदान न मिला तो सब गुड़-गोबर हो जायेगा।

निश्चय ही बांदा छोटी जगह है। यहां की दृष्टि से जरूरी है कि वैचारिक धरातल पर ही समस्याओं पर विचार-विमर्श हो—व्यक्तिगत आरोप और प्रत्यारोप का माहौल सर्वथा विपरीत होगा। पता नहीं दूसरे लेखक कितना क्या जहर उगलें। उसकी चिन्ता तो नहीं है। पर सबसे बड़ा काम मिल-भेंटने का होगा और प्रकाशन पर बल होगा और देश के राजनयिक परिप्रेक्ष्य में कितना—कैसा रुख हो—गम्भीर विवाद का विषय उभरेगा।

कृपया अपने विचारों से—हरेक बात पर—सुझाव और समाधान भेजो। तुम्हारे पत्रों से आगे बढ़ने की दिशा खोजने में मदद मिलेगी। तुरन्त उत्तर देना।

सस्नेह तु० केदार

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट,

सिविल लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)  
दिनांक १३-१-७३

प्रिय डाक्टर,

७-१ का पत्र सामने है।

साहित्यकारों के झगड़े पेचीदी [पेचीदे] हैं। यह मैं बखूबी जानता हूँ। यह भी एहसास है मुझे कि मसले सुलझाना बहुत कठिन काम है।

यह सम्मेलन तो बांदा की चेतना में एक कम्प पैदा करने के लिए आयोजित हो रहा है। और कुछ हो-न-हो एक जगह बहुत से जाने-पहचाने लोग मिल लेंगे और कह-सुन लेंगे। इसे किसी पार्टी के इशारे पर आयोजित नहीं किया गया। न पार्टी से कोई निर्देश लिया गया है। पार्टी की ओर से अभी ऐसा प्रयास नहीं हो रहा। इसलिए हम लोग पार्टी के प्रति न तो कोई अन्याय कर रहे हैं न उसके लिए डंका बजा रहे हैं।

जहां तक रमेश सिन्हा का सवाल है वह भी इस सम्मेलन में दर्शक की हैसियत से आकर देख-सुन सकते हैं। वह नीति-निर्धारण या कोई दिशा नहीं दे सकते। न हमें उनकी ओर से भ्रम है। न उन्हें हमारी ओर से भ्रम है।

प्रकाशन की व्यवस्था तो होनी ही चाहिए इस प्रश्न को जोर-शोर से उठाया



जायेगा और इसके लिए बाद को भी दिल्ली तक में पहुंचाया जायेगा। मैं जानता हूँ कि पार्टी ऐसे मसलों में राजनीति से चाल चलेगी। लेकिन उसे झकझोरा तो जा ही सकता है। वैसे कुछ न कहने या करने से तो वे और भी सोये रहेंगे।

घटिया लेखकों की जमात जहां रहना [रहनी] चाहिए वहीं रहेगी। लेकिन वह बढ़िया लेखकों के खिलाफ जेहाद तो बोलती ही रहती है। उसे भी तो पास बिठा कर नये की ओर निगाह करने के लिए उकसाया जा सकता है।

जमाव बड़ा होगा। मेला होगा। काम भी माकूल न होगा। यह सब कुछ सही है। फिर भी छोटे घटिया लेखकों के कृतित्व के विरुद्ध हमें अपने ही लोगों की आंखें भी तो खोलनी हैं और दूसरे नयों को उधर जाने से बचाना भी तो है।

पत्रिका का प्रकाशन भी हो। यह विषय उभारा जायेगा। प्रयास किया जायेगा। यदि वह निकलेगी तो फिर महत्वपूर्ण लेखक सम्मेलन बुलाया जायेगा। डियर चिन्ता न करो।

इसमें शामिल होओ। आओ। कुछ न कहो तो भी रहो। उपस्थिति से प्रेरित करो। पुस्तक अभी नहीं मिली।

सस्नेह तु० केदार

R.B.Sharma M.A.,

Ph.D. (Luck.)

Head of the Department of English

R.B.S. College

AGRA

१९-२-७३

प्रिय केदार,

भारतेन्दु से पहले की हिन्दी उर्दू बहुत ही दिलचस्प है। ब्रजभाषा से प्रभावित, हिन्दी-उर्दू का भेद न करती हुई, जनपदीय बोलियों की धूल में सनी हुई। उस पर मैं डेढ़ महीने से एख लेख लिख रहा था। यह भारतेन्दु-युग में छापे गा [छपेगा]; राजकमल वाले नया संस्करण छाप रहे हैं। यह पुस्तक तुम्हें समर्पित है; उचित—क्योंकि कवियों में तुम और नागार्जुन उस परंपरा के श्रेष्ठ प्रतिनिधि हो। नागार्जुन को मेरी दूसरी पुस्तक भा० हरिश्चन्द्र समर्पित है।

तुम्हारे सम्मेलन में मेरा आना संभव नहीं है। पहले लिख चुका हूँ। एक तो पत्नी का स्वास्थ्य, दूसरे मेरा मन। पत्रिका निकले, एक आन्दोलन-केन्द्र बने, पहले से बहस के लिए कुछ लेख तैयार किये जायँ, तब लेखक-सम्मेलन अधिक सफल हो गा। तुम्हारे प्रयास के लिए शुभ कामनाएँ। पुस्तक की प्रति भेज रहा हूँ। फुर्सत में देखना।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

५-३-७३

प्रिय डाक्टर,

सम्मेलन की शुभकामनाएं मिल चुकी थीं। तुम्हारे न आ सकने का हम लोगों को बेहद खेद रहा और तुम्हारी कमी सबको लगातार खटकती रही। फिर भी सम्मेलन को आशातीत सफलता मिली और इसके लिए आये हुए सभी साहित्यकार धन्यवाद के पात्र हैं।

निराला की साहित्य साधना का दूसरा भाग मिल गया है। अभी केवल सरसरी तौर से देख सका हूँ। काफी वस्तुपरकता से तुमने लिखा [है ऐसा] जान पड़ता है [1] फिर धैर्य से पढ़ूँगा तब विस्तार से लिखूँगा [लिखूँगा]। आशा है कि मलकिन ठीक होंगी और तुम तो ठीक होगे ही।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

११-११-७३

प्रिय भाई,

विलंबित पुरस्कार<sup>1</sup> प्राप्ति पर हार्दिक बधाई। विदेश यात्रा सुखद हो।

सस्नेह

रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)

दिनांक १९-११-७३

शाम ५ बजे

प्रिय भाई,

११/११ का पोस्टकार्ड अपनी दो पंक्तियों की लढ़ी पर सवार, कल मेरे पास आ पहुंचा। यानी आया तो वह मेरी गैर हाजिरी में। पर मिला मुझे कल जब मैं दिल्ली से पुरस्कार ले कर वापिस बांदा आया। पहले तो देख कर गुस्सा लगा फिर बायों तरफ

1. 'सोवियत भूमि नेहरू' पुरस्कार। इस पत्र में बायों ओर नीचे फूल बनाया गया है। [अ० त्रि०]

‘फूल’ बना देख कर हल्की-सी हंसी हंसा। और यह सोच कर कि तुमने ‘फूल’ को अंग्रेजी के शब्द ‘Fool’ से जोड़ कर प्रतीक का प्रयोग किया है मैं भी कवि की तरह पुनः गुस्साया। आखिर यह क्यों? बड़े ‘कमलमकोंचू’ हो। सच में इस हरकत में बड़ी आत्मीयता प्रकट हुई और हमारा पूर्व व्यक्तित्व जमीन पर उतर आया और हमने तुम्हें गले लगाया पाया। दो पंक्ति की-यानी दो पंक्तियों की-यह लढ़ी हमारे जैसे देहाती के लिए वाकई में बिल्कुल फिट भेंट है। तुम बड़ी रेलगाड़ी चलाते तो वह हमारा दिल और दिमाग धड़धड़ा देती और हम उजबक की तरह देखते खड़े रह जाते। समझ कुछ न पाते।

मैंने तुम्हारे पोस्टकार्ड को कई बार उल्टा लटकाया और थपथपाया तो वह गिड़गिड़ाया और बोला ‘मैं क्या करूं? डाक्टर ने माना ही नहीं। मैंने तो आसमान की तरह फैल कर अपने को उनको समर्पित कर दिया पर उन्होंने मुझे अपने वाक्यों से वंचित ही रक्खा और रोते-रोते, बधाई बांध कर, पोस्ट-बॉक्स के अंधेरे-घर में झोंक दिया। मैं मजबूर था। आया तो आप न मिले। रोता पड़ा रहा। खैर आपने स्नेह दिया। यही क्या कम है। कृतज्ञ हूं। पर उल्टा लटकाने और थपथपाने से दिमाग में बल पड़ गया है।’

मैं हंसा कि हंसता ही रहा। यह विलंबित नहीं ‘द्रुत विलम्बित’ पुरस्कार है। विलम्बित तो वह पुरस्कार होता है जो मरणासन्न आस्था [अवस्था] में या मरणोपरान्त मिलता है। अभी तो मैं जीवित हूं। इसी से यह पुरस्कार द्रुत ही हुआ।

एक सुखद अनुभव था।

समय से २ मिनट पहले हाल में पहुंचा। बैठा। अगली पंक्ति में। फिर ऊपर डायस पर सब बैठे। मैं भी वहीं बैठा। जरा ठाट [ठाठ] में आया। मन की लगाम खींची। कचहरी में बैठने का अनुभव करते रहे। पहला नम्बर मेरा ही हुआ प्राप्तकर्ताओं में। सरदार स्वर्ण सिंह ने प्रदान किया। एक चैक+एक मेडल+एक प्रमाण पत्र। रूस की यात्रा की वचनबद्धता से बांधा गया। फिर फोटो खिंचती रहीं। बाद को सभी ने बधाइयां दीं। सुमन भी थे। उन्होंने कहा कि रामविलास भी आने वाले थे। मैंने कहा : वह नहीं आये। तो बोले : जहां केदार वहां रामविलास अवश्य हैं। मैं हंस पड़ा। माचवे भी थे। उन्होंने भी भेंटा। भरतभूषण भी मिले। यानी कि शमशेर यार भी वहां आये थे। खूब कस कर मिले-(यानी गले से)। नागार्जुन थे ही। हम सब कुछ देखते-सुनते रहे।

दिमाग हमारा हमारे अन्दर हमें समझता बूझता रहा। चेक जेब में पड़ी रही [पड़ा रहा]। पत्नी जी भी थीं। वह समारोह का सुख बटोरती रहीं। हम उन्हें नयी आंखों से टटोलते रहे। बेटी-दामाद दोनों थे। प्रसन्न होने की बात थी। यज्ञ पूरा हुआ और हम घर लौटे।

118 / मित्र संवाद

आज अमृतलाल नागर का पत्र आया। तुमसे बड़ी बधाई भेजी है। उन्हें भी जवाब दे रहा हूँ। तुमने मौन तोड़ा। यह अधिक प्रसन्नता की बात है। पत्र देता हूँ जवाब ही नहीं आता। डाकघर में चोर लगते हैं।

आशा है कि स्वस्थ और प्रसन्न होओगे। हम लोग ढल रहे हैं—गोलियों की तरह नहीं मजबूर सूरज की तरह जिसे रोज शाम को ढलना पड़ता है। दूसरे दिन फिर नई आस ले कर जीने लगते हैं। यही क्रम है।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

२७-११-७३

प्रिय केदार,

तुम्हारा १९/११ का पत्र मिला।

इससे पहले तुम्हारा ५-३-७३ का पोस्टकार्ड मिला था। जिसमें निराला वाली किताब के दूसरे खंड के बारे में तुमने लिखा था, 'फिर धैर्य से पढ़ंगा तब विस्तार से लिखूंगा।' इसके बाद तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। तुमने लिखा है कि 'पत्र देता हूँ जवाब ही नहीं आता। डाकघर में चोर लगते हैं।' कोई ताज्जुब नहीं; तुम खत ही इतने खूबसूरत लिखते हो। लेकिन अनमिले खत का जवाब न लिखने के लिए हमें सजा न मिलनी चाहिए।

पुरस्कार तुम्हें विलम्बित ही मिला, बांदा सम्मेलन से बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। मैं तगड़ी बधाई देता हूँ रचना पर—पुरस्कार पर नहीं, खास कर जब वह बहुत घटिया लोगों को मिल चुका हो। पर कमल का फूल=Fool नहीं; उसकी आठ पंखुड़ियों के नीचे तीन शून्य, आठ हजार हुए। मेरे वहां आने का सवाल ही क्या जब मेरे पास न निमंत्रण पहुँचा न और कोई सूचना। लेकिन बांदा के लिए शायद कोई दूसरी लाइन चालू हो गई है। जिससे आगरा बहुत दूर पड़ता है!

ढलते सूरज की खूबसूरती गजब की होती है। खास कर इन दिनों। जियो, ऐसे ही जियो, बहुत दिन जियो, खूब लिखो, हर सबेरे नई आग ले कर—जैसा कि तुमने लिखा है—जियो।

हम आज कल निराला जी वाली किताब के तीसरे खण्ड में हैं।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

१४-१२-७३

४ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

२७/११ के पत्र का उत्तर लो।

निराला वाली किताब को पढ़ने का शुभ अवसर दिन-पर दिन टलता जा रहा है। मन रमेगा तभी सम्भव होगा। पढ़ूंगा और लिखूंगा। भेजूंगा।

भला तुम्हें सजा कौन दे सकता है। फिर हम तो और भी नाकाबिल हैं इस काम के लिए। हमने तो तुम्हारी कलम हमेशा चूमी है—आज भी चूमते हैं। हमारी जान तो तुम अपनी मुट्ठी में ले चुके हो। अब सजा वजा कैसी। मैं तो बधाइयां ही देता रहूंगा। तुमने साहित्य में एक समझ पैदा की है। लोग कहें चाहें जो [, ] लोहा तो मानते ही हैं। नये लोग तो यहां निराला को नहीं 'मुक्तबोध' [मुक्तिबोध] को ले कर उछले-कूदे और निराला को पीछे ढकेलते रहे। पर बात जमी नहीं। फीके पड़ गये। अभी एक उम्र चाहिए अपने महाकवि के करतब समझने के लिए। यों ही नहीं पल्ले पड़ सकते। उनका काव्य पढ़ना कोई चाट के पत्ते चाटना नहीं है। राजनीति आज चाहे जो हो वह भी निराला के काव्य को झुठला नहीं सकती। बंधे मनोयोग और तने सीने की साधना का ही फल हैं उनकी कविताएं। कविता कोई फैशन की नयी आयी साड़ी नहीं है कि जो चाहे देख कर आंखें मुलमुलाने लगे। निराला ने जितना जो कुछ लिखा है वह हिन्दी खड़ी बोली को चिरकाल तक जिलाये रहेगा और काव्य को सही दृष्टि और दिशा देता रहेगा। भला बेचारे नये लड़के कभी भी उन्हें नये माहौल में पकड़ कर धैर्य से ग्रहण कर सकते हैं। [?] न-न-कभी नहीं।

मैं आगरा आता परन्तु श्रीमती भी साथ थीं और एक सज्जन और भी थे। फिर यहां पहुंच कर काम में जुटना था। रुकता तो २ दिन देने पड़ते। एक दिन में मन न भरता। यही बात थी जो दिल्ली से लौटते में न पहुंचा।

अब किताब कहां तक पहुंची। यज्ञ कब तक पूरा होगा। जल्दी खत्म करो। तब हम भी मिलने आयेंगे। वैसे तुम्हें इस बीच अवकाश ही कहां होगा।

मालकिन को नमस्कार।

तुम्हें भी एक चुल्लू अमरित।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

परसाल प्रगतिशील लेखकों के सम्मेलन की बड़ी चर्चा थी, इस साल इलाहाबाद के लेखक-सम्मेलन की चर्चा सुनाई दे रही है। लगता है कि कुछ संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी से और कुछ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बद्ध लेखकों ने यह सम्मेलन आयोजित किया था। मार्कण्डेय और भैरव प्रसाद गुप्त थे, रघुवंश सूत्रधार थे। शायद अमृतराय भी शामिल हुए थे। महादेवी वर्मा भी थीं। धर्मवीर भारती, कमलेश्वर और जगदीश गुप्त किसी कारणवश रघुवंश आदि से असन्तुष्ट थे। कल रघुवंश यहां आए थे। उनसे सब बातें मालूम हुईं। एक सम्मेलन बिहार में हुआ उसका हाल खगेन्द्र प्रसाद<sup>1</sup> से सुना था। इन सब आयोजनों में काफी पैसा खर्च हुआ हो गा। न जाने क्यों, किसी मासिक या त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन अभी तक इन आयोजनों के फलस्वरूप सम्भव नहीं हुआ। बाजार में दवाइयों से लेकर धनिया और बेसन तक [में] जैसे मिलावट है, वैसे ही थीसिसों से ले कर रचनात्मक साहित्य तक [में] ऐसी मिलावट है कि क्या कहने हैं। ऐसे में यदि राजनीति में कई तरह की मिलावट हो तो आश्चर्य न होना चाहिए।

इधर भाषा विज्ञान से जी ऊबने पर हम तुलसीदास पढ़ते रहे। राम-लछिमन-भरत-सीता-हनुमान से बहुत अच्छे लगते हैं तुलसीदास। सतह पर काफी सेवार बहता दिखाई देता है, नीचे बहुत जोरदार रूढ़ियों की चट्टानों से टकराती हुई धारा है। [ ' ] लोक को न डर परलोक को न सोच देव सेवा न सहाय गर्व धाम को न धन को [ ' ] इस उक्ति में सभी रूढ़ियों के ऊपर से उनकी कविता धारा बह चली है। जब वह Ecstasy में होते हैं तब उनके मन के साथ उनका शरीर, शरीर का रोम रोम भाव में डूब जाता है : [ ' ] सजल नयन गदगद गिरा गहबर मन पुलक शरीर [ ' ]। एक पंक्ति में Ecstasy का ऐसा चित्रण दूसरी जगह नहीं देखा।

रामचरित मानस में वह 'सन' का प्रयोग बहुत करते हैं, कवितावली और विनयपत्रिका में कम। अवश्य ही वह इसे अवधी का रूप मानते हैं। ग्रियर्सन ने बांदा की बोली के एक नमूने में 'तन' का प्रयोग दिखलाया है—'तरफ' के अर्थ में नहीं 'से' के अर्थ में—'उन अपने बाप तन कहिन'। एक मिसाल फर्रुखाबाद की बोली की दी है—'लड़िका ने बाप सन कही'। यहां फर्रुखाबाद के लोग कहते हैं कि उनके यहां 'सन' नहीं बोला जाता। तुम्हारी तरफ 'तन' या 'सन' का प्रयोग होता है या नहीं? धीरेन्द्र वर्मा की प्राचीन हिन्दी में बधेली का जो उदाहरण ग्रियर्सन के आधार पर दिया गया है उसमें 'हो ही' (हो ई, हो गा), 'मान ही' (मानी, माने गा) 'बोल ही' (बोल हैं), 'कह-ही' (कहि हैं), 'बचाही' (बचइहैं), मैं 'जाहूँ' (जाउँ, जाऊँ), मैं 'चलहूँ' (चलि हौँ),

1. डॉ० खगेन्द्र ठाकुर। कवि-आलोचक। [अ० त्रि०]

जैसे रूप हैं। रामायण में ऐसे रूप काफी हैं। क्या तुमने ऐसे रूपों का व्यवहार उधर कहीं होते हुए सुना है?

निराला वाली किताब का तीसरा खंड समाप्ति पर है। अब अपने हाल लिखो।

तु०-रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)

दिनांक १३-२-७४

शाम ५-१/२ [साढ़े पांच] बजे

प्रिय डाक्टर,

दिनांक ६/२ के पत्र का उत्तर अब दे रहा हूँ। देरी इसलिए हुई कि बेटा और उसकी बीवी अपने बच्चे प्रशांत को लेकर मद्रास से आ गये थे। परसों वापस गये। मैं उन्हीं में व्यस्त रहा।

बांदा सम्मेलन ने शुरुआत की। बरसों के सन्नाटे को तोड़ा। यहां के सम्मेलन के समय हम लोगों ने साहित्यिक पत्रिका की चर्चा की थी। सभी आये हुए साहित्यकारों ने सुझाव अच्छा समझा था। पर अन्तर्धारा यही मालुम हुई थी कि पार्टीबन्दी में फंसे लोग इस ओर एक जुट हो नहीं सकते। मार्क्सवादी अलगाव की स्थिति में ही रह कर लिखना-पढ़ना चाहते थे। छोटी-मोटी पत्रिकाओं के अलमबरदार भी अपनी निजता बरकरार रखने के लिए एक पत्रिका के प्रकाशन के लिए तैयार नहीं दिखे। कोई भी व्यक्ति इस मसले पर कृतित्व की रक्षा के लिए एक सहयोगी पत्रिका निकालने की दिशा में ठीक से सोचने-समझने के लिए तयार नहीं दिखा। सब पर राजनीति सवार थी। साहित्य सभी के लिए गौड़-सा ही रहा। इलाहाबाद में जो सम्मेलन हुआ वह तो बांदा-सम्मेलन की उल्टी प्रतिक्रिया के लिए ही आयोजित किया गया जैसा लगा। वही लोग जो यहां आम जनता से जुड़ने-जूझने की बात कर रहे थे वहां केवल प्रकाशक और लेखकों के आपसी सम्बन्धों को ले कर उबलते रहे। शायद ही हरीशंकर परसाई [हरिशंकर परसाई] के अतिरिक्त किसी ने दो टूक बात कही हो और समाजवादी साहित्य के निर्माण की बात सोची हो। महादेवी वर्मा का ऐलान भी भारतीय संस्कृति के नाम पर अच्छा नहीं रहा। यहां बांदा में भी उन्होंने इसी संस्कृति का अधूरा और एकांगी स्वरूप सबके सामने रखा था। तभी डाक्टर उपाध्याय<sup>1</sup> ने (श्री विश्वम्भर नाथ ने नहीं) उन्हें भद्र तरीके के उत्तर दिया था और भारतीय संस्कृति के उस पक्ष को उजागर किया

---

1. श्री भगवतशरण उपाध्याय

था जिस पक्ष से उसका असली स्वरूप सामने आया था। बिहार में हुआ सम्मेलन डा० खगेन्द्र प्रसाद के प्रयास से आयोजित हुआ था। वहां की पूरी रिपोर्ट देख नहीं सका। पर वह इलाहाबादी सम्मेलन से भिन्न तो था ही।

तुम ठीक कहते हो—पहले भी तुमने यही लिखा था कि बिना पत्रिका के कुछ काम नहीं बन सकता। बात पते की है। परन्तु वह दिन दूर है—बहुत दूर है जब पत्रिका निकल सकेगी। माहौल भयानक है। गुट्टुबाजी सबसे, प्रबल है। कृतित्व की परवाह किसी को नहीं है। नयी प्रतिभाएं भटक रही हैं। कोई साथ नहीं चल सकता। अपने-अपने तौर तरीके हैं। बेहद कूड़ा-करकट ऊपर फेंका जा रहा है। इस पर भी चुप बैठे रहना कोई महत्व नहीं रखता। छुटपुट ही सही [, ] सही काम होते ही रहना चाहिए। दिखावट के युग में मिलावट खा कर ही जीना पड़ता है। पर मिलावट है इसी अवगतता को अपनाये-अपनाये लिखते रहना पड़ेगा। कोई दूसरा उपाय नहीं है। पार्टियां पत्रिका नहीं निकालेंगी। यह भी निश्चय ही लगता है। उन्हें राजनीति लड़ाने से अवकाश नहीं है। उनका ध्यान ही इधर नहीं जाता चाहे जितना कहो सुनो। वैसे संसद सदस्य श्री झारखंडे राय से बातें हुई थीं कि क्या साहित्य और संस्कृति को जनसंघ के लिए छोड़ा जा रहा है। वह कहते तो थे कि अपनी पार्टी में पत्रिका का सुझाव वह रखेंगे। व्यास जी! से दिल्ली में बात हुई थी। वह कहते थे अभी तो सम्भव नहीं है। हालत ठीक नहीं है। शायद 'जनयुग' का Supplement ही Literary—निकालना सम्भव हो। देखो क्या होता है।

अब चुनाव की सरगर्मी है। समाजवादी साहित्य के निर्माण की दिशा इस चुनाव से क्या होगी यह अभी कह सकना कठिन है। बड़े विषम दिन हैं। लगता है कि जैसे साहित्य का मंच उखाड़ फेंका जा रहा है और छिछला और छिछोरा पत्र ही कृतित्व कहला सकेगा। आत्मपरकता का वस्तुवत्ता से कोई गहरा सम्बन्ध नहीं रह गया। समाजवादी दृष्टिकोण धुंधला रहा है कृतित्व में। न कोई समय देता है—न धैर्य से काम करता है। फुलझड़ियां छुटाई जा रही हैं। वही जो गरम बनते हैं कुछ दिनों बाद व्यवस्था से जुड़ कर समाप्त हो जाते हैं। शायद सब जगह ऐसा होता रहा है, अन्य देशों में भी। इस पर भी अच्छा लिखा जायेगा चाहे कम ही क्यों न हो।

समय तो उपयुक्त है कि धारदार कृतियां लपलपायें और ज्योति बिखेरें। पर कृतियां बनिया की पुड़िया हो गयी हैं। जिनमें नकली हल्दी और गरम मसाला मिला करता है। तमाम कारण हैं जो इस सबके लिए जिम्मेदार हैं।

तुम तो खूब जम कर लिख रहे हो। मुझे बेहद खुशी इसी बात की है। और भटक जायें—तुम नहीं भटके, यह बड़ी बात है। दाद देता हूं। निराला की तीसरी पुस्तक भी तयार कर डाली तुमने। बधाई।

1. श्री एच० के० व्यास, जनयुग—संपादक, पी० पी० एच० से सम्बद्ध।



तुलसीदास अच्छे तो हैं ही। राम-लछिमन-भरत-सीता-हनुमान तो उन्हीं के बनाये हैं। अब इस युग में तुलसी का सेवार ही सब तरफ उतराया फिर रहा है। भारतीय संस्कृति के नाम पर वही-वही तो श्रेष्ठ माना जाता है। बेचारे सतह से नीचे धंसे तुलसी का असली मर्म तो कोई समझता ही नहीं। न उसे कोई ऊपर लाता है। तुमने वह रूप देखा है इसलिए तुम कहते हो कि सभी रूढ़ियों के ऊपर से उनकी कविता-धारा बह चली है। उनकी Ecstasy को देखती नहीं है दुनिया। तभी तो मैं कहा करता हूँ कि रामायण [को] ताबीज बना कर लोगों ने गले में पहन ली [लिया] है और बस कल्याण हो गया सब तरह का। मुझे इसी रूप से तो नफरत है। पर लोग हैं कि इस बात को सहन नहीं कर सकते। तुलसी का असली रूप लोग समझें-जनता उसे पहचाने तब वह किसी काम के हो सकते हैं वरना वह भी परम पूज्य बना कर प्रातःस्मरणीय मात्र घोषित कर दिये जायेंगे। जनता अनपढ़ है। उसे पढ़ाना पड़ेगा। रामलीला ने मूढ़ जनता को रूढ़ियों में ही जीने का बल दिया पर रूढ़ियों के तोड़ने का बल तो नहीं दिया। वास्तव में वह (तुलसी) भक्त मात्र मान लिए गये हैं-क्रांतिदर्शी नहीं। यह विडम्बना है कि हम लोग उन्हें उबार नहीं रहे। उनके राम-लछिमन आदि तो स्थापित हो गये परन्तु तुलसी विस्थापित हो गये। यह सच है, झूठ नहीं। अभी पिछले दिनों चित्रकूट में तुलसी-मेला आयोजित हुआ था। वह भी वही रूढ़ियों का मेला था।

हमारे बांदा के जनपद में 'तन'<sup>1</sup> का प्रयोग नहीं होता। कभी किसी समय मैंने सुना था कि 'हम सन' न बोलौ। पर फिर नहीं सुन सका वही प्रयोग।

'होई' के लिए यहां 'है-है' भी प्रयुक्त होता है। यह प्रयोग 'होगा' के अर्थ में भी होता है। 'मानिहै कस न?'....अर्थ है कैसे न मानेगा। 'बोलही' नहीं बल्कि 'बोलहिन' का प्रयोग होता है और अर्थ होता है 'बोलना ही' (पड़ेगा) 'जाहूँ' नहीं....'जांव' प्रयुक्त होता है। 'चलहूँ' नहीं बल्कि 'चलि हौ'। हो सकता है कि पहले कभी वैसे शब्द प्रयुक्त होते रहे हों। पर अवधी और बधेली के सम्पर्क सूत्र बढ़ते-बढ़ते और खड़ी बोली के शहरीपन ने उन पुराने शब्दों को बदल दिया हो। कह नहीं सकता। मेरा कोई मत नहीं है। मैं भाषाविज्ञ नहीं।

मुझे एक कतल का केस मिला है। बड़ा खराब है। उसी के तथ्यों से जूझ रहा हूँ। अकल गुम है। करूँ तो क्या करूँ। कम उम्र का लड़का है। जरा-सी बात पर कहा जाता है कि उसने चाकू मार दिया और दूसरा लड़का मर गया। मुझे तो कोई रास्ता नहीं दिखता।

और मालकिन की तबियत कैसी है? तुमने कुछ लिखा ही नहीं। हमारा नमस्कार देना। और बेटी-बहुओं का क्या हाल है? वे सब कहां हैं? कैसे हैं? जरूर लिखना। बेटियां तो अब सभी ब्याह गई होंगी? पढ़ लिख भी चुकी होंगी? उन सब को मेरी याद करा देना।

1. सम्भवतः 'सन'। [अ० त्रि०]

124 / मित्र संवाद

इधर तीन-चार दिन बेहद ठंड पड़ी थी। आज ज़रा कम है। आगरा तो और भी खराब रहा होगा।

इधर २०/२५ दिन कचहरी नहीं गया था। Fissure हो गया था। अब चल लेता हूँ। दवा करते-करते ठीक हो गया। अजीब मर्ज है। बड़ा वाहियात है।

नागार्जुन दिल्ली हैं।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

Telegram : Hindipith

Thelephone : 73952

K. M. INSTITUTE OF HINDI STUDIES & LINGUISTICS  
AGRA UNIVERSITY, AGRA

No.....

Dated [ मार्च १९७४ ]

प्रिय केदार,

शाम का वक्त, झुटपुटा, आड़ी निगाह के सामने सीमेंट से पुती कोठी, सीमेंट के रंग का आसमान, सड़क पर ट्रक का शोर, एक कोठी में फाटक से लगी खड़ी अधेड़ स्त्री जिसके लड़कियां होती हैं, लड़के नहीं, घर के सामने गुलमोहर का मजबूत तना जिसकी मोटी डालें होली में लड़के काट ले गये, उन कटी डालों से फूटी हुई नई पत्तियां, मच्छर जो लिखने नहीं देते, जुही के पेड़ या झाड़ में फूल-कलियां, सबेरे बच्चों-बूढ़ों की टोलियां जिसके फूल नोचती हैं, भुवन का तमिल भाषी दोस्त जिससे हम एक शब्द तमिल का बोले और वह प्रसन्न हुआ, मेरी पत्नी का स्वास्थ्य-लछिमन झूला, डगमग डगमग, वह भी, हम भी, परसों सबेरे बक्सा खोल कर कुछ निकाल रही थीं, ढक्कन सर पर गिरा, बहुत परेशान, वह भी हम भी., [ । ] भाषा विज्ञान जो खत्म नहीं होता पर अब खत्म हो गा ही क्योंकि ३० जून को हम अध्यापकी से छुट्टी पायेंगे और फिर पुस्तकालय से किताबें लेने कौन जाता है, और ये चालीस पूरे हुए मेरे हिन्दी लिखने के, पहला लेख सन् ३४ में छपा था।

सबेरे घूमने जाते हैं। कभी-कभी थकान महसूस होती है। आराम करते हैं, ताजे हुए, फिर पढ़ते हैं। कभी-कभी अध्यापकों वाली दुनिया के आदमी अच्छे नहीं लगते, गांव के अपढ़ गाँवार याद आते हैं, इनसे अच्छे लगते हैं। कल प्रेमचंद के कुछ पत्र प्रसाद के नाम देखे। श्री रत्नशंकर ने हमारी एक रूसी छात्रा को नकल कर के भेजे थे। सन् ३० में प्रेमचन्द ने प्रसाद के अतीत गौरव गान की कड़ी आलोचना की थी पर कंकाल को बड़ा गर्म आंसू कहा था। चपरकनातियों की दुनिया में प्रेमचंद खो गये हैं-पाठकों में जिन्दा हैं, मुर्दा लेखकों की महफिल में लापता हैं। सन् ३०-सन् ७४, वे पत्र पढ़ कर

लगा कि प्रेमचंद को रंगभूमि में तन कर ललकारते हुए सामने देख रहा हूँ। अच्छे लड़े, आखिरी दम तक लड़े—और खूब चौपट किया देश को दगाबाज़ सियासतनबीसों ने।

क्या हाल है तुम्हारी बीमारी का? क्या क्या पढ़ा इधर? फुर्सत के वक्त क्या सोचते हो? कविता लिखने के लिए ऋतु अभी अनुकूल बनी हुई है या बदल गई? तुलसीदास पर भाषण कराने वालों ने तो परेशान नहीं किया?

तुमने इधर आने को लिखा था? कब आओगे? ९ मई को स्वाति (मेरी लड़की) का ब्याह है। मुंशी भी रहेंगे आओ न तब?

केन में अब कितना पानी है? इस साल यहां पानी बिलकुल नहीं बरसा। सरकारी नीति बदली पर मँहगाई ज़ोरों पर है। दुनिया को बदलने के लिए कलम काफी नहीं है। क्या करें? बुढ़ापा आया नहीं तो आ रहा है। लिखने के अलावा और कुछ करने के काबिल रहे नहीं। ख़ैर, दुनिया बदलने वाले और भी हैं और अबेर-सबेर जागेंगे, ज़ोर लगायेंगे ही। बस।

तुम्हारा—रामविलास

बांदा

८-४-७४

६ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

धुंध छाई है। पीली रोशनी फैली है। सूरज महाराज मुंह छिपाये हैं। क्यारी में गुलाब के पौधे तपे-तपाये खड़े हैं। फूल भी हैं। मगर मन मारे जैसे। पिता जी आये हैं। हाथ का प्लास्टर डाक्टर भार्गव से कटवा आये हैं। दफ्तर के कमरे में लेटे हैं। शरीर क्षीण है। पर पहले जैसे ही हैं। आज २<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [ढाई] बजे चावल-दाल खाने आया—कचहरी से। सबेरे डौल नहीं लगा करता। बीबी [बीवी] जान का हाथ दाहिना कांपता है। रोटी बनाने में दिक्कत होती है। कुकर में पकता है। भाई की पत्नी+उनकी बहू उन्हीं की बीमारी में लगी रहती है। इससे वह लोग खाना नहीं बना पातीं और अब अलग ही खाना पका करता है। मैं भी पत्नी को बरतन धुलाने में मदद कर ही देता हूँ। समय काफी रहता है। सहयोग से काम चल रहा है। इस उम्र में मजूरी करना [करनी] पड़ रही है। कचहरी अच्छी नहीं लगती। जाता हूँ। कम केस लेता हूँ। पिर जाता हूँ। आजकल एक कतल केस करना पड़ा है। १०/४ को बहस करना है। यह भी अजीब पेशा है। पैंतरेबाजों के लिए यह ठौर ठीक है।

इधर परेशान-ही-परेशान रहा। इससे कविता रानी को भूला रहा। लिख नहीं सका। पढ़ने के लिए सब कुछ पढ़ लिया। अब किताबें नहीं, अपने मन को पढ़ता हूँ।

चाहे जितना परेशान हो, जरा-सी कुछ राहत मिली कि औला-मौला हो जाता है। बड़ा बेहया है। मस्ती मारते रहना यह न भूला-न भूला। वैसे दोस्त अपनी जिन्दगी कसाई के घर की गिरफ्त में हमेशा रही है। हमीं ने उसे गोरैया की तरह फुदकाया है हमेशा। हमेशा यही रहा है कि कोई टांग पकड़ कर खींचे ही रहता है। यह व्यवस्था ही दईमारी ऐसी है कि बड़े से बड़े वीर-बहादुर को लिद्दी घोड़ी बना देती है।

मैं शादी में शामिल न हो सकूंगा। मुझे ११/५ को दिल्ली से सोवियत भूमि जाना है। वहां पहले से पहुंचना है कि सब कुछ प्रबन्ध कर लूं। (मैं-) हम दोनों-हृदय से शुभकामना भेजते हैं। दोनों हम लोगों की तरह जिन्दगी न बितायें बल्कि धूप की तरह निखारें और फूलों की तरह खिलायें और उसे हथियार की तरह काम पड़ने पर चलायें।

प्रेमचन्द को पाना कोई खेल है कि आज के कथाकार उनके सिर का बाल छू लें। सब के सब पेशा करते हैं-जीवन नहीं पकड़ते हल की मुठिया की तरह। खैर।

अच्छे और लम्बे पत्र के लिए बधाई। तब तक दो एक पत्र और देना कि अपना दर्द तो मारते रहें। मालकिन के चोट आई। हमें भी दर्द हुआ। उन्हें हमारी पँलगी देना। सबको यथायोग्य।

[केदारनाथ अग्रवाल]<sup>1</sup>

R. B. Sharma

M. A., Ph. D. (Luck)

Head of the Department of English

R. B. S. College

AGRA

Dated ३०-४-७४

प्रिय केदार,

आज कल तुम रूस जाने की तैयारी में लगे होंगे। हम ब्याह की तैयारियों में लगे हैं। यानी इंतजार में लगे हैं कि ९ मई आये और हमें छुट्टी मिले।

भारत में चार भाषा परिवार हैं, आर्य (संस्कृत आदि), द्रविड़ (तमिल आदि), मुंडा (संथाली आदि) और नाग (अंगामी, सेमा आदि) इनके बोलने वाले हज़ारों साल से साथ रहते हुए एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। किन्तु उन्हें यह नहीं मालूम कि रोज़ जो भाषा बोलते हैं, उसमें कितने तत्व पड़ोसी भाषा-परिवार के हैं। अच्छे पड़ोसियों की तरह रहने के लिए यह जानकारी बहुत ज़रूरी है। श्रमिक जनता को अपना जीवन सुधारने के लिए जो लोग संगठित करना चाहते हैं, उन्हें इस बात की

1. इस पत्र के अन्त में केदारजी ने अपना हस्ताक्षर नहीं किया है। [अ० त्रि०]

जानकारी होनी चाहिए। जिन्हें इस देश से प्रेम हो, उन्हें विशेष कर इन भाषा परिवारों के परस्पर सम्बन्धों का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

भाषा मनुष्य की अर्जित सम्पत्ति है, उसकी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग, उसके सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण उपकरण। यूरुप का सम्पूर्ण भाषाई रिक्त भारत की इस भाषाई विरासत का मुकाबला नहीं कर सकता। जिन्हें मनुष्य से प्रेम है, जो अपने को मानवतावादी कहते हैं, उन्हें इस विरासत का ज्ञान होना चाहिए।

संसार के इतिहास में एशिया और यूरुप का हिस्सा तीन चौथाई है। इस इतिहास में भारत और मध्यपूर्व का हिस्सा आधे से ज्यादा ही है। बौद्ध धर्म एशिया के विशाल भूखंडों में भारत से फैला; ईसाई धर्म और इस्लाम यूरुप और एशिया में मध्यपूर्व से फैले। यूरुप और एशिया की भाषाओं के विकास में मध्यपूर्व और भारत की भूमिका विश्व इतिहास की अपूर्व घटना है।

भाषा के क्षेत्र में भारत की अन्तरराष्ट्रीय भूमिका को पहचानना, सबसे पहले भारत की भाषाओं के परस्पर सम्बन्धों को पहचानना एक ऐसा काम है जिसके राजनीतिक-सांस्कृतिक महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। मैं तीन साल से इसी काम में लगा हूँ और अभी साल दो साल और लगा रहूँगा। शरीर पहले से दुर्बल है, प्रतिदिन किसी अँधेरे कोने में नया प्रकाश देख कर विह्वल हो जाता हूँ। अयोध्या कांड के भरत की दशा मेरी दशा है।

तुम्हारी यात्रा निरापद, हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए फलप्रद हो।

तु० रामविलास

बांदा

७-६-७४

प्रिय डाक्टर,

मैं उस दिन बस से १२ बजे दिल्ली पहुंच गया था। तुम्हें कष्ट हुआ इसका मुझे खेद है। बहुत-सा समय सुबह का मैंने चट कर लिया था। खैर।

५/६ को ही यहां दोपहर को वापस आ गया। ठीक से पहुंच गया।

दिन और रातें गरमागरम हैं।

आज बादल तो नहीं धुंध है। रेडियो ने कहा है कि धूल भरी आंधी और पानी के छींटों की सम्भावना है।

उस दिन की काव्य-गोष्ठी अच्छी ही रही। आशा है कि मालकिन की तबियत ठीक चल रही है। मेरी पत्नी उन्हें नमस्कार भेजती हैं। आगरे न जाने का उन्हें मलाल रह गया। मैं ही उन्हें वहां न ले गया था।

बच्चों को शुभाशीष।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

११-६-७४

प्रिय केदार,

उस दिन हम यह सोच कर काफी परेशान रहे कि कहीं तुम्हें बस में जगह न मिली हो। तुम सही सलामत पहुंच गये, बड़ी बात है। तुम्हारे साथ बहुत अच्छा समय बीता, कवि को कविता सुनाने का मज़ा ही कुछ और है। बांदा दूर है वरना हम तुम्हें रोज़ वाल्मीकि और मिल्टन सुनाते।

दिन और रातें गर्म हैं मगर लू नहीं चलती और शायद इसलिए बेले के फूलों में अब वह महक नहीं है। उस दिन की काव्य गोष्ठी को लोग बराबर याद करते हैं। मालकिन स्वाति बिटिया के ससुराल जाने से उदास हैं पर बहू के बहाने कहती हैं : जब देखो, टपटप आंसू गिराने लगती है। खैर, यह संसार है।

तु०

रामविलास

बांदा

१-७-७४

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला था। निराला जी के पत्र और फोटो नहीं भेज सका। कल मद्रास के लिए रवाना हो रहा हूँ। वहां से जुलाई के अन्त तक आऊंगा। तब भेज पाऊंगा। मद्रास का पता है—

16 Thirmurthy Street

T Nagar

Madras 17

—मैं पहले कष्ट से खड़ा रहा फिर बैठने की जगह मिली। तब जाकर दिल्ली सकुशल पहुंचा।

कल ३०/६ को कानपुर में शर्मा होटल में प्रगतिशील लेखक सम्मेलन की बैठक थी। सम्पर्क समिति की। श्री राजेन्द्र रघुवंशी और डा० चौहान आगरे से आये थे। आगरे में सम्मेलन होगा। विधान पारित हो गया है। १० लोग उपस्थित थे। कर्णसिंह ने अपने अनुचित लेख लिखने के लिए खेद प्रकट किया तब निष्काषित न किए गए। कुछ प्रस्ताव पास हुए।

मालकिन की तबियत अब कुछ ठीक होगी। उन्हें नमस्कार हम दोनों का।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

९-७-७४<sup>1</sup>

प्रिय केदार,

मद्रास में समुद्र तट की ठंडी हवा खा रहे हो गे, हम यहां सड़ी गर्मी में अधमरे हो रहे हैं। महाबलिपुरम् का चक्कर जरूर लगाना और नीले समुद्र को हमारी तरफ से 'वणक्कम्'<sup>2</sup> बोलना। हां, पत्नी अब पहले से कुछ ठीक हैं। हम आज अपने अध्यापक जीवन से अवकाश प्राप्त कर रहे हैं।

निराला जी के पत्र न भेज सके, कोई बात नहीं, लौटने पर भेज देना।

शेष कुशल।

तुम्हारा  
रामविलास शर्मा

16 Thirmurthy Street  
T Nagar  
Madras 17  
[17-7-74]

प्रिय डाक्टर,

अध्यापन-कार्य से मुक्त होने की बधाई। वैसे जनाब को चैन कहां होगी, लिखने पढ़ने से। वैसे भविष्य में जीवन-यापन की समस्या तो उठ खड़ी होगी। आशा है कि कुछ-न-कुछ करते रह कर गुजर-बसर करना [करनी] ही पड़ेगा [पड़ेगी]।

अभी महाबलीपुरम् नहीं गया। जाऊंगा। मौसम अच्छा है। आगरा गरमागरम है। अधमरे हो गये हो। कोई उपचार नहीं है। अब तो पानी बरस ही गया होगा। ठंडक आ ही गई होगी। सागर महाराज को हम आपका बड़क्कम [वणक्कम] जरूर देंगे और उनसे कहेंगे कि वह आपके नाम की लहरें लहरायें और आपकी तरफ से रत्न दान में दें उपयुक्त पात्र को।

सुपुत्र के दूसरा पुत्र पैदा हुआ है २/७ को। मैं तो यहां ४/७ को पहुंचा हूं। सब ठीक है।

मालकिन की तबियत ठीक है। यह सुखद समाचार है। उन्हें हमारी नमस्ते दें।

इधर लिख तो नहीं सका, कुछ नया। पढ़ा जरूर है। पर रचना करना कठिन है।

सस्नेह तुं  
केदार<sup>3</sup>

1. इस पोस्टकार्ड पर पतेवाली जगह में केदारजी का नाम तमिल में है। [अ० त्रि०]
2. नमस्कार [अ० त्रि०]
3. यह पहला पत्र है जिस पर केदारजी ने तिथि नहीं लिखी। यह तिथि डाक की मुहर के आधार पर दी गई है। [अ० त्रि०]

आगरा-२

२६-८-७४

प्रिय केदार,

दक्षिण भारत से उत्तर भारत में आये या नहीं?

अनेक द्रविड़ भाषाओं में केत या केद जोती बोई जाने वाली ज़मीन यानी खेत को कहते हैं। उसका बहुवचन रूप है केदार। मराठी शेत-संस्कृत क्षेत्र-हिन्दी खेत और द्रविड़ केत/केद/केदार एक ही गोत्र के शब्द हैं। धरती की गंध से भरी तुम्हारी कविता केदार-तुम्हारा यह नाम ख़ूब सार्थक करती है।

अगले महीने लखनऊ में हिन्दी समिति की बैठक हो गी। मेरा जाने का विचार हो रहा है। तुम भी आ जाओ तो दो एक दिन साथ-साथ बितायें।

यहां सब पूर्ववत् है।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

२८-८-७४

प्रिय डाक्टर,

२६/८ का [पत्र] मिला।

मेरे [अपने] नाम का अर्थ जान कर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि भाषाविद् हो। खोज करते ही रहते हो। पर खुशी हुई कि तुम्हें मेरी कविताओं की याद हो आई और उसमें तुमने धरती के [की] गंध का हवाला देकर मुझे भी खुश कर दिया। सच कहूं डाक्टर कितना कलकता! हूं कि मैं बहुत अच्छी रचनाएं क्यों नहीं दे पाता। शायद मेरे दिमाग की कमजोरी है कि मैं चीजों को पकड़ नहीं पाता और शायद भाषा की कमी है कि बहुत कह नहीं पाता। जो भी हो है।

मैं भी लखनऊ पहुंचूंगा। कोशिश तो करूंगा कि पहले ही पहुंचूं। पर हो सकता है कि रात १२ बजे पहुंचूं। दूसरे दिन तो रहूंगा ही। भेंट होगी बातें होंगी। नागर जी के दुर्लभ दर्शन मिलेंगे। और भी लोगों के मुंह देखने को मिलेंगे। पुराने दिन याद आयेंगे।

अवश्य आओ।

मैं मद्रास से १९/८ को यहां आया हूं।

सस्नेह तु० केदार

1. 'कलक' से क्रियापद बनाया, 'कलकता 'हूँ', 'कलपता हूँ' के वजन पर।



प्रिय केदार,

तुम्हारी चिट्ठियों में पहली बार २८/८ वाले कार्ड में यह पढ़ने को मिला :

‘सच कहूँ डाक्टर कितना कलकता हूँ कि मैं बहुत अच्छी रचनाएँ क्यों नहीं दे पाता। शायद मेरे दिमाग की कमजोरी है कि मैं चीजों को पकड़ नहीं पाता और शायद भाषा की कमी है कि बहुत कह नहीं पाता। जो भी हो है।’

बधाई। मैं समझता हूँ, तुम अब और भी अच्छी-यानी पहले की रचनाओं से बढ़ कर-कविताएँ लिखो गे। तुमने एक बार और दक्षिण से लौट कर बड़ा सुन्दर पत्र लिखा था। बाँदा से बाहर निकलना शायद लाभप्रद होता है।

तुम सहज कवि हो जैसा हमारे अपने समय में और कोई नहीं है। दिमाग की कमजोरी मैं नहीं मानता, न भाषा की कमी मुझे लगती है। मन के [की] कितने [कितनी] पत [पतें] कब, कहां तक खुलेंगे [खुलेंगी] आगे क्या दिखाई देगा, कोई कवि नहीं कह सकता। बगले की तरह ध्यान लगाये रहे, मछली निकली और उसने चोंच में दाब ली-इसके सिवा और करे क्या बेचारा? सत्संग से पत खुलने में मदद मिलती है लेकिन जीवन की परिस्थितियाँ-हरेक अपने लिए खुद अपना भाव-परिवेश बनाने पर मजबूर है (भाव-समग्र काव्य-चेतना के अर्थ में)।

कबीर के मन के कितने पत खुले थे [की कितनी पतें खुली थीं] और इसका प्रभाव उनकी कविता पर क्या पड़ा, इस दोहे में देखो :

पिंजर प्रेम प्रकासिया, अन्तर भया उजास।

मुख कस्तूरी महमही, बानी फूटी बास।

और किसी कवि की बात याद नहीं आती जिसने अपनी बानी के सुगन्धित होने की बात लिखी हो। कबीर ने यह सब मन की असामान्य सहज स्थिति में लिखा था। दिमाग को कुरेदने से ये हीरे जवाहरात कहां निकलते हैं। और राम रूप पर विह्वल होने वाले तुलसीदास ने दुख की थाह न पा कर जैसे एक दिन कहा था-कियो न कछू करिबो न कछू कहिबो न कछू मरिबोई रह्यो है-उसी तरह सुन्न महल में बैठ कर अनहद नाद सुनने वाले कबीर ने एक बार कहा-

जद का माई जनमिया, कदे न पाया सुख।

डारी डारी मैं फिरा, पातैं पातैं दुख।

दुख के इस बोल पर हम रहस्यवादियों का सारा आनन्द और प्रकाश निछावर करते हैं।

भाई, रात बारह बजे नहीं, १४ को सबेरे के० पी० डे० लेन वाले घर में मिलो। पहले दिन ही तो हम अपने दोस्त की तख्तनशीनी देखना चाहते हैं। याद रहे, और मिलें, तो निराला जी के शेष पत्र लेते आना।

तु०  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

२६-१०-७४

प्रिय डाक्टर,

नागर जी<sup>1</sup> का पत्र आया था। वह न आये। उनका कंठ उनका पथ प्रशस्त न कर सका। तुमने पत्र भी न दिया। आये भी नहीं। मैं तो स्टेशन गया-ट्रेन देखी। फिर अकेला घर लौट आया। लेकिन मैं गया उसी दिन कार से। वहां दो दिन रहा। मौसम बेहद बढ़िया था। गरमी न थी। हल्का जाड़ा हरियाली को उत्फुल्ल किये थे [था]। धूप जो थी। पयस्वनी अनुसुइया जी में आदिम यौवन के उन्मुक्त आवेग से निष्कपट निनाद कर रही थी। देखता रहा-देखता रहा और तुम दोनों की याद करता रहा। काश तुम लोग भी होते तो शायद हम लोग उसे कंधों में उठा लेते और उसके आह्लाद के आवर्तों में गोते लगाते रहते।

जानकी कुंड में ठहरा था। प्रबन्ध बढ़िया था। कोई दिक्कत न हुई। वहां से जीप मिल गई थी। गुप्त गोदावरी भी गया उसी में। स्थान रमणीक है। पहाड़ों से घिरा चारों ओर का दृश्य मन मोहे था। पहाड़ियां हरे परिधान में खड़ीं, धूप से गौरांग हुईं, सीधे आसमान से बातें करती थीं और सूरज को सिर पर चढ़ाये खूबसूरत हो रही थी। इसके पद तल पर बिछे पड़े हरे-भरे खेत किसानों के श्रम और स्वेद की जयगाथा से चमक रहे थे। तुम लोग भी झूम गये होते। धत्तरे की। वादा करके भी मुकर गये। अब शायद वह सुअवसर और वैसा मौसम नसीब भी न हो। होनहार थी कि प्रकृति उदार और स्नेहिल हो गई थी।

साथ दिया श्री जगदीश राजन ने। उनकी पत्नी और बच्चों ने और उनकी सुश्री लता साली ने। उन्हें भी बहुत अच्छा लगा। वे लोग भी तुम लोगों के साथ चौगुने चाव से चकचका जाते और कुछ देखते कभी न भूलते।

और सब ठीक है।

मालकिन जी की तबियत तो ठीक है? आगरे में ही रहे या कहीं अन्यत्र खिसक गये थे?

---

1. श्री अमृतलाल नागर। [अ० त्रि०]

इधर विश्वनाथ त्रिपाठी<sup>1</sup> की पुस्तक 'लोकवादी तुलसीदास' पढ़ी। बड़े मनोयोग से लिखी है यार ने। पढ़ कर मैं भी लट्टू हो गया तुलसी पर। घरू आदमी होकर घरू स्वर में त्रिपाठी ने तुलसी का सहज स्वाभाविक मानवीय स्वरूप उघारा है। आदमी तुलसी कवि भी बड़े प्रिय थे और भक्त भी एकनिष्ठ थे। पर जब धर्म और दर्शन के चक्कर में वह पंडिताई करते थे तो गिर जाते थे। उनका कवि भी बकवादी हो जाता था। ऐसा मुझे अब भी लगता है। इस पुस्तक के पढ़ने के बाद भी।

मैंने सोचा था कि इस पुस्तक से मेरा भ्रम टूटेगा। सिद्ध होगा कि तुलसी यथास्थिति बनाये रखने के समर्थक न थे। वह भ्रम न टूटा। बल्कि इस किताब से और भी साफ हो गया कि तुलसी अवध के राज्य के आदर्शों से भरपूर बंधे थे और कदापि क्रान्तिदर्शी न थे। हां, इस पुस्तक से तुलसी की मानवीय संवेदनशीलता की गहरी अभिव्यक्ति का बोध हुआ। सो ठीक है। तभी तो तुलसी आज तक लोक मानस में प्रतिष्ठित हैं—किसानी संस्कृति के संरक्षक के रूप में। तभी तो शोषक और शासक तुलसी का अभिनन्दन समान रूप से करते हैं। यहीं पर तुलसी की भक्ति उन्हें भवसागर में लंगर लगा कर, आगे बढ़ने से रोक देती है और वह ठहरे हुए रह कर राम का आचरण लिखते रहते हैं।

सस्नेह तु०  
केदार

२७-१०-७४

प्रिय केदार,

नागर जी का पत्र तुम्हें मिल गया होगा। गले के कष्ट के कारण कार्यक्रम रद्द करना पड़ा। आगे देखें, कब बनता है, बनता भी है कि नहीं।

निराला जी के पत्र मिल जायं तो भेज देना।

हम आज कल भारत का प्राचीन भाषा भूगोल कल्पना में देख रहे हैं। अकेले ही प्रसन्न हो लेते हैं। दीपावली शुभ हो।

तुम्हारा  
रामविलास

११-११-७४

माई डियर वकील साहब,

आपका २६/१० का खत पढ़कर आनन्द आ गया। 'पयस्विनी अनुसुइया जी में आदिम यौवन के उन्मुक्त आवेग में निष्कपट निनाद कर रही थी।' ६० पार किये आप

1. आलोचक और कवि। [अ० त्रि०]

को हम से अधिक दिन बीते। इस उम्र में नदियां देख कर-भले ही चित्रकूट में!-आदिम यौवन का उन्मुक्त आवेग याद आना अत्यन्त स्वाभाविक क्रिया है। बांदा की केन तो बूढ़ी हो गई हो गी, है भी आपकी बाल सहचरी!

‘काश तुम लोग भी होते तो शायद हम लोग उसे कन्धों में उठा लेते और उसके आह्लाद के आवर्तों में गोते लगाते रहते।’ दुरुस्त विचार है! इस उम्र में किसी को उठा ले चलना अकेले दुकेले आदमी का काम नहीं। लेकिन आह्लाद के आवर्तों में गोता लगाने का काम आप और नागर जी कर सकते हैं-हम तो ऐसे कामों से कनाराकशी करते हैं यानी तटस्थ हैं यानी किनारे खड़े हुए आपकी स्नान लीला निहारते हैं। लेकिन आपको इतने से तसल्ली कहां? ‘पहाड़ियां हरे परिधान में खड़ी, धूप से गौरांग हुई, सीधे आसमान से बातें करती थीं’ जब कि बातें करना चाहिए थे [था] उन्हें हमारे कवि से। पर उनका भी क्या कसूर? आपको पयस्विनी में गोते लगाते देख कर उन्होंने निगाह फेर ली हो गी ‘और सूरज को सिर पर चढ़ाये खूबसूरत हो रही थीं’-सिर्फ आपको तपाने के लिए, ईर्ष्या के कारण।

XXXXXX

नागर जी का कार्ड विलम्ब से मिला, नहीं और पहले लिखता। तुम्हारे पत्र से मेरे कार्ड की मुलाकात रास्ते में हुई हो गी। उनसे यही तै हुआ था कि लखनऊ जा कर अपनी यात्रा की पुष्टि करेंगे, तब मैं कानपुर चलूंगा।

भूर्जवन में वसन्त की पहली कोपलें फूटी हैं। आकाश में बादलों के फीहे उड़ रहे हैं और आसमान की नीलिमा और गहरी हो गई है। खलिहानों के बीच जहां तहां खेतों की हरियाली है। गलियारी की मिट्टी पानी से घुल गई है। पेड़ों के तले पिछले साल की सूखी पत्तियों के नीचे से कुसुंभी फूल झांक रहे हैं। भूर्ज वृक्षों की हरी पत्तियों में चिकना नया रस भर गया है। वन के अन्त में शाह बलूत का पेड़ है जिसका तना दस भूर्ज वृक्षों के बराबर है और ऊंचाई में वह दो भूर्ज वृक्षों जैसा है। और वह हर भूर्ज वृक्ष से दस गुना बड़ा है। उसकी डालें टूटी और झुलसी हुई हैं और छाल के चिथड़े उड़ गये हैं। उस पर वसन्त का जादू नहीं चलता।

‘युद्ध और शान्ति’ में तोलस्तोय ने आन्द्रेई की यात्रा का वर्णन करते हुए यह सब लिखा है जिसे मैं कई दिन से लगातार पढ़ रहा हूं और जिसे बार-बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती।

विश्वनाथ त्रिपाठी की किताब मैंने नहीं देखी।

सप्रेम

रामविलास शर्मा

बांदा

१९-३-७५

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों बाद निराला जी के पत्र व फोटो इत्यादि भेज पा रहा हूँ। पहुंच देना।

इधर व्यस्त भी था।

तबियत तुम्हारी व घर में कैसी है?

क्या लिखाई-पढ़ाई चल रही है?

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने एक प्रतिनिधि काव्य संकलन मेरा मांगा है। तयार कर रहा हूँ। भूमिका कुछ लिखना [लिखनी] शेष है। 'आधुनिक कवि' सीरीज में छपेगी। २०% Royalty देंगे।

पत्र जरूर देना।

राव साहब<sup>1</sup> तो गये न?

शायद मई में मैं व मेरा बेटा एक बारात में आगरे पहुंचें।

क्या हाल है अमृतलाल नागर जी महाराज के?

अच्छा धोखा दिया चित्रकूट न आ कर मेरे परम मित्र ने।

अच्छा तो सस्नेह

तुं

केदार

५-४-७५

प्रिय केदार,

निराला जी की चिट्ठियों के साथ तुम्हारा पत्र मिला। चित्त प्रसन्न हुआ।

इधर हम करारा झटका खा गये। अब धीरे-धीरे उबर रहे हैं।

मालकिन के हृदय का एक वाल्व खराब है। हाई ब्लड प्रेशर के कारण हृदय पर

---

1. श्री बालकृष्ण राव। [अ० त्रि०]

दबाव रहता है और नाड़ी की गति विषम रहती है। दिसम्बर में डाक्टर ने कहा कि आपरेशन से वाल्व बदल देना ठीक हो गा। कुछ दूसरे विशेषज्ञों ने उम्र और कमजोरी के विचार से आपरेशन की सलाह न दी। आपरेशन तो टल गया। पर महीने भर बाद डायबिटीज़ का पता चला। इसके उपचार के दौरान पता नहीं कैसे इन्फेक्शन हुआ, १७ फरवरी की रात को कई बार उल्टियां हुईं; आधी रात से नीम बेहोशी और हाथ अकड़ने लगे, आंखों की पुतलियां ऊपर को। सबेरे डाक्टर ने कहा—डिहाइड्रेशन हो गया है। नर्सिंग होम ले चलो। वहां चालीस घंटे बाद इन्हें होश आया, न जाने कितने इंजेक्शन दिये गये, न जाने कितनी बोतलें सैलाइन वाटर—ग्लूकोज़ चढ़ाया गया। खर्च का यह हाल था कि पांच सौ रुपये तो केवल बोतल चढ़ाने के दिये, दवाओं की कीमत, डाक्टर की फीस अलग।

खैर, चार दिन बाद इन्हें घर लाये। होली पर इन्हें बुखार आ गया। अब किसी तरह मामला कुछ नार्मल है। शरीर में हड्डियां रह गई हैं पर ब्लडप्रेशर और डायबिटीज़ दोनों कंट्रोल में हैं।

हमारी दिनचर्या सब अस्तव्यस्त थी। आज बहुत दिनों बाद सबेरे घूमने गये थे।

अमृतलाल नागर का पोस्टकार्ड आया है। सम्भव है, इस महीने आगरा आयें।

आज रेडियो से पता चला बांदा में गेहूं सबसे सस्ता है। बधाई।

आशा है तुम सपत्नीक स्वस्थ और प्रसन्न हो गे।

तुम्हारा

रामविलास

बाँदा

१०-४-७५

प्रिय डाक्टर,

पत्र आज मिला। चिन्तित तो था ही कि कोई बात जरूर है कि तुम पत्र नहीं लिख रहे। अब मालुम हुआ कि मालकिन बहुत ज्यादा बीमार थीं। तुम परेशान तो रहे ही होओगे। वैसे सब दुख पी जाते हो। अच्छा है। दवाएं तो बेशकीमती हो गई हैं। आज कल जीना ही हराम हो रहा है, मारे मंहगाई की मार के। डीहाइड्रेशन तो पानी की कमी से होता है। उसने इतना भयंकर रूप ले लिया। जो न हो जाय थोड़ा है। पर मुझे विश्वास है कि मालकिन तुम्हारे लिए अभी बहुत-बहुत साल जियेंगी और तुम्हारा साथ दिये रहेंगी। तुम्हारे लिये जो ममत्व है वह उन्हें भला-चंगा करता रहेगा। हम दोनों स्मरण करते हैं और उनके स्वास्थ्य [स्वास्थ्य] लाभ की कामना करते हैं। उन्हें हम दोनों का नमस्कार।

इधर भूमिका लिखने [में] लगा रहा। टेढ़ा काम है। समाप्त कर आया हूँ। २/४ दिन में भेजूंगा। साहित्य सम्मेलन प्रयाग के पास काव्य-संग्रह और भूमिका। गेहूँ सस्ता है तो रेडियो में। हाट में तो उम्दा मिलेगा उम्दा दाम देने पर ही।

गरमी दो दिन से कम है। पहले तो पारा आसमान में चढ़ गया था।

शायद १३/५ को आगरे आऊँ। शादी में।

नागर जी भी खूब हैं। बहुत दिन से चुप हैं। कल से तो Isscus का उत्सव मनायेंगे लखनऊ में। मैं न जाऊँगा।

वकालत बिगड़ रही है। पेशे से बेपेशा हो रहा हूँ।

देखो ये खर्चे कब तक चलते रहेंगे। इधर खर्च ही खर्च है। नाती की शादी में बहुत कुछ लगेगा।

हम दोनों ठीक हैं।

राव साहब तो बिदा हो गये होंगे?

हम घूमने नहीं जाते। बीबी [बीवी] के काम में हाथ बटाते हैं। उनका हाथ हिलता है। और हमारा दिल उनका हिलता हाथ देख कर हिलता है।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

१७-४-७५

तुम्हारा १०/४ का पत्र मिला।

तुमने अपने कविता-संग्रह की भूमिका लिख डाली और वह साहित्य सम्मेलन के पास है, यह जान कर प्रसन्नता हुई।

आज कल मौसम का यह हाल है कि बाहर सोओ तो हाक छीं, भीतर सोओ तो नींद न आये। बहरहाल, जुही के दिन गये, बेले के दिन आये।

अमृत ने अप्रैल में इधर आने को लिखा था। आधी अप्रैल तो बीत गई, बाकी में और इन्तजार करेंगे। इस्कस की खबरें रेडियो में हम भी सुनते रहे। तुम १३/५ को इधर आओगे शायद-शुभ समाचार है। हो सके तो दस दिन यहां रुक जाना, न रुक सको या १३/५ को न आओ तो फिर आना। १३/५ को सेवा का ब्याह है। सबसे पहले तुम्हें इस पत्र द्वारा [द्वारा] सपरिवार आने के लिए निमंत्रण दे रहे हैं।

138 / मित्र संवाद

तुमने लिखा—वकालत बिगड़ रही है, पेशे से बेपेशा हो रहा हूँ। कोई खास कारण? हाँ, खर्च तो बढ़ते जाते हैं, ब्याह चाहे नाती का हो चाहे बेटी का—खर्च बे हिसाब हैं।

आजकल मैं भी घूमने नहीं जा पाता। सबेरे मालकिन के साथ रसोई घर में नाश्ता बनवाता हूँ। नाती को सबेरे स्कूल जाने की जल्दी होती है।

राव साहब कल मिले थे। दमे से परेशान हैं, दाहने कंधे में दर्द भी होता है। लेकिन अब भी बहुत यात्रा करते हैं।

श्रीमती केदार के हाथ हिलने के बारे में डाक्टर क्या कहते हैं? मेरे यहां तो पुश्तैनी बीमारी है यह : पिता जी, बड़े भाई, छोटे भाई चौबे<sup>1</sup>—सभी के हाथ हिलते हैं। किसी क्रदर अपना हाथ ही अभी तक सधा हुआ है।

सप्रेम—

रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)

दिनांक २-३-७६

प्रिय डाक्टर,

—मैंने तुम्हें पत्र इसलिए नहीं लिखा था कि तुम मार्क्स के ग्रन्थ के अनुवाद में व्यस्त होओगे और पत्र पा कर मेरे बारे में सोचने लगोगे। ध्यान बंट जायेगा। वह काम जरूरी है। पूरा कर लो। मेरी वजह से उसमें बाधा न पड़े।

—कल विश्वनाथ त्रिपाठी का पत्र आया तो कुछ ऐसा लगा कि मुझे पत्र लिखना चाहिए। इसलिए आज ही यह पत्र लिख रहा हूँ।

—अपने हाल क्या लिखूँ। परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि उबरने का कोई रास्ता नहीं है। बुढ़ापा भी है हम दोनों का। चारों ओर वही वातावरण है। हिम्मत किये जीवन जीने का भरपूर प्रयास करता रहता हूँ। अभी हारा नहीं। यही शुभ बात है। और तो वैसे सब-कुछ हो चुका। पता नहीं भविष्य में क्या-क्या भुगतना पड़े। जब मिलूंगा तब बात करूंगा। पत्र में लिख तुम्हें चिन्तित नहीं करना चाहता। बस इतना ही अपने बारे में।

---

1. मेरे छोटे भाई।



—इलाहाबाद गया था लड़की को भेजने। वहां तुम्हारी पुस्तक 'लोक भारती' में देखी : भारतेन्दु युग। तुमने मुझे समर्पित की है। चेहरा चमक उठा। क्षण भर को जान आ गई। प्रकाशक ने प्रति नहीं भेजी। पढ़ने का दिल हुआ। पर बड़ी है इसलिए न पढ़ सका। लौट आया।

—जो कुछ बन पड़ता है कभी-कभी लिख देता हूँ। इधर अपने में ही उलझा चिन्तित रहता हूँ।

—नागार्जुन का पत्र आया था। वह बन्द हैं।<sup>1</sup>

—अब कहां तक पहुंचे? अनुवाद में।

—मालकिन से हमारी नमस्ते कहना।

—और अपने हाल लिखना, डियर!

—मौसम बसंत का है।

—पिता जी के ऊपर जनवरी के प्रथम सप्ताह में डाका पड़ गया था। वहां भी गया था। जो कुछ भी था डाकू ले गये। वैसे वहां ज्यादा था ही नहीं। पिता जी परेशान थे। समझा आया था। पुलिस प्रयास कर रही है। पर पता नहीं लगा पा रही। देखो क्या होता है।

—बेटा मद्रास में जूझ रहा है। वह भी ऊपर नहीं उठ पा रहा। खर्चे बहुत हैं। बम्बई में केस भी है F. F. C. वाला। मुझे मद्रास जाना है। शायद मार्च के महीने में। पत्र जरूर देना।

सस्नेह तु०

केदार

रामविलास शर्मा,

आगरा

दिनांक ५-३-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/३ का पत्र आज अभी पौने ग्यारह बजे मिला, तब मैं पूंजी-२<sup>2</sup> का अनुवाद दोहराने में लगा था। अनुवाद नवम्बर में खत्म कर लिया था पर दिसम्बर निकल गया निराला की सा० साधना के तीसरे खंड का सम्पादन करने में। उसे जनवरी के आरम्भ में राजकमल के यहां भेज दिया। तब से इस अनुवाद को दोहराने में लगा हूँ और इसमें बहुत समय लग रहा है। इस बीच एक किताब 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और

1. जे० पी० आन्दोलन में नागार्जुनजी जेल में बन्द थे। [अ० त्रि०]

2. कार्ल मार्क्स की पुस्तक 'केपीटल-2' का अनुवाद। [अ० त्रि०]

आधुनिकता बोध' शुरू कर दी थी। सबेरे लिपिक आता है, उसे दो घंटे बोल कर लिखा देता हूँ। यह भी मार्च के अन्त तक समाप्त हो जायगी। अगस्त १९७५ में फिर एक झटका खाने के बाद मालकिन का स्वास्थ्य पूंजीवादी Balance of payments की तरह कुछ समय के लिए सध गया है। इसलिए लिखाई का यह क्रम चल रहा है। मार्क्सवाद, भारतीय इतिहास आदि के बारे में बहुत-सी बातें दिमाग में कुलबुला रही हैं। उधर भाषा-विज्ञान का अधूरा काम वैसा ही पड़ा है। अप्रैल में सोचेंगे।

तुमने अपने आखिरी पिछले पत्र में लिखा था कि तुम निराला पर मेरी किताब का दूसरा खंड पढ़ रहे हो। मैंने पत्र न लिखा; इसलिए तुम इसे किताब खत्म करने का रिमाइन्डर न समझो। खैर, मैं खुद हर किताब हर वक्त नहीं पढ़ पाता। तुम तो कवि हो। किताब वह है ही बोझिल। बहुत से दोस्तों ने नहीं पढ़ी। यह भारतेंदु वाली किताब भी पढ़ने में मेहनत न करना। उसे मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूँ क्योंकि 'तुमने मुझे समर्पित की है। चेहरा चमक उठा।' मैं तुम्हारा चेहरा हमेशा चमकता हुआ ही देखना चाहता हूँ। और तुम विश्वास करो, जो किताबें तुम्हें समर्पित नहीं हैं, उन्हें लिखते समय भी मुझे तुम्हारा ध्यान रहा है। वैसे हिन्दी में मेरी दूसरी प्रकाशित पुस्तक-भारतेन्दु युग-तुम्हीं को समर्पित थी, यह उस समर्पण की आवृत्ति मात्र है।

पत्नी के अस्वस्थ रहते हुए भी मैं किसी हद तक अपने काम के लिए समय निकाल लेता हूँ और मन साध लेता हूँ। तब तुम्हारे पत्र से अनुवाद में विघ्न पड़ने की कोई सम्भावना नहीं है।

सप्रेम-  
तुम्हारा-रामविलास

बांदा (३० प्र०)

१२-३-७६

सबेरे ८<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े आठ] बजे

प्रिय डाक्टर,

५/६ का पत्र तथा 'भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा' पुस्तक मिली। पढ़ने का लोभ संवरण न कर सका। बहुत-कुछ पढ़ गया। मेरे लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। तमाम तरह की भ्रान्तियाँ दूर होंगी। तुम्हारी पुस्तकों से मैं अपनी चेतना विकसित कर सकूँगा। यही क्या कम है मेरे लिए। मरूँ तो विवेकशील होकर मरूँ-मूढ़ की तरह न मरूँ। निश्चय ही ऐसी पुस्तक सभी के लिए उपयोगी है। शैली भी साफ-सरल तथ्य-परक है। उद्धरण भी ऐसे हैं, जो आंखें खोल देते हैं।

द्विवेदी जी वाली पुस्तक भी बढ़िया ही होगी। उसे भी जरूर भेजवाना।

तुमने कहा था कि मार्क्स पढ़ते समय तुम उनके मस्तिष्क की चाल देख-देख कर अभिभूत हुए थे। वह बात भी जानने को उत्सुक हूँ। अभी वह छपेगी तब कहीं पढ़ने को मिल सकेगी। जरूर अपनी बातें भूमिका में देना।

मार्क्सवाद और भारतीय इतिहास के बारे में भी बहुत कुछ तुम दे सकते हो। उसे भी दो। हमारी पीढ़ी तो फायदा उठाएगी ही। आने वाली पीढ़ियाँ भी लाभान्वित होंगी ही।

भाषा-विज्ञान की तुम्हारी पुस्तक ने तो मुझे दृष्टि दी ही थी। वह दृष्टि फिर और परिपक्व होगी।

निराला की पुस्तक का दूसरा खंड वैसे मैं पढ़ चुका हूँ। ठोस है। सभी बातें आ गयी हैं। निराला का साहित्यिक रूप और उनका ब्रह्म भी खुल कर पकड़ में आता है। जनवादी साहित्य की प्रगति जानने के लिए यह दूसरा खंड भी अत्यन्त उपादेय है। साहित्यिक चेतना कैसे-कैसे किन रूपों में विकसित होती है यह भी इससे ज्ञात हुआ। मैं तो विद्यार्थी हूँ-विद्यार्थी की तरह घोखता हूँ। पुस्तक उम्दा रही है। तुम्हें दाद क्या दूँ। तुम तो हिन्दी के समर्थ साधक हो। जो कुछ सोचते-लिखते हो वह टकसाली होता है। तुम्हें भटकाव तो छू नहीं पाता। तुमने गौरव ग्रन्थ दिये हैं और दे रहे हो। तुम-सा और न देखा। तुम्हारा जीवन सफल है। मुझे खुशी है तो यही कि तुम जैसे मेरे दोस्त हैं। मुझे भी विवेकशील बनाते चल रहे हो। जो बातें मैं इतनी मेहनत करके भी न खोज पाता वह तुमने मेरे लिए सहज ही सुलभ कर दीं। मैं तुम्हारी प्रतिभा और श्रम का कायल हूँ।

हां, यहां के हिन्दी के लोग तुम्हें First Class का मार्ग व्यय देकर बुलाना चाहते हैं। क्या आना सम्भव होगा? न आ सको तो बात दूसरी है। अपने काम में बाधा न महसूस करो तो आने की बात लिखो। मैं बात करूँ और तारीख निश्चित कराऊँ। और सभी कुछ पूर्ववत् है।

मालिकन को नमस्ते।

सस्नेह तुम [तुम्हारा]

केदारनाथ अग्रवाल

Telegram : HINDIPITH

Telephone : 73952

K. M. INSTITUTE OF HINDI STUDIES & LINGUISTICS

AGRA UNIVERSITY, AGRA

No.....

Dated ३१-३-१९७६

प्रिय केदार,

आज मैंने पूंजी-खंड २ को दोहराने का काम पूरा किया।

कुल मिला कर अनुवाद के इस काम में लगभग एक वर्ष लगा। जितना समय अनुवाद करने में लगा, उसका आधा समय मूल से मिला कर अनुवाद दोहराने में लगा। मालकिन इस बीच दो बार बीमार पड़ीं, वर्ना काम और जल्दी हो जाता।

यह पुस्तक एंगेल्स ने मार्क्स की पाण्डुलिपियों से संकलित करके तैयार की थी। इसकी एंगेल्स-लिखित भूमिका उन महानुभाव की एक महान कृति है। पाण्डुलिपियां अपूर्ण थीं और निरन्तर सोचने और विचार बदलने के कारण वे सब अधूरी थीं और एक ही विषय पर तीन तीन, चार चार मसौदे-पाठान्तर!-मौजूद थे। बहुत जगह मार्क्स की लिखावट पढ़ी न जाती थी, और पढ़ लेने पर जहां एंगेल्स को वाक्य अस्पष्ट और दुरूह लगते थे वहां वह उन्हें ज्यों का त्यों बना रहने देते थे। अंग्रेजी अनुवाद तो मार्क्स-एंगेल्स संस्थान के विद्वानों ने दोहराया था। मैंने संशोधित और असंशोधित दोनों रूप देखे हैं और कहीं-कहीं असंशोधित रूप ही अधिक स्पष्ट हैं। देखें हिन्दी अनुवाद का संशोधन-संपादन होता है या नहीं।

दोहराने पर तरह-तरह की गलतियों का पता लगा। कहीं वाक्य छूट गये थे, कहीं शब्द और कहीं-कहीं शब्द या वाक्य समझने में भूल हुई थी। लिपिक की भूलें सुधारने में काफी समय लगा, अब भी कुछ रह गई होंगी; कुछ उसकी, कुछ मेरी।

बहुत जगह अनुवाद देख कर अपनी भाषा की व्यंजना-क्षमता से आनन्द होता है। कई जगह वाक्य रचना संतोषजनक नहीं है। मैं अर्थशास्त्री नहीं; अर्थशास्त्र में यहाँ गणित का बहुत-सा हिसाब-किताब है जिससे कहीं-कहीं एंगेल्स खीझ उठे हैं, उनकी एकाध टिप्पणी से लगता है। इसलिए हर जगह यह किताब अपनी समझ में आती है, यह मेरा दावा नहीं है। इतना समझ में आता है : मार्क्स अपने कारखाने में ढेरों समस्याओं में जूझ रहे हैं और जो माल तैयार किया है, कहीं पूरा है, कहीं अधूरा है, उनकी मेधा कहीं पूरी तरह दीप्त है, कहीं थकान और बीमारी से मद्धिम है। किताब पढ़ने की अपेक्षा पढ़ाने से ज्यादा समझ में आती है। अनुवाद करने और उसे दोहराने से पढ़ाने का सा परिचय हो जाता है या उससे कुछ ज्यादा। लगता था कि साल भर मैं मार्क्स के दिमाग की सारी कार्यवाही बहुत नज़दीक से देख रहा हूँ। मुझ पर इसका बहुत असर हुआ है। मार्क्स का विचार क्षितिज निरन्तर बदल रहा था, यह बात मैंने गांठ बांध ली है, और मार्क्स के अनुयायी होने का मतलब उनके सूत्रों को दोहराना नहीं है। मार्क्स की मान्यताओं में १८६० के आसपास मौलिक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का उल्लेख मैंने कहीं नहीं देखा। 'ऐतिहासिक भौतिकवाद और भारत'-एक छोटी सी किताब लिखने की सोच रहा हूँ। पर अलिखित पुस्तकों की संख्या बहुत बढ़ गई है। तुम्हारा पत्र मिल गया था, हम लोग मजे में हैं।

सस्नेह रामविलास

16 Thirmurthy Street

T Nagar, Madras. 17

12-4-76

प्रिय डाक्टर,

२६/३ को बांदे से सपत्नीक मद्रास के लिए झांसी होते हुए यात्रा की और २८/३ को रात ९ बजे उपरोक्त [उपर्युक्त] पते पर अपने बेटे के घर पहुंचा जहां वह नहीं उसकी पत्नी और बच्चे मिले। वह हैदराबाद फिल्म की शूटिंग में १८/३ को चला गया था और अपनी पत्नी को अस्पताल में छोड़ गया क्योंकि उसके १६/३ को वहां बेटा पैदा हुआ था। तभी मुझे तार-चिट्ठी दे कर बुलाया गया और मैं २६/३ से पहले किसी भी हालत में न चल सका। यहां सब ठीक है। बेटे से अब भी भेंट नहीं हुई। मई के प्रथम सप्ताह में आना है। तब तक घर की देख-रेख में मुझे ही समय देना पड़ता है [पड़ेगा]।

तुम्हारा ३१/३ का पत्र बांदे गया। वहां से यहां मेरे पास आज आया। पा कर बेहद खुशी हुई कि यहां तुम आ गये जैसे और तुमने कुछ दिल खोला।

अभी तक पढ़ तो कुछ पाया नहीं। न साथ लाया हूं। पढ़ा तो बहुत। लिखना शेष है। सो चिपक कर बैठ नहीं पाता और कोई लिपिक भी नज़र नहीं आता। यदि कोई मिल गया तो गद्य ही गद्य दागूंगा।

मार्क्स अद्भुत आदमी था। एंगेल्स और भी बढ़िया आदमी था। इनके बारे में जितना जाना जाये कम है। मार्क्स की अगुवाई भौतिकवाद की विकासमान होती चली जाने वाली द्वन्द्वात्मक अगुवाई है। यही तो खूबी है इस महापुरुष की। १८६० के आसपास के मौलिक परिवर्तन का कुछ जिक्र कर देते तो मैं दिशा और दृष्टि पा जाता। तुम्हारे पत्र में यह बात छूट गई। संक्षेप में ही बता दो न!

चीन की साहित्यिक क्रान्ति मेरी समझ में नहीं आ रही। वहां रोज ही बावेली खड़ा रहता है। समाचार पत्र यही कहते हैं। क्या सांस्कृतिक क्रान्ति का मतलब जड़मूल-हीन असंस्कारित क्रान्ति है जो इतिहास-क्रम को नकार कर वर्तमान में की जाती है? क्रान्ति भी अतीत के अन्दर से अपनी जड़ें निकालती और अंकुरित हो कर, जो है उसी से शाखें फैलाती है। माओ की महिमा बड़ी गूढ़ है जो मैं तो नहीं समझ पाता। साहित्य और संस्कृति का बनाव-सिंगार क्रान्ति में बदलता है परन्तु पहले के आधार किसी-न-किसी रूप में झलक मारते रहते हैं तभी जीवन की ऐतिहासिक पकड़ समग्रता से संपृक्त रहती है। केवल बौद्धिक उन्मूलन से साहित्यिक और सांस्कृतिक क्रान्ति नहीं होती। Contradictions के साथ ही क्रान्ति का सौन्दर्य फूटता है—मन मोहता है। है न डियर, ऐसा?

सस्नेह

केदार

प्रिय केदार,

तुम्हारा १२/४ का पत्र मिला। आशा है, यह पत्र जब मद्रास पहुंचेगा तब तक तुम वहीं रहो गे।

तुम्हारा वाक्य 'गद्य ही गद्य दागूंगा।' पढ़ कर बड़ा मज़ा आया। दागो। अच्छे गद्य की बड़ी कमी है।

मार्क्स और एंगेल्स के विचारों में जो मौलिक परिवर्तन हुए हैं। उनकी कुछ मिसालें देखो :

- क. १. भारत का अंग्रेजों द्वारा जीता जाना अनिवार्य था।
२. अगली क्रान्ति इंग्लैंड में नहीं भारत में होगी।
- ख. १. रूस का अंग्रेजों द्वारा जीता जाना अनिवार्य है।
२. अगली क्रान्ति पश्चिमी यूरोप में नहीं रूस में होगी।
- ग. १. मज़दूर वर्ग समाज का सबसे क्रान्तिकारी वर्ग है।
२. अंग्रेज मज़दूरों से आइरिश किसान ज्यादा क्रान्तिकारी हैं।
- घ. १. भारत में अंग्रेजों के आने से पहले कोई क्रान्ति नहीं हुई।
२. १७वीं सदी में आगरा एशिया की सबसे बड़ी मंडी था।
०. १. रोम और एथेंस में उत्पादन का आधार दास प्रथा थी।
२. रोम में मुख्य अंतर्विरोध स्वाधीन गरीब किसानों और धनी भू स्वामियों के बीच था। दास प्रथा केवल इसे प्रभावित करती थी।

चीन से भारत के कूटनीतिक सम्बन्ध बहाल हो रहे हैं, यह अच्छा है। वैसे वहां के कम्युनिस्टों में तगड़ा विभाजन है, यह बात असंदिग्ध है।

यहां बसन्त आधी रात से सबेरे ९ बजे तक रहता है। बाकी समय निदाघ का राज्य! वहां तो चौबीसों घंटे बहार हो गी। मद्रास वि० वि० ने तमिल का बहुत बड़ा कोश निकाला था। सुविधा हो तो किसी से पूछना—यह बाजार में सुलभ है या नहीं। एक तमिल-अंग्रेजी बड़ी डिक्शनरी भी चाहिए; और आलवार कवियों के ग्रन्थ, और सुब्रह्ममय्य भारती की ग्रन्थावली। यानी ये सब मूल तमिल में ही चाहिए। हमें यू० जी० सी० किताबें खरीदने के लिए रुपये देना है। उसका उपयोग इन किताबों पर करें गे। पुस्तक सूची, प्राप्ति स्थान, दाम आदि का पता करना—सुविधा होने पर।

सप्रेम रामविलास

मित्र संवाद / 145

16 Thiumurthy Street

T Nagar, Madras. 17

२८-४-७६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला गया। अभी यहीं रहूंगा। मई में न जा पाया तो जून भर रह कर जुलाई में बांदा जाऊंगा।

‘नागलिंगम्’ एक फूल होता है—लाल पंखुरियों की कटोरी का जिसमें सांप का फन मुंह खोले रहता है और मुंह में समाधिस्थ शिव रहते हैं। प्रकृति की यह रचना विचित्र है। मैंने कुछ पंक्तियां लिखी हैं। भेजता हूं।

गद्य शुरू किया है। देखो क्या पल्ले पड़ता है। आदत छूट जाने से कलम अड़ियल टट्टू की तरह चलती है और कड़ी मेहनत पर आगे बढ़ती है। तब बात बनती है।

‘नागलिंगम्’ फूल को देख कर :

पंगल पार्क में

जब आज सुबह मैंने

फूल हो गये सांप के मुंह में

समाधिस्थ शिव को

पुष्प वाण से बिंधा अविचलित देखा

तब प्रकृति की रम्य रचना—

नागलिंगम्—पर

मुग्ध हुआ

विषपायी चिन्तन की

कामजयी प्रभुता से धन्य हुआ

सस्नेह तुं

केदार

७-५-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/४ का कार्ड मिला। अपनी कल्पना के नागलिंगम् तुम्हें भेजता हूं।<sup>1</sup>

गद्य लिखने में अड़ियल टट्टू की बात चार्ल्स लैम्ब ने भी लिखी थी पर टट्टू

---

1. इस पत्र में ‘प्रिय केदार’ के बाद 5 नागलिंगम् बनाये गए हैं। [अ० त्रि०]

146 / मित्र संवाद

अपना अड़ियलपन केवल दफ्तर में दिखाता था। घर आ कर 'एसे' लिखते समय वह सरपट भागता था।

—तुम्हारी कविता बहुत सुन्दर है और गद्य में उसकी भूमिका भी।

हम अपनी भाषाविज्ञानी दुनिया में नागर कोइल, नागट्टनम् और दक्षिण में नाग गणों के प्रसार तक जाने कहां कहां घूम आये।

सस्नेह  
रामविलास

१६ थिरुमूर्थी स्ट्रीट, 'टी' नगर, मद्रास १७,  
४-६-७६

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड और सभी पत्र मिले थे। तुम्हारी पुस्तकों की सूची लेकर एक दिन दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति के दफ्तर गया था। परन्तु श्री शौर्ये राजन वहां न मिले। इससे वह काम अभी तक पूरा न कर सका। एक दिन फिर धावा बोलूंगा और पता लगा कर तुम्हें सूचना दूंगा।

कल नागार्जुन का पत्र C/o, रामकमल [राजकमल] प्रकाशन, पटना, से आया है। बाहर आ गये हैं। ठीक हैं। वहां कविताएं ढेर से लिख सके हैं। व्यवस्थित लेखन नहीं कर सके। इलाहाबाद गये थे। पत्र बांदे के पते से भेजा था। वह यहां आया वहां से। छूटे तो अप्रैल में थे। मई के अन्त में याद कर सके।

मैं जून के चौथे सप्ताह तक बांदा पहुंचूंगा। तब तक पत्र यहीं के पते से देना।

मार्क्स की (अनूदित) पुस्तक की छपाई कब तक शुरू होगी। P P H ने देख लिया होगा। अन्य मौलिक ग्रन्थ लिखने में लग गये होओगे। गरमी तो भीषण होगी। मालकिन की तबियत कैसी है? बच्चे छुट्टी में आये होंगे। घर भरा होगा। तुम तो कहीं न गये होओगे।

गद्य की गाड़ी अभी रुकी खड़ी है। उसे तेल पानी लगा कर ऊंघना है।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

८-६-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/६ का कार्ड बड़े इंतजार के बाद मिला। मैं [मैंने] तो समझा कि तुम मद्रास से वापस चल दिये होगे। नागार्जुन छूट गये अच्छा हुआ। बुढ़ापा, दमा उस पर आजकल की राजनीति! मार्क्स वाली किताब P P H ने सूचित किया है, मोस्को में छपे



गी। जब भी छपे। निराला वाली किताब का तीसरा खंड छप रहा है। उसे तैयार करते समय सरस्वती की पुरानी फाइलें पढ़ने लगा। मजा आया, एक लेख लिखना शुरू किया। फिर किताब बन गई : महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण। इस महीने, आशा है, पूरी हो जायगी। द्वि० जी और उनके सहयोगियों पर है—मुख्यतः सरस्वती के आधार पर। अंग्रेजी राज की अर्थशास्त्रीय आलोचना, विकासवाद का समर्थन, रीतिवाद के विरुद्ध संघर्ष, भाषा की समस्या का विश्लेषण, किताब में देखो गे।

मालकिन की डायबिटीज़ बढ़ी है। छुट्टियों में लोग आते जाते रहते हैं। गर्मी तो है ही।

सप्रेम—रामविलास

बांदा

४-७-७६

प्रिय डाक्टर,

मैं मद्रास से ३०/६ को ३ बजे दिन की जनता से झांसी के लिए सपत्नीक चला और २/७ को ११ बजे दिन को झांसी पहुंचा। वहां से रात ८ बजे ट्रेन से चला। २ बजे रात बांदा पहुंचा। सब ठीक है।

३/७ को कचहरी गया। खुल गई थी। अब फिर वही गोरख धंधा चलेगा। गरमी तो यहां है ही। पर अब शायद सहने योग्य है।

आशा है कि तुम सपरिवार आनन्द से होओगे।

अभी इतना ही।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

१४-७-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/७ का कार्ड मिला।

बीच में तीन चार दिन को अमृतलाल नागर आ गये थे। अगले महीने वह भी साठ के हो रहे हैं। स्वास्थ्य उनका अच्छा है; श्रीमती नागर भी मजे में हैं। हिन्दी समिति की अध्यक्षता से इस्तीफा दे कर यहां आये थे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी वाली किताब ने बहुत समय ले लिया। आज कल दोहरा रहा हूं।

मालकिन मजे में है। तुम्हारी स्वास्थ्य कामना सहित—

तु०

रा० वि० शर्मा

148 / मित्र संवाद

बांदा

२४-९-७६

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूँ। इधर भी कई कविताएँ लिख सका हूँ। मिलने पर ही दिखाऊंगा। 'राजकमल प्रकाशन समाचार' से ज्ञात हुआ कि तुम्हारी कई पुस्तकें निकलने वाली हैं। बेहद खुशी हुई।

आशा है तुम और मालकिन दोनों ठीक होंगे।

परिवार के सभी सदस्य आनन्दपूर्वक होंगे। जो भी जहां होंगे ठीक ही होंगे। आये हों तो मेरी नमस्ते देना।

-दामोदरन की पुस्तक 'भारतीय चिन्तन परम्परा' पढ़ रहा हूँ।

अब इधर इतिहास की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मिलने पर पढ़ूंगा। इतिहास में रुचि जगी है।

बांदा में लोग तुम्हें याद करते हैं। इधर आना तो होगा नहीं?

मैं उधर नहीं आ पा रहा। पत्र देना।

तु० सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

२९-९-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। कविताएँ लिख रहे हो, बढ़िया समाचार है। 'मिलने पर ही दिखाऊंगा।' बहुत ख़ूब। 'मैं उधर नहीं आ पा रहा।' क्या ख़ूब। यानी हम बांदा न आये तो तुम्हारी कविताएँ न देख पाये। हम और मालकिन सकुशल हैं पर उन्हें छोड़ कर बांदा आये तो कैसे! 'इतिहास में रुचि जगी है।' बधाई। उधर हमारी रुचि पुरानी है। जो पढ़ो, दो लाइन में उसका समाचार हमें भी देना। राजकमल द्वारा विज्ञापित पुस्तकें, आशा है, तीन-चार साल में निकल जायंगी। इन दिनों हम ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के उलझे सूत्र सुलझाने में लगे हैं।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)  
दिनांक १-१०-७६  
रात ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला। बैठा मन एकदम प्रसन्न हो गया। दशहरे की छुट्टी है। समय पढ़ने-सोचने में बिताता हूँ। छोटी-बड़ी बातों को पकड़ता हूँ। दिमाग सही पटरी पर रखता हूँ। यही करता रहता हूँ। पिताजी बीमार होकर आये थे। १५ दिन के करीब रह कर अच्छे हुए और फिर गांव चले गये। अब मैं हूँ-बीबी [बीबी] है। दो प्राणी सहजता से रह लेते हैं। नगर का माहौल वही पुराना ऊलजलूल का है। न जाने कब किस तरह इसको सही चेतना प्राप्त होगी। प्रयास भी तो कोई नहीं करता। केवल औंधे [औंधे] खोपड़ी के अखबार ही लोग पढ़ते हैं और साहित्य के नाम पर वक्त को काटने के लिए रेलवे बुक-स्टाल से सेक्सी पुस्तकें उपन्यास और सिनेमा सम्बन्धी पत्रिकाएं, किराये पर किताबें ले जाते और चाट-चूट कर दे जाते हैं। यहां कौन पढ़ता है सही समझ की पुस्तकें। इस पर बेचारे रोते हैं कि दुनिया बड़ी खराब है-रहने लायक नहीं है। वाह रे हमारे लोग! जिम्मेदारी कोई नहीं लेता [-] न घर-न बाहर; न सड़क में-न कचहरी में। वही बेहाल हाल चालू है।

अभी दो बीसी तो कम-से-कम लग जायेंगे, तब ज़रा-सी अकल आ सकती है। फिर भी धन्य हैं ये लोग कि ऐसे जीने में हर्ष और उल्लास की पतंग उड़ा लेते हैं। रहते उसी दुरधि-संधि के सामाजिक चक्र में।

मैं जानता हूँ कि तुम भी नहीं आ सकोगे। व्यस्त [होने] के अलावा घर में भी तो देखना-सुनना पड़ता है।

अच्छा तो लो एक कविता। मद्रास में ४/६ को लिखी थी।

१. पहला पानी गिरा गगन से, उमंडा आतुर प्यार  
हवा हुई ठंडे दिमाग के जैसे खुले विचार  
भीगी भूमि-भवानी, भीगी समय-सिंह की देह  
भीगा अनभीगे अंगों की अमराई का नेह  
पात-पात की पाती भीगी-पेड़-पेड़ की छाल  
भीगी-भीगी बल खाती है गैल-छैल की चाल।  
प्राण-प्राण मय हुआ परेवा-भीतर बैठा जीव  
भीग रहा है द्रवीभूत प्राकृत आनन्द अतीव

रूप-सिंधु की लहरें उठतीं, खुल-खुल जाते अंग  
परस-परस घुल-मिल जाते हैं उनके मेरे रंग  
नाच-नाच उठती है दामिनि चिहुंक-चिहुंक चहुं ओर  
वर्षा-मंगल की ऐसी है भीगी रसमय भोर  
में भीगा-मेरे भीतर का भीगा ग्रन्थिल ज्ञान  
भावों की भाषा गाती है विश्व-विमोहन गान।

दोस्त इतना लिखने में ही हाथ थक गया। अब दूसरे पत्र में कविताएं भेजूंगा।

तुम्हारी पुस्तक 'शेक्सपीरियन ट्रेजेडीज़' फिर से सरपेटे से पढ़ गया। अभी बाकी हैं ३ ड्रामे। तुमने दूसरों के विचारों की कमजोरी खूब सटीक पकड़ी है। कोई बैठ कर तो समझता-बूझता नहीं-जैसा चाहा थोड़ा बहुत सोच-समझ कर आधा-अधूरा लिख दिया और एक सिद्धान्त का झंडा गाड़ दिया। यही तो करते हैं चालाक और चतुर पढ़ेरी। जो प्रमाण तुमने दिये हैं लियर और हैमलेट के नाटकों के बारे में वह अकाट्य हैं। मैंने खूब गौर किया है।

दूसरी पुस्तक Unity चल रही है। मल्टी नेशनल सोवियत साहित्य पर १० लेख संग्रहीत [संगृहीत] हैं। उम्दा संग्रह है। सार्थक और परख के लेख हैं। यह प्रोग्रेस प्रकाशन का १९७५ का अंग्रेजी प्रकाशन है। लखनऊ से लाया था। कुछ समस्याओं का समाधान बड़े ही उचित ढंग से हो जाता है। साहित्य के सांस्कृतिक और लोकप्रिय तत्व कौन से हैं! विवेचन भरपूर विवेक से किया गया है।

एक लेख है Historism and History यह भी ज्यार्जिया के उपन्यासों और कविताओं को लेकर लिखा गया है। बड़ी सूझ-बूझ झलकती है। सही पकड़ है बातों की। तुमने तो यह पुस्तक पढ़ी होगी।

कल विजयदशमी है। हजारों साल से हर साल मारे जा रहे और फिर फिर जी उठने वाले रावण को राम मारेंगे। रावण भी कागज और बांस की खपच्चियों का होगा और राम भी नकली राम होंगे। बांस का बेकार धनुष लिए और सरकंडे का बाण चढ़ाये। जनता गदगद होगी। खुश होगी। यही स्थिति है अपने जन-समुदाय की। न जाने इस सबसे आज का जीवन कैसे चलेगा? मेरी बुद्धि चकराती है और इस सब में कोई प्रगतिशील संस्कार नहीं देखती।

ऐसे दशहरे की नहीं, कवि-हृदय की अनुभूतियों के साथ शुभकामनायें भेजता हूँ।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

१५-१०-७६

प्रिय केदार,<sup>1</sup>

तुम्हारा १/१० का पत्र मिला। तुम्हारी एक नयी कविता तुम्हारे पत्र में बहुत दिनों बाद देख कर मन परम प्रसन्न हुआ। कविता बढ़िया है। समय-सिंह का उपमान हमें विशेष रूप से अच्छा लगा। तुमने ठीक लिखा है कि शहर का वातावरण ऊल जलूल है। ऐसे वातावरण में पढ़ना, सोचना, लिखना जीवट का काम है। हम इस जीवट को दाद देते हैं।

नि० की सा० सा० का तीसरा भाग छप गया। इस काम से हमने छुट्टी पाई। अब भाषाविज्ञान से और छुट्टी मिले तो दूसरी बात सोचें।

दीपावली की शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा

रामविलास

बांदा (३० प्र०)

३०-१०-७६ सुबह

प्रिय डाक्टर,

‘निराला जी साहित्य साधना’ का ३ भाग भी, तुम्हारा भेजा, यथासमय मिल गया। सरसरी तौर पर एक बार देख गया। यह पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण लगी। किस तरह निराला जी की चेतना काम करती थी और किस तरह अन्य लोग उनको समझते-बूझते थे और किस तरह उनकी रचनाओं को लेते थे—यह सब प्रकट होता है। आज उन सब बातों की जानकारी एक नया अर्थ देती है उस समय का। प्रमाण उपस्थित करती है यह पुस्तक।

तुम्हारी भूमिका भी अत्यन्त संतुलित और विवेकपूर्ण है। इससे पुस्तक का यथार्थपरक महत्व और भी खुलता है और तमाम बातें साफ हो जाती हैं और दृष्टि भी दूरगामी हो जाती है।

---

1. यह पत्र एक निमंत्रण पत्र की पीठ पर लिखा गया है। निमंत्रण पत्र है, निराला जी की स्मृति में, 15-10-76 को ही सम्पन्न हुए, स्मारक डाक-टिकट समारोह का। यह समारोह इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ था। ऐसा शायद रामविलास जी ने इसलिए किया होगा, ताकि केदारजी को भी इसकी जानकारी हो जाए। [अ० त्रि०]

152 / मित्र संवाद

काश और भी लोगों को लिखे गये पत्र प्राप्त हो सकते और उनके भी तमाम पत्र मिले होते। शायद तब इस दौर का पूरा साहित्यिक प्रतिबिम्बन प्रस्तुत होता। वैसे मूल समस्याएं उभर कर व्यक्त हुई हैं और उनके समाधान भी निराला जी के कृतित्व से स्पष्ट रूप-रेखाएं पा गए हैं।

मैं ६/११ को दिल्ली जा रहा हूँ। मेरी लड़की किरण के श्वसुर का स्वर्गवास २७/१० को हो गया है। ७/११ को वहां तेरही है। मेरा जाना जरूरी है। कल फोन आया था। ८/११ को बांदा में एक केस है। मुझे उस दिन वहां रहना चाहिए। पर शायद न आ पाऊँ। इसलिए दरखास्त दूंगा कि उसकी पेशी बढ़ा दी जाये। ताकि न आ पाया तो मुअक्कल का नुकसान न हो। ९/११ को तो जरूर ही यहां रहना है। अवसर नहीं है वरना १ दिन आगरा में भी रह लेता। तुम से भेंट करता। फिर लौटता। देखो यह सम्भव होता है या नहीं। तुम रहोगे तो आगरे में ही ८/११ व ९/११ को। यदि पहुंचा तो कुछ ही घंटे सही बात कर लूंगा। और सबसे मिल लूंगा।

भाषा पर काम करना शुरू कर दिया होगा।

मालकिन तो ठीक हैं न?

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

१५-११-७६

शाम

प्रिय डाक्टर,

मैं दिल्ली गया-लौट भी आया। आगरा न पहुंच सका।

इधर तबियत कुछ खराब चल रही है। पीठ में दर्द रहता है। अभी तक डाक्टर से मिल कर निदान नहीं करा सका। चिन्ता की कोई बात नहीं है।

आशा है कि सब कुछ ठीक ठाक हो गया तुम्हारे यहां।

पत्र देना।

श्री विश्वनाथ त्रिपाठी से भेंट हुई थी। बातें भी हुईं।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

२२-११-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र १५/११ का कार्ड मिला, इससे पहले वाला पत्र भी। न मिल सके, कोई बात नहीं, फिर कभी। इधर हमारी गृहस्थी भी कुछ डांवाडोल है। मालकिन का ब्लडप्रेसर बढ़ा हुआ है। दो दिन से यहां पानी बरस रहा है और हवा न चलने पर भी एक अजीब क्रिस्म की नम सर्दों है। इस मौसम ने हमारे शरीर को प्रभावित किया। गला खराब, नाक में पानी, बदन में दर्द। काम बिल्कुल बन्द कर दिया है। तीन चार दिन पूरी तरह आराम करेंगे। अपनी पीठ का हाल लिखना।

तुम्हारा

रा० वि० शर्मा

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिवलि लाइन्स, बांदा  
(उत्तर प्रदेश)  
दिनांक १२-४-७७  
[१२-५-७७]

प्रिय डाक्टर,

पू० पिता जी का २५/४ को कमासिन<sup>1</sup> के घर पर निधन हुआ। मैं यहां था। सूचना मिलते ही परिवार के साथ वहां उसी दिन २ बजे दिन पहुंचा। ५ बजे शाम को मैंने दाह संस्कार किया। फिर सबकी इच्छानुसार १३ दिन तक वहीं रहा। दसवां व तेरही व बरखी भी कर आया। ७/५ को यहां लौटा।

विचलित तो नहीं हुआ। पर दो बार जरूर आंखें भर आर्यी थीं।

शायद अब भार वहन करना पड़े। खेत पात मेरे नाम के हैं। उनका प्रबन्ध कराना होगा। भतीजों से कहूंगा—वही करायें। मेरे बस का यह काम नहीं है।

वह शिथिल हो गये थे। इसी से मैं बांदा से बाहर नहीं जाता था। मुझे ऐसा आभास हो रहा था कि वह अब रहेंगे नहीं। हुआ भी यही।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

---

1. केदारजी का पैतृक कस्बा। यहीं केदारजी का जन्म हुआ था। यहीं रहकर केदारजी के पिता श्री हनुमानप्रसाद अग्रवाल, कविताएं भी लिखते थे—‘प्रेमयोगी मान’ उपनाम से। ‘मधुरिमा’ नाम से एक संकलन छपा भी है। [अ० त्रि०]

प्रिय केदार,

तुम्हारा १२/५ का पत्र मिला। पिता जी नहीं रहे—एक दिन यह होना ही था, फिर भी जब तक होनी टलती रहे आदमी सुख की सांस लेता रहता है। नहीं तो जन्म के पहले अव्यक्त, मृत्यु के बाद फिर अव्यक्त। इतने दिन तक उनका साथ रहा, इसे सौभाग्य मानना चाहिए। मेरे पिता का देहान्त हुए २६ वर्ष हुए!

कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि संसार में जो कुछ महत्वपूर्ण है, सुन्दर है, वह क्षणिक ही होता है। जैसे शरद की सांझ। वैसे शरद हर साल आती है और सांझ भी होती है पर हर शरद या शरद की सांझ एक सी नहीं होती। इस क्षणिक अनूठेपन को अमर बना देना, कला का काम है। मौत से आदमी की कभी न खत्म होने वाली लड़ाई का नतीजा है कला। जो अशाश्वत है, उसे दूसरों के लिए अपेक्षाकृत शाश्वत बना कर छोड़ जाती है कला—शाश्वत का चित्रण करके नहीं, अशाश्वत को उसी क्षण में हमेशा के लिए बन्दी बना कर।

चार-पांच दिन से जी अच्छा नहीं है। एक बरात में बरफ का सैकीनी [सैक्रीनी] शरबत पीने से खांसी, जुकाम, बुखार सब कुछ एक साथ हो गया। पिछली रात ठीक से नींद नहीं आई। हरात से सर भन्नाता रहा। अब सबेरे शरीर कुछ अच्छा है।

बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा  
१३-२<sup>१</sup>-७८

प्रिय डाक्टर,

—इधर पत्र नहीं लिख सका। तुम्हारा भी कोई पत्र नहीं आया।

—वैसे सब ठीक है। आशा है कि तुम भी ठीक होओगे। पुस्तक लिखने में व्यस्त होओगे ही।

—मैं यहां से दोपहर की गाड़ी से २५/२ को झांसी जाऊंगा और वहां से रात जी० टी० १६ up से मद्रास जाऊंगा, सपत्नीक। वहां मार्च और अप्रैल के मध्य तक रहूंगा।

—२३, २४/२५/१ को दिल्ली था। वहां से आगरा न आ सका। मैं जा कर मुंशी से मिला था। ठीक थे।



अब मनःस्थिति यह है :  
“गुलाब देखते-देखते  
गुलाब हो गया मैं,  
सूर्यास्त के चेहरे पर खिला,  
पटाक्षेप के पूर्व  
कालातीत हुआ प्रमुदित।”

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

आगरा-२  
१६-२-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १३/२ का कार्ड मिला। वसन्त तमिलनाडु में बिताओगे, उत्तम है। हम तो रोज़ ही तमिल को याद करते हैं, कल्पना में वहां हो आते हैं। किनारा दिखने लगा है; गर्मियों तक भाषा वाली किताब ज़रूर खत्म हो जायगी। तुम्हारी कविता मेरी धारणा को पुष्ट कर रही है, तुम भीतर से सूफी हो। कालातीत होने के स्वप्न में तादात्म्य [तादात्म्य] सौन्दर्य के प्रतीक गुलाब से है। बधाई।

मद्रास से पत्र अवश्य लिखना। कई साल बाद इस बार हमारे यहां गेंदे भरपूर खिले हैं। क्यारियां दमक रही हैं। तुम्हारे प्रकाशक<sup>1</sup> ने तुम्हारे कविता-संकलन के बारे में लिखा था। फिर मेरे पत्र का उत्तर न आया। बहुत बहुत प्यार।

रामविलास

बांदा

२०-२<sup>१</sup>-७८

प्रिय डाक्टर,

– १६/२ का पत्र आज मिला।

–मेरे प्रकाशक का पत्र मुझे जब मिला था तो मैंने उन्हें लिख दिया था कि वह तुम्हारी शरण में जाएं और पारिश्रमिक देने का प्रबन्ध करें। उन्होंने मेरा पत्र पा कर मुझे सूचना दी है कि वह प्रबन्ध कर रहे हैं।

---

1. परिमल प्रकाशन के मालिक श्री शिवकुमार सहाय। [अ० त्रि०]

156 / मित्र संवाद

– मैंने उन्हें अपनी सभी पुस्तकें भेजने को लिख दिया था। वह मिल गई होंगी।

– एक बात कहूँ, निःसंकोच हो कर लिखना भूमिका। मुझे अपनी कमजोरियाँ जान कर बहुत अच्छा लगेगा। अपने को ऊपर उठाने की सूझबूझ मिलेगी। सूफी हैं। चलो यह स्वीकार है। यह तो चेतना और भावना का क्षेत्र है। वहाँ पहुँच कर जो रचना बन जाए वह ग्राह्य है मुझे। सब कुछ स्कीम बना कर नहीं लिखा जाता। अपनी-अपनी क्षमता होती है। मेरी क्षमता जो है वही मुझसे लिखवा लेती है।

काल की सवारी शब्द और अर्थ ही मिल कर करते हैं। तभी अपने गंतव्य पर उस बिगड़ैल घोड़े को ले जा पाते हैं। मैंने तो उस पर जो सवारी की है वह सहज-सरल भाव से, पुचकार कर, की है। वह दुलती मारता तो मैं धराशायी हो जाता। बस।

सस्नेह तुम्हारा।

केदार

१५-३-७८

कविवर,

आशा थी, मद्रास जा कर पत्र लिखो गे। पत्र न मिला तब बांदा के पते पर ही यह कार्ड भेज रहा हूँ, शायद कोई तुम्हारा पता लिखा कर वहाँ भेज दे। हम लोग सकुशल हैं। शेष पता मिलने पर।

सस्नेह

रामविलास शर्मा

मद्रास

१८-३-७८

प्रिय डाक्टर

– १६/२ का तुम्हारा पोस्टकार्ड सामने है। देर से पत्र लिख रहा हूँ। यहाँ २१/२ को आ गया था। १४/४ को बांदा पहुँचूँगा। पत्नी यहीं रहेंगी। फिर ३/६ तक बांदा से मद्रास की यात्रा करूँगा।

– एक दिन शाम हो गई थी तब सागर-तट पर गया था। अब किसी दिन फिर जाऊँगा सबेरे। सूर्योदय देखने। शायद कोई कविता पकड़ लाऊँ।

– गेदों का खरा सोन-चम्पई रंग तुम्हें भी मुग्ध कर रहा होगा। तुम्हारे लेखन में उसकी ताज़गी और उसका रंग भर जाएगा, ऐसी मेरी धारणा है।

– मेरे प्रकाशक ने तुम्हारे पास पुस्तकें भेजीं या नहीं?—तुम्हें फिर पत्र-लिख कर सूचना दे सके या नहीं? मैंने पत्र तो बांदा से भेज दिया था।

–हम लोग सपरिवार ठीक हैं।

– मद्रास की माउंट रोड रात में, मुझे बेहद खूबसूरत लगती है। प्रकाश में जैसे सौंदर्य सजीव हो जाता है। मन पर एक मायावी भाव छा जाता है।

– यहां आ कर अभी कुछ लिख नहीं सका। डा० आशा गुप्त के प्रकाशित होने वाले संकलन की कविताओं का मर्म समझ कर भूमिका लिख रहा हूं। पूंजीवादी लोकतंत्र की तथाकथित व्यक्ति-स्वातंत्र्य की अभिव्यक्तियां देखता हूं और उनके उत्स तक पहुंच कर कवयित्री की मानसिकता की पकड़ करता हूं और उसी को भूमिका में व्यक्त करता हूं ताकि पाठक पढ़ें और समझें कि नई कविता किस तरह वैयक्तिक हो कर निजी-निस्संगता की-अनुर्वरता पा रही है और वह कोई सामाजिक दायित्व नहीं निभा रही। कविताएं कैसे-कैसे रूप धारण कर लेती हैं। यह इस बार इन कविताओं के पढ़ने-समझने से मालूम हुआ।

आशा है कि तुम सपरिवार ठीक होओगे। लेखन चल ही रहा होगा। एक लेख रणधीर सिन्हा को पहले ही भेज चुका हूं : –

‘आस्था का देवदार मेरा दोस्त रामविलास।’

– अमृतलाल नागर को बांदा से पत्र भेज चुका हूं, तब जब मैंने उनका उपन्यास ‘मानस का हंस’ पढ़ कर समाप्त किया था। अच्छा लगा था। तुलसीदास बोले तो जैसे नागर बोले। दोनों के जीवन जुड़ कर एक हो गए हैं।

आगरा कैसा जा रहा है? मालकिन को नमस्कार।

सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

३०, नई राजामंडी

आगरा-२

२२-३-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १८/३ का पत्र मिला। मद्रास से पत्र न आया, तब मैंने एक कार्ड तुम्हें बांदा के पते पर भेजा, यह सोच कर कि वहां से कोई मद्रास को रिडायरेक्ट कर दे गा और तुम पता भेज दो गे। ज्यादा राह न देखनी पड़ी, तुम्हारा पत्र आ ही गया।

अगले महीने बांदा आओ गे, जून में फिर मद्रास पहुंचो गे। अच्छा है, जून की लू से बचो गे। मद्रास में तब तक शायद पानी बरसने लगे गा। अपनी राय यह है कि महाबलिपुरम् के सागर में जितनी कविता है, उतनी मद्रास के समुद्र तट में नहीं है। मेरे मन में कन्याकुमारी के तिरंगे समुद्र से भी अधिक सुन्दर महाबलिपुरम् का गहरा नीले रंग का विस्तार है। हमारे गेंदे काफी दिन चले; अब इनकी बिदाई का समय है। जूही की अवाती है, उसके बाद बेलें की बहार हो गी।

तुम्हारे प्रकाशक ने पुस्तकें अपने पत्र के साथ ही भेजी थीं। फिर मेरे पत्र का उत्तर उन्होंने नहीं दिया। वैसे मैंने लिखा था कि मुझे अप्रैल में अवकाश होगा। अब यहां

158 / मित्र संवाद

हुआ यह कि ६ मार्च से मैं क० मुं० विद्यापीठ में प्रसार व्याख्यान दे रहा हूँ : पाश्चात्य आलोचना में सर्जनात्मक चेतना के रूप और उनकी भूमिका। भाषा वाली पुस्तक का काम एक महीने पिछड़ गया।

डा० आशा गुप्त<sup>1</sup> कौन हैं, मैं नहीं जानता। तुम भूमिका लिख रहे हो तो कुछ होंगी ही।

रणधीर सिन्हा<sup>2</sup> का एक गश्ती पत्र आया था जिससे पता चला, मुझसे सम्बन्धित पुस्तक<sup>3</sup> प्रेस में है।

‘आगरा कैसा जा रहा है?’ आगरे में कोई हरकत नहीं होती न जाने की, न आने की; अलबत्ता पछाँह से रेगिस्तान आगरे की तरफ बढ़ता चला आ रहा है।

हम लोग सकुशल हैं यानी फिलहाल स्वास्थ्य के लिए कोई संकट नहीं है।

माउंट रोड तुम्हारे मन में उछाह भरती रहे—

सस्नेह तुम्हारा

रामविलास

16, Thirumoorthy Street

"T", Nagar

MADRAS 17

२५-३-७८

प्रिय डाक्टर

— २२/३ का तुम्हारा पत्र आज सबेरे मिला। होली का दिन है। उत्तर प्रदेश के यहां आए लोग, तो रंग-अबीर और गुलाल से लाल हो रहे हैं और मद्रास के कोरे मौसम में भंग-बूटी छान कर भोले बाबा की जय बोल रहे हैं। मथुरा की होली को साकार कर प्रसन्न हो रहे हैं। अभी तो हम रंग से बचे सफेद बैठे पत्र लिख रहे हैं। पर बेटे की ससुराल में आज दोपहर का भोजन है इसलिए तब तो बच पाना संभव न होगा और रंगीन हो जाएंगे। मजा तो आता ही है, इस बुढ़ौती में भी जब तन-मन दोनों रसिया उठते हैं। भला कोई बात है कि परिवेश में फूल रंग मारें और हवा नाचे और धूप गुदगुदाती रहे और आदमी टूँठ की तरह बेजान खड़ा रहे;

1. हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी की पूर्व प्रोफेसर। केदारजी ने इनकी काव्य-पुस्तक ‘आकाश कवच’ की भूमिका लिखी थी। [अ० त्रि०]
2. दिल्ली निवासी लेखक, अब स्वर्गीय।
3. पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई।

– तुम ठीक कहते हो कि महाबलीपुरम् का समुद्र-तट मद्रास के समुद्र-तट से अधिक काव्यमय है। यहां परसों शाम गया था। आदि तत्व हिलोरें ले रहा था-चंद्रमा रोशनी भर रहा था। पानी-अथाह नीला पानी-तरल तन से पारा-पारा हो-हो कर उछल-बिछल रहा था और आदिम बोल-बोल कर तट पर पसर-पसर जाता और तत्काल अपने अहं में पहुंच-पहुंच जाता था। फिर-फिर देश और काल को पानी-पानी किये हरहरा रहा था। देखता रहा-सुनता रहा-जल की विवशता मुझे द्रवित करती रही और मैं अपनी चेतना में इसके आदि तत्व की पुकार-पुकार में शताब्दियों का इतिहास खुलते-मुंदते, प्रस्तुत होते भोगता रहा। आदमी के संपूर्ण विकास-क्रम को इसी संदर्भ में, फिर-फिर दुहराता रहा और आदमी होने के गौरव से और उसकी गरिमा से गूंज-गूंज उठता रहा। सच, आदमी सबसे श्रेष्ठ है। श्रेष्ठ है इसकी चेतना जो प्रकृति और परिवेश को बदल-बदल कर मानव मूल्यों के अनुरूप बना रही है और हम एक उज्ज्वल भविष्य की ओर जा रहे हैं। इसमें संदेह नहीं है।

–प्रसार-व्याख्यान दे रहे हो। चलो यह बड़ा अच्छा काम कर रहे हो। पाश्चात्य आलोचना सब तो एक जैसी नहीं है। वह भी पूंजीवादी लोकतंत्री व्यवस्था की सांठ-गांठ में बहुत कुछ बिगड़ी है और उसकी मानसिकता को बिम्बित करती रही है जो व्यक्ति को estranfil करती चली गई है और जो लेनिन वाले cognition के सिद्धान्त के विपरीत ही सत्य को पाने का प्रयास करती रही है। सत्य तो वह पा नहीं सकी। जो कुछ उसने पाया वह उसने आदमी का आदिम अस्तित्व ही पाया और भाषा तो खो ही बैठा। उसे अवरोध मानने लगा। यह मैं सोचता हूं। सत्य चाहे जो हो।

अपने विचार से अवगत कराना।

सस्नेह तुम्हारा।

केदारनाथ अग्रवाल

६-४-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारा २५/३ का पत्र मिला। आशा है, बेटे की ससुराल वालों ने तुम्हें तर माल खिलाते समय ऊपर से भी रंग दिया हो गा, भीतर से तो तुम्हारे रंग बोलते ही हैं। हमारे यहां जूही आ गई। पड़ोस में रातरानी महकती है और उसकी गहरी महक को हमारी जूही अपनी हल्की सुकुमार गन्ध से परास्त कर देती है। गेंदा बिदा हो गया होता पर, तने की कुछ पत्तियां सूखने पर भी जूही को सामने देख अभी-लहलहाये चला जा रहा है।

यहां विश्वविद्यालय में ऐकेडेमिक सरगर्मी बढ़ गई है। परसों भाषण के लिए पहुंचे तो पता चला छात्रों ने पथराव किया, पुलिस से टक्कर हुई, विद्यापीठ बन्द है। हम घर

160 / मित्र संवाद

पर आराम कर रहे हैं। आज हरे छोले लिए हैं। आग में भून कर इन्हें होले बनायेंगे, फिर खायेंगे।

समुद्र पर मेंडेलसोन की संगीत रचना बहुत जोरदार है पर उस पर कविता लिखना कठिन कर्म है। अंग्रेजी में पहाड़ों, मैदानों पर बहुत सी अच्छी कविताएँ हैं पर समुद्र पर कम हैं और जो हैं, उनमें कवि के भावोद्गार अधिक हैं, समुद्र कम है। नई कविता के प्रवाह में हमारे कवियों की वर्णन क्षमता का ह्रास हुआ है। बाह्य जगत् को अन्तर्जगत बना लेना बड़ा कमाल माना जाता है। युग ने आदिम मानव समाजों की चेतना के बारे में जो कुछ लिखा है, उससे लगता है, वे भी यही करते थे।

पाश्चात्य आलोचना जहाँ शास्त्र है, वहाँ दरिद्र है। जहाँ वह कवियों के अनुभव प्रस्तुत करती है, वहाँ वह मनन के योग्य है, विशेषतः कवियों के। मैं केवल सर्जनात्मक चेतना के रूपों पर बोल रहा हूँ। कभी समय मिला तो इस विषय पर स्वतंत्र निबन्ध लिखूँगा।

सस्नेह—रामविलास

२९-६-७८

अरे भाई कहां हो? मद्रास या बांदा? बहुत दिन से समाचार नहीं मिले। मेरे पिछले पत्र का उत्तर नहीं मिला। इधर पानी बरसा, मौसम अच्छा है। जनता पार्टी के भीतरी संकट ने राजनीतिक वातावरण को चिपचिपा की जगह दिलचस्प बना दिया है।

हम लोग सकुशल हैं।

रामविलास

बांदा (३० प्र०)

१७-७-७८

६-१/२ बजे सुबह

प्रिय डाक्टर,

— इस बार भी मैंने मद्रास जाते समय बांदा से तुम्हें सूचित किया था। पता नहीं तुम्हें मेरा वह पत्र क्यों न मिल सका। वहाँ रहा तो तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा दिन की 'खलरी' उधेड़ता रहा और रात को नींद में डूबा खोजता रहा। वह सीप ही न मिली जिसमें मोती होता है। वैसे जो सीपियां मिलीं वह आबदार मोतियों वाली न थी। १५-७-७८ को १ बजे दिन जब वहाँ से यहाँ बांदा घर आया तब जनाब का २९-६ का पोस्ट कार्ड मिला। इसमें भी जनाब का मोटा कलम, भारी-भरकम गज-पद रखते हुए फासला-फासला से शब्द लिखते हुए, थोड़ा ही चला है और लघु-यात्रा के बाद, तमाम जगह छोड़ कर, रुक गया है। इसके लिए मेरा मन खीझा है। पर बेबस है।

—वहां रहा, ठीक रहा। बेटा काम पर मद्रास से बाहर था इससे घर पर ही 'पल्थी मारे' नहीं, हैंडपाइप से पानी भरते, बहू-बच्चों से लड़ता-झगड़ता रहा। इस बार कुछ लिख नहीं सका।

— जनता पार्टी खोखले राजमार्गियों की पार्टी है। यह जो चरण सिंह-देसाई कांड की नौटंकी हमने-तुमने देखी है 'दिलचस्प' जरूर है पर नतीजा कुछ भी नहीं निकलता। ढहते मकान की बुनियाद से भूत निकले हैं। यह नया क्या बनाएंगे?

बस हमने तुम्हारे नाम की माला जप ली। दिन ठीक बीतेगा।

केदारनाथ अग्रवाल

२४-७-७८

प्रिय केदार,

१७/७ का कार्ड मिला। जब भी अपने पत्र का उत्तर एक पखवारे में न मिले, समझ लो तुम्हारा पत्र मुझे मिला नहीं। पिछला कार्ड तुम्हारा पता ठिकाना जानने के लिए लिखा था, नार्मल पत्र नहीं था। मेरा कलम दो बार हाथ से छूट कर ज़मीन पर गिर चुका है, उसका मुटापा दूर हो गया है। वैसे अपने को अभ्यास मोटा पीसने, मोटा कातने का ही है। कल मैंने बिटिया शोभा के हाथ भाषा वाली पोथी का दूसरा खंड दिल्ली भेज दिया। दो-तीन महीने में तीसरा भी भेज दूंगा और इस काम से छुट्टी मिलेगी।

भारत में क्रान्ति तो हो गी पर जरा देर से। क्रान्तिकारी पार्टियों के केन्द्रीय दफ्तरों में उनके केन्द्रीय संगठनों में अंग्रेजी चलती है और अंग्रेज़ी के चलते मज़दूरों की पार्टी में मज़दूर कभी नेता बन नहीं सकता। सांस्कृतिक क्रान्ति हो गी तब हर विश्वविद्यालय में एक बड़ा ताल हो गा जिसमें सैकड़ों कमल खिले होंगे। इसमें और भी देर है।

सप्रेम-रामविलास

बांदा (३० प्र०)

२७-७-७८

प्रिय डाक्टर,

—कल मेरे घर के पंडित जी ने खबर सुनाई और अखबार ला कर दिखाया कि हिन्दी संस्थान ने १५०००/- रु. का पुरस्कार तुम्हें दिया है। मैंने तो अखबार लेना बंद ही कर रखा है। यह बढ़िया रहा। बहुत-बहुत बधाई। तुमने अपने पत्र में कुछ भी इशारा नहीं किया। अरे भाई, कभी-कभी तो सहज-साधारण आदमी बन कर जी की जैसी कह दिया करो। ऐसा नहीं है कि भीतर हवा पहुंचे और चिंतन की धारा न टूटे और तुम्हारा मन सोंठ ही बना रहे। आखिर आदमी तो हो और सूक्ष्म संवेदनशील भी हो। शिकायत नहीं, यह तुम्हें झकझोर रहा हूं। बोलो, थोड़ी देर को विद्वान न रहो,

162 / मित्र संवाद

हम जैसे खुले बन जाओ और सब-कुछ अनाप-सनाप लिख भेजो। मार्क्स वाली किताब क्या हो गई उसने तो तुम्हें बंदी बना लिया। खैर, जल्दी ही उससे मुक्ति मिलेगी। शुभ समाचार दिया है तुमने। पर यार, तुम इतनी मशक्कत से, सब कुछ छोड़ कर, न जुटते तो इतनी किताबें कौन मेरे लिए लिखता और मैं विवेकी कैसे बनता। इस सबके लिए बधाई। सब मजाक एक तरफ।

क्रांति तो लोग होने न देंगे। यह सब 'चभुआ' जमात के लोग उसे होने ही न देंगे। अपने लोग भी तो धर्म-धुरीण हैं न। सब सहते रहेंगे।

सस्नेह,

केदारनाथ अग्रवाल

३१-७-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारे घर के पंडित जी<sup>1</sup> ने खबर सुनाई, वहां तक ठीक; और 'अखबार ला कर दिखाया कि....,' यहां प्रश्न चिह्न : उन्होंने अखबार दिखाया, पर तुमने उसे देखा भी? तुमने अखबार लेना बन्द कर रखा है इससे अखबार पढ़ने का अभ्यास छूट गया हो गा। तो भाई, १५,०००/- वाली गलतफहमी कई लोगों को हुई है पर मुझे जो पुरस्कार देने की खबर छपी है, वह सिर्फ ६,०००/- का है। ६ के ढाई गुना १५, काफी बड़ा फर्क है यानी तुम्हें तगड़ी गलतफहमी हुई है। चूंकि हिन्दी संस्थान कोई साहित्यिक संस्था नहीं है इसलिए उसके पुरस्कार का महत्व हम आर्थिक दृष्टि से ही आंकते हैं। अब ६ हजार माने ६ सौ। इस पर क्या गीत गायें? ऊपर से यह सुनने को जरूर मिल रहा है; व्यवस्था से समझौता कर लिया है, सरकारी पुरस्कार मिल रहा है! इधर एक हफ्ते से हम आराम कर रहे थे। कल कागज पत्र समेट कर देखेंगे, तीसरा खंड किस मंजिल में है।

सप्रेम-रा० वि० शर्मा

बांदा

१७-८-७८

प्रिय डाक्टर,

-पत्र मिल गया था। इधर कचहरी के पुराने मुकदमों में व्यस्त था इससे अब आज पत्र लिख रहा हूँ।

- कृष्ण मुरारी पहाड़िया से अभी ८ बजे सुबह मालूम हुआ कि तुम बीमार हो। क्या बात है? अवश्य सूचित करो। चिंता हो गई है। अनुवाद क्या रुका होगा।

---

1. श्री रामसजीवन पांडे। केदारजी के भतीजों के काम में हाथ बाँटते थे और केदारजी के घर के पीछे वाले हिस्से में रहते थे। [अ० त्रि०]



– मैं ठीक हूँ।

– इधर पानी झमाझम बरस रहा है। मौसम बादल-बिजली का है।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ

२३-८-७८

प्रिय वकील साहब,

मैं बीमार नहीं हूँ, अस्वस्थ हूँ। यानी बुढ़ापा, बुढ़ापे में लिखाई-पढ़ाई, लिखाई-पढ़ाई के साथ पत्नी की देख रेख इन सबके कारण थकन, यानी अस्वस्थता। इसलिए आलोचना लिखना, सम्मति देना, भूमिका लिखना, कविताएं पढ़ना या सुनना जिन पर सम्मति देना [देनी] पड़े, ये सब काम बन्द हैं। आजकल मौज में हूँ, न अनुवाद कर रहा हूँ (न करना है), न मौलिक लिखाई कर रहा हूँ (पर मूड आने पर जब तब करूँगा)। 'मौसम बादल बिजली का है।' भगवान तुम्हारे मुक्किलों की रक्षा करें।

सप्रेम : रामविलास

पानी पड़ा भंवर में नाचे,

नाव किनारे

थर-थर कांपे।

चिड़िया पार गयी,

नदिया हार गयी।

पाथर पड़े देह दहकाये,

संज्ञा-शून्य

समाधि लगाये,

दुपहर मार गयी,

ऐंठ उतार गयी।

केदार

बांदा

२६-८-७८

164 / मित्र संवाद

कागज के गज गजब बड़े  
धम धम धमके पाँव पड़े  
भीड़ रौंदते हुए कढ़े  
ऊपर,  
अफसर  
चंट  
चढ़े  
दंड दमन के पाठ पढ़े

केदार

बांदा

२६-८-७८

बांदा

११-९-७८

प्रिय डाक्टर,

—पोस्टकार्ड मिल गया था।

— आगरा बाढ़ की चपेट में आ गया है। रेडियो से पता चला। चिंता हुई। तुम्हारा मकान पानी से बचा रहा या वहाँ भी पहुँच गया। अब क्या हालत है। दैनिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया होगा। मालकिन की तबियत अब कैसी है? तुम्हारा मन चंगा होगा। आशा यही है। उत्तर की प्रतीक्षा।

सस्नेह तुम्हारा

१७-९-७८

प्रिय केदार,

हमारा घर पानी से बहुत दूर है। ताजमहल का इलाका पानी में डूबा। आगरे के पत्र अमर उजाला ने विशाल जलराशि पर अजेय ताजमहल का बहुत भव्य फोटो छापा। उस तरफ दैनिक जीवन अवश्य अस्तव्यस्त क्या, ध्वस्त हो गया। इस तरफ कुछ दिन पेय जल की दिक्कत रही, वाटर वर्क्स में पानी भर गया था। अब स्थिति सामान्य हो रही है। 'बैठा हूँ मैं केन किनारे'। अब तो केन तुम्हारे घर के आसपास पहुँची हो गी। मालकिन का स्वास्थ्य कामचलाऊ ठीक है। मैं भी ठीक हूँ।

सप्रेम  
रामविलास

प्रिय केदार,

कार्ड में तुम्हारी कविताएं मिलीं। आजकल कविता का नाम सुनते ही हम बीमार हो जाते हैं। कैफियत संलग्न कार्ड में देखो।

सस्नेह

रामविलास शर्मा

४-११-७८

४-११-७८

प्रिय केदार,

आधुनिक कवि नं० १६<sup>1</sup> पुस्तक मिली।

तुम्हारा कविता-कार्ड मिलने पर मैंने तुम्हें बांदा से प्राप्त एक कविता-कार्ड अपनी चिट्ठी के साथ भेजा था, मिला या नहीं?

सप्रेम

रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

८-११-७८

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा वह लिफाफा मुझे मिल गया था जिसमें तुमने कृष्णमुरारी पहड़िया<sup>2</sup> का कविता वाला, पोस्टकार्ड रख कर भेजा था।

मेरा 'आधुनिक कवि' वाला काव्य-संकलन भी तुम्हें मिल गया, यह बात जान कर चिन्ता दूर हुई। आजकल डाक-विभाग अक्सर सामग्री खो देने का अभ्यस्त हो गया है।

आशा है कि मालकिन की तबियत ठीक चल रही होगी।

हम ठीक हैं। दिसम्बर में मद्रास जाना है।

रेडियो से सुबह ६ बजे मालूम हुआ कि इन्दिरा गांधी ६३,००० से अपने प्रतिद्वन्द्वी से आगे हैं।

राजनीति अभी पलटे खायेगी और जल्दी भविष्य में स्थिरता न पा सकेगी, ऐसा लगता है।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

- 
1. केदारजी की कविताओं का यह संकलन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से प्रकाशित हुआ है। [अ० त्रि०]
  2. बांदा निवासी कवि। अब दिवंगत [अ० त्रि०]

166 / मित्र संवाद

बांदा

१४-१२-७८

प्रिय डाक्टर,

आज अभी कचहरी के डाकखाने से मैंने अपनी नई कविता पुस्तक-पंख और पतवार-रजिस्ट्री की है।

मिलने की सूचना मुझे नीचे लिखे पते पर देना।

मैं मद्रास जा रहा हूँ।

१ महीने तो रहना ही होगा। वहां से सूचित करूंगा। कुशल से होओगे।

**पता मद्रास का**

C/o Ashok Kumar

19, Thirmurthy Street,

'T' Nagar, Madras 17

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

१८-१२-७८

प्रिय केदार,

'पंख और पतवार' की प्रति मिल गई।

कल डाक्टर मेरी पत्नी को देखने आये थे। रक्तचाप १८०/९० था। साल भर से इतना ही रहता है, इसके ऊपर जाता है, नीचे नहीं आता। उनका शरीर अपने भीतर इतनी दवाएं जड़ कर चुका है कि अब दवाएं बे असर होने लगी हैं।

मैं सबेरे डेढ़ घंटा अपनी भाषा विज्ञान की कभी न खत्म होने वाली किताब पर काम करता हूँ, बाकी समय पत्नी से बातें करता हूँ, रेडियो सुनता हूँ या आराम करता हूँ।

आशा है, तुम्हारा तमिलनाडु प्रवास सुखद हो गा।

तम्हारा

रामविलास

19, Thirumoorthy Street

T Nagar,

Madras 17

१७-१-७९

प्रिय डाक्टर,

-यहां आया तो तुम्हारा पत्र मिला। २०/१२ से यहां हूँ। अभी कब तक रहूंगा-पता नहीं। बेटा केरल है। उसके बेटा हुआ है। मां-बेटा ठीक हैं। हम दोनों यहीं घर में

रहते हैं। अभी व्यस्त रहते हैं। इससे पत्र नहीं लिख सका। आशा है कि मालकिन अब तो कुछ स्वस्थ हुई होगी। यह रोग भी अजीब रोग है। शरीर को निकम्मा कर देता है।  
-पुस्तक तो सारा समय चाट जाती होगी। अभी कितने दिन और....?  
-मास्को से मार्क्स वाला तुम्हारा अनुवाद छपा या नहीं?

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)

१९-४-७९

प्रिय डाक्टर,

-बहुत दिनों के बाद पत्र लिख रहा हूँ।  
-आशा है कि स्वस्थ और प्रसन्न होओगे।  
-मालकिन भी ठीक होंगी।

-मद्रास [से] आने के बाद कचहरी के पड़े हुए काम में लग गया। कुछ व्यस्त रहा। इससे सूचना न दे सका। मद्रास में ठीक रहा। बेटे के बेटा हुआ। २<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [ढाई] महीने रहा। वे लोग ठीक हैं। बेटा काम में व्यस्त है। एक हिन्दी प्रचारक समिति की तरह की साहित्यानुशीलन [साहित्यानुशीलन] समिति में वहाँ के हिन्दी प्रेमियों की काव्य गोष्ठी हुई। मेरा कविता पर वक्तव्य हुआ। कविता पाठ हुआ। बड़ा सुखद अनुभव हुआ।

अभी हाल में सागर वि० वि० गया २ दिन रहा। हिन्दी विभाग में मेरा २ घंटे का वक्तव्य कविता पर हुआ और फिर काव्य-पाठ हुआ। नागार्जुन और भगवत रावत भी थे। सारा समय मैंने ले लिया। इससे वे एक-एक ही कविता सुना सके। मैंने जिन्दगी में पहली बार इतना खुल कर कविता पर पूरी बात की। लोगों को बात पसन्द आई। अविस्मरणीय दिन बीते। वि० वि० का Location भी बड़ा काव्यमय है। रात बिजली की रोशनी में पूरा परिवेश खिल उठता है। धन्य हैं हरीसिंह गौड़ जिन्होंने यह सुलभ किया।

भाषाविज्ञान अब कहां पर है? पत्र देना।

सस्नेह तु० केदार

२४-४-७९

प्रिय केदार,

बांदा से बाहर घूम आने पर तुम्हारे पत्रों में जो ताज़गी रहती है, वह १९/४ के कार्ड में भी है। तुम्हें अनुकूल वातावरण और श्रोता मिले, सुखद अनुभव हुआ, इससे मन खूब प्रसन्न हुआ।

168 / मित्र संवाद

यहां कमरे में चैत है, बराम्दे में बैसाख है। घास झुलस गई है पर गुलमुहर फूलों से लाल हो उठा है।

भाषा विज्ञान का दूसरा किनारा अभी दूर है पर पहले दो खंडों के छपने में समय लगे गा, तीसरा खत्म करने की जल्दी नहीं है। अधिक समय आराम करता हूँ।

सप्रेम  
रामविलास

बांदा  
8-11-79

प्रिय डाक्टर,

इधर पत्र नहीं लिख सका। पत्नी का हाथ fracture हो गया था। ५-६ महीने से उसी का इलाज हो रहा है। अभी पूरा बल नहीं मिलता।

-डा० कमला प्रसाद का सागर से पत्र आया था। वे लिखते हैं कि मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ८ व ९ दिसम्बर के अधिवेशन में तुम सम्मिलित होओ और उसका उद्घाटन करो। मैंने तो उन्हें अभी लिखा है कि तुम व्यस्त हो पुस्तक लिखने में। जा न पाओगे। यदि फुरसत हो तो वैसा कमला प्रसाद को लिख दो। उनका विचार है कि वे तुमसे मिलें और कहीं और तुम्हें भोपाल जाने के लिए राजी करें। जैसा भी हो सूचित करना [ ] मुझे भी बुलाया है। पर मैं तो कचहरी में व्यस्त रहूँगा। मैंने उन्हें इसी आशय का पत्र लिख दिया है आज ही। आशा है कि सकुशल होंगे।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

आगरा-२  
१२-११-७९

प्रिय केदार,

तुम्हारा ८/११ का कार्ड मिला। तुम्हारी पत्नी के हाथ के फ्रैक्चर के समाचार से बहुत दुख हुआ। प्लास्टर उतरने के बाद सामान्य स्थिति काफी समय बाद हो पाती है। तुम इन दिनों बहुत परेशान रहे हो। उनके पूर्ण स्वस्थ होने के लिए मेरी मंगल कामना है।

मध्य प्रदेश? बहुत दूर है। मैं आगरे की ही किसी गोष्ठी में शामिल नहीं होता। पत्नी को छोड़ कर कहीं जा नहीं सकता और अपना शरीर भी यात्रा के काबिल नहीं।

पटेल वि० वि० वल्लभनगर के कुछ शोध छात्र आये थे। उनमें एक तुम्हारे ऊपर काम कर रहा है। शेष कुशल।

सप्रेम रामविलास

मित्र संवाद / 169

बांदा

२४-१२-७९

प्रिय डाक्टर,

रेडियो में सूचना मिली कि पंद्रह हजार का पुरस्कार पा गये हो। बेहद खुशी हुई।  
हार्दिक बधाई।

और क्या हाल हैं?

मैं तो बांदा से बाहर अब जा ही नहीं पा सकता पत्नी के कारण। कभी-कभी पत्र  
लिख दिया करो।

घर के हालचाल ठीक ही होंगे। तुम्हारी पुस्तक तो अब पूरी हो गयी होगी?

यहां शीत प्रकोप भरपूर चल रहा है। आगरा भी इसमें बहादुरी दिखा रहा होगा।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

३०-१२-७९

प्रिय केदार,

तुम्हारा २४/ १२ का कार्ड मिला। प्रसन्नता हुई! वैसे “पुरस्कार पा गये हो” कहना  
सही नहीं है। अभी पुरस्कार देने की घोषणा भर हुई है। पर तुम्हारा आशय ठीक है।

तुम “बांदा से बाहर अब जा नहीं”; सकते। अपनी यह हालत बहुत दिनों से है।  
अभी साथ दे रही हैं।

मेरी पुस्तक संभवतः अगले साल समाप्त हो जायेगी। बहुत थोड़ा काम हो पाता  
है।

आज सबेरे घना, कुहरा था; शीत लहर की सी टंडक थी। तुम्हारी पत्नी को हम  
दोनों का सप्रेम अभिवादन

तुम्हारा

रा० वि० शर्मा

बांदा

१६-७-८०

प्रातः ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

मैं १०/७ को यहां से कुतुब ट्रेन से, दिल्ली गया। दामाद के घर; वहां उनकी माता  
जी की तेरहवीं में शामिल हुआ ११/७ को। फिर वहीं रहा। १३/७ को शाम ५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े

पांच] बजे कुतुब से चला और यहां १४/७ को सुबह ३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े तीन] बजे आ गया। घर की चिन्ता लगी रही थी। आगरा कैंट व राजामंडी स्टेशनों से गाड़ी गुजरी, रुकी। देखता रहा। सोचता रहा अपनी असमर्थता और विवशता पर कि तुमसे मिलना न हो पाया। दिल्ली में भी था तभी मन जोर मार रहा था कि भग चलूं पर जानते हो कि मौका और माहौल कहीं और जाने को नहीं होता। इससे मन मसोस-मसोस कर रह गया।

—आशा है कि तुम और मालकिन दोनों ही सकुशल होंगे। इधर बहुत दिनों से तुम से कोई जानकारी नहीं हुई कि क्या कुछ कर रहे हो। अब तो भाषा का सागर पार कर गये होंगे और धीर चित्त हो कर हम सबको फिर से याद करने की स्थिति में होंगे।

‘कथन’ में तुम्हारा वक्तव्य पढ़ा। ठीक है। दिल्ली में विश्वनाथ त्रिपाठी ने भी उसकी चर्चा की। यशपाल और राहुल पर जो तुमने कहा था तब और अब वह सत्य है। मुक्तिबोध के बारे में भी तुमने ठीक ही टिप्पणी की। इन तीनों के समर्थकों में अब फिर खलबली मचेगी और चिल्लपों चालू होगी। शिव वर्मा का वक्तव्य तो सब समेट वक्तव्य है। सत्य से उन्होंने साक्षात्कार किया ही नहीं। राजनीति के महापुरुष और प्राण हैं। साहित्य तो उनकी पैठ से परे है। खैर। अपनी-अपनी रुचि है। अपने-अपने संस्कार हैं।

—डंके की चोट पर बात कहने वाले तुम्हीं हो जो सत्य के साथ जी रहे हो, और लिख रहे हो। दूसरे बहुत से लोग तो सतही तैराकी करते हुए ऊपर-ऊपर ही फिसल रहे हैं। पानी में गहरे पैठ कर आबदार मोती नहीं ला रहे। यह क्रम ही चलता रहेगा। बड़े-बड़े दिग्गज देखे-सबके सब नकली देखे-नक्काल देखे और स्वार्थ सिद्ध [सिद्धि] में लगे देखे।

—छोटी पत्रिकाओं के कुछेक लोग अवश्य इन दिग्गजों से अलग चल रहे हैं और अच्छा लिखने का प्रयास कर रहे हैं। साहित्य सरमायादारी का शिकार बनाया जाता रहा है और वही क्रम अब भी चालू है।

—पत्र अवश्य देना।

—पानी रात से ही पटापट पड़ रहा है।

—शहर नहा रहा है—जुड़ा रहा है।

बन्द होने का नाम नहीं लेता।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

२३-७-८०

प्रिय केदार

तुम्हारा १६/७ का पत्र मिला।

पिछले दिनों यहां मुंशी अपने साले के लड़के के ब्याह में आये थे। तुम्हारा पत्र पढ़ कर प्रसन्न हुए और तुम्हारे गद्य की प्रशंसा की। कल वापस गये। मुंशी हाथ का लिखा



एक अनियमित पत्र 'सचेतक' निकालते हैं। कभी दिल्ली जाओ और मौका मिले तो मुंशी से मिलना और वह पत्र देखना।

तुम कुतुब से दिल्ली गये और लौटे। मुझे लिख देते तो मैं थोड़ी देर को ही सही, तुमसे मिल लेता। खैर!

भाषा विज्ञान वाला काम समाप्त हो गया है। कुछ हिस्से दोहराना बाकी है। जैसे जैसे यह काम समाप्त की ओर बढ़ा, जैसे जैसे मन बहलाने के लिए मैं कुछ राजनीतिक पुस्तकें पढ़ता था। धीरे-धीरे एक किताब का मसौदा तैयार होने लगा। भारत के आर्थिक विकास पर, अंग्रेजी राज की भूमिका पर, अंग्रेजी राज से संघर्ष पर, और मार्क्सवाद के कुछ पक्षों पर लिखने का विचार है। इस काम में शायद साल भर लगे। काम बहुत धीरे-धीरे हो पाता है। इसलिए कह नहीं सकता, कब पूरा हो ही जायगा।

पानी यहां भी काफी बरसा है। हमारा शहर पके आम की तरह गलक रहा है, भीतर से सड़ भी रहा है।

हम लोग सकुशल हैं। आशा है, वहां सब लोग स्वस्थ होंगे।

सप्रेम तुम्हारा  
रामविलास

२८-७-८०

प्रिय केदार,

'विचारबोध' प्राप्त हुआ। प्रकाशन पर बधाई।

मेरा अन्तर्देशी तुम्हें मिल चुका होगा।

सप्रेम  
रा० वि० शर्मा

बांदा  
३१-७-८०

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारे दोनों पत्र (१३/७ व २८/७) मुझे मिले।

मुझे पता नहीं वह पत्र कौन-सा था जो मुंशी को अच्छा लगा। उनसे तो बरसों तक मिलना नहीं हो पाता। वह रहते भी तो दिल्ली में ऐसी जगह हैं जहां तक जाना किसी बूढ़े के लिए सम्भव नहीं है। इसलिए उनके पास वह पत्र देख सकना कतई मुमकिन नहीं है।

फिर व्यस्त हो गये तुम एक नई किताब के लिखने में। यह रोग भी संक्रामक होता है। छूटता ही नहीं। चाहे कोई कितना ही कहे सुने और लानत भेजे। बहुत अच्छा है

कि तुम मार्क्सवाद के कुछ पक्षों पर लिखने के लिए कमर कस रहे हो। अपने राम को समझने-बूझने का अवसर मिलेगा।

खूब लिखते हो कि आगरा पके आम की तरह गलक रहा है। बहुत बरसों बाद यह शब्द सार्थक हुआ है। है कोई माई का लाल जो इसका प्रयोग अपनी साहित्यिक कृति में कर सके और एक ही शब्द से सब कुछ कह डाले और फिर दूसरे कलेजा थाम कर रह जाएं। आगरा ही नहीं हर शहर ऐसा ही है। लोग हैं कि नयेपन की दौड़ में अब भाषा का भी अतिक्रमण करते हैं और बड़ी शान से बड़े बौद्धिक बन कर चहलकदमी करते हैं। इस तरह भाषा को पकड़ें और कहें तब जानें। खैर।

पोस्टकार्ड की बधाई मिली। मैंने इसलिए पुस्तक नहीं भेजी कि बधाई ले कर-शहद लगा कर चाटूं। जरा देखना-हमें भी समय देना-जो कुछ कहा है उस पर गौर करना और गलत-सही की पहचान कराना वरना हम बेवकूफ-के बेवकूफ बने-बने मर जायेंगे और हम भी 'गलकेंगे' ही।

-और सब पूर्ववत् है।

-आशा है कि मेरे इस खलल डालने पर तुम्हारा ध्यान-भंग न होगा और जो काम कर रहे हो उसे करते रहोगे और वहीं से बैठे-बैठे मुझ पर हंसते रहोगे।

मालकिन की तबियत का no जिक्र any where in your letter. हमारी तो हमसे सेवा करा रही हैं। आजकल बड़ी बिटिया आई है। इससे फुरसत भी मिल जाती है।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

१०-८-८०

प्रिय केदार,

तुम्हारा ३१/७ का पत्र मिला।

भाषावाली किताब पर काम करते मुझे दस साल हुए। ये दस साल मेरी पत्नी की बीमारी के भी हैं। इस बीच दो तीन बार वह बिदा होते होते लौट आईं। सबसे खराब दिन तब बीते जब बेहोशी की हालत में डाक्टर उन्हें नर्सिंग होम ले गया और २४ घण्टे के लगातार उपचार के बाद होश में आईं। हफ्ते दस दिन बाद घर आईं और कई महीने बाद शैया सेवन के बाद फिर उठ कर खड़ी हो गईं। उनका रक्तचाप पहले १८०/९० तक पहुँचता था, अब २००/११० के ऊपर पहुँचता है। दस साल से वह निरंतर दवा खा रही हैं और डाक्टर हिसाब लगाये रहता है कि यह दवा जब बेअसर हो जाय गी तब दूसरी कौन सी दे गा। साल के अधिकतर समय हम दोनों इस घर में अकेले रहते हैं। मैं उन्हें छोड़ कर अब घर से निकलता नहीं क्योंकि एक दिन उन्हें चक्कर आया, मैं पास में ही

था और मैंने उन्हें थाम लिया, वरना वह गिर पड़तीं। सबरे चालीस मिनट के लिए घूमने जाता हूँ, २० मिनट के लिए दूध लेने जाता हूँ, महीने में एक बार दवाएं लेने जाता हूँ। बाकी समय घर में रहता हूँ। उनके सो जाने पर जब उनकी सांस की लय कभी कभी सुनता हूँ तो मुझे वह दुनिया का सबसे मोहक संगीत लगता है।

घर की ऐसी परिस्थिति में किताब लिखना सुख का काम नहीं है। पर डेढ़ सौ साल से भाषा विज्ञान के नाम पर बड़े बड़े विद्वान् भारत के बुद्धिजीवियों को बेवकूफ बना रहे हैं और मार्क्सवादी क्रांतिकारी उनका फरेब न समझ पाकर उनके भाषा विज्ञान से अपनी राजनीति को प्रभावित होने देते हैं। मुझे विश्वास था कि मैं भारतीय भाषा परिवारों के बारे में नयी मान्यताएं प्रस्तुत कर सकता हूँ जो देश की सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रगति में सहायक होंगी। पुस्तक समाप्त करते करते मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया। 'मार्क्सवाद और भारत में अंग्रेजी राज' के बारे में मेरी किताब इसी सिलसिले की एक कड़ी है। मेरी समझ में मार्क्स और एंगेल्स ने पूंजीवाद, मजदूरवर्ग, किसान, उपनिवेश, जातीयता, इन सभी मुद्दों पर कम्युनिस्ट घोषणापत्र में जो कुछ कहा है, उसमें आगे चल कर मौलिक परिवर्तन किया है। इस बात पर किसी ने नहीं लिखा पर मार्क्सवाद की जानकारी के लिए इस बात पर लिखना जरूरी है। मुझे विश्वास है कि मैं यह काम कर सकता हूँ।

पर काम बहुत थोड़ा कर पाता हूँ। पिछले दस साल में जैसा जीवन रहा है, उसका प्रभाव मन और शरीर पर पड़ा है। मैं ज्यादा देर तक पढ़ नहीं पाता, थक जाता हूँ। कोई देर तक बात करता है तो उसकी बात सुनना भूल जाता हूँ और मन कुछ और सोचने लगता है। इस हालत में जो बहुत ही जरूरी काम होता है यानी मेरे विचार से जो सबसे ज्यादा राजनीतिक महत्व का काम होता है, वही करता हूँ। और बाकी समय आराम करता हूँ। तुम्हारी किताब पर मुझे लिखना चाहिए, मैं जानता हूँ। नहीं लिखा, इसका मतलब है कि लिखने की स्थिति में नहीं हूँ। कभी हुआ तो तुम्हारे कहे बिना लिखूँगा। पत्नी की सेवा कर रहे हो; मेरे मित्र को यह करना ही चाहिए। सेवा धर्म निबाहने में सफलता की कामना सहित—

रामविलास

बांदा

१८-२-८१

प्रिय डाक्टर,

कल 'पंचरत्न' की प्रति डाक से मिली।

—पढ़ रहा हूँ। वैसे इनमें से अधिकांश लेख पहले के पढ़े हुए हैं। हम भी इसमें विराजमान हैं। सन् १९७० जुलाई याद आ गई।

—इधर उत्तर प्रदेश सरकार के हिन्दी संस्थान से मुझे भी पन्द्रह हजार पुरस्कार

प्रदान किया गया है। पहले तो विश्वास नहीं हुआ। बाद में पत्र आया, वहां से तब निश्चय रूप से ज्ञात हुआ। पता नहीं यह किसकी उदारता और कृपा की भेंट है।

—तुम्हारा अध्ययन चल रहा होगा। व्यस्त होओगे ही। फुरसत का नाम न होगा। कहां तक पहुंचे। क्या दूसरी पुस्तक भी (राजनीति पर) शुरू हो गई?

—मैं तो घर पर ही रहता हूँ। बाहर जा नहीं पा रहा। यही हाल तुम्हारा है ही।

—नन्दकिशोर नवल का पत्र पटना से आया था कि तुमने उनसे मेरी कविता की तारीफ की थी। पर तुम्हें पूरी याद न रही होगी। माने ही बता सके थे।

—उसे भी लिख रहा हूँ—

‘रंगेबिरंगे [रंग-बिरंगे] फूलों की बौछार से  
गंध-गमक की मादक मीठी मार से  
हार गया करतार कलाकर  
अपने ही दरबार में  
अपना मुकुट उतार के  
मुक्त हुआ भव-भार से।’

—एकाध पत्र जरूर भेजना।

—पत्र पा कर दिल जमई होती रहती है।

शेष सब वैसा ही है।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

२७-२-८१

प्रिय केदार,

मेरे दो मित्रों को आजीवन हिन्दी सेवा के लिए विशिष्ट पुरस्कार मिल रहा है, यह मेरे लिए प्रसन्नता के साथ गर्व की बात भी है। अमृतलाल नागर के बारे में सूचना मिली थी, तुम्हारे बारे में पता न था। बधाई।

मेरी किताब अभी एक चौथाई पूरी हुई है। बहुत समय ले रही है और काम धीरे-धीरे हो पाता है। मुझे तुम्हारी कविता याद थी और मैंने हरि नारायण मिश्र को लिखा दी थी। तुमने पत्र में जो लिखा है उसमें कुछ पाठान्तर है। ‘गंध गमक की मादक मीठी मार से’—यह पंक्ति पहले नहीं थी। ठीक है?

‘म’ की चार बार आवृत्ति रंगों से ध्यान खींच कर गंध की बात—मुझे पहले वाला पाठ पसन्द है। करतार कलाकार आसमान से रंग देखता है, गंध से दूर है।

सप्रेम—रामविलास

बी-३ B/66A, जनकपुरी

नयी दिल्ली-110058

२७-११-८१

प्रिय केदार,

सितम्बर में मेरी पत्नी की बीमारी ने नया रूप लिया, उनके हृदय का एक वाल्व पहले भी ठीक से काम न करता था, अब उन्हें सांस लेने में कठिनाई होती थी, जिगर बहुत बढ़ गया था, रात को नींद न आती थी और भोजन लगभग छूट गया था। आगरे में उपचार से लाभ होते न देख कर हमलोग यात्रा का जोखिम उठा कर उन्हें यहां १० नवम्बर को ले आये। अब वह अस्पताल से छुट्टी पा कर पुत्र विजय के पास हैं। हालत में सुधार हुआ है। सांस नहीं फूलती। रात को नींद आ जाती है। वाल्व ठीक से काम नहीं करता, इसलिए उनका रोग कभी भी चिन्ताजनक रूप धारण कर सकता है। फिलहाल उनके स्वास्थ्य में जो सुधार हुआ है, उससे हम लोगों को सन्तोष करना चाहिए। आशा है, तुम सपरिवार सकुशल हो।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

७-१२-८१

प्रिय डाक्टर,

दिनांक २७-११-८१ का पोस्टकार्ड मिला। यह तो मुझे श्री नवल<sup>2</sup> के पत्र से मालूम हो गया था [कि] मालकिन की तबियत ज़्यादा ख़राब है—विदेश ले जाने की बात आई है। तभी मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखा कि परेशान होगे। चिट्ठी भी क्या लिखूं। आगरे में होओ या न होओ।

---

1. इस अन्तर्देशीय पत्र के बीच के ऊपर-नीचे के कोने गायब हैं। इन हिस्सों के शब्द अनुमान से [ ] के भीतर दिये गए हैं। कोष्ठक के अन्दर के शब्द—‘कि’, ‘है’ और ‘कल’ संशोधन के रूप में हैं। [अ० त्रि०]

2. डॉ० नन्दकिशोर नवल, पटना। [अ० त्रि०]

अब पोस्टकार्ड पाकर बेहद दर्जे की दिली खुशी हुई कि मालकिन अब रात को सो लेती हैं। उनकी सांस नहीं फूलती। लक्षण अच्छे दिखते हैं। हृदय के एक वाल्व की खराबी के कारण जो न तकलीफ उठानी पड़े वह कम क्या होगी। मेरा तो दिल ही ऐसा सुन कर कांप जाता है कि तुम्हारी तरह मेरा भी हाल हो जाता है। पर आदमी को सब सहना पड़ता है, सहे चाहे रो कर चाहे हंस कर; गम्भीर रह कर, धैर्य धारे।

—डियर समझ में नहीं आता कि मैं कैसे तुम सबसे मिल कर तुम्हारे दर्द को तुम्हारे साथ भोगूँ। पर इतना आत्मविश्वास तो है कि तुम्हें सामने देख कर मालकिन [का रोग दूर भाग] जाता होता। पास में जीवन का इतना [धैर्यवान] साथी हो तो पहाड़ भी टूट पड़े तो लगोगा [कि] तिनका टूटा है। भोगने वाले में उत्कट जिजीविषा जाग पड़ती है। मैं तो समझता हूँ कि ऐसी स्थिति में खराब वाल्व भी कुछ हद तक सही काम करने लगा होगा। वैसे चिन्ता की बात तो है ही। शरीर धर्म जब छूटने लगता है तब केवल जागरूक चेतनाजीवी आदमी ही सम्हले-सम्हले सांस लेता और छोड़ता है, महाकाल को एक प्रकार से चुनौती देता हुआ। भाई, तुम सब लोगों का दुख दूर हो-जल्दी से मालकिन अच्छी हो जायें और फिर तुम्हें देख-देख कर खिली-खुली धूप की तरह, हंस पड़ें और तुम महसूस करो कि शिरीष के फूल ही फूल तुम पर बरस रहे [हैं]। देखो उनके सामने तुम धैर्य न खोना। बीमारी की दशा में मार्क्स पत्नी के साथ कमरे में दिल की दुनिया की बातें कर रहे थे। तभी उनकी बेटी भी वहां पहुंच गई थी। वह दोनों को ऐसे घुल-मिल कर बतियाते देख कर अविस्मरणीय रूप से, [आनन्द] से विभोर हो गई थी। वही दशा [मैं यहां से बैठे]-बैठे, देख रहा हूँ और वैसा ही आत्मविभोर हो रहा हूँ। दोस्त इस [समय] लेनिन पर लिखी विश्वनाथ त्रिपाठी की, कह [कल] ही पढ़ी कविता भी इस समय, पत्र लिखते वक्त, बार-बार याद आ रही है। इसमें उन्होंने कहा कि उनकी आंखों के वे सभी आंसू बादल बन कर बरसे और अन्न, रंग, स्वास्थ्य और इन्द्र धनुष हो-हो गये। यही बरसात समाजवाद है। तुम भी तो यही हो। उन्हीं की तुम पर लिखी कविता भी याद आई कि तुम टुच्ची सुविधाओं को रौंदते हुए, तद्भव शब्दों से कसे छोटे-छोटे जुमलों से जोकों और घड़ियालों की पीठ पर बिजली के कोड़े बरसाने वाले अटूट आस्थावान जीवन जीने वाले मेरे दोस्त हो।

—मैं इतना सब न लिखता। पर जी न माना। तुम जैसे आदमी को भी हम जैसों की दिलजोई चाहिए।

अपनी ज़िन्दगी है जैसी है। अभी इस समय अपनी न कह कर तुम्हें ही [यह] पत्र लिख रहा हूँ। मालकिन को नमस्कार। हाल लिखना। सबको सलाम।

सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

१६-१-८२

४-१/२ [साढ़े चार] बजे सुबह

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारे २७/११ के पत्र पाने पर मैंने एक पत्र लिखा था। इसी पते पर। किन्तु पता नहीं कि वह तुम्हें मिला या नहीं। फिर तो तुमने कोई चिट्ठी नहीं भेजी? अब हालत कैसी है? लाभ तो हो रहा होगा। यदि अड़चन न हो तो दो आखर लिख देना या लिखवा देना।

—हम अपनी कुछ न कहेंगे। जमें हैं। सिर पर सब ओढ़े हैं। लोढ़े की तरह जिन्दगी की सिलौटी रगड़ रहे हैं। खुद ही पिस भी रहे हैं।

मुंशी भी तो जनकपुरी में रहते हैं। नववर्ष की शुभकामनाओं का ग्रीटिंग कार्ड आया था। उसे पा कर ऐसा लगा कि हम कुंए में थे—किसी ने पुकारा और हम वहां से तत्काल बाहर आ गये। फिर वहीं पहुंचे जहां थे।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

१८-१-८२

प्रिय केदार,

१६.१. का कार्ड मिला। इससे पहले वाला पत्र यथासमय मिल गया था। फुर्सत की तलाश में इतने दिन निकल गये। वैसे दो तीन कार्ड कहीं न कहीं रोज ही लिखने होते हैं। तुम्हारे पिछले पत्र से मुझे तुम्हारी परेशानी का आभास मिला था। इस कार्ड से वह और भी स्पष्ट है 'हम अपनी कुछ न कहेंगे।' नहीं, कह डालो। कोई दुख नहीं बँटा लेता पर कहने से मन का बोझ कुछ कम हो जाय शायद। मालकिन की हालत संतोषजनक है, सांस नहीं फूलती, नींद आती है, रक्तचाप और मधुमेह नियंत्रण में हैं। मेरी मझली लड़की सेवा के कष्ट के बारे में अक्सर सोचा करती हैं। दिवाली के आसपास स्कूटर से गिरने के कारण पैर की हड्डी टूट गई थी। खंभात में ठीक उपचार न होने से घाव से खून आता रहा। महीने भर बाद बड़ौदा के अस्पताल में भर्ती कराया। तब से वहीं थी, अब बैसाखी या किसी चीज के सहारे खड़ी हो जाती है। खंभात आ गई हो गी। दो महीने बाद प्लास्टर कटे गा। अच्छा, 'जिन्दगी की सिलौटी' की व्याख्या जरूर करना। जवाब तुरन्त दूं गा।

प्यार

रामविलास

178 / मित्र संवाद

B-3B/66A जनकपुरी

नयी दिल्ली-110058

१-२-८२

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६ जनवरी ४-१/२ [साढ़े चार] बजे सुबह का कार्ड यथासमय मिल गया था और उसका उत्तर तुम्हें मैंने तुरत भेज दिया था, इधर मेरे कई कार्ड कई लोगों को नहीं मिले, इसलिए आज पहली फरवरी को सबेरे ६-१/२ [साढ़े छः] बजे तुम्हें यह कार्ड फिर लिख रहा हूँ।

मेरी पत्नी का स्वास्थ्य अब लगभग वैसा है, जैसा पिछले साल इन्हीं दिनों था। यह उनके और मेरे लिए संतोषजनक स्थिति है। यद्यपि जनकपुरी दिल्ली से अलग नगरी है, फिर भी लोगों से भेंट मुलाकात होती रहती है। अपना हाल अवश्य लिखना और जल्दी।

सस्नेह

रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल

एडवोकेट

सिविल लाइन्स

बांदा (उ० प्र०)

दिनांक ३-२-८२

प्रिय डाक्टर,

—पहले वाला पत्र मिल गया था। आज फिर १/२ का पत्र मिला।

—हार्दिक प्रसन्नता हुई कि मालकिन की हालत ठीक चल रही है और इससे बढ़ कर दूसरी बात हो ही क्या सकती है।

—अपने बारे में कुछ न लिखूंगा। नीचे लिखी कविताएं भेजता हूँ। वही मेरी मनोदशा की साक्षी है।

१. गये लौट चार दिन के बाद / घिरे घुमंडे, भीड़ का मंडल  
बनाये, कर रहे उत्पात / दीप्त मन्दिर मारतंडी को छिपाये /  
श्याम वर्णी आसुरी आकाश में सिक्का जमाये / गाजते हैं  
वरुण के बदमाश बेटे मेघ।
२. झरने-झरने को गुलाब है झुका हुआ / केवल अनुमोदन  
पाने को रुका हुआ।



३. मुग्ध, ठगा-का-ठगा खड़ा मैं / चांद देखता रहा, हृदय की  
आंखें खोले / बंधा-बिंधा प्राकृत प्रकाश के / अनपाये  
प्रिय को अपनाये / जैसे पहली बार !  
और रुका-का-रुका रहा शशि / मुझे देखता हुआ,  
मंडलाकार प्रदीपित / बंधा-बिंधा भू की प्रतिभा के  
अनपाये कवि को अपनाये / जैसे पहली बार !
४. मैंने आंख लड़ाई / गगन-विराजे राजे रवि से, शौर्य में /  
धरती की ममता के बल पर / मैंने ऐसी क्षमता पाई ।  
मैंने आंख लड़ाई / शेषनाग से, अंधकार के द्रोह में /  
जीवन की प्रभुता के बल पर / मैंने ऐसी दृढ़ता पाई ।  
मैंने आंख लड़ाई / महाकाल से, मृत्युंजय के मोद में /  
अजर-अमर कविता के बल पर /  
मैंने ऐसी विभुता पाई ।
५. तुमने / हमको मारा / मार-मार कर फिर-फिर मारा /  
हमें मार कर तुमने अपना स्वांग संवारा /  
और हमारा स्वांग उतारा /  
अरे, विदूषक !  
हिंसक है हठयोग तुम्हारा /  
दारुण है दुख-योग हमारा ॥

बस डियर ! इस वक्त इतना ही । कलम चलाने में अंगुलियां करकने लगती हैं । आज फिर सबेरे से वही बादली शीत जम कर हैरान किये है । जरा देर को सौभाग्य से, सूरज ने ११ बजे दिन को, अपनी मुड़िया निकाली तो हमने धूप लोकी और कपड़े उतार कर नहाये; पर फिर वही मुंह चोरव्वल शुरू हुई और अब भी नज़र नहीं आ रहे गरम मिजाज सूर्य । पत्र पाकर समय हो तो, कुछ जुमले भेज देना । थोड़े लिखे को बहुत समझ लूंगा । सबको सस्नेह नमस्कार ।

तु०

केदारनाथ अग्रवाल

180 / मित्र संवाद

केदारनाथ

B-3B/66A जनकपुरी  
नयी दिल्ली-110058  
११-२-८२

प्रिय केदार,

मुग्ध उगा का उगा खड़ा मैं / चांद देखता रहा हृदय की आंखें खोले। यह तो हुआ तुम्हारा हाल। तुम्हारी कविताएं पढ़ कर मेरा जो हाल हुआ, वह इस प्रकार है : मुग्ध ठगा का ठगा खड़ा मैं/ सुनता रहा देर तक कविता-आंखें मीचे। तुम चांद के प्रकाश से बँधे और बिँधे, चांद तुम्हारी प्रतिभा से बँधा और बिँधा रह गया; उधर अनपाया प्रिय, इधर अनपाया कवि। अपनाये दोनों गये। हम दोनों के पलँग एक दूसरे से सटे हुए हैं। शरीर जुदा हैं, मन एक हैं, हम दोनों अनपाये हैं और दोनों एक दूसरे को अपनाये हैं—जैसे पहली बार!

चांद से छुट्टी मिली तो सूरज की तरफ निगाह फेरी। मैं आंख लड़ाई—पहले सूरज से; इस काम से सफलता मिली तो धरती के नीचे पहुँच गये। दुबारा आंख लड़ाई शेषनाग से—अंधकार के द्रोह में। प्रकाश और अंधकार दोनों पर विजय पाने के बाद बचा क्या? महाकाल—सो—मैंने आंख लड़ाई महाकाल से, मृत्युंजय के मोद में। धरती की ममता हो, जीवन की प्रभुता हो, तब कविता अजर अमर क्यों न हो? इस समय सरमद हमारे पास नहीं हैं, नहीं तो उनकी एकाध रुबाई तुम्हें जरूर लिख भेजते। बहुत कम कवि उनकी तरह अपने चारों ओर की असीम अनन्तता के प्रति इतने सचेत रहे हैं।

जो तुम्हें मार मार कर फिर मारता है, वह विदूषक ही होगा। पर उसके स्वांग पर हँसी नहीं आती। दुख रोग का दारुण अनुभव होता है। प्रहरति बिधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तलि जीवितम् (भूवभूति) विधाता मर्मच्छेदी प्रहार करता है किन्तु जीवन को समाप्त नहीं कर देता। इसलिए कि प्रहार कितना दारुण है, आदमी यह न भूले।

झरने झरने को गुलाब है। King Lear में कीट्स की एक प्रिय पंक्ति थी।  
Ripeness is all.

आसुरी आकाश में मारतंडी मन्दिर को छिपाये वरुण के बदमाश बेटे इस मौसम में डाटे जाने के ही काबिल हैं। मेरी पत्नी को भी इनसे भारी परेशानी हुई। रोज शिकायत करती हैं पर हम उन्हें घूर कर रह जाते हैं। डाटने लायक शब्द अपने पास नहीं हैं।

जहां तक याद है, इन कविताओं में नये स्वर हैं, पुरानी रचनाकारिता से आगे की मंजिल है। शुभा: सन्तु ते पन्थान :।

हमारे पड़ोस में पार्क है। मैंने एक छात्र से पूछा—तुमने यह पार्क देखा है? उसने कहा—उस तथा कथित पार्क से ही पहले इधर आया था, वह तो जंगल है।

इस जंगल से मिलने हम रोज़ शाम सबेरे पहुँच जाते हैं। जैसे कश्मीर घाटी चारों ओर पर्वतमाला से घिरी है, वैसे ही यह पार्क चारों ओर युकलिप्टस की घनी कतारों से घिरा है। कभी घना कुहरा, कभी एकदम रक्ताभ सूर्य का गोलक, हवा में बर्फीला तीखापन, आजकल झरते हुए पत्तों के साथ फागुन की आहट। कविताएं पढ़ने को जी चहता है। शेक्सपीयर, भवभूति, निराला सब आगरे रह गये। तुम्हारे पत्र ने एक भारी कमी पूरी कर दी।

‘अपने बारे में कुछ न लिखूंगा। न लिखो हम बहुत कुछ समझ गये। सारतत्व मिल गया, कुछ तथ्य, कुछ ब्योरा न मिला, तो न सही।

गुडलक ऐण्ड थैंक्स

प्यार के साथ  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

३-११-८२

प्रिय डाक्टर,

पुरस्कार मिलने की लाख-लाख बधाई।

—दो बार यात्रा भी मिली। यह विशेष प्रसन्न [प्रसन्नता] की बात है। जाओ जरूर।

—मालकिन अब तो पहले से ठीक होंगी। बहू की देखरेख में छोड़ कर जा भी सकते हो। उन्हें भी हार्दिक खुशी होगी।

—यहां तो वही पुराना हाल है। घर से बाहर कहीं दूसरी जगह जा भी नहीं सकता कि दिल्ली पहुंच कर मिल भेंट सकूं। वैसे मेरी तबियत अब ठीक है। ज्वर गया। जीवंतता लौटने लगी।

—७०वें जन्म दिन को तुमने सहर्ष मनाया। नागार्जुन ने लिखा कि तुम बेहद खुश हो। हम भी सम्मिलित होते हैं।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

८-११-८२

प्रिय केदार,

‘पुरस्कार मिलने की लाख लाख बधाई’ पुरस्कार से बढ़ कर है, क्योंकि पुरस्कार अभी मिला नहीं है!

‘दो बार यात्रा भी मिली’ बहुत खूब। दो हफ्तों की यात्रा तुम्हारी कवि कल्पना में दो बार की यात्रा बन गई है।

‘आलोचना’ के प्यारे-प्यारे लेख पर तुम्हें ढेर-सा प्यार। क्रान्ति की तरह कविता सुविचारित योजना और स्वतः स्फूर्त कार्यवाही का परिणाम होती है, इन दोनों का अनुपात हर क्रान्ति या कविता में एक-सा नहीं रहता। तुम्हारी कविता ऐसी है कि उसमें सहज बोध वाला आधार खूब पुष्ट है : मेरी सलाह है कि तुम उसका विश्वास करना और उसे कम करके न आंकना। ध्यान कविता रचना पर केन्द्रित रखना, उसकी व्याख्या की चिन्ता न करना। अच्छी कविता अपना मर्म शब्दों के भीतर छिपाये रहती है और उस तक लोग धीरे-धीरे पहुँचते हैं। Never seek to tell thy love, Love that never told can be.

सस्नेह—रामविलास

बांदा

२५-११-८२

प्रिय डाक्टर,

—परसों दोनों भाग<sup>1</sup> मिल गये। आभारी हूँ। प्रकाशक को भी पोस्टकार्ड से सूचित कर दिया है। तुम्हें भी सूचित कर रहा हूँ। भूमिका पढ़ गया। प्रत्येक अध्याय का सार मिला।

—बधाई है कि इतना समझा-समझा कर तुमने बात-दर-बात कही है कि कुछ भी अनकहा नहीं रह जाता। मूल स्थापनाएं खुलती चलती हैं। फिलहाल इतना है [ही]।

हां, दैनिक जागरण में तुम्हें दो बार रूस की यात्रा की बात छपी थी। मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ था। पर छपा देख कर विश्वास करना पड़ा। तभी मैंने अपने पत्र में इसके लिए बधाई दी। मैंने कवि कल्पना की उड़ान नहीं भरी थी।

—आज कल रह-रह कर कुछ-न-कुछ तकलीफ हो जाती है। चिन्ता नहीं करता। जीने की लालसा पूरी तरह बलवती है। जिलाये है।

आलोचना का अंक वह अंक निकल गया क्या? मिला नहीं।

सस्नेह—केदारनाथ अग्रवाल

---

1. सम्भवतः रामविलासजी की पुस्तक ‘भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद’ के दोनों भाग। [अ० त्रि०]

प्रिय केदार,

२९.११.८२

तुम्हारा २५/११ का कार्ड मिला।

‘आलोचना’ में तुम्हारा लेख छपा है। अंक ६ नवंबर को प्रकाशित हो गया था। मैंने राजकमल प्र० को लिखा है कि तुम्हें अंक नहीं मिला, भेजें।

दो बार की रूस यात्रा पत्रकार की कल्पना है, यह जान कर मज़ा आया। तुम्हारी कल्पना यथार्थोन्मुख है! इसलिए भ्रम न होना उचित ही था।

शेष कुशल।

तुम्हारा  
रा० वि०

बांदा

६.१२.८२

प्रिय डाक्टर,

—तुमने प्रकाशक को भेजने को लिखा। उसने ‘आलोचना’ (60-61) डाक से भेंट स्वरूप भेजा। वह अंक आज मिला, कचहरी से घर आने पर २ बजे। पढ़ूंगा। बेहद खुशी हुई तुम्हारी फोटो देख कर—नई है। संजोऊंगा।—हाल लिखना।

सस्नेह  
केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार,

१३.१२.८२

६/१२ का कार्ड मिला।

‘घर की बात’ जितनी ‘आलोचना’ में छपी है, पुस्तक रूप में प्रकाशित होने पर उससे लगभग दुगुनी हो गी। उसी को पूरा कर रहा हूँ।

मालकिन की एक आंख में मोतिया बिंदु है। आगे-पीछे आपरेशन कराना हो गा। इन दिनों मुख्य समस्या उनकी डायबिटीज़ की है; खूराक बहुत कम हो गई है।

मेरा लड़का विजय साल भर के लिए कनाडा गया हुआ है।

अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में लिखना। मालकिन पूछती हैं। कचहरी जाते हो, जान कर प्रसन्नता हुई।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

२८.१२.८२

रात ९ बजे

प्रिय डाक्टर,

—१३/१२ का पत्र मिला। मन प्रसन्न हुआ जैसे तुमने इस पत्र में दिल खोल दिया। वैसे पूरी तरह खुल कर 'घर की बात' तुमने पत्र में नहीं लिखी। पर इतना ही पर्याप्त है। मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे पत्र की प्रतीक्षा कर रहे हो। अब अधिक इन्तजार न कराऊंगा। लो यह छोटा (चुनूबादा) पत्र।

—मैं एक अध्याय पढ़ गया। दूसरा [दूसरे] अध्याय पर अभी नज़र नहीं दौड़ाई। पहली ही में रमा हूँ। जो-जो कुछ तुमने तर्क दिये हैं और जिस-जिस तरह से तर्कों को प्रस्तुत किया है वह देखते ही बनता है। भाषा की सीधी किसानी अभिव्यक्ति मन को मोह गई। कहीं भी तो विद्वता या पांडित्य का कोई पुट नहीं आ पाया। वास्तव में जनवादी गद्य है। बड़े सधे मार्के के वाक्य बिना भार के-कतार बांध कर आगे चले गये हैं। धन्य हो! फिलहाल इतना ही।

आलोचना का अंक अभी पुकार रहा है। मैंने अभी उनकी अनसुनी कर रखी है। यों ही देख गया हूँ। मनोयोग से रात में ही पढ़ूंगा। वैसे बहुत ही अच्छे ढंग से तुमने यह बात लिखी है। पत्नी वैसी ही हैं। बेटा और उसका परिवार आया। है।

बच्चों की धमा चौकड़ी मची है। अब सन्यास [संन्यास] टूटा। विजय को मेरी बधाई।

तु० सस्नेह केदार

२६.१.८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८.१२.८२ का कार्ड मिल गया था। पहली जनवरी को मालकिन बनारस गई। उनकी एक आंख में मोतिया बिंदु था और पक चुका था। दूसरी में भी उसकी शुरुआत हो गई थी। बनारस में आपरेशन की अधिक सुविधा थी, इसलिए मझले लड़के भुवन के साथ उन्हें वहां भेज दिया। विजय कनाडा गये हैं साल भर के प्रशिक्षण के लिए। इसलिए पुतहू संतोष और चिन्मय-तन्मय नातियों के साथ मैं यहां हूँ। परसाल को देखते मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

नागार्जुन यहीं हैं पर भेंट नहीं हुई। सर्दी काफी पड़ी पर अब जा रही है। जयपुर के प्र० ले० सम्मेलन में तुम शायद नहीं गये। वहां से लौटते बिहार के कुछ लोग मिले थे। इति।

सस्नेह रामविलास

प्रिय डाक्टर,

२६/१ का पोस्टकार्ड मिला। मालकिन की आंख का आपरेशन बनारस में होगा। वहां सुविधा अधिक है। भुवन के साथ रहेंगी। यह सब अच्छी तरह से सफल हो जाये, यही हार्दिक कामना है। वैसे उनकी तबियत तो पहले से बहुत बेहतर होगी वरना तुम यह आंख के आपरेशन का इरादा न करते। दिल्ली में रह कर चिकित्सा पूर्णरूपेण अति उत्तम हो सकी। यह बहुत बड़ी बात है। वरना तो डाक्टरों की नियत [नीयत] हर जगह खराब ही दिखती है।

आगरे से दूर दिल्ली में पतोहू और नातियों के साथ रह रहे हो यह भी उतना ही आवश्यक है जितना अकेले में गम्भीर चिन्तन की किताब लिखना। जीवन की दैनिक गतिविधियां भी अपना विशिष्ट महत्व रखती हैं। नातियों की संगत संतों की संगत से बढ़ कर होती है। वह इस संसार को सत्य और सुन्दर समझते हैं तभी तो उनके लिए चिंटी और हाथी एक ही तरह की अनुभूतियां देने वाले होते हैं। संत तो विवेकी बन कर 'समदर्शी' हो पाते हैं। बच्चे पैदा होने के बाद ही वैसी 'समदर्शिता' प्रदर्शित करने लगते हैं। इधर मैं भी अपने बेटे के चार बेटों के आ जाने से जीवन में जीवंत हो गया था। अब भी मन वैसा ही बना है। आज धूप में बैठा तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। गिलहरियां एक-दूसरे के पीछे 'चिकचिक' करती भाग दौड़ रही हैं और मस्त हैं, बेफिक्र हैं। आंगन में धोया गेहूं सूख रहा है। कलेवा हो चुका है। पत्नी भी नहाने की योजना बना रही हैं, धूप में धोती और तौलिया वगैरह सेंक के लिए डलवा चुकी हैं। घर का मौसम उम्दा है। बाहर हवा हरहरा रही है। पेड़ बबूल का खड़ा सब कुछ झेल रहा है। सिर का मैलखोर छत्र डोल रहा है। दिल्ली में धूप तो खाते ही होओगे। नागार्जुन भी खूब हैं। पता नहीं कहां रहते हैं .... घुमक्कड़ हैं। हिंदुस्तान का नकशा हो गये हैं। हरेक प्रदेश के अंक में हिल रहे हैं। देखो कब आकर तुमसे मिलते हैं। आयेंगे जरूर।

जयपुर नहीं गया-न कहीं और गया। आगे भी घर से बाहर न जा सकूंगा। लोग बुलाते हैं पर मजबूरी नहीं समझते। शायद घमंडी समझ लेते हों। कोई बात नहीं। यह स्वाभाविक है।

-बिहार और मध्यप्रदेश में ही तो सक्रिय लोग हैं। अपने इस प्रदेश में तो लोग मौज मारते-पंजे मारते हैं और अपना-अपना ताजिया उठाये गमगीन धुनों के साथ करबला की ओर जाते हैं। ऐसी यहां की जमीन ही है।

-तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से ठीक है। यह सुन कर असीम आनन्द हुआ। दोस्त अभी 'शतायु' पूरा करना शेष है। क्रिकेट में लोग अपनी-अपनी बल्लेबाजी के शतक पूरे कर रहे हैं। तुम भी शतक बनाओगे। मैं भी इच्छा रखता हूँ पर शरीर साथ देता रहे तो।

बहरहाल, जीने में लगा हूँ, जी रहा हूँ, दुनिया का रंग रूप पी रहा हूँ और देश में चल रही राजनीति के सिंघों और सियारों की कथनी-करनी का जायजा ले रहा हूँ, एक आम आदमी की तरह।

—राजनीतिक कविताओं का संग्रह शायद इलाहाबाद में छप गया होगा। इसे अपने 'मुंशी' को भेंट किया है जैसे तुमने उसकी शादी के समय मेरी पहली दो पुस्तकें भेंट की थीं आगरे में। नव वर्ष की शुभकामनाएं भेजी थीं मुंशी ने। घर का पता नहीं था। उत्तर New age के पते पर भेजा था। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

८.२.८३

प्रिय केदार,

मार्क्स जब दर्शनशास्त्र पर लिखते हैं तब अर्थशास्त्र उनके साथ रहता है, जब अर्थशास्त्र पर लिखते हैं, तब दर्शनशास्त्र साथ रहता है। कुछ दिन हुए मैं पूंजी (खंड १) पढ़ रहा था और एक वाक्य पर निगाह अटक गयी, तुम्हारे अवलोकनार्थ उद्धृत करता हूँ : Every day brings a man twenty four hours nearer to his grave; but how many days he has still to travel on that road, no man can tell accurately by merely looking at him (पृ० १९७)। मार्क्स ने यूनानी दार्शनिक एपिक्योरस को जवानी में गहराई से पढ़ा था। जीवन भर एपिक्योरस का चिन्तन उनके साथ रहा। मार्क्स और हेगल का साथ कच्चा था और मार्क्स निरंतर हेगल की खींची रेखाएं—एक के बाद दूसरी—पार करते रहे। ऊपर के वाक्य में दर्शन का शास्त्री नहीं कवि बोलता है। तुमने 'शतायु' पूरा करने की बात लिखी है। उसी संदर्भ में मार्क्स का वह वाक्य तुम्हें भेज रहा हूँ। अपन पांच साल से ज्यादा आगे की नहीं सोचते। भीतर से अपने को तौलते हैं, काम करने की योजना बनाते हैं। योजना पूरी हो गई तो फिर—पांच साल बाद—आगे की सोचेंगे।

एक प्रश्न : कविता की व्याख्या कैसे की जाये? विशेष कविताओं की व्याख्या किये बिना निर्विशेष कविता की व्याख्या हाथ न लगेगी। यदि कोई आलोचक किसी कवि का सही अध्ययन करता है तो वह कविता मात्र के अध्ययन—और उसकी रचना—का मार्ग प्रशस्त करता है। मार्क्स ने इतिहास मात्र के विवेचन के लिए भौतिकवाद पर कौन—सी पुस्तक लिखी है? तुम्हें इस जानकारी से मजा आना चाहिए कि रूस में कुछ लोग मार्क्स के ग्रंथों में ऐतिहासिक भौतिकवाद ढूंढते थे और उसे न पाकर बहुत क्षुब्ध होते थे। ऐसे एक सज्जन मिखाइलोव्स्की थे। इनके बारे में लेनिन ने लिखा था : "He has read Capital and failed to notice that he had before him a model of scientific, materialistic analysis of one—the most complex—formation



of society, a model recognized by all and surpassed by none. And here he sits and exercises his mighty brain over the profound problem. In which of his works did Marx expound his materialist conception of history?" (ग्रंथावली, १/१४३)। १९४७ में इलाहाबाद के प्रगतिशील लेखक सम्मेलन में प्रभाकर माचवे ने मार्क्स के बारे में ठीक यही प्रश्न किया था।

मालकिन को एक आंख से, मोतिया बिंदु के कारण दिखाई न देता था, दूसरी पर भी असर होने लगा था, इसलिए आपरेशन ज्यादा दिन टाला न जा सकता था। कठिनाई पैदा हो रही है डायबिटीज के कारण। वहां यह बीमारी बढ़ी है। २५ जनवरी को बेहोश हो गई थीं। जब तक डायबिटीज नियंत्रित न हो गी, तब तक आपरेशन न हो गा। अस्तु, भुवन वहां मुस्तैदी से देशभाल में लगे हैं। यहां नातियों की संगति शाम को टी० वी० देखते समय कुछ देर को होती है। ये लोग सबेरे सात बजे स्कूल चले जाते हैं और तीसरे पहर लौटते हैं। इसलिए आगरे के और यहां के दैनिक जीवन में विशेष अंतर नहीं है। तुम्हारा नीम-कौए-गिलहरी-धोया गेहूं सूखता हुआ-घर का वर्णन बहुत-बहुत अच्छा लगा। धूप हमारे कमरे में आती है। यहीं बैठे-बैठे खा लेते हैं। जो कसर थी, वह तुम्हारी चिट्ठी की धूप ने पूरी कर दी। शरीर के साथ मन भी नर्म ऊष्मा से स्पंदित हो उठा। ऐसे दिन तुम्हारे जीवन [में] बहुत से आयें। इति।

सस्नेह रामविलास

बांदा/१६.३.८३

Pin-210001

प्रिय डाक्टर,

८.२.८३ का पत्र मिल गया था। उत्तर अब दे रहा हूं। विलम्ब इसलिए हुआ क्योंकि मैं इधर घर के निजी कामों [में] व्यस्त रहा।

मार्क्स का उद्धरण पढ़ने को मिला। सत्य यही है जो उन्होंने पूंजी (खंड १) में लिखा। फिर भी जिजीविषा बड़ी प्रबल होती है और मैं तो उसी को अपनाये हुए अधिक से अधिक दिन तक जीने की लालसा बलवती बनाये रखता हूं। जब भी ज़रा भी शिथिलता आती है या होती है तो विचलित होने से बचता हूं और सृष्टि की समग्रता से अजेय जीवनी शक्ति खींचता रहता हूं और प्राणवंत बना कामकाज में लगा रहता हूं। फिलहाल कविताएं नहीं लिख सका। न लेख ही लिख सका। मैंने तो पंचवर्षीय योजना कभी बनाई ही नहीं। बनाता भी कैसे [!] सारा पिछला जीवन तो बिना योजनाओं के ही जीता रहा हूं। अब क्या नई शुरुआत करूंगा। तुमने तो योगी की एकाग्रता अर्जित की है और योजनाबद्ध काम करते-करते महान उपलब्धियां दे सके। इसी कर्मठता के बल पर तुमने तमाम तरह की प्रचलित भ्रांतियों को [का] ध्वंस किया और वैज्ञानिक

समझदारी से साहित्य को दिशा और दृष्टि दी। तुम्हारी पुस्तकें पढ़-पढ़ कर मैं समझ पैदा कर सका। वे न मिलतीं तो मैं 'नदारदशुद' होता।

इधर छप रही कविताओं और लेखों से यह मालुम होता है कि जैसे मानवीय चिंतन दिशाहीन हो कर व्यक्ति को अक्षम बना चुका है और वह जातीय चेतना से विमुख हो कर ऊपरी सतह पर फिसल-फिसल कर टूट और बिखर रहा है। जैसे सबकी समझ मारी गई है। कैसे संतोष है उन्हें ऐसे कृतित्व से? वाहवाही के ये शिकार वैज्ञानिक चिंतन के पास जाते ही नहीं और मात्र आधुनिकता और समसामयिता [समसामयिकता] के चक्कर में मकड़ी के जाले की तरह के महीन-महीन तार भर निकालते रहते हैं। व्यक्तित्व बनने के बजाय खंडित हो रहा है। जब तक मानवीय चेतना जनवादी चेतना नहीं बनती तब तक यही सब होता रहेगा। ऐसे ही लोग तो कहते हैं कि ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का कोई युगीन महत्व नहीं रह गया। ये भ्रष्ट बुद्धि कुछ भी दे नहीं सकते। श्रम और संघर्ष ही पथ प्रशस्त कर सकता है जिसके लिए ये तैयार नहीं दीखते। इधर 'साक्षात्कार' में तुम्हारी पुस्तक से महावीर प्रसाद द्विवेदी के सटीक उद्धरण छपे हैं। वे अवश्य काम करेंगे। लोगों की आंखें खुलेंगी। मार्क्स का चिंतन ही जीवित है। वह चिंतन विश्व को सही दृष्टि प्रदान कर रहा है। उनका चिंतन अब और विकास कर रहा है वह Static नहीं-Progressive है। इतिहास ने उसे खतम नहीं किया। वही उससे विकसित हो रहा है।

१४ व १५ मई को भोपाल में तुम्हारा 'महत्व' मनाया जा रहा है। मुझसे वहां जरूर-जरूर पहुंचने के लिए लिखा जा रहा है। पर ऐसी लाचारी है कि घर से बाहर जा पाना असम्भव है। कोई तरीका नहीं है। बहुत चाह कर भी नहीं पहुंच सकूंगा। तड़प कर रहूंगा।

अब मालकिन की तबियत बनारस में कैसी है? डायबेटीज का रोग ठीक हुआ या नहीं। आंख का आपरेशन हो पाया या नहीं? वहीं हैं या दिल्ली आ गई? हाल जरूर लिखना। मेरी पत्नी भी पूछ रही हैं।

अब सबेरे ताजगी रहती है। दिन-दोपहर धूल-धक्कड़ वाली बयार झूमती झकोरे मारती है और गरमी से गला सुखा जाती है।

आंगन में बये ने घोंसला बनाया है। खूबसूरत है। उसे देखता हूं। बया और बयिन आते-जाते और उसमें घुस जाते हैं। छोटी देह के दोनों हैं। एक के तो केसरिया पेट भी है। चोंचे लम्बी-नुकीली हैं। बहुत प्यारे लगते हैं। कभी-कभी घोंसले के नीचे खड़ा हो कर पुचकारता भी हूं। वह घोंसला से चोंच निकाले आंखें मटकाते रहते हैं। दिन भर बार-बार उड़-उड़ कर जाते-आते हैं और नित्यकर्म में लगे रहते हैं। गिलहरियां तो चिकचिक करती ही रहती हैं। नीम का पेड़ उनका छायादार आश्रय है। फट से चढ़ जाती है और डाल से डाल पर कूदती-फांदती ओझल हो जाती हैं।

मद्रास में पानी का संकट है। पता नहीं बेटे के परिवार का क्या हो? पत्र नहीं आया। कमला प्रसाद की पुस्तक 'रचना और आलोचना की द्वन्द्वात्मकता' बढ़िया लगी।  
सस्नेह केदारनाथ अग्रवाल

१.४.८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/३ का पत्र मिला। मालकिन की तबियत गड़बड़ा गयी थी। मैं १६ दिन बनारस रह कर वहां से २३/३ को लौटा। डायबिटीज़ नियंत्रण में नहीं आ रही। इंसुलिन बे असर हो गई है। इसलिए आंख के आपरेशन का सवाल नहीं है। गनीमत यह है कि सामान्य स्थिति ठीक है। चल फिर लेती हूँ, नींद आती है। मई में उधर फिर जाऊँगा।

तुम भोपाल न जा सकोगे तो कोई हानि न होगी, मैं भी न जाऊँगा। शायद स्थिति ठीक होती तो भी न जाता। मुझे ऐसे आयोजन अच्छे नहीं लगते। दक्षिण भारत में अभूतपूर्व जल संकट है। बीसवीं सदी के अंतिम चरण में विकासशील भारत में! ऐटमी युद्ध की तैयारी ज़ोरों से हो रही है। भारत पर एक तरफ से आक्रमण के लिए असम की धरती को समतल किया जा रहा है, दूसरी तरफ से पंजाब की धरती को! बुद्धिजीवियों में जो प्रभावशाली हैं, वे कहीं न कहीं अमरीका और उसकी एजेन्सियों से जुड़े हुए हैं। कम्युनिस्ट पार्टियां उत्तर भारत में लगभग निष्क्रिय हैं। इसलिए बिखराव है।

'मार्क्स और पिछड़े हुए समाज' में इतिहास की कुछ समस्याओं का विवेचन है। महीने दो महीने में समाप्त हो जायेगी।

तुम्हारी जिजीविषा की दाद देता हूँ। कविता नहीं लिखी, कोई बात नहीं। कविता देखते तो हो। तुम्हें बया के घोंसले के नीचे देख कर हम आनंद विह्वल हैं।

प्यार-रा० वि०

२२.४.८३

प्रिय केदार,

'आलोचना' में प्रकाशित 'घर की बात' के कुछ अंश मुंशी संपादित पारिवारिक पत्र 'सचेतक' में छप चुके थे। इस पत्र के नये अंक में मुंशी को समर्पित तुम्हारे कविता-संग्रह<sup>1</sup> की मुंशी लिखित समीक्षा भी छपी है। वह अंक तुम्हारे पास भेजने का कोई इरादा मुंशी का नहीं था। मिल जाये तो समझना, मुंशी पर मेरे कहने का असर हुआ है।

---

1. कहेँ केदार खरी-खरी [अ० त्रि०]

190 / मित्र संवाद

पर लगता है, मुंशी को वह कविता संग्रह भेजने का कोई इरादा तुम्हारा भी नहीं है। मुंशी ने श्याम कश्यप से प्रति ले कर अपनी समीक्षा-कला आजमाई है। प्रकाशक से कहना, एक प्रति मुंशी (सी-१७५, हरि नगर घंटा घर नई दिल्ली-११००६४ या P.P.H.) के पास भेज दें। इति।

सस्नेह-रा० वि० शर्मा

बांदा

२७.४.८३

प्रिय डाक्टर,

२२/४ का पत्र मिला। मुंशी को पत्र अभी लिख चुका हूँ। पुस्तक भेजूंगा। श्याम कश्यप को भी पुस्तकें भेजूंगा। यह लोग सन्नाटा खींचे रहते हैं। न इनका पता है मेरे पास न इनके कोई समाचार हैं। चौबे ने भी पता न भेजा। न तुमने भेजा था। P.P.H. के अखाड़े में हम कहां पहुंचते। वहां तो दांव-पेंच वालों की पैठ है। वैसे कोई कुछ लिखे मुझे कुछ भी असर न होगा। बुरा न बान की तरह लगेगा। न अच्छा फूल की तरह। अब वहां हूँ जहां मैं हूँ और मुझसे बातें करती मेरी कविताएं [हैं]।

अब बनारस के हाल क्या हैं? मालकिन वहीं होंगी ही। तबियत कैसी है।

मुंशी महाराज को बता देना कि मैंने पुस्तक समर्पित करके कोई एहसान नहीं किया। वैसे वह अपनी चुप्पी तो कभी तोड़ें। वह भूले रहते हैं और हमें न याद करने की वजह से [ ]<sup>1</sup> मारते हैं। बहुत खा चुका हूँ। कुछ भी असर न होगा।

सस्नेह-केदार

३ मई ८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २०/४ [२७/४] का कार्ड मिल गया था। उसे मैंने मुंशी और श्याम कश्यप को भी पढ़ कर सुना दिया था-‘न इनका पता है मेरे पास’-पर इन लोगों को तुम्हारे पत्र मिल गये हैं। ‘चौबे ने भी पता न भेजा। न तुमने भेजा था।’ चौबे का पता : रामस्वरूप शर्मा, ७-न्यू, शाहगंज, आगरा-२। मेरे पास काफी लोगों के पते हैं। किसी और का दरकार हो तो लिखना।

‘वैसे कोई कुछ भी लिखे मुझे कुछ भी असर न होगा।’ ठीक लिखा है। मुंशी जो कुछ लिखते हैं, वह वैसे भी बे असर होता है-ज्यादातर। आज कल उनके घर की

1. यहां का शब्द किसी वजह से मिट चुका है। [अ० त्रि०]

मैनेजरी मुकुल-उनके पुत्र-करते हैं। उन्हें मैंने फिर याद दिला दी थी कि तुम्हें 'सचेतक' भेज दें।

'अब वहां हूँ जहां मैं हूँ और मुझ से बातें करती मेरी कविताएं।' खूब बहुत खूब। इन बातें करती कविताओं पर एक नाटक लिखने की इच्छा हो रही है।

परसों बनारस जा रहा हूँ। दो महीने तक वहां का पता :  
New G 33, हैदराबाद , B. H.U. वाराणसी। बस, प्यार। रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)

६.५.८३

प्रिय भाई,<sup>1</sup>

-आज 'सचेतक' और उसके साथ तुम्हारा पत्र भी मिला।

-मेरी [अपनी] पुस्तकें अब इकट्ठा करूंगा तो सब भेजूंगा। श्याम कश्यप का बंडल बंधा रखा था-उन्हें भेज चुका। अलग से तुम्हें जरूर भेजूंगा। समय लगेगा।

-मैं तो स्वयं ठीक हूँ। पत्नी ही ऐसी हैं कि उनकी देखरेख में रहना पड़ता है-बाहर जा नहीं सकता। घर में कोई और नहीं है।

-इस संकलन में तमाम कविताएं हैं न्याय से सम्बन्धित। जरा गौर से पढ़ना। बांगला देश के अलावा भी दमदार मसाला है।

मैंने यही उचित समझा कि मैं अपने पूरे गुण-अवगुण के साथ लोगों को मिलूँ। केवल अच्छे रूप में सबके सामने आऊँ, यह गलत होगा। यही वजह है संकलन में सभी तरह की कविताएं हैं। विकास की यात्रा का सही आकलन होना जरूरी है।

बांदा आओ तो क्या कहने हैं? रा० वि० बनारस गये होंगे।

फिर और लिखूंगा।

सस्नेह  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)

210001

दिनांक : 14.5.83/दोपहर २ बजे

प्रिय डाक्टर,

-३/५ का पत्र मिला।

-मुंशी ने 'सचेतक' का वह अंक अपने पत्र के साथ भेज दिया है। मैंने मुंशी को किताब भी भेज दी थी। श्याम कश्यप के पास पुस्तक पहले ही मिल गई थी भोपाल में।

1. यह पत्रश्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' के नाम है। [अ० त्रि०]

192 / मित्र संवाद

—अब कहो बनारस में मालकिन की तबियत कैसी है? पास रहना जरूरी होता है। अच्छा हुआ पहुंच गये। हाल जरूर लिखना।

—इधर १४ व १५ को भोपाल में 'महत्व' का कार्यक्रम चल रहा है। अखबार में छपा है १५० प्र० लेखक आयेंगे। नागा बाबा व त्रिलोचन व नामवर व बहुत से अन्य पहुंचेंगे। मैं न जा सका। खेद है। ज़रा 'बड़कवों' की बहक चहक सुनता और गुनता।

—बेटा शूटिंग में मद्रास से ४०० मील दूर है, इस महीने के अंत को उसके बच्चे भी वहीं पहुंच रहे हैं। शायद बच्चे जून में यहां आयें। मद्रास में तो पानी का अकाल है।

—यहां गर्मी धमधमा कर आ गई है। पर सह लेते हैं उसे भी।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

२०.५.८३

प्रिय केदार,

१४ मई की दोपहर को दो बजे का लिखा कार्ड मिला। हम २० मई के सबेरे साढ़े छह बजे, घूम कर लौटने और चाय पीने के बाद, आमों के पेड़ों में कोयल की आवाजें सुनते हुए, तुम्हें यह कार्ड लिख रहे हैं।

मालकिन का हाल कुल मिला कर ठीक है। मोनो कंपोनेन्ट इंसुलिन देने से डायबिटीज़ नियंत्रित नहीं हैं, धीरे-धीरे बढ़ रही है। फिर भी वह चलती, फिरती, खाती, पीती, सोती हैं, इसलिए संतोष है।

परसों यहां आंधी आई, पानी बरसा। हिमाचल प्रदेश में बहुत नुकसान हुआ। मथुरा से ले कर रोहतक और पंजाब तक फसल को—या खलिहानि में सुची राशि को—बहुत नुकसान हुआ। मद्रास में पानी बरसने की खबर सुनी थी, शायद हालत कुछ सुधरी हो।

छात्रों में गुंडागर्दी, उनके गुरुओं में जातिवाद—विशेष रूप से बाह्यन ठाकुरवाद—यहां की आकर्षक विशेषताएं हैं। बहुत दिनों के बाद इतने आम के पेड़ देखें हैं, मन बहला लेते हैं।

बांदा (उ० प्र०)

PIN-210001

प्रिय डाक्टर,

-20/5 का पत्र २८/५ को मिला। तुम लोग घूमने जाते हो यह प्रमाण है कि तबियत ठीक चल रही है। हमारे घर में तो सबेरे ४ बजे से ही बुलबुल और कोयल के स्वर बरस पड़ते हैं। खाट पर पड़े-पड़े सराबोर होते रहते हैं। ५ बजे मैं उठ बैठता हूँ। वही अपना पुराना सफाई का काम करने में जुट जाता हूँ। फिर ८ बजे तक नहा लेता हूँ। नाश्ता किया और सुसताता हूँ। गरमी बेहद बढ़ गई है। इधर भी पहले आंधी-पानी में किसानों का बहुत नुकसान हुआ है। कल सुना रेडियो में कि मद्रास में बादल छाये हैं। temp. 39° है।

गुरु तो कम नहीं हैं। वे छात्रों की तरह ही झगड़े के कारण बने रहते हैं। पढ़ाना तो क्या है, रस्म अदाई करते हैं।

-मुंशी का पत्र आया था। उत्तर भेज दिया है। वाचस्पति<sup>1</sup> ने लैंस डाउन से तुम्हारा पता भेजा। उत्तर दे दिया है।

कब तक दिल्ली वापसी होगी? हमारा सलाम सबको।

सस्नेह केदार

२७.६.८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था। बीच में पत्नी की डायबिटीज़ बढ़ी थी पर इधर एक हफ्ते में सुधार हुआ और उनकी अवस्था संतोषजनक है। मई में मौसम अच्छा रहा। रातें ठंडी थीं। फिर जून में गर्मी ने खूब तेजी दिखाई। २५ को भारत ने वेस्टइंडीज़ को क्रिकेट में हराया और २६ को काफी पानी बरस गया। रात को यहां चारों ओर दादुरों की वैदिक ध्वनि सुनाई देती है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में रचे हुए ब्रिटिशपूर्व साहित्य पर टिप्पणी लिखने के लिए भारतीय इतिहास पर अभी सामग्री बटोर रहा हूँ। १६ जुलाई को दिल्ली जाऊंगा। वहां शायद डेढ़ महीने रहूंगा। फिर खंभात-मझली बेटी सेवा के पास-जाने की सोच रहा हूँ। डेढ़ साल पहले उसके पैर की हड्डी टूटी थी जो अभी तक ठीक नहीं हुई। पिछले महीने पेट में ट्यूमर का आपरेशन हुआ। वहां कुछ दिन रहूंगा। फिर दिल्ली। जाड़े तक फिर बनारस।

तुम्हारा-रामविलास

1. राजकीय डिग्री कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक और लेखक। बाबा नागार्जुन के निकटतम। [अ० त्रि०]

194 / मित्र संवाद

बांदा 2.7.83

210001

प्रिय भाई,<sup>1</sup>

२०/६ की चिट्ठी मिली 'सचेतक' का अंक भी मिला। नये नामों का परिचय भी मिला।

मुझे आगरे से लौट कर राय साहब ने समाचार बताये थे। उसी के कुछ समय बाद तुम्हारा यह पत्र मिला। अंक पढ़ रहा हूँ। वह पारिवारिक प्रकाशन सम्भवतः संसार में पहला प्रकाशन है। अवश्य ही ऐसे प्रकाशनों से मानवीय स्वभाव को जानने-पहचानने और बदलने की असरदार प्रक्रिया चलेगी। जो काम धर्म गुरु या नेता गण नहीं कर सकते—न कानून कर सकता है। वह काम सराहनीय ढंग से ऐसे प्रकाशनों के द्वारा किया जा सकता है। हर व्यक्ति निजता की इकाई बन रहा है। ऐसे प्रयास में इकाई अन्य इकाइयों से पुनः जुड़ेगी और आपसी संबंध सुधर कर सुदृढ़ सामाजिकता को सार्थकता दे सकेंगे। मैं तो तुम्हें लखनऊ के Wall News Paper के सम्पादक के रूप में पहले ही जानता हूँ। दिल्ली में उसको पूरा प्रसार और प्रचार मिला। बधाई सब सदस्यों को।

अवश्य लिखूंगा। सचेतक अपना है। उससे बेगाना रहना असम्भव होगा।

सस्नेह—केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०) २-७-८३

पिन-210011 [210011 ]

प्रिय डाक्टर,

२७/६ का लिखा पोस्टकार्ड ३०/६ को मिला। अब आज उत्तर दे रहा हूँ कि जब भी जहां जाओ और रहा [रहो] वहां से अपने पते के साथ पत्र अवश्य देना। भूलना नहीं।

—इधर मैंने लगभग ६० नई कविताओं का एक अपना काव्य संकलन तयार किया है। नाम 'अपूर्वा' रखा है। साथ में कविताओं को लेकर—एक-एक की अपनी टिप्पणी देने का विचार है। इसका शीर्षक रहेगा : कविताओं के आर-पार। यह भूमिका न होगी। वह तो विषय सूची के पहले संक्षेप में कुछ पंक्तियों में दे दूंगा। यदि उचित समझो तो इसे तुम्हें समर्पित करूं। मन मेरा यही कहता है।

भारत की जीत महत्त्वपूर्ण रही। सभी ने खुशी मनाई।

---

1. यह पत्र श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' को लिखा गया है। [अ० त्रि०]



मित्र संवाद / 195

बेटी सेवा के यहां ज़रूर पहुंचना। उसे बहुत प्यार मिलेगा। वह तुम्हें देख कर आधी से ज्यादा अच्छी हो जायेगी।

मुंशी ने सचेतक भेजा। और सब पूर्ववत् है।

तुं  
केदार

वाराणसी  
१२.७.८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/७ का कार्ड मिला।

‘पूर्वा’ के वज़न पर ‘अपूर्वा’; ‘आंगन के पार द्वार’ के वज़न पर ‘कविताओं के आर पार’। अच्छा आइडिया है।

मुझे समर्पित करना चाहते हो, ज़रूर करो। मुंशी ने स्वयं को समर्पित पुस्तक की समीक्षा ‘सचेतक’ में लिखी है तो मुझे समर्पित पुस्तक की समीक्षा उन्हें लिखनी ही पड़ेगी। यहां से १६ को दिल्ली के लिए प्रस्थान है।

मालकिन की बड़ी बिटिया शोभा के पुत्र हुआ है। खूब प्रसन्न हैं।

सस्नेह  
रा० वि०

वाराणसी  
१८.८.८३

प्रिय केदार,

१४, अगस्त के सबेरे दिल का दौरा पड़ने से मालकिन का देहान्त हो गया। पिछले दिनों उनका स्वास्थ्य पहले से बहुत सुधर गया था।

मैं २६ को दिल्ली लौटूंगा।

तुम्हारा-रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)/ २४-८-८३

पिन : 210001

समय : २ बजे दिन

प्रिय मुंशी,

आज दोपहर मुझे लैंसडाउन से श्री वाचस्पति का पोस्टकार्ड (२०.८.८३ का) मिला। सूचना मिली कि प्रिय डा० रा० वि० शर्मा की मालकिन की मृत्यु हो गई।

196 / मित्र संवाद

बनारस के अखबार में उन्होंने ऐसा पढ़ा। वह बनारस पत्र लिख कर विवरण प्राप्त कर रहे हैं। मुझे यह समाचार भीतर से हिला गया। आगरे में तब मिला था। अब फिर न मिल पाऊंगा। डाक्टर वहीं थे या नहीं। पता नहीं क्या हुआ-कैसे हुआ?-कुछ भी पता नहीं। इधर यहां के अखबारों में ऐसा समाचार नहीं छपा। मैं कहूं तो क्या कहूं। जहां भी डाक्टर हों-उनका पता लिखना। उन्हें भी चिट्ठी लिखूंगा। दुखी तो तुम सभी होओगे। समवेदना में कुछ न कह कर यही कहूंगा कि धैर्य से सब कुछ बरदाश्त करो।

सस्नेह तु०  
केदार

बांदा

२४.८.८३

प्रिय डाक्टर,

लैंस डाउन से वाचस्पति का दिनांक २०/८ का पोस्टकार्ड मिला कि बनारस में मालकिन का निधन हो गया। यह हृदय विदारक सूचना है। बहुत तो संघर्ष किया मालकिन ने। तुमने भी तो कुछ नहीं उठा रखा। अन्त आ ही गया और वह चल बसीं। अब सिवा [सिर्फ] धैर्य धारण करके जिया ही जा सकता है।-कर्मठ जीवन की करनी के द्वारा ही मौत को परास्त किया जा सकता है। वह तुम कर ही रहे हो। भला मैं क्या समझाऊं तुम्हें। दोस्त, जो उजाला तुम फैला रहे हो वह मालकिन को महिमा मंडित कर रहा है-करता रहेगा। तुम्हारे संतप्त परिवार के साथ मैं भी शोक संतप्त हूं। अपनी पत्नी को हाल बताया तो वह रो पड़ीं। कहा : आगरा में मिलीं थीं। अब फिर भेंट न हो सकी। हाल पूछती रहीं कि कैसे क्या हुआ-तो मैंने कहा कि चिट्ठी लिख कर पूछ रहा हूं-जवाब आने पर बताऊंगा।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

२८.५.८३ [२८.८.८३]<sup>1</sup>

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा पत्र आज मिला। तब मालुम हुआ कि मालकिन १४/८ को चल बसीं। तुम पास तो रहे ही होओगे। वैसे तुम्हें तो पहले ही दिल्ली जाना था। भीतर से रो पड़े

1. लगता है मालकिन की मृत्यु की सूचना से, जो मानसिक आघात लगा उसके कारण 28-8-83 की जगह, केदारजी 28.5.83 लिख गए। सही तिथि 28.8.83 है। (अ० त्रि०)

होओगे। बाहर से भले ही गुमसुम रहे होओ। मैं तो सन्न ही रह गया। पत्नी रो ही पड़ी थीं।

मैंने आज ही नहीं—कल की शाम को वाचस्पति को—तुम्हें बनारस को—मुंशी को खत डाले हैं क्योंकि वाचस्पति ने गढ़वाल से अपने २०/८ के पत्र से यह दुखद सूचना दी थी।

अब अकेले पड़ गये। इधर आ जाओ—मन चाहे तो। वैसे अभी तो परिवार के सभी लोग चाहेंगे कि तुम उन्हीं के पास रहो। मेरी इच्छा जरूर है कि यदि अनुचित न समझो तो आकर मन हल्का कर लो। कोई कष्ट न होने पायेगा।

कहूँ तो और क्या कहूँ।

मालकिन अन्त समय तक होश में रहीं और बोलती रहीं या नहीं? विजय के यहां ही रहोगे या कहीं दूसरी जगह जाओगे। यहां न आओ तो अपना पता लिख भेजना। फिर कहता हूँ आ जाओ—ऐसे समय मिलने से दुख मिटता है।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

नई दिल्ली-५८

५-९-८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/५<sup>१</sup> [२८/८] का पत्र यथासमय मिल गया था। मैं १६ जुलाई को बनारस से आया था। उसके बाद जुलाई के अंत की ओर दिल्ली के एक मित्र उन्हें देख कर लौटे थे। अगस्त के पहले हफ्ते में उनका कार्डियोग्राम लिया गया था जिसकी रिपोर्ट अच्छी थी। डायबिटीज़ नियंत्रित थी। इधर उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। १४ अगस्त के सबेरे अचानक दिल का दौरा पड़ने से उनका देहान्त हुआ। डाक्टर पड़ोस में ही थे, तुरंत आ गये थे पर उनकी जरूरत न थी। मालकिन ने एक ही झटके में खाई पार कर ली थी। १५ के सबेरे दाह संस्कार हुआ। मैं १४ की शाम को पहुँच गया था।

मैं अभी नवंबर तक दिल्ली में रहूँ गा, विजय के कनाडा से वापस आने के बाद दिसंबर में बनारस जाऊँ गा। अभी दोनों जगह मेरी जरूरत है। तुमने रोने के बारे में पूछा है। दूसरों को ढाढ़स बँधाने के बाद जब फुरसत मिलेगी, तब इसके बारे में सोचूँ गा।

सस्नेह  
शेष कुशल। रा० वि० शर्मा

---

1. रामविलासजी मालकिन के देहावसान से इतने विचलित थे कि वे भी केदारजी की तिथि संबंधी भूल को लक्ष्य नहीं कर पाए, अन्यथा सामान्य स्थिति में, इस तरह की भूल पर चुटकी लेने से वे चूकते नहीं। (अ० त्रि०)

198 / मित्र संवाद

बांदा

२५.११.८३

PIN-210001

प्रिय डाक्टर,

—इधर कोई पत्र नहीं लिख सका। न तुमने ही कोई भेजा।

—जनकपुरी के पते से यह पोस्टकार्ड लिख कर यहां से, भेज रहा हूँ कि आज १२ बजे दोपहर 'घर की बात' की प्रति डाक द्वारा, मुझे मिल गई है। प्रकाशक ने पत्र लिख कर चाहा था कि मैं पुस्तक पाते ही सूचना तुम्हें अवश्य भेज दूँ। इसीलिए यह सूचना दे रहा हूँ। कचहरी जा रहा हूँ। वहां काम है। लौट कर, फिर रात को इसे टटोलूंगा और इसकी गन्ध लूंगा।

अब कहां हो? कैसे हो? यहां आने का विचार बना या नहीं? अगले दिनों का क्या ठौर ठिकाना है? समय मिले तो उत्तर देना।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

३०.११.८३

प्रिय केदार,

२५/११ का कार्ड मिला। यहीं जनकपुरी में हूँ। और कहीं जाऊँ गा तो तुम्हें अवश्य सूचित करूँ गा। मैं ठीक हूँ। अगले महीने सेवा के पास खंभात जा कर रहने की सोच रहा था पर 'मार्क्स और पिछड़े समाज' पुस्तक समाप्त नहीं हुई। निराला वाली पुस्तक के खंड ३ का नया संस्करण होना है। उसमें छापे की अशुद्धियां काफी हैं, ठीक करनी हैं। 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं' भी नये संस्करण के लिए देनी है।

विजय कनाडा से वापस आ गये हैं। यदि जनवरी तक यह सारा कार्य समाप्त हो गया तो 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लिए सामग्री बटोरने बनारस जाऊंगा। दो दिन के लिए बड़े भैया यहीं हैं। आज मुंशी के यहां गोष्ठी है।

सस्नेह

रा० वि०

बांदा

४.१२.८३

प्रिय भाई,<sup>1</sup>

तुम्हारा पत्र और 'सचेतक' (१५/११-८३ मिले)।

---

1. यह पत्र श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' को लिखा गया है—दो पोस्टकार्डों पर। [अ० त्रि०]

—मालकिन सबको छोड़ चल बसीं। इससे हृदय विदारक घटना और क्या हो सकती है। वह स्वयं न जान सकी होंगी कि वह जा रही हैं। मौत आई और ले गई। हम लोग कर ही क्या सकते थे। हमारे लिए धैर्य धारण [करने] के अतिरिक्त और बचा ही क्या था। वही हम-तुम-सबने किया। लेकिन मौत तो हमसे हमारी उनकी याद किसी भी प्रकार से हर नहीं सकी। वह सदैव सभी सदस्यों की स्मृतियों में जीती-जागती रहेंगी।

—तुम इधर बहुत परेशान रहे। तुम्हारे साले दिवंगत हुए। वाकई में बहुत मार्मिक दुख झेलना पड़ा। मैं सबके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करता हूँ।

—आशा है कि अब तक तुम सब लोग नागपुर से वापस लौट आये होओगे। प्रिय डाक्टर भी दिल्ली आ गये होंगे। मैंने उन्हें दिल्ली के पते पर 'घर की बात' की पहुंच की सूचना भेजी थी। वह पत्र मिल गया होगा। डा० नत्थन सिंह की दोनों पुस्तकें मुझे भी मिल गई हैं। प्रेमचंद वाली पुस्तक का पहला लेख मैंने पढ़ा। बहुत पसंद आया। वैज्ञानिक चिन्तन की भाषा में तथ्य प्राणवंत हो गया है। और भी पढ़ूंगा। उन्हें बधाई भेज चुका हूँ। उन्हें बधाई भेज चुका हूँ। पुस्तकों के मूल्यों में कमी होने की [संभावना] नहीं है। ठीक हूँ।

सस्नेह केदार

४.१२.८३

—दो पोस्टकार्डों में यह पत्र जा रहा है। मुझे ध्यान न रहा। एक पर पता लिखा और दूसरे पर इबारत लिख गया। जब लिख चुका तो दो पोस्टकार्ड नज़र आये। अतः दोनों भेज रहा हूँ। पृष्ठ संख्या पड़ी है। देख कर पढ़ लेना।

—नमन का परिचय मिला।

—सचेतक पढ़ गया। घर की भीतरी झांकी मिली। मालुम हुआ कि पारिवारिक स्नेह सम्बन्ध बड़े मधुर बनते रहे हैं। जीवन ऐसे ही जिया जाये तो सार्थक हो जाता है। वरना तो नरक की गंध आ जाती है। तुम सब लोग बड़े खुले दिल की सुगन्ध देकर ही एक दूसरे के आत्मीय बन सके हो।

—देखो तुम्हारा विलटक्को (मेरा बेटा अशोक) मद्रास से दिसम्बर में आ पाता है कि नहीं। आयेगा तो हम दोनों खुश हो लेंगे।

—इधर वह अरसे से नहीं आया। वह वहां ठीक है। काम में जुता रहता है। कैमरा मैन है न। उसके चारों बेटे कराटे भी सीख रहे हैं। अब वहां पानी का कष्ट नहीं रहा। उन बेटों के नाम हैं :-१ प्रशान्त-२ विशाल-३ आकाश-४ समीर। बाप बेटों को प्यार करता है। झिड़कता तक नहीं।

—मौसम जाड़े का है। खाट पर रजाई ओढ़े पत्र लिख रहा हूँ।

केदार

200 / मित्र संवाद

बांदा

१६-१-८४

प्रिय मुंशी,

—नये साल की शुभकामना का कार्ड मिला। खुशी हुई। तुम भी बहुत भाग दौड़ में रहे और पारिवारिक विपत्तियों को झेलते रहे। अब सब शान्त होगा।

—आशा है कि सभी लोग स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मैं पत्र नहीं लिख सका। घर में व्यस्त रहता हूँ।

‘सचेतक’ में ‘बाढ़ौ रे बाढ़ौ सहिजन के विरवा’ पढ़ कर मुग्ध हो गया। खूब है यह। अब तो ऐसी कहानियां सुनने में नहीं आतीं। ऐसी कहानियां और भी हों तो छापना।

प्रिय डाक्टर ठीक होंगे। दिल्ली ही होंगे। उन्हें पत्र नहीं लिख सका। वह व्यस्त होंगे लेखन में। मौका पा कर उन्हें लिखूंगा।

दिल्ली तो जुड़ा [जड़ा] रही होगी। आज यहां भी कंपकंपी चल रही है। बादलों में सूरज छिपा है। पानी टपक पड़ता है।

सस्नेह  
केदार

सिविल लाइन्स,

बांदा (उ० प्र०)

PIN 210001

Dt. 30-7-84

प्रिय मुंशी,

तुम्हारे सभी पत्र मिल गये थे। लम्बे पत्र का उत्तर न दे सका था। शिथिल था। अब भी हूँ। ‘सचेतक’ के सब अंक—अब तक के मिल चुके हैं। बम्बई में शुक्ल जी शोध कर रहे हैं। आज ही उनका पत्र आया है। अभी उन्हें तुम्हारा पत्र न मिला होगा। नहीं तो चर्चा करते। उन्होंने दो पते मांगे थे। आज भेज दिये। दिवाली में बांदा आने की बात लिखी है। मैंने लिख दिया है कि कभी आयें, मैं घर पर ही रहूंगा।

—डा० रा० वि० शर्मा को मेरी याद दिला देना। ‘सेवा’ का आपरेशन तो तुम्हारे आज के पत्र से मालूम हुआ। ठीक हो रही होगी। उन्हें भी मेरी शुभकामनाएं दें कि वह ठीक हो जायें। मेरा नया कविता-संकलन—दो—जुलाई—अगस्त या सितम्बर तक छप जायेंगे। एक का नाम है, ‘अपूर्वा’। समर्पित है रा० वि० को। दूसरा है ‘रेत हूँ मैं, तुम जमुन जल’<sup>1</sup>। प्रेम सम्बन्धी कविताएं हैं। अभी तक की लिखी पत्नी पर हैं।

---

1. सही नाम है—जमुन जल तुम। [अ० त्रि०]

लो पढ़ो :-

१. चलो, बैठो, धूप खायें / भूख वैभव की मिटायें, / पियें पानी, जियें, / गुन से गुनगुनायें, / रोशनी का प्यार पायें, / प्यार से पत्थर बजायें, / जिन्दगी की जय मनायें।

२. दीवार में टँगा / तसवीर हो गया मैं / दूसरों के लिए / दिव्य और दर्शनीय हो गया मैं / स्वयं के फाँके मस्त फकीर हो गया मैं।

सब को यथायोग्य।

सस्नेह  
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी,  
नई दिल्ली-११००१८  
१४-२-८५

प्रिय केदार,

विजय ने यहां घर बनवा लिया है। हम लोग २९ जनवरी को जनकपुरी से यहां आ गये हैं। किताबें रखने के लिए ज्यादा जगह है, काम करने की अधिक सुविधा है। जाड़े के लिए घर बहुत अच्छा है, खूब धूप आती है। घूमने के लिए पास ही बड़ा पार्क है। सामने सड़क पर बसें बराबर चला करती हैं पर हम तो रेल की पटरियों के पास रह चुके हैं। दरवाजा बन्द कर लेने पर बसों का संगीत काफी नर्म हो जाता है। सबेरे साढ़े आठ बजे तक सब लोग अपने काम पर चले जाते हैं। तीसरे पहर तक हम एकान्त में अपना काम करते रहते हैं। अपना काम=पढ़ना-लिखना+भोजन+सोना। आशा है, तुम स्वस्थ और प्रसन्न हो।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)  
Pin 210001  
Dt. 21-2-85

प्रिय डाक्टर,

-१४/२ का पोस्टकार्ड आज अभी दोपहर को मिला। बहुत दिनों से हाल चाल जानने की आस लगाये बैठा था। अब जान कर राहत मिली। ठीक-ठाक से हो, पढ़-लिख रहे हो-धूप का मजा भी ले रहे हो। जान कर सन्तोष हुआ।

-मैं तो इधर मानसिक तनाव की स्थिति में काफी रहा। मेरे दिल्ली वाले दामाद हरीश बाबू रिटायर हुए। गाजियाबाद में अपने नये घर में गये। बीमार पड़े। फौजी

202 / मित्र संवाद

अस्पताल में भरती हुए। संकट भारी है। खैर अब बच गये और ठीक हो रहे हैं। किरन ब्रिटिया और उसकी बेटी जूली गाजियाबाद में हैं। वहीं से जूली सबेरे अस्पताल जाती व शाम को लौटती [है]। हम दोनों घर से बाहर जा ही नहीं सकते। यहीं चिन्ताग्रस्त बने रहे। इलाहाबाद के दामाद का आज पत्र आया कि वह ठीक हो कर गाजियाबाद आ जायेंगे। सचमुच मैं भीतर से डोल गया था। खैर। और क्या लिखूँ। पत्र भेज दिया करो। कुछ तो चैन मिला करे।

सस्नेह  
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी,  
नयी दिल्ली-११०००१८  
१२-३-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मैंने मुंशी के पढ़ने के लिए उनके घर भेज दिया था। अब वापस मिल गया है। जनकपुरी से मुंशी का घर ३ किलोमीटर रहा होगा तो यहां से ६ है। इसलिए अब उतनी जल्दी जल्दी नहीं मिल पाते। तुम्हारे कार्ड में दिए हुए संक्षिप्त विवरण से भी मुझे तुम्हारी कठिनाइयों का कुछ-कुछ अंदाज हो गया। घटनाएं अपने हिसाब से घटित होती हैं। उनकी चपेट में बूढ़ा आ रहा है या जवान, कवि या आलोचक, इससे उन्हें कोई वास्ता नहीं। कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं कि आदमी उनसे लड़ सकता है पर अन्य ऐसी भी होती हैं जिनसे लड़ना संभव नहीं। आदमी चुपचाप सहने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। रहस्यवादी कवि भले आदमी थे पर वे आनन्द विभोर तभी तक रह सकते थे जब तक उन पर घनचोट न पड़े। भवभूति-निराला-शेक्सपियर-ये सब घनचोट के कवि हैं और मेरे प्रिय कवि हैं। 'सचमुच मैं भीतर से डोल गया था'-इसका जवाब कविता लिख कर ही दिया जा सकता है पर मैं अभी गद्य लोक में हूँ! प्यार। रा० वि०

बांदा

Pin 210001

Dt. 17-3-85

प्रिय डाक्टर,

-१२/३ का पत्र कल मिला। जो तुमने लिखा वह सब ठीक है। अब 'डोलने' की स्थिति से उबर रहा हूँ। ठीक हो जाऊंगा। पत्नी को भी सम्हाले हूँ।

-गद्य लोक में रह कर भी तुम्हें मुझ जैसे कवि लोक के प्राणी की चिन्ता अवश्य



ही होगी, यह कहने की बात नहीं है। फिर मन न माना इसलिए यहां यह बात लिख गया।

—‘घन-चोट’ सह चुका हूं। फिर सह लूंगा ही। जीवन जीने की ललक तीव्र रही है और अब भी है। यही कहना है। और तबियत तो ठीक है।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८ विकासपुरी  
नयी दिल्ली-११००१८

प्रिय केदार,

इधर मैं तुम्हारे बारे में बहुत सोचता रहा और तुम्हारी कविताएं पढ़ता रहा। तुम्हें देखे बहुत दिन हो गये, कल्पना में जो पुराना चित्र है उसमें काफी परिवर्तन करना पड़ा। बुढ़ापा तुम्हें सता रहा है, यह सोच कर मन दुखी होता है। ‘हे मेरी तुम’<sup>1</sup> में एक ओर प्रेम का दमकता उजाला है, दूसरी ओर वृद्धावस्था की छायाएं भी हैं। पत्नी को तुमने बहुत प्यार दिया है और बहुत प्यार पाया है। अशक्त होने पर उसे सम्हालने का दायित्व भी तुम्हारा है। परस्पर स्नेह जितना गहरा होता है, बिछोह की सम्भावना उतना [उतनी] ही मर्मन्तक पीड़ा देने वाली होती है।

तुमने प्रकृति पर (अपने और किसान के प्राकृतिक परिवेश पर) लिखा है, सामाजिक यथार्थ पर (भारत के जन आन्दोलन पर, वर्तमान व्यवस्था पर) लिखा है, तुमने प्रेम पर (अपनी जवानी से लेकर बुढ़ापे तक प्यार की विभिन्न मंजिलों पर) लिखा है। तुमने जहां अपने ऊपर लिखा है वहां इन्हीं सन्दर्भों में लिखा है। इन सबको समेटने वाली तुम्हारी एक व्यापक निष्ठा है—कविता के प्रति। प्रकृति ने मनुष्य जीवन की सीमाएं निर्धारित कर दी हैं। इन सीमाओं पर मनुष्य विजय पाता है कविता में। जो मर्मन्तक पीड़ा है, उसे भी वह अपनी कविता का विषय बनाता है। इस तरह वह विष को अमृत में परिवर्तित कर देता है—अपने लिए, उससे ज़्यादा दूसरों के लिए।

तुम्हारी कविताएं, पढ़ना तुम्हारी जीवन यात्रा का अध्ययन करना है। जिस परिवेश से कविता का कोई सम्बन्ध नहीं है, उसमें रह कर, भीतर की लौ साधे, तुम बराबर कविताएं लिखते रहे हो, यह तुम्हारी और हिन्दी कविता की विजय है। इस समय राजनीति में काफी अवसरवाद फैला हुआ है, उसी के अनुरूप मार्क्सवादी लेखकों में अवसरवाद गहरे घर कर गया है। मुझे विश्वास है कि यह अवसरवाद छंट जाये गा,

---

1. पत्नी को सम्बोधित केदारजी का काव्य-संग्रह। [अ० त्रि०]

राजनीति और साहित्य में मार्क्सवाद का सूरज फिर चमके गा। इससे तुम्हारी कविता की लोकप्रियता का प्रसार हो गा। अभी भी कुछ लोग मुझे मिलते हैं जो तुम्हारी कविता पूरे एकात्म भाव से, तुम्हारे प्रति पूरी तरह समर्पित हो कर पढ़ते हैं। इनकी संख्या बढ़ेगी।

मैंने एक निबन्ध लिखा है : प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल। उसके साथ मैंने तुम्हारी कविताएं चुनी हैं, उनकी सूची बना दी है। यह सारी सामग्री मैंने अजय तिवारी को दे दी है। उसे वह श्री शिवकुमार सहाय के पास भेज देंगे।

यह काम पूरा करने के बाद मैं अपनी दुनिया में लौट आया हूँ—इतिहास और मार्क्सवाद की दुनिया में। क्या करें, मार्क्सवाद की सही समझ के बिना वर्तमान व्यवस्था बदली नहीं जा सकती और भ्रम केवल इतिहास के बारे में नहीं है, मार्क्सवाद के बारे में भी है। इधर इस बारे में जो कुछ सोचा था, वह [ ' ] मार्क्स और पिछड़े हुए समाज [ ' ] में है। दो तीन महीने में शायद निकल जाये। तुम्हें भिजवा दूँ गा, भूमिका और उपसंहार जरूर देख लेना।

बैठा हूँ मैं केन किनारे—यह कविता १९३५ में छपी थी। निराला ने और तुमने प्रायः एक साथ हिन्दी कविता में नये यथार्थवाद की शुरुआत की थी। तुम्हारी सही जमीन यथार्थवाद की है। इस जमीन पर चलते हुए तुमने अर्ध शताब्दी पूरी की, इसके लिए मैं तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ।

तुम दोनों के स्वास्थ्य के लिए हार्दिक मंगल कामना सहित—

रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स

बांदा (उ० प्र०

Pin 210001

दिनांक ४-१०-८५

प्रिय डाक्टर,

18/9/85 का पत्र 24/9/85 को मिला। वैसे सार में तुमने अपने निबन्ध की मूल बातें, इस पत्र में लिख दी हैं। फिर भी इच्छा तीव्र हुई कि तुम्हारा निबन्ध पढ़ने को मिल जाये तो अच्छा हो। आशा न थी कि उसकी एक प्रति श्री अजय तिवारी मेरे पास भेजेंगे। उन्हें तो निबन्ध का (को) मेरे प्रकाशक को देना है। सो दे देंगे....इधर क्यों भेजेंगे। पर सौभाग्य से उन्होंने एक प्रति अपने दिनांक १/१० के पत्र के साथ मेरे पास भेज दी। वह पत्र और प्रति कल ही रजिस्टर्ड डाक से मुझे मिली। बड़ी खुशी हुई पाकर। पढ़ गया कल ही। वाकई मैं तुमने अपना बहुत-सा अनमोल समय इसके लिखने में लगाया। यह जरूरी काम को रोक कर तुम्हें करना पड़ा। मैंने इससे सबक सीखा कि

करने वाले ऐसे ही काम करके दुनिया में कुछ कर जाते हैं। मैं, इस उम्र में तुमसे कविताओं के बारे में इतना कष्ट उठाने की बात ही नहीं सोच सकता था। धन्य हो कलम के धनी कि तुमने वह भी कर दिखाया जिसकी मुझे कोई आशा न थी। हां, पहले कभी ऐसा हो सकता था। तुमने जो इतना लम्बा निबन्ध लिखा मैं उसके लिए कहूँ तो क्या कहूँ, समझ में नहीं आता। आभार ही व्यक्त कर सकता हूँ। वह करता हूँ।

निबन्ध आदि से अंत तक महत्त्वपूर्ण है। प्रगतिशील काव्यधारा का ऐतिहासिक विवेचन यों किसी भकुए ने नहीं किया। जो भी 'महाजनों' ने इस पर लिखा वह केवल ऐसा रहा कि न लिखते तो अच्छा था। यारों ने ख़ूब दोस्ती निबाही और उनके लिए नयी से नयी बौद्धिक स्थापनाएं प्रस्तुत कीं। हमने सब देखा-समझा। चुप रहे। लोगों ने प्रगतिशील काव्यधारा को 'भूमिगत' ही कर दिया था। अब वह धारा अपना पसारा पा गई है। वे इस धारा के आगे टिक न पायेंगे। तुमने ठीक लिखा है। जैसा लिखा है वैसा ही होगा। मार्क्सवाद तो विकसित होती जाती वैज्ञानिक चेतना की धारा है।

मैं तो इस स्थिति में पहुंच गया था कि बिना परवाह किए जो सही है उसे लिखता रहूँ-न यश चाहिए-न पैसा-पूंजी। विश्वास पहले भी था कि एक दिन मेरी कविताएं ज़रूर सिर पर चढ़कर बोलेंगी। तुमने वही काम पूरा कर दिया। इससे हिन्दी का हित होता है। मैं तो मात्र एक छोटी नगण्य इकाई हूँ। कविताएं लोग पढ़ें, समझें, आगे बढ़ें, और अच्छा लिखें। बस इतना हो, चाहे मेरा नाम कोई ले या न ले। अच्छी कविता लिख लेना ही कवि के लिए महत्त्वपूर्ण है, न कि अपनी डुगडुगी बजवाना।

अन्त में यही कहूंगा कि तुमने अच्छा काम कर दिया वरना भटकन जैसी थी वैसी ही बनी रहती और अच्छी कविता का दर्शन दुर्लभ हो जाता। बधाई।

पत्नी कुरसी से सरक पड़ीं। बाएं पैर की जांघ के ऊपर fracture हो गया। ८ दिन से प्लास्टर उस पैर के पंजे में बंधा है। सेवा में लगा हूँ।

तुम्हारी नई पुस्तक जब आयेगी तब अब [सब] पढ़ूंगा। चेतना विकसित करूंगा। सत्य को पकड़ूंगा।

श्री अजय की चिट्ठी का उत्तर आज दे दूंगा।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

११-१२-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/१० का पत्र मिला। तुम्हारी पत्नी की जांघ के ऊपर फ्रैक्चर हो गया, यह जान कर बड़ा दुःख हुआ। प्लास्टर उस पैर के पंजे में (या पंजे तक?) बँधा है? उन्हें

नींद आती है या नहीं? देखभाल के लिए तुम अकेले हो या किसी से थोड़ी बहुत सहायता मिल जाती है? खाना कौन बनाता है? चौबीस घंटे घर में ही रहते हो या बाहर निकलने का अवसर मिलता है?

‘जो शिलाएं तोड़ते हैं’ और ‘बोले बोल अबोल’<sup>1</sup> की प्रतियां इलाहाबाद से आ गई हैं। मैंने मुंशी को बेटी किरन के दुबारा विधवा होने पर तुम्हारी कविता सुनाई और ‘बहुत दिनों से रोके-थामे अपने आंसू’ मुंशी से पढ़वाई। तुम पर इधर जो बीती है, उसका आभास इन कविताओं से हुआ। बांदा में वकालत के साथ कविता की गाड़ी चलाना एक चमत्कार है। इतना दुख सहने पर अपनी आस्था की भूमि पर जमे रहना वीरता का काम है। मंगल कामना सहित—

तुम्हारा रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

१६-१०-८५

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा ११/१० का पोस्टकार्ड कल १५/१० को मिला। मंगल कामना पा कर दिल को राहत मिली।

—एक दिन पत्नी की तबियत कुछ ऐसी दिखी कि वह अत्यधिक चिन्ताजनक हुई। इस पर मैंने दोनों बेटियों को तार व बेटे को मद्रास तार भेजे। वे दोनों तीन दिन हुए आ गईं। बेटा भी मद्रास से अपनी पत्नी के साथ हवाई जहाज से पहले दिल्ली, फिर वहां से इलाहाबाद वायुयान से पहुंचा। इलाहाबाद से बांदा टैक्सी करके आया। इन सब लोगों के आने से अकेलेपन की बेबसी व उदासी घटी और सबको देख कर पत्नी भी कुछ-कुछ आश्वस्त हुई। इलाहाबाद का दामाद व उसका बड़ा बेटा भी आये। कल वे वापस गये। मुझे इन सबके आ जाने से लगा कि मैं दुख में भी अकेला नहीं हूँ। साथ हैं प्रियजन।

—आज बेटे ने कहा कि वह अपनी मां को मद्रास ले जायेगा। इसलिए वह खजुराहो गया है कि १९/१० को वहां से मद्रास चला जाये। फिर वहां नर्सिंग होम में भरती का प्रबन्ध करा कर इलाहाबाद सूचना देगा और हम सब लोग वहां से ट्रेन द्वारा मद्रास जायेंगे। अब यही ठीक लगता है। यहां अधिक इलाज असम्भव होगा। मैंने भी स्वीकृति दी। इलाहाबाद में मेरे चाचा के छोटे बेटे विजय हैं। उनकी पत्नी मेरी बेटी [मेरे बेटे] की पत्नी की बड़ी बहन है। और कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखता।

—यहां तो इससे पहले से एक नौकर खाना दोनों वक्त बना देता है। कामकाज करता है। शंकर नाम है। भरोसा उसी का है। मैं तो खाना बना नहीं सकता था। रही बात घर से बाहर निकलने की सो शाम को ४ बजे १ घंटे के लिए एक दूकान—नीलम

1. ये दोनों केदारजी की कविताओं के संकलन हैं। [अ० त्रि०]

मेडिकल स्टोर्स में जा कर चाय पी आता था। तब तक नौकर नहीं आ पाता था।

नींद तो खूब आती है। कमजोर हैं। देखभाल अब तक मैं ही करता रहा हूँ। अब भी करता हूँ। दूसरा उतनी खिदमत नहीं कर सकता।

हां, बहुत दारुण दुख भोग रहा। अब भी है। उपाय कोई अन्य नहीं है। करता रहा हूँ। किये जाऊंगा।

मुंशी को स्नेह। परिवार के सभी सदस्यों को भी।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

२२-१०-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/१० का पत्र मिला। तुमने अपनी पत्नी के हृदय, जिगर आदि की जांच तो कराई ही होगी। रक्तचाप तो नहीं है? मधुमेह की शिकायत? जो भी हो, बेटा-बेटी आ गये, यह बहुत अच्छा हुआ। अकेलेपन के साथ बेबसी और उदासी का होना लाजमी है। मरीज के अलावा उसकी देखभाल करने वाले के स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पड़ता है। आगरे में मुझे सबसे अधिक चिन्ता यह रहती थी कि अचानक मालकिन बेहोश हो गयीं तो इन्हें घर में अकेला छोड़ कर डाक्टर को बुलाने कैसे जाऊंगा। वह दो-तीन बार बेहोश हुईं। सौभाग्य से उन दिनों कोई-न-कोई घर पर था। इसलिए अकेला छोड़ कर भागने की नौबत न आई।

तुम्हारे बेटे ने बिल्कुल ठीक प्रस्ताव किया है। मां को मद्रास ले जाना ही ठीक है। तुम चाहे बांदा आते-जाते रहो, उन्हें बेटे के पास ही रहना चाहिए। बेटा-बहू हवाई जहाज से दिल्ली आये, फिर इलाहाबाद, वहां से टैक्सी करके बांदा पहुँचे। इस बीच वे जिस मानसिक तनाव में रहे होंगे, वही जानते होंगे। इस स्थिति से उन्हें फिर न गुजरना पड़े, इसलिए भी मां-बेटे का साथ रहना ज़रूरी है। इससे तुम्हारी बेबसी और उदासी कुछ कम हो गी, स्वास्थ्य में थोड़ा बहुत सुधार हो गा। इनकी ज़िम्मेदारी अब सिर्फ मुझ पर नहीं है—यह विचार मन को तसल्ली देता है।

मुंशी को तुम्हारा पत्र पढ़वा दिया था।

मद्रास का पता लिखना।

प्यार।

तुम्हारा

रामविलास

208 / मित्र संवाद

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001,

24-10-85

प्रिय डाक्टर,

-२२/१० का पत्र आज अभी १ बजे दिन को मिला। पा कर हिम्मत बंधी। बहुत घबड़ा रहा हूँ। वैसे धैर्य धारण करने में कोई कमी नहीं आने देता। पर बार-बार हिल-हिल जाता हूँ। न इन्हें मधुमेह है-न रक्तचाप। वही fracture है। मैं यहां से खजुराहो वाइफ को ऐम्बुलेंस में ले जाऊंगा। वहां से प्लेन से दिल्ली होता हुआ मद्रास जाऊंगा। जल्दी ही। यह सब एक हफ्ते में होने की सम्भावना है। वहां नर्सिंग होम में भरती रहेंगी। आज बेटे का तार भी आया है। वहां से, वापस पहुंच कर, भेजा है कि मां को ले कर जल्दी जाऊं। आज ही यहां से हरीशरण लाल त्रिवेदी खजुराहो होते मद्रास गये हैं। फिर वहां से वापस आयेंगे। प्लेन का प्रबन्ध करके। पता है-

द्वारा अशोक

१९, थिरुमूर्ती स्ट्रीट

'टी' नगर

मद्रास १७

सस्नेह

केदार

सी-३५८, विकासपुरी,

नयी दिल्ली-११००१८

७-११-८५

प्रिय केदार,

आज शाम को हम मॉस्को रेडियो सुन रहे थे। परेड, भाषण, गाने इत्यादि। गर्बाचोव के आने के बाद सोवियत संघ के साम्राज्य विरोधी स्वर में कुछ तेजी आई है। तुम अब तक मद्रास पहुंच गये हो गे। मधुमेह और रक्तचाप से मुक्त हैं, यह बहुत अच्छा समाचार है। प्लास्टर से कष्ट होता है पर आज कल के मौसम में कुछ कम हो गा। गर्मियों में खुजली-सी होने लगती है। प्लास्टर तो कुछ समय बाद कट जाये गा। उसके बाद वह बेटा बहू के पास ही रहें तो अच्छा है। दरअसल एक आदमी तुम्हारी देखभाल के लिए चाहिए। बुढ़ापे में दूसरे की देखभाल करना बहुत कठिन होता है।

अब स्थिति कैसी है। संक्षेप में दो लाइन लिख कर भेज देना।

तुम्हारा

रामविलास

मद्रास  
Dt. 14-11-85  
8 A.M.  
प्रिय डाक्टर,

७-११-८५ का पत्र ९/११ को यहां मिला जब उसी दिन मैं बेटे के घर पहुंचा। ७-११ को बांदा से दोपहर को ट्रेन से चला-शाम झांसी पहुंचा-वहां से रात ३ बजे G. T. के first class से 4 हम लोग मद्रास को चले। कूपे 2 ही व्यक्तियों का मिला। उसी में घुसे। जैसे-तैसे ९/११ को सबेरे मद्रास पहुंच [पहुंचे]-बेटा मोटर व ऐम्बुलेंस ले कर स्टेशन आया था। Wife को सीधे विजय नर्सिंग होम ले गया। हम लोग घर गये। फिर उसी दिन बाद को वहां गये। अभी परीक्षण चल रहा है। मैं वहीं से पत्र लिख रहा हूं। बुखार था। अभी नार्मल है। देखो क्या होता है? बेटा रात को ऊटी शूटिंग में गया।

क्या कहूं डियर, क्या होगा। सब कुछ अज्ञात है।

मैं अपने को समहाले हूं। फिर आगे की नहीं जानता।

पत्र देना।  
सबको यथायोग्य।  
सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी-३३, हैदराबाद  
B. H. U. वाराणसी  
२४-११-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा १४/११ का पत्र मुझे दिल्ली में मिल गया था। मैं यहां २१ को आया। मझली लड़की सेवा नवम्बर १९८१ में पति के साथ स्कूटर पर जाते समय अचानक बिजली चली जाने से खंभात (गुजरात) में एक गांव के पास एक नाले में गिर कर डूबते-डूबते बची थी। पैर की हड्डी टूट गयी थी। दो-तीन बार आपरेशन हुआ। पैर ठीक नहीं हुआ। नागपुर में डा० मरवाह बड़े अच्छे सर्जन हैं। पिछला आपरेशन उन्होंने किया था। उन्हें पैर दिखाने नागपुर गयी थी। दिवाली की लम्बी छुट्टियों में भाई से मिलने यहां आ गयी थी। हम भी आ गये। कल पति के साथ खंभात जा रही है। मैं यहां होली तक रहूंगा। इस लड़की को टी० बी० हो चुका है और पोलियो वाले कमजोर पैर की हड्डी टूटी है।

पिछले दिनों मद्रास में वर्षा के समाचारों से बड़ी चिन्ता हो रही थी। तुम्हारे कार्ड से जाना, कम-से-कम १४ तक वर्षा ने तुम्हें कष्ट नहीं दिया। दिल्ली में शिवकुमार सहाय आये थे। अप्रैल-मई तक पुस्तक निकालेंगे। तुम्हारे जन्म दिवस पर कोई आयोजन करना चाहते हैं। Steinbeck के Grapes of Wrath में मां : Everyone breaks. It takes a MAN not to.

रा० वि०

210 / मित्र संवाद

मद्रास

10-12-85

प्रिय डाक्टर,

२४/११ का पत्र मिला था। उत्तर क्या देता। उससे बल मिला। पर संकट गहरा रहा है। वह बच नहीं सकती। बस।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद  
बी० एच० यू०, वाराणसी  
२२-१२-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा १०/१२ का कार्ड मिल गया था।

कवि का काम है, दुखियों के आंसू पोंछना। जब स्वयं उसके आंसू न थमते हों, तब यह कर्तव्य निबाहना बहुत कठिन होता है। कविता में मनुष्य को सँभालने की अमित शक्ति है। यह शक्ति उसे कवि ही तो देता है। सामान्य जीवन में सामान्य शक्ति से काम चल जाता है। जब ऊपर से गहरी चोट पड़ती है, तब विचलित होते हुए भी वह शक्ति के नये स्रोत अपने भीतर खोज लेता है। वह परिवार का है, उसके साथ वह देश का है। देश का ध्यान उसे टूटने से बचाता है। मैं गदर पर पुरानी पुस्तक के लिए एक निबन्ध लिख रहा हूँ। ह्यूरोज के वाक्य झांसी के पठानों पर (ये रानी के अंग रक्षक थे) अक्सर पढ़ता हूँ—

When driven in they retreated behind their houses, still firing or fighting with their swords in both hands till they were shot or beyonated struggling even when dying on the around to strike again. A party of them remained in a room off, the stables which was on fire till they were half burnt; their clothes in flames, they rushed out backing at their assailants and gaurding their heads with their shields.

तुम्हारा रामविलास

19 Thirumoorthy Street  
T, Nagar, Madras-17  
7-1-86

प्रिय डाक्टर,

22/12 का पोस्टकार्ड पा कर हिम्मत से परिस्थिति का सामना कर रहा हूँ। निश्चय ही देश का ध्यान उसे टूटने से बचाता है। पर यह जानते हुए भी कुछ देर के लिए



कभी-कभी धैर्य टूटने लगता है। फिर जल्दी-जल्दी अपनी चेतना को पाने का प्रयास करता हूँ और स्वयं जीते हुए अपनी प्रिया प्रियम्बद को जिलाये रखता हूँ। उनकी देह तो न रहेगी अवश्य पर चेतना में वह हमेशा जियेंगी। यही लड़ाई लड़ रहा हूँ। सभी लड़ते हैं। मैं तो इस लड़ाई में मौत की हार ही देखता हूँ।

तुम्हारे उद्धरण की प्राणवत्ता मेरे लिए प्राणप्रदायिनी है।

कब तक वाराणसी वास रहेगा?

दिल्ली में मुंशी को पत्र नहीं लिख सका। याद कर लेता हूँ।

सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद,

वाराणसी

२३-१-८६

प्रिय केदार,

मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य का जीवन एक झील की तरह है, जन्म और मृत्यु का घेरा सतह के हर बिन्दु से दिखाई देता है। इस बिन्दु से परिधि तक का विस्तार हमारे हाथ में नहीं है। हमारे कर्मों से यह विस्तार थोड़ा कम ज्यादा भले हो जाये पर उस किनारे तो लगना ही होगा जहां जीवन (जल) समाप्त हो जाता है। पर इस झील की गहराई हमारे हाथ में है। कवि भाव में डूबता है और पाता है कि वह अथाह जल में है। शैली ने कहा था : There is an infinity of meaning in every great poem (या ऐसा ही कुछ)। यह infinity भले ही निरपेक्ष रूप में अनन्त न हो, पर वह आयु की निर्धारित सीमा से बढ़ कर तो है ही। निराला की वन बेला-['] मस्तक पर लेकर उठी अतल की अतुल वास ['] पार्क में वन बेला खिली थी, उसकी चौहद्दी दिखाई देती थी पर जहां से वह गंध लेकर उठी थी, वह अतल था, गहराई ऊपर के विस्तार से कहीं ज्यादा थी। मनुष्य में यह गहरे डूबने की क्षमता है। चाहे एक क्षण को ही डूबे, वह इतने गहरे डूबता है कि ऊपर काल प्रवाह बहुत छोटा लगता है। कवि इस तरह की मृत्यु को जीतता है। अपने प्रेम के अनुभव को अपने लिए और दूसरों के लिए अमर कर जाता है। पुराने लोग कहते थे : संसार क्षण भंगुर है, प्रतिपल सब कुछ बदल रहा है, ['] सब टाट पड़ा रह जाये गा जब लाद चले गा बंजारा [']। ये लोग जीवन की झील में डूब कर ऊपर उठना न जानते थे। जहां मानव प्रेम है, वहां वैराग्य के लिए गुंजाइश नहीं है। ['] रस विशेष जाना तिन नहीं। [']

Ecstasy—आपे से बाहर होना, इस तरह का भावावेश आनन्द और शोक दोनों के अतिरेक का परिणाम होता है। अनेक कवियों ने आनन्द के अतिरेक का ही वर्णन किया है। भवभूति और शेक्सपियर ने शोक ग्रस्त मन की Ecstasy का वर्णन किया है। निराला की सजग संज्ञाशून्यता यही शोकवाली Ecstasy है। [ ' ] अवसन्न भी हूँ प्रसन्न मैं प्राप्तवर [ ' ]। अथवा [ ' ] स्नेह निर्झर बह गया है, रेत जीवन रह गया है [ ' ]। भवभूति और शेक्सपियर से निराला में अन्तर यह है कि वह शोक से टूट कर कर्म विमुख नहीं होते। [ ' ] वह रहा एक मन और राम का जो, न थका [ ' ] यह अथक मन बराबर संघर्ष करता है। जैसे वाल्मीकि ने शोक को श्लोक बना लिया था—[ ' ] शोक : श्लोकत्वमागतः [ ' ] लगभग वैसे ही निराला ने। शोक, प्रेम से अभिन्न रूप में जुड़ा हुआ शोक, कर्म की जबर्दस्त प्रेरणा बन सकता है। जैसे कच्चे लोहे में विषैले रसायन मिला कर इस्पात बनाया जाये, वैसे ही शोक में गुणात्मक परिवर्तन होने पर वह कर्म की प्रेरक ऊर्जा बन जाता है।

एक पुराने भारतीय दार्शनिक ने कहा था, विचार यदि वस्तुओं के प्रतिबिम्ब मात्र होते तो वृक्षों को प्रतिबिम्बित करने वाला ताल बहुत बड़ा विचारक होता। मनुष्य का चित्त प्रतिबिम्ब ग्रहण करता है, साथ ही उनके आपसी सम्बन्ध पहचानता है। प्रतिबिम्ब ग्रहण झील की परिधि की तरह है, विचार क्षमता गहरे डूबने की तरह है। भारत में कवियों और कथावाचकों ने बहुत सम्भव असम्भव कहानियां गढ़ीं। यह एक तरह का चित्त है। दार्शनिकों, वैज्ञानिकों ने संसार के जानने, प्रकृति की शक्तियों को अपने काम में लगाने के अनेक उपाय किये, यह दूसरी तरह का चित्र है। जो है नहीं, उसकी कल्पना करके प्रकृति को, जो है उसे, पहचानना मनुष्य की मेधा का चमत्कार है। शून्य की कल्पना, फिर दशमलव पद्धति, उसके आधार पर गणित का विकास, इस गणित के अस्त्र द्वारा भौतिकी का विकास, प्रतिबिम्ब से संतुष्ट न रहकर मनुष्य ने चिन्तन के नये उपकरण जुटाये। परमाणु दिखाई नहीं देता पर इसकी कल्पना भारत के दार्शनिकों ने की और वह अनेक विचार पद्धतियों में विद्यमान है। जैसे प्रकृति का सूक्ष्मतम अंश परमाणु है, वैसे ही काल का सूक्ष्मतम अंश क्षण है। प्रकृति तो दिखाई भी देती है किन्तु काल? प्रकृति के सन्दर्भ में उसकी गति पहचानी जाती है। उस अदृश्य काल की इकाई है क्षण।

जैसे भाव की गहराई है, वैसे ही विचार की गहराई है। दोनों का संबन्ध कर्म से है। श्रेष्ठ साहित्य, श्रेष्ठ ज्ञान-विज्ञान काल जयी है। शोक से हम टूटते नहीं हैं, उसका सामना करने के लिए वैराग्य के बदले हम मनुष्य की अप्रतिहत रचनात्मक क्षमता का भरोसा करते हैं।

तुम्हारा ७/१ का कार्ड मिल गया था। मैं यहां होली तक हूँ।

सस्नेह  
रामविलास

बड़े दुःख के साथ सूचित करता हूँ कि दिनांक २८/१ को सायंकाल ६ बजकर १५ मिनट पर मेरी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी अग्रवाल का निधन यहां मद्रास में हो गया। तेरही ९/२ को है।

केदारनाथ अग्रवाल  
19 Thirumoorthy Street  
T Nagar  
Madras 17

काशी

५-२-८६

प्रिय केदार,

जिस दुःखद घटना की आशंका थी, उसकी सूचना मिल गयी। पिछले कुछ वर्षों में प्रत्येक क्षण तुमने कितने मानसिक क्लेश में बिताया होगा! पुरुष समर्थ है। बहुत कुछ सह सकता है। उसके लिए पत्नी है, संसार है। पत्नी का संसार उसका पति है। तुम्हें अपना स्नेह देकर वह तुम्हारी कविता को नयी शक्ति दे गयीं, स्वयं उसमें अमर हो गयीं। यह क्षति केवल तुम्हारी नहीं, समस्त हिन्दी संसार की है। इस शोक की घड़ी में तुम्हारे मित्र और प्रशंसक, हम सब तुम्हारे साथ हैं।

तुम्हारा

रामविलास शर्मा

न्यू जी-३३, हैदराबाद,  
बी० एच० यू० वाराणसी  
२६-२-८६

प्रिय केदार,

कहां हो? कहां रहने का विचार है? अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। दो पंक्तियों में अपना समाचार लिख भेजना।

सस्नेह

रामविलास

19, Thirumoorthy Street

T Nagar, Madras 17

4-3-86/11 A.M.

प्रिय डाक्टर,

-२६/२ का तुम्हारा कार्ड पोस्टकार्ड आज मुझे यहां डाक से मिला। पढ़ने के बाद ही इसी क्षण उत्तर दे रहा हूँ। क्योंकि तुम्हें मेरी चिन्ता सता रही है। स्वाभाविक भी है।

-मैं मार्च के अन्त तक ही शायद यहां रहूँ। मेरी बड़ी बिटिया आई थी, उसे वापस इलाहाबाद ले आऊंगा। उसका बेटा यहां २ दिन रह कर चला गया। बिटिया का इलाज चल रहा है। फायदा हो रहा है। इसी से रुका हूँ। उसका इलाहाबाद जाना जरूरी है। मुझे वापस जाना है तो मेरे ही साथ चली जायेगी। फिर वहां लखनऊ-बांदा-गाजियाबाद और एक दिन को अपने गांव भी जाऊंगा।

मैं अपने को समहाले तो हूँ पर सब कुछ तो मुझ पर ही नहीं है। महाकाल की कुमति करनी का कोई भरोसा नहीं कि कब पकड़ ले जाये। वैसे उन्हें मैं हड़काये रहता हूँ। प्रिया प्रियम्बद पार्वती तो प्रेमयोगिनी थीं। उनकी मूर्ति बराबर सामने आती है। वह मरी नहीं। उनका चेतन रूप मेरे दिल में है। काव्य बन गई हैं।

सस्नेह

केदार

काशी

१७-३-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/३ का कार्ड मिल गया था। तुमने बेटी के इलाज की बात लिखी है। जो भी बीमारी हो, बीमारी ही तो है, और उससे चिन्ता भी होती है। तुम शायद इलाहाबाद जाओ गे, 'वहां से लखनऊ-बांदा-गाजियाबाद और एक दिन को अपने गांव भी....' लखनऊ में १-११/४ को प्र० ले० संघ की स्वर्ण जयन्ती है। शायद तुम उसमें शामिल हो सको। यदि तुम उस समारोह के बाद लखनऊ पहुँचो तो सूचित करना। बड़े भाई अस्वस्थ हैं। मध्य अप्रैल में दिल्ली जाते समय लखनऊ उतरने का कार्यक्रम बनेगा। तुमने लिखा है, 'महाकाल की कुमति करनी का कोई भरोसा नहीं कि कब पकड़ ले जाये।' साहित्यकार सूरमा है, लड़ते-लड़ते खेत रहे, इसी में उसकी शान है। शरीर अपना धर्म निबाहे गा ही। 'चढ़ कर मेरे जीवन रथ पर, प्रलय चल रहा अपने पथ पर....' प्रसाद।

मैं यहां १५ तक हूँ। उसके बाद दिल्ली के पते पर लिखना।

तुम्हारा रा० वि०

बांदा

१७-३-८६

प्रिय डाक्टर,

मैं 15-3 को 3 A.M. बजे बांदा आ गया। इलाहाबाद न जा सका। आरक्षण न मिल सका।

आशा है कि पत्र बनारस में ही पा कर मुझे उत्तर दोगे—बांदा के पते पर। ठीक ही हूँ।

चिन्ता न करना।

सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

काशी

२०-३-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा १७/६[१७/३] का कार्ड मिला। उसी दिन मैंने तुम्हें मद्रास के पते पर कार्ड डाला था। तुमने लखनऊ जाने की बात लिखी थी। अब यदि वैसा कार्यक्रम बने तो लिखना। मैं २० अप्रैल के आसपास लखनऊ पहुँचूँगा—निश्चित दिन विजय दिल्ली से मुझे सूचित करेंगे क्योंकि उन्हें इधर आना है। बड़े भाई अस्वस्थ हैं, उन्हें देखने के बाद दिल्ली जाऊँगा।

बांदा में तुम्हारे काफी परिचित और मित्र हैं। टुनटुनिया और केन हैं। धूप तेज होने लगी है पर सबेरे तो घूमा जा सकता है। यहां आमों में खूब बौर आये हैं। इस विश्व विद्यालय में ये पेड़ ही अब देखने और बात करने लायक रह गये हैं।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

२५-३-८६

प्रिय डाक्टर,

२०/३ का पोस्टकार्ड मिला।

मैं अभी कहीं बाहर नहीं जा रहा। शिथिल हूँ शरीर से। पहले इरादा था पर अब त्याग दिया। बड़ी लड़की को लेकर मद्रास से बांदा आया। इलाहाबाद से दामाद आकर उन्हें यहां से लिवा ले गये। घर में हूँ। खाने पीने का प्रबन्ध भतीजे कर रहे हैं। इसकी चिन्ता नहीं है। अकेले तो हूँ ही। अभी टहलने नहीं जाता। मौसम ठीक ही है।

216 / मित्र संवाद

क्या सम्भव है कि बांदा आ जाओ। दिल हलका हो जाये गा। वैसे कहूँ [ तो ] और क्या कहूँ। आग्रह है। यहां परिचित तो हैं पर इससे कुछ नहीं होता।

वहां मद्रास में सब ठीक है। बेटा व्यस्त है। बहू कुछ अस्वस्थ थी। चारों बेटे पढ़ रहे हैं। याद आती है।

सस्नेह केदार

काशी

१-४-८६

प्रिय केदार,

२५/३ का कार्ड मिला।

अकेले यात्रा करना अब सम्भव नहीं है। नवम्बर में विजय यहां छोड़ गये थे, इस महीने अपनी सुविधानुसार ले जायेंगे। दिल्ली पहुँच कर अजय तिवारी से बात करूँगा। वह इलाहाबाद जाते रहते हैं। शिवकुमार सहाय और अजय तुम्हारी ७५वीं वर्ष गाँठ मनाने की योजना बना रहे थे। उसमें मुझे ले चलने की बात भी हुई थी। सम्भव है, वैसे कोई आयोजन हो, तो देर सबेर भेंट होगी।

आज तुम्हारा जन्म दिन है। तुम्हें आज दिन भर याद करूँगा। बहुत-बहुत प्यार के साथ।

तुम्हारा

रामविलास

सी-३५८, विकासपुरी

नयी दिल्ली-१८

२८-४-८६

प्रिय केदार,

लखनऊ होता हुआ मैं यहां आ गया हूँ। अमृतलाल नागर पहले से काफी झटके हुए हैं। आंखों से साफ दिखाई नहीं देता। मैं बिल्कुल पास पहुँच गया। फिर भी पहचान न पाये। बोलने में भी कभी-कभी शब्दों का उच्चारण साफ नहीं कर पाते। उनके पुत्र शरद ने बताया कि प्रगतिशील लेखक संघ की जयन्ती के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने दो लाख रुपये दिये थे। सबसे पहले राजीव गांधी का संदेश पढ़ कर सुनाया गया था। कहां निराला और प्रेमचंद, कहां आज का यह प्रगतिशील लेखक संघ।

सोवियत संघ की २७वीं पार्टी कांग्रेस में गोर्बाचोव ने सरकारी तंत्र और पार्टी में फैले हुए भ्रष्टाचार की तीखी आलोचना की। पहले तो सारे दोष स्तालिन की व्यक्ति

पूजा के माथे मढ़ दिये जाते थे। इस बार उस सहारे की गुंजाइश न थी। यह भ्रष्टाचार व्यक्ति पूजा की आलोचना के बाद ही फैला था। रूसी शराब पीना बन्द कर दें तो यह दूसरी अक्टूबर क्रान्ति होगी।

तुम्हारा-रामविलास

बांदा १-५-८६ / १ बजे दिन।

प्रिय डाक्टर,

२८ / ४ का पोस्टकार्ड आज अभी मिला।

उत्तर तत्काल दे रहा हूँ। यह जान कर दुःख हुआ कि भाई जान नागर जी अब शिथिल हैं। बहुत तो व्यस्त रह कर शरीर तोड़ते रहे। खैर। मैं हमेशा उनकी इस बात से खिन्न रहता रहा कि वे अपने आप को पुलिस व सरकार के हवाले कर देते रहे। वह और शिवमंगल सिंह सुमन गोरखपुर में पुलिस द्वारा अभिनन्दित हुए थे। समाचार पत्र में पढ़ा था। हम तो यहां रह कर भी ऐसी नहीं करते रहे। घेरे भी गये। पर पिंड छुड़ा लेते रहे। हमें गुन-गौरव गायन से भला क्या लाभ? कविता तो अच्छी न हो जायेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा का मोह नहीं रहा। प्र० ले० संघ को सरकार ने २ लाख दिये। यही उसकी पहचान के लिए काफी है। सभी तो संरक्षण के बलबूते पर आगे आते और छाती ठोंकते हैं। वे जानें। मैं इस बात का कभी कायल नहीं रहा। गोर्बाचोव के बारे में विशेष नहीं जानता। वह कुछ कर गुजरें तब है। शराब तो रूसी छोड़ नहीं सकते। क्या जाने क्या होगा।

सस्नेह तु०

केदार

नयी दिल्ली-१८

१३-५-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारे १/५ का कार्ड यथासमय मिल गया था। अजय तिवारी के आने का इन्तज़ार कर रहा था। परसों भेंट हो गई। उनसे मालूम हुआ कि २१ सितम्बर को इलाहाबाद में तुम्हारा अभिनन्दन<sup>1</sup> होगा : तुमसे शिवकुमार सहाय ने सहमति प्राप्त कर ली है। हमारे निबन्ध और संकलित कविताओं वाली पुस्तक भी शायद तभी निकलेगी। तुम्हें समय मिले तो गोर्बाचोव की २७वीं पार्टी कांग्रेस वाली रिपोर्ट पढ़ना। इसमें मद्यपान कम करने

1. 'सम्मान : केदारनाथ अग्रवाल' समारोह बांदा में हुआ था। [अ० त्रि०]

218 / मित्र संवाद

के अलावा तलाक की दर घटाने की बात भी है। यह शायद पहली रिपोर्ट है जिसमें परिवार को सुदृढ़ बनाने पर जोर दिया गया है। भ्रष्टाचार फैला-इसका भी स्पष्ट उल्लेख है।

यह भी कहा कि पिछड़े हुए देशों पर जितना कर्ज का बोझ बढ़ता है, उतना ही शस्त्र निर्माण पर अमरीकी खर्च बढ़ता है। अर्थात् लड़ाई रोकने के लिए अमरीकियों की सूदखोरी बन्द करनी हो गी। लेकिन अभी यह बात कारगर नारे के रूप में लोगों के सामने नहीं आयी।

तुम्हारा रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

Dt. 17-6-86

प्रिय डाक्टर,

13/5 का पोस्टकार्ड मिल गया था।

अब अजय तिवारी<sup>1</sup> ने तुम्हारी किताब-‘मार्क्सवाद और पिछड़े हुए समाज’ दी। वह कल २ बजे की बस से वापस इलाहाबाद गये। १४/६ की शाम को आये थे। डा० अशोक त्रिपाठी व श्री शर्मा<sup>2</sup> के साथ। घर पर ही रहे। मेरा अकेलापन टूटा। उन्होंने ५<sup>१/२</sup> [साढ़े पाँच] घंटे की बातचीत टेप की।

किताब भेज कर तुमने मुझे फिर मौका दिया कि मैं अपनी चेतना को विकसित कर सकूँ। यह होगा ही क्योंकि पढ़ूँगा और सत्य को ग्रहण करूँगा।

वैसे ठीक से हूँ। पढ़ता रहता हूँ-कविताएं भी लिख देता हूँ। और कोई दिक्कत नहीं है।

अजय कह रहे थे कि तुम दर्शन शास्त्र की कोई किताब लिख रहे हो। यह भी महान कार्य है। सम्पन्न हो। यही कामना है।

गर्मी तो ४४° या ४५° (डिग्री) तक पहुँच जाता [जाती] है। कमरे में हवा खाता रहता हूँ-इसलिए भीषण गरमी से बचा रहता हूँ।

और हाल तो अजय से मालुम ही हो जायेंगे।

मैंने गोर्बाचोव का भाषण पढ़ा था। इस ओर तुमने मेरा ध्यान आकर्षित किया था। सूदखोरी अमरीका बन्द करने से रहा।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

---

1. अजय—आलोचक अजय तिवारी

2. शर्मा—अजय तिवारी के मित्र विनयशील शर्मा [अ० त्रि०]



मित्र संवाद / 219

नई दिल्ली-१८

२७-६-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा १७/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था। मैं अजय तिवारी की राह देख रहा था, आ जायें तब लिखूँ पर अभी तक नहीं आये। उन्हें एक कार्ड भी लिखा था, उत्तर नहीं आया। आशंका है, घर में कोई बीमार हो गा। इधर मेरी तीन किताबों के नये संस्करण होने हैं। इनमें 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' की भूमिका में तुम पर और नागार्जुन पर लिखा है। पिछला निबन्ध लिखते समय 'जो शिलाएं तोड़ते हैं' संकलन मेरे पास नहीं था। अब विकास की मंजिलें स्पष्ट हो गयी हैं १) १९४४ तक यथार्थवाद का प्रारम्भिक विकास; २) ४५-४७ का संघर्षों वाला दौर; राजनीति में पैनापन; ३) ४८-५३ में दूसरे दौर की चेतना कायम रहती है; राजनीतिक कवि रूप में नागार्जुन इसी दौर की देन हैं; प्रयोगवाद की क्षीणधारा। ४) ५४-५६ में तीसरे दौर की तुम्हारी और नागा० की कविता में प्रवाहित नयी कविता का प्रसार। ४५ से ५६ तक मूलतः एक ही संघर्षोन्मुख राजनीति है। १९५६ से विघटनकारी प्रवृत्तियों का उभार। भीष्म साहनी के अनुसार प्रगतिशील कविता-असहाय वेदना की आवाज़! साहित्य और राजनीति में फिर संघर्ष के मार्ग पर बढ़ने की जरूरत। तुम पढ़ते हो और कविता भी लिखते हो, जान कर बड़ी तसल्ली हुई।

तुम्हार-रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट,

सिविल लाइन्स

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

दिनांक २६-७-८६

प्रिय डाक्टर,

-२७/६ के कार्ड का उत्तर मैं नहीं दे सका। रह गया। भूल गया। आज अजय का पत्र आया तब उत्तर देने बैठा हूँ।

-तुम्हारा निर्णय सौ फीसदी सही कि 'साक्षात्कार' का सहयोग न लिया जाये। सहयोग न लेना ही न्याय और विवेक संगत है। इस बारे में चिन्तित होने का कोई कारण नहीं है। यही बात मैंने सहाय साहब व डा० अशोक त्रिपाठी से कह दिया था [दी थी]। आज अजय को भी यही लिख दिया है।

- 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' पुस्तक की भूमिका में जो तुमने लिखा है उसके जानने की लालसा है। जब छप कर आयेगी तब पढ़ूँगा।

—प्रगतिशील कविता 'असहाय वेदना' की कविता नहीं है। किसी के कहने से उसका सारा इतिहास झुठलाया नहीं जा सकता। प्र० कविता भी तो भीतर-बाहर से झटके झेलती रही है। जिसकी जैसी समझ वैसी उसकी कथनी। संघर्ष उसने निरन्तर किया है। वही अब भी करना पड़ेगा। नये लोग नई ऊर्जा से आगे आये-बढ़ें-काम करें।

पढ़ता तो रहता ही हूँ। लिखता भी हूँ। पर बुढ़ापे का न्याय है-थक जाता हूँ। आंखों को, ज्यादा रोशनी में, पढ़ना होता है।

हां, तुम तो मेरे घर में ही ठहरोगे। दूसरे सभी लोग डी० ए० वी० कालेज की इमारत में सुविधा से ठहरेंगे। कोई दिक्कत न रहेगी। वहीं उनके आवास और खाने-वगैरह की व्यवस्था है।

सहाय सहाब व डा० अशोक त्रिपाठी वहां जा कर देख आये हैं। वहां के प्रबन्धक मेरे परम मित्र हैं। कष्ट न होगा। २०/९ को कालेज में अवकाश कर देंगे। २१/९ को इतवार है। वहां बड़ा हाल भी है। मेरे आर्य कन्या पाठशाला में ठहरने के लिए कमरे ठीक नहीं हैं-सुविधा न रहेगी। इसीलिए मैंने यह व्यवस्था कराई है।

तुम्हें खाने में क्या कुछ चाहिए लिखो, मैं अपने भतीजों के यहां बता दूंगा। वैसा ही प्रबन्ध होगा। मैं भी वहीं से खाना मंगा कर खाता हूँ। नाश्ता करता हूँ। मेरे घर के सामने ही उनका घर है। दूध का प्रबन्ध भी हो जायेगा। नाश्ते etc में क्या कुछ हो लिखना। सुविधा होगी अगर पहले से मालूम हो जाये। और कोई बात नहीं है।

आशा है कि कोई-न-कोई नई सृष्टि रच रहे होंगे।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नई दिल्ली-१८

५-८-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा २६/७ का पत्र मिला। 'साक्षात्कार' के बारे में हमारी बात से सहमत हो, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

बुढ़ापे का शरीर है, थक जाते हो। स्वाभाविक है। मैं आगरे में था, तब मुझे बहुत थकान हो जाती थी। अब ठीक हूँ। सबेरे से दोपहर तक ५-६ घंटे काम कर लेता हूँ। उसके बाद छुट्टी। गद्य लिखने से कविता लिखने में ज्यादा मेहनत पड़ती है। पता नहीं तुम्हारे पास मनोरंजन के कोई साधन हैं या नहीं। मेरा फालतू समय अनेक रेडियो

स्टेशनों से देशी-विदेशी समाचार और देशी विदेशी संगीत सुनने में निकल जाता है। भारतीय संगीत का इतिहास बहुत दिलचस्प है। साहित्य के इतिहास से संबंधित अनेक भ्रांतियां संगीत के इतिहास से दूर हो जाती हैं। दोनों को मिला कर शायद किसी ने इनका अध्ययन नहीं किया। आदमी को लगे कि वह बेकार बैठा है, कुछ नहीं कर रहा तो इससे भी थकान हो सकती है। बहुत ज्यादा सोच में डूबा रहे तो शरीर टूटने सा लगे गा, इसलिए मनोरंजन, बिन काम का काम, ज़िन्दा रहने के लिए ज़रूरी है। आंखों से ज्यादा काम लेने में कष्ट हो तो कानों से मदद लेनी चाहिए। मेरी तरह। घर में रेडियो, ट्रान्ज़िस्टर जैसी चीज़ है ना?

और रसोईघर में गैस सिलिन्डर न हो तो दो चार दिन के लिए किसी से मांग कर रख लो। तुम्हें अपने हाथ की मोटी रोटी खिलायेंगे। दाल जिसकी कहो गे। वैसे अपने को तो उड़द की पसंद है। चाय भी बना कर पिला दिया करें गे। सबेरे घूम कर आने के बाद, साढ़े आठ बजे नाश्ते के बाद, तीसरे पहर सो कर उठने के बाद अपने तीन प्याले बँधे हुए हैं, दूध न हो तो नीबू की चाय भी चले गी। नाश्ते में ऐसी चीज़ जिसे चबाने में कमजोर दांतों को कष्ट न हो, अपने लिए ठीक है। उपमा, हलवा (आटे का, घी कम, शक्कर कम), खीर, सांभर के साथ बड़े, दूध-जलेबी-यार, खाने की तो बहुत सी चीज़ें हैं पर अपना काम तो दूध में रोटी मीस कर खाने से चल जाता है। पुत्रवधू यहां इडली, दोशा, सांभर बड़ा बनाने में एक्सपर्ट है। लेकिन ये सब खास मौकों के लिए हैं। कभी बेढ़ई, उड़द की कचौड़ी.... भी बन जाती है।

दोपहर को वह स्कूल में होती है। मन होता है तो बेढ़ई बना कर खा लेता हूं। पीठी वह तैयार करके रख जाती है। तुम एक बार मेरे हाथ की बेढ़ई खा लो तो रोटियों पर कविता लिखना भूल जाओ। वैसे मैं घी नहीं खाता पर बेढ़ईयां चुपड़ कर खाने में अच्छी लगती हैं। खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बहुत बढ़ गयी थी। शाम को चलना लगभग असंभव हो गया था। लगता था, पैरों की नसें फट जायें गी। आंखों में तकलीफ हुई तो आंखों के डाक्टर ने कोलेस्ट्रॉल का पता लगाया। छह महीने तक घी दूध सब एकदम बंद करा दिया। इससे बड़ा लाभ हुआ। फिर मक्खन निकला दूध पीने की अनुमति दे दी। वही क्रम अब भी चल रहा है। शक्कर भी मैं बहुत कम चाय के साथ ही, लेता हूं। दूध फीका पीता हूं। तुम्हारे यहां मच्छरों का क्या हाल है? कहो तो मसहरी लेला आऊं। घर सड़क के किनारे हैं। सबेरे ५ बजे से रात ग्यारह तक बसें चलती रहती हैं, ट्रके, कारें हर समय चलती हैं। बदबूदार धुएं का मच्छरों पर कोई असर नहीं होता। जहां बत्ती बंद की, हमला शुरू हुआ, हुआ। इधर अजय से भेंट नहीं हुई।

तुम्हारा

रामविलास

प्रिय डाक्टर,

-५/८ का पत्र आज मिला। मैंने तो आशा नहीं की थी कि तुम उसे पा सकोगे क्योंकि अखबार में ऐसा छपा था कि तुम्हारे क्षेत्र में दंगा-फसाद हो गया है। खैरियत है कि कुछ अनिष्ट नहीं हुआ। चिन्ता भारी थी। अब चैन की सांस ली।

-कविता लिखना मुझ जैसे के लिए, वास्तव में जान लेना काम होता है। बात ठीक ही है। बुद्धिहीन हूँ न। न जाने कैसे संगत में पड़ कर बिगड़ गया। इधर कविता, उधर पत्नी प्रेम फिर ऊपर से मार्क्सवाद। सब मिल कर महा विकट हो गये। पर कट आई है उम्र। बाकी बची भी जैसे-तैसे पार हो जायेगी। डियर, तीनों बड़े महत्व के हैं। इन्होंने मुझे आदमी बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर तुम और निराला जी ने और बना दिया। रही-सही कसर पूरी हो गई।

-अकेले रहने का अभ्यस्त हो गया हूँ। ट्रांजिस्टर साथ रहता है, साथ देता है। मैं भी जहां-तहां सुई लगाता रहा हूँ और तरह-तरह के स्वर और संगीत सुनता रहता हूँ। यही मनोरंजन है। वैसे कुछ-न-कुछ पढ़ भी लेता हूँ।

-गैस का सिलिन्डर है। मैं जरूर खाऊंगा तुम्हारी बनाई 'बेढ़इयां'। दाल उड़ग [उड़द] चलेगी। चाय तो बनाना [बनानी] न पड़ेगी। नौकर बना देगा या भतीजों के घर से आ जायेगी। ३ प्याले चाय ठीक है। पिलायेंगे। पर घूमने न जाने देंगे। घर के बाहर बाड़े के भीतर ही टहल लेना। वैसे तुम्हारी इच्छा। चार दिन रहोगे और उसमें से भी कुछ समय घूमने में निकाल दोगे। दूध तो पिलायेंगे ही। न होने का प्रश्न ही नहीं है। हलवा (आटे का) रहेगा। खीर भी हो जायेगी। बड़े भी मिलेंगे। दूध जलेबी खूब सुविधाजनक है। भाई, मक्खन निकला दूध तो न मिल सकेगा। शक्कर न डालेंगे उसमें।

-मच्छड़ हैं। मसहरी हैं। वह उत्पात न कर सकेंगे। चैन से सो सकोगे।

-अजय की पत्नी बीमार थीं। पत्र आया था। अब शायद तुमसे मिल सके होंगे। कल सहाय और अशोक को आना है। उनसे हाल दिल्ली और इलाहाबाद के मिलेंगे।

-अब तुम्हारे क्षेत्र में शान्ति होगी। यह झगड़े का दौर अभी बरसों चलेगा।

-मुंशी का पत्र आया था कि वह जाड़े में पधारेंगे। देखते हैं कि आ पाते हैं कि नहीं।

-शमशेर बीमार रहे हैं। ऐसा सुना था। पता नहीं चला कि अब कैसे हैं।

-नागार्जुन भी पटना में होंगे। वह भी लटिया आये हैं। ऐसा मालूम हुआ था। पता नहीं कहां हैं? कैसे हैं?

—‘साक्षात्कार’ में छप कर ही क्या मेरी कविता अच्छी हो जाती। वहां तो उसका अपना हित ही सधता।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा Pin 210001 / U.P.

१-८-८६

प्रिय मुंशी,

दिनांक 29/7 का पत्र मिला।

‘सचेतक’ मिल रहा है। पढ़ता भी हूँ। कुछ लिख कर नहीं दे सका।

तुम लिखते तो हो कि बांदा आओगे। देखो। तुम्हारा क्या ठीक? व्यस्त आदमी ठहरे। फिर दिल्ली छोड़े तब तो!

....ठीक हूँ।

पढ़ता हूँ। कभी-कभी दो-एक कविताएं लिख लेता हूँ।

डाक्टर 16 या 18/9 को बांदा आ रहे हैं। चार दिन को। बड़ा अच्छा रहेगा।

घर में बच्चों वगैरह के क्या हाल हैं? सब बड़े चंट हो गये हैं। खूब लिखते हैं।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

[हाशिये पर] ‘सचेतक’ के ५०वें अंक को हमारी शुभकामनाएं।

नयी दिल्ली-१८

१३-८-८६

प्रिय केदार

१/८ के पत्र में तुमने लिखा है : “चार दिन रहो गे और उसमें से भी कुछ समय घूमने में निकाल दो गे।” चार दिन रहने की बात अजय ने लिखी हो गी, इधर उसकी पत्नी बहुत अस्वस्थ थी तो मैंने लिखा कि और भी जल्दी लौट आना-यानी दो दिन बाद! और हम भी साथ आ जायें गे! अच्छा, यह दो चार दिन वाली बात रद्द! हमारे पास समय बहुत है। लौटते में दो दिन को आगरा रुकना चाहते हैं। कुछ व्यवस्था कर लें गे। एक हफ्ता बांदा रहें तो ठीक हो गा? हमें सबेरे घूमने में सिर्फ ४५ मिनट लगते हैं, लेकिन घूमे बिना उड़द की दाल हजम कैसे हो गी? और बेढ़िया तो और भी ‘गद्’ होती हैं। यह शब्द उधर बोला जाता है कि नहीं? मक्खन निकले दूध की कोई समस्या नहीं। मलाई निकाल दो, आधा मक्खन निकल गया और निकालना हो तो

आवश्यकतानुसार पानी पिला दो। मैंने अपने नाश्ते के मेनू में बहुत सी चीजें लिख दी हैं। एक दिन एक ही बढ़िया चीज़ खाना चाहिए। दो अच्छी चीज़ें हों तो मजा किरकिरा हो जाता है। हां मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है। तुम मेरे लिये डिब्बिया खरीद कर मत रखना। तीन दिन पहले मैंने मुंशी से बांदा चलने को कहा था। राज़ी हो गये थे। पर मैंने साथ चलने को कहा तो बोले, तुम अलग से जाना, हम अलग से पहुंचेंगे, घिस्सेबाजी! जाड़े में उधर जाने के प्रस्ताव के बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा।

जबलपुर से ज्ञानरंजन ने लिखा है—“एक व्याख्यान आपका हम यहां २२ की संध्या को रखना चाहते हैं”, मैंने उन्हें लिखा है : बांदा में केदार से मिलना था। यात्रा में एक आदमी साथ चाहिए। समारोह<sup>१</sup> से इसका अवसर मिला है। मैं वहां व्याख्यान देने नहीं जा रहा हूँ।” भोपाल से कमला प्रसाद ने लिखा है : ‘या तो भोपाल में या जबलपुर में बांदा के कार्यक्रम के बाद एक दिन का समय निर्धारित कर लें?’ इन्हें भी ऐसा ही जबाब दूं गा। अजय तिवारी ने लिखा है—“आरम्भ के सत्र में आप दो शब्द बोल दें और अंत में समापन व्याख्यान आप दें”। मैंने उन्हें सावधान कर दिया है कि उद्घाटनकर्ता/समापनकर्ता के रूप में मेरे बारे में विज्ञप्ति मत प्रकाशित करना, नहीं तो तुम्हारी भद्द हो गी। लोगों से बातें करने में कोई दिक्कत नहीं। भाषण करने में दिक्कतें ही दिक्कतें हैं। सोचते रहो, यह कहना है, वह कहना है। कौन सोचा विचारी में पड़े! सब रसों में श्रेष्ठ है बतरस, भाषण रस का शत्रु है। इधर काफी काम किया। दो चार दिन दिमाग को सोचने के काम से छुट्टी देना चाहते हैं। अजय काफी परेशानी में हैं। आयें तो उनसे वहां के कार्यक्रम के बारे में बात करें। किस-किस का भाषण कब कब रखा है। कितने भाषण लेखपाठ के रूप में होंगे, कितने मौखिक होंगे, वाद-विवाद या वार्तालाप का सत्र कौन सा हो गा। कविता पाठ हो गा या नहीं? हो गा तो किस किस का हो गा? कोई प्रदर्शनी-चित्रों की, पुस्तकों और पत्रों की? इत्यादि।

यहां से दो-तीन मील पर तिलक नगर है, वहां कुछ फसाद हुआ था। उसके बाद जनकपुरी में तनाव था—जहां हम पहले रहते थे। विकासपुरी में शांति है। हमारे घूमने का कार्यक्रम चालू रहा—थोड़ा समय में परिवर्तन कर दिया था, बस। बुद्धि कई तरह की होती है, उसके कोठे अलग अलग-अलग होते हैं। बुद्धिमान लोग पैसा कमाते हैं। कविता से दूर रहते हैं। तुम्हारा कविता वाला कोठा दुरुस्त है। उसमें बुद्धि वाला तत्व हो चाहे न हो। तुम अकेले रहने के आदी हो गये हो। यह बढ़िया समाचार है। तुमने अपना मन साध लिया है। बड़े कवि की पहचान यह है कि वह बौद्धिक श्रम के बिना सचेत रहता है और उसका विकास रुकता नहीं है। कविता उसके सामने अपने आप आती है। पढ़ाई लिखाई, लोगों के संपर्क आदि हल्के उत्तेजक हैं, जो दबे हुए भावों,

1. बाँदा में, केदारजी के पचहत्तर वर्ष पूरा करने पर 20-21 सितम्बर को 1981 में सम्पन्न ‘सम्मान: केदारनाथ अग्रवाल’ समारोह। (अ० त्रि०)

बिम्बों, अस्पष्ट विचारों, शब्दबंधों को उभारने, आकार ग्रहण करने में सहायता करते हैं। कवि के इस सचेत उपचेतन के अध्ययन से दिलचस्प बातें दुनिया में कम हैं।

रात के साढ़े आठ बजे हैं। पौत्र चिन्मय शर्मा पनीर की सैंडविच बना कर लाये हैं। पूछते हैं—सख्त हो तो दूसरी बना लायें। सबेरे पुत्र विजय एक बार खुद चाय बनाते हैं और पिलाते हैं। हमें अपने बाबा की याद आ जाती है, हमसे तमाखू बनवा कर खाते थे और कहते थे—बड़ी मीठी बनी है।

तुम्हारा रामविलास

बांदा

30-8-86

प्रिय डाक्टर,

—पत्र का उत्तर विलम्ब से। यों ही टलता गया।

—ठीक हूँ। अजय के पत्र से पता लगा कि इलाहाबाद से 16/9 को बांदा आ रहे हो। बेहद खुशी हुई।

—रिजर्वेशन 22 या 23/9 को कराया जायेगा। अभी तो समय है।

—पता नहीं चला कि आखिर कौन-कौन आ रहे हैं। आयोजन में।

मैंने अजय के मंगाने पर कुछ कविताएं उन्हें भेजी थीं। पता नहीं कि वे पा गये या नहीं। उन्हें भी पोस्टकार्ड लिख रहा हूँ।

इलाहाबाद के कोई समाचार नहीं मिले। काम छपाई का हो ही रहा होगा। मुंशी को भी मैंने उनके पत्र का उत्तर दे दिया था।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

५-९-८६

प्रिय केदार,

सबेरे कै बजे सो कर उठते हो? हम तड़के आकर दरवाजा खटखटायेंगे। 'पता नहीं चला कि आखिर कौन-कौन आ रहे हैं आयोजन में।' दो आदमी निश्चित रूप से आ रहे हैं। रा० वि० शर्मा और अजय तिवारी। जब तुम बोलो गे तब ये दोनों सुनें गे;

जब मैं बोलूँ गा तब तुम और अजय सुनो गे। अपने बीच में हम अजय को बोलने न दें गे। 'इलाहाबाद के कोई समाचार नहीं मिले। काम छपाई का हो ही रहा होगा'; निश्चित हो रहा हो गा, नहीं तो संकलनकर्ता को जो रुपये दिये हैं, वे डूब न जायें गे? कोई कवि सम्मेलन है कि कविता न सुनाई और मेहनताना ले कर चल दिये।

हमारे बड़े भाई बांदा के, स्टेशन के पास वाले, डाकखाने में १९२९ में काम करते थे। उनमें दो साल सीनियर श्री शिवप्रसाद गुप्त बाद में गोरखपुर के पोस्ट मास्टर हुए। कोई अता पता? तुमसे अजय की जिरह का कुछ हिस्सा 'नवभारत टाइम्स' में छपा है। तुम पर 'वर्तमान साहित्य' (इलाहाबाद) कुछ सामग्री दे गा। आजकल काम में मन नहीं लगता। क्या करें?

रा० वि०

नयी दिल्ली-१८

६-१०-८६

प्रिय केदार,

आगरे में ६ दिन रुकने के बाद हम यहां २८ की रात को आ गये थे। अजय तिवारी ने कमाल किया, अपने सामान के साथ तुम्हारा सामान भी ले आये। दिल्ली से साथ आये थे, उन्हें मालूम था कि अपने पास कुल एक अदद-सूटकेस है। किताबों का बंडल उनके सामने ही शिवकुमार सहाय ने बांधा था। रामसरूप<sup>1</sup> ने खाट पर सामान रखते समय एक तुम्हारी पोटली भी वहां जमा कर दी। रास्ते में अजय ने कहा, वह उसे मेरा सामान समझ कर उठा लाये थे। वह पोटली उनके पास है, महीने दो महीने में इलाहाबाद होती हुई बाँदा पहुंच जायेगी। यहां से चलते समय उन्होंने बताया था, गाड़ी बांदा चार बजे पहुँचती है। लेट होने पर भी गाड़ी तीन बजे पहुँची थी। लौटते में बताया, आगरा सबेरे सात बजे पहुँचती है। सही समय ६ बजे था।

आगरे में हमने अहसान आवारा<sup>2</sup> की कुछ रचनाएं देखीं। साफ सुथरी भाषा है। देवनागिरी लिपि में इनकी चुनी हुई कविताएं छपें तो अच्छा हो गा। मुझे दर्शनशास्त्र की कुछ पुस्तकें अपने घर से, कुछ राजपूत कालेज से लानी थीं। इसलिए बांदा से साथ आर्यी अधिकांश पुस्तकें मैं आगरा छोड़ आया।

बांदा की दुख-सुख भरी याद ताज़ा है और हम फिर अपनी दुनिया में हैं।

प्यार, रामविलास

1. केदारजी का सेवक। [अ० त्रि०]

2. उर्दू के अच्छे शायर, गद्य लेखक, शोधकर्ता। केदारजी के खैरखाह—अवकाश प्राप्त, पोस्टमास्टर बांदा। सोवियत लैण्ड पुरस्कार से सम्मानित। अब दिवंगत। [अ० त्रि०]



बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

21-10-86

रात 8 P.M.

प्रिय डाक्टर,

दिनांक 6-10-86 का पोस्टकार्ड मिला। तुम दिल्ली पहुंच कर फिर काम में लगे। यही होना चाहिए।

उस दिन मैं स्टेशन नहीं जा सकता था। वहां पहुंच कर ट्रेन चलते समय फूट-फूट कर रो पड़ता। सम्हाल न पाता। घर में भी बड़ी कड़ाई से रोके रहा और किंवाड़ा बन्द करके लेट गया। क्या कहूं। रात भर जागता रहा। ऐसा न होना चाहिए था। पर स्वभाव से विवश हूं। कैसे इस बार ८ दिन रह कर तुमने रेकार्ड तोड़ा और मुझे अपना बनाये रहे। यह चिरस्मरणीय रहेगा।

मेरा हीटर वाला यंत्र<sup>1</sup> मिल गया। अभी बाथरूम में लग नहीं पाया।

लोग याद करते हैं वे गये दिनों की बातें। खूब खुश हैं बांदा के लोग। T. V. को देख-देख कर<sup>2</sup> विभोर हैं।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

४-११-८६

प्रिय केदार,

कवि और आलोचक में यही फर्क है। तुम किंवाड़े बन्द करके लेट गये और रात भर जागते रहे, और हम गाड़ी में बर्थ पर पैर फैलाते ही सो गये और ऐसे सोये कि जब आगरा थोड़ी दूर रह गया, तभी आंख खुली। तुम स्टेशन न आये, यह बहुत अच्छा किया। चलने को होते तो मैं अवश्य मना कर देता। तुम १३-१४ की रात को ढाई बजे स्टेशन आये, यह भी मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ। मैं चाहता हूं कि तुम अपने शरीर और मन को अनावश्यक तनाव और थकान से बराबर बचाते रहो।

---

1. यही गीजर था जो अजय तिवारी अपने साथ ले गये थे। [अ० त्रि०]

2. 20-21 सितम्बर 1986 को बांदा में केदारजी का 75वाँ जन्मदिन 'सम्मान : केदार' के रूप में मनाया गया था। लखनऊ दूरदर्शन ने इस कार्यक्रम की रिकार्डिंग आधे-आधे घंटे की अवधि की 7 कड़ियों में लगातार धारावाहिक रूप में प्रसारित किया था। आलेख और प्रस्तुति श्री कुबेरदत्त की थी। [अ० त्रि०]

228 / मित्र संवाद

हमने तो टी० वी० में कुछ देखा नहीं। सुना है, कई किशतों में समारोह दिखाया गया है। खैर, टी० वी० के बिना ही हम जब चाहते हैं, मन की सुई बांदा की तरफ घुमा कर सब कुछ देख लेते हैं। आंखें बन्द करने की जरूरत भी नहीं होती। एक ही मुसीबत है कि बार-बार हम खुद को तुम्हारे साथ आंगन में ही बैठा देखते हैं। भोर के समय तुम्हारा आंगन-इस से ज्यादा खूबसूरत जगह दिमाग में नहीं आती। तुम्हारे साथ जिन जिन को देखा, सब याद आते हैं। तुम्हारे साथ उन्हें भी प्यार।

रामविलास

नयी दिल्ली-१८

१५-१२-८६

प्रिय केदार,

आज विजय ने अखबार पढ़ते हुए तुम्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने की बात कही तो मैंने छूटते ही कहा-उन्हें तो पहले ही मिल चुका है। पर अकादमी पुरस्कार दो बार मिलता नहीं। इसलिए मानना पड़ा कि तुम्हें विलम्ब से, झख मार कर, पुरस्कार दे रहे हैं। इस पर तुम्हें बधाई तो क्या दें पर वे पुरस्कार को बाध्य हुए, इस पर प्रसन्नता है।

अजय से गाजियाबाद का पता जाना। सम्भव है, अभी वहीं हो।

मुंशी भी सम्पर्क स्थापित करने के प्रयत्न में हैं। पुत्री और परिवार के सभी लोगों को स्नेह सहित-

रा० वि० शर्मा

बांदा। 30-12-86 / 10<sup>1</sup>/<sub>4</sub> [सवा दस] बजे दिन।

प्रिय मुंशी,

मैं 29-12-86 को सबेरे पौने तीन बजे बांदा स्टेशन पर सकुशल पहुंच गया। घर के लोग आ गये थे। रास्ते में यात्रा सुखद रही। कोई कष्ट नहीं हुआ। यहां भी ठंड है। धूप में बैठा बधाई के पत्रों का उत्तर दे रहा हूं।

डा० शर्मा को फोन कर देना। मेरा यही समाचार बता देना। उन्हें पत्र बाद को लिखूंगा।<sup>1</sup> नमस्कार भी कह देना। विजय से भेंट न हुई वहां गोष्ठी कक्ष में भी।

पत्र तो कभी-कभी लिख दिया करो। राजीव सक्सेना-खगेन्द्र ठाकुर-महादेव साहा भी गोष्ठी में थे। भेंट हुई। अन्य लोग भी मिले। गोष्ठी ठीक ही रही।

---

1. बिना पत्र लिखे चैन नहीं मिला। ठीक २० मिनट बाद ही पत्र लिखा। [अ० त्रि०]

अपनी पत्नी से मेरा नमस्कार कहना। बच्चों को भी प्यार देना।  
स्वाती का पत्र भी बधाई का आया है। उत्तर दूंगा।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा / ३०-१२-८६ / १०.३५ मिनट प्रातः

प्रिय डाक्टर,

—उस दिन गोष्ठी में भी विजय से भेंट न हो सकी।

—मैं यहां 29-12-86 को सबेरे पहर २ : ४५ बजे स्टेशन बांदा पर सकुशल उतरा  
घर के लोग आ गये थे। कोई कष्ट नहीं हुआ। यहां भी ठंड है। चिन्ता की बात नहीं  
है। सब कुछ पूर्ववत् है। ठीक ठाक है।

बधाइयों के पत्रों+तारों का उत्तर दे रहा हूं। यह तो जानलेवा काम है। करना तो  
पड़ेगा ही।

१० और ११-1/87 को पन्ना में रहना है। यदि कोई आकर लिवा गया जो [तो]  
जाऊंगा [।]

मुंशी को भी अभी पत्र लिख चुका हूं। नागार्जुन को भी।

तुम अपने हर पत्र में अपने घर का पता जरूर लिख दिया करो। फोन नम्बर भी।  
मेरे भतीजों का फोन नं० १३६ है।

सबको यथायोग्य। प्रिय स्वाती का पत्र आया था। उत्तर दूंगा।

सस्नेह तु०  
केदार

फोन : ५३७०३४

सी-३५८, विकासपुरी,  
नयी दिल्ली-११००१८  
७-१-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारा ३१-१२-८६ का कार्ड मिला। तुम सकुशल बांदा पहुंच गये, जान कर  
प्रसन्नता हुई। वैसे अब तुम्हें किसी को साथ ले कर ही यात्रा करनी चाहिए। पन्ना जाने  
के बारे में तुमने बिलकुल ठीक लिखा है। 'यदि कोई आकर लिवा गया तो जाऊंगा।'  
यह कार्ड शायद वहां से लौटने के बाद तुम्हें मिले गा। कोई लिवाने जरूर आये गा। तुम  
बधाइयों के पत्रों-तारों का उत्तर दे रहे हो, 'जान लेवा' काम भी सुखद हो सकता है।

230 / मित्र संवाद

आखिर तुम्हारे प्रेमियों की संख्या बढ़ रही है कि नहीं? आज एक मित्र ने बताया, तुम्हारे कविता पाठ के आयोजकों को पता न था, इतने श्रोता आयेंगे, हाल छोटा पड़ गया। गोष्ठी में विजय से भेंट न हो सकी, खूब रहा। सुनीता<sup>1</sup> से हमारी भेंट न हो सकी! आज उसका पत्र आया है। मैंने लिखा है, टोनी<sup>2</sup> इधर आयें तो तुम भी साथ आना। एक दिन शिवकुमार सहाय और अजय आये थे।

इति

तुम्हारा रामविलास

बांदा 210001

Dt. 17-2-87

प्रिय डाक्टर,

—कल डाक से 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' का नया संस्करण मुझे प्रकाशक का भेजा मिल गया। कल ही मैंने प्राप्ति की सूचना उसे डाक से पोस्टकार्ड लिख कर भेज दी। पढ़ूंगा। सरसरी तौर पर पलट गया हूँ। लगा कि तुमने सटीक निष्कर्ष निकाले हैं। खूब जम कर सच की मार मारी है। भाषा का क्या कहना। व्यंग [व्यंग्य] भी है—चुटीला तो है ही। संयत और संयमित है। बधाई देता हूँ। अभी गौर से पढ़ना शेष है। मुंशी का पत्र आया था। उत्तर दे दिया है। मैं यहाँ से 21/2 को कुतुब से रात के [को] चलूंगा। 22/2 को दोपहर तक निजामुद्दीन पहुँचूंगा—अजय वहाँ आ जायेंगे। India International में 24/2 की दोपहर तक रहूंगा<sup>3</sup> फिर तुम सबसे मिलूंगा।

और ठीक-ठाक हूँ।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा / 18-4-87/4 बजे शाम

डियर,

मैं आज कुतुब से सकुशल बांदा 3<sup>1</sup>/<sub>2</sub> [साढ़े तीन] बजे सुबह पहुँच गया। कोई कष्ट नहीं हुआ। तार यहाँ 14/4 को ही पाँच घंटे में मिल गया। पंडित जी स्टेशन आ गये थे। सबकी याद आती रहेगी। सबको मेरी नमस्ते। प्रिय चीनू (कवि) को प्यार। मुंशी को भी बता देना। विस्तृत फिर लिखूंगा। मद्रास से कोई पत्र नहीं आया। मेरा पोस्टकार्ड भी अभी तक यहाँ नहीं आया।

1. केदारजी की सुपुत्री किरण जी की पुत्री। [अ० त्रि०]

2. सुनीता के बड़े भाई। [अ० त्रि०]

3. सन्दर्भ—साहित्य अकादमी पुरस्कार लेने जाने का है, जो उन्हें अपूर्वा' पर मिला था। [अ० त्रि०]

मित्र संवाद / 231

डा० अजय से सन्देश कह दिया था। रेलवे प्लेटफार्म में मौजूद मिले थे। निश्चय ही विजय ने मुझे बहुत impress किया।

सस्नेह  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८  
२२-४-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारे जाने के बाद दूसरे दिन विजय, संतोष, चीनू पंतनगर और हल्द्वानी का चक्कर लगाने चले गये। कल तीन बजे लौटे तब चीनू ने तुम्हारा कार्ड दिया। कहा-फाटक के बाहर पड़ा था। हमने फाटक के भीतर की डाक बटोर ली थी पर यह कार्ड शायद हवा से उड़ कर बाहर चला गया था। स्वाति ने बड़े लड़के बिट्टू के बारे में लिखा है : 'बिट्टू हिन्दी पढ़ते-पढ़ते उछल पड़े। एक कविता वह कई दिनों से याद कर रहे हैं-'वसंती हवा'। कवि का नाम आज ही देखा। चिल्लाये-'अपने नाना जी की कविता।' हम समझे श्री रामविलास शर्मा (कवि) की कविता होगी। बोले-'अरे नाना जी के सबसे अच्छे दोस्त हैं ना, उनकी कविता' : बच्चों का यह स्नेह केदार चाचा जी के लिए कैसे इतना पैदा हुआ है, यह ऊपर वाला जाने।'

तुम सकुशल पहुंच गये। तार समय से पहुंच गया-बड़ी प्रसन्नता हुई। तुमने अजय से सन्देश कह दिया था पर अजय अभी तक प्रकट नहीं हुए।

'विस्तृत फिर लिखूंगा'-श्रेष्ठ संकल्प है। प्रतीक्षा करूंगा।

सस्नेह  
रा० वि० शर्मा

बांदा / Pin 210001

२२-५-८७

प्रिय डाक्टर,

अभी तक मद्रास नहीं जा सका। प्रयत्न कर रहा हूँ कि आरक्षण हो जाये तभी जाऊँ। झांसी होकर जाना है। ठीक हूँ। आशा है तुम भी परिवार के सदस्यों के साथ स्वस्थ और प्रसन्न होओगे। सबको मेरा नमस्कार।

पटना न गया था। सुना है कि नामवर गये थे। पता नहीं क्या बोले? खगेन्द्र ने भी कोई सूचना नहीं दी।

232 / मित्र संवाद

—कर्णसिंह ने एक किताब सम्पादित की है तुम पर लोगों के लेखों की। ऐसा मैंने किसी विज्ञापन में पढ़ा है।

दिन भाड़ की तरह भूँज रहे हैं। पर मेरा दफ्तर और कूलर शीतगृह का मजा देते हैं। चिन्ता नहीं है। रामस्वरूप पेड़ पौधे सींचे रहता है। तभी तो बचे हैं। लखनऊ गया था। 'प्रयोजन' पत्रिका का विमोचन था। 'जनयुग' के 17/5 के अंक में विवरण छपा है। ठीक था।

आगरे जाओगे ही। चौबे के यहां शादी है न! बहुत गरमी होगी। मुंशी ने मुक्ति संघर्ष में मेरी दो रचनाएं छपा दीं। धन्यवाद देना। पत्र अभी नहीं लिख सका। लिखूंगा जरूर। उनके घर के सभी सदस्यों को नमस्कार। लखनऊ में बड़े भैया से मिल आया—ठीक थे।

तु० सस्नेह  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

Dt. 30-5-87

3 : 30 P.M.

प्रिय डाक्टर,

एक पत्र लिख चुका हूँ। मिल गया होगा। अब मैं झांसी से तमिलनाडु ट्रेन से 7-6-87 को मद्रास के लिए चलूंगा। सूचित करता हूँ कि फिर वहां के पुराने पते : 19 Thirumoorthy Street, T Nagar, Madras 17—पर ही पत्र लिखना। अभी तो आगरे शादी में जाओगे। ठीक हूँ। आरक्षण मिल गया। बड़ी बात हुई। आशा है तुम सपरिवार सकुशल होओगे। सभी को यथायोग्य। मुंशी को भी बता देना मेरे मद्रास जाने की बात। वह भी ठीक होंगे। उनके घर के सभी को मेरी नमस्ते।

विजय मद्रास आये तो मुझसे वहां अवश्य मिलें, ऐसा कह देना।

मेरा वही दैनिक कार्यक्रम है। मैं भी बादाम दूध सबरे लेने लगा हूँ। घूमने नहीं जाता। घर पर ही मेहनत कर लेता हूँ।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी रात  
नयी दिल्ली-११००१८ ९ बजे  
७-६-८७

प्रिय केदार,

अभी मुकुल 'सचेतक' दे गये हैं। मुखपृष्ठ पर 'आयी मां की याद' कविता छपी है। भीतर तुम्हारे आगरा प्रवास से सम्बन्धित मुंशी का संस्मरण है। मैंने मुकुल को बताया है कि तुम आज मद्रास जा रहे हो। मुक्ति संघर्ष में तुम्हारी कविताएं देखी थीं। बादाम पीने लगे हो। बढ़िया बात है। हो सके तो मद्रास में जारी रखना, न हो सके तो चाय की जगह कॉफी पीना।

मेरे मझले दामाद (सेवा के पति आत्माराम) की रीढ़ में एक डिस्क खिसक गयी थी। नस पर दबाव पड़ने से दाहिने हाथ और पैर में दर्द रहता था। पैर उठा कर चलने में कष्ट होता था। पिछले महीने यहां उनका आपरेशन हो गया। कल वह घर आ जायेंगे। सेवा अधिकतर अस्पताल में थी। ५-६ दिन के लिए स्वाति भी बच्चों के साथ यहां थी। विजय अगले दिनों व्यस्त हैं। आगरा २० को जायेंगे। मद्रास आये तो तुमसे जरूर मिलेंगे। कविता संग्रह भूमिका समेत पिछले महीने प्रकाशक को भेज दिया था।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

19, Thirumoorthy Street  
T Nagar, Madras 17

9-6-87

डियर,

बांदा से 6/6 को दोपहर की ट्रेन से झांसी करीब 8 बजे रात झांसी पहुंचा। रिश्तेदार के घर ठहरा रात 3 बजे तक। फिर उनके साथ मोटर में स्टेशन आया। चार बजे रात ठीक समय से तमिलनाडु न आकर 5 बजे आयी। प्रथम श्रेणी में आरक्षण था। 7/6 को दिन भर और फिर ७ और ८/६ की बीच वाली रात भर यात्री रहा और 8-6 की सुबह लेट करीब 9<sup>1</sup>/<sub>2</sub> [साढ़े नौ] बजे सुबह पहुंचा। बच्चे आ गये थे। मोटर से घर आया। सब ठीक है, यहाँ घर में। बादल छाये हैं। आज सुबह से झरझरा जाते हैं। कुछ तो राहत है ही।

आगरे पहुंच गये होओगे, जब मेरा यह पत्र दिल्ली पहुंच कर तुम्हारे दरवाजे जमीन पर पड़ा अपनी किस्मत को कोस रहा होगा।

पत्र देना।

पता लिखना।

सबको नमस्कार।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी,  
नयी दिल्ली-११००१८  
११-६-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारे ९/६ के कार्ड को दरवाजे जमीन पर पड़े पड़े एक क्षण भी अपनी किस्मत को कोसना नहीं पड़ा। चीनू डाकिये से लेकर सीधे, दोपहर के एक बजे मुझे दे गये। यात्रा की थकान भूल कर परिवार में खुश हो, यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने चार दिन पहले जो कार्ड लिखा था, वह अब तक मिला हो गा। बनारस से भुवन आ गये हैं। काफी चहल-पहल है। ये लोग १४ को आगरा जायेंगे, हम और विजय २० को। एक हफ्ते में लौट आयेंगे।

हम अपना पता लिख रहे हैं। तुम्हें हर कार्ड में पता लिखने की जरूरत नहीं। हमारी डायरी खोती नहीं है। उसमें तुम्हारा पता लिखा है। थोड़ा पानी यहां भी बरसा है। गर्मी कम हुई है। टी० वी० पर दिल्ली के साथ हम मद्रास का तापमान भी देख लेते हैं।

सप्रेम  
रा० वि० शर्मा

मद्रास/23-6-87/10 A.M.

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिल गये। उत्तर जल्दी ही देता पर घर की व्यवस्था में लगा रहा। पानी के अभाव की समस्या रही। टैंकर मंगाया गया। अब जाकर चित्त शान्त हुआ। बेटे की बनायी फिल्म 'कामाग्नि' देखी कल। बढ़िया रही। मनोवैज्ञानिक है। कैसे यथार्थ से मानसिकता प्रभावित हो कर जीवन का संतुलन बिगाड़ देती है। फिर मानवीयता प्रकट होकर जीवन को दीप्ति प्रदान कर देती है। कभी मौका मिला [मिले] तो देख लेना। मुंशी का 'सचेतक' आया पढ़ गया। खुशी तो हुई ही। आगरे में विवाह सकुशल सम्पन्न हो गया होगा। शोभा! की परेशानी मालुम हुई। अब तो वह अपनी पूर्व मनःस्थिति पर आ गई होगी। पति की बीमारी में सुधार हो गया होगा। स्वाती की याद भी अक्सर आती है। खूब खुले दिल से बात करती है। तुम सब लोगों की बहुत-बहुत याद आती है। आत्मीयता पा कर हृदय भाव विभोर हो-हो गया। कहूं तो क्या कहूं। सबको मेरा नमस्कार देना।

---

1. सेवा। [अ० त्रि०]



यहां तो बेटे के चारों बेटे टी० वी० में समय गंवाते रहते हैं। कहने का असर नहीं होता। केवल घटनाएं होती हैं। बस यही आकर्षित करती हैं। अब लिफाफा ला कर फिर पत्र लिखूंगा।

सस्नेह तु०  
केदार

नयी दिल्ली-१८  
२-७-८७

प्रिय केदार,

आगरे में भी पानी का कष्ट था। चौबे ने घर में पंप लगवा लिया था, इससे समस्या हल हो गयी थी। आगरे से स्वाति भरतपुर लिवा ले गयी। वहां पानी का और भी कष्ट था। जिनके यहां हैण्ड पंप था, उनके यहां से पड़ोसी पानी भर ले जाते थे। एक हफ्ता वहां रहे। कल स्वाति के साथ यहां आये। स्वाति को तुम्हारा २३ / ६ का कार्ड दिखा दिया था। कल वह वापस जायेगी। सेवा अपने पति के साथ सकुशल बड़ौदा पहुँच गयी है। अभी शायद उसके पति को अपनी छुट्टी बढ़वानी हो गयी। तुम लिफाफा ला कर फिर पत्र लिखो गे, इस समाचार से हम पुलकित हो उठे। तुम्हारे पुत्र की फिल्म तुम्हें पसन्द आयी, सन्तोष की बात है। इधर आयी तो जरूर देखें गे। गर्मी अभी काफी है पर बूँदा बांदा शुरू हो गयी है।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

सी-३५८, विकासपुरी  
नयी दिल्ली-१००१८  
२१-७-८७

प्रिय केदार,

चिट्ठी लिखने बैठे कि बिजली गयी। (शाम के छह बजे हैं)। इससे पहले भोजन करके लेटने जा रहे थे कि बिजली गयी। जिस कमरे में तुम रहते थे, उसमें दरवाजे के पास सोफा पर लेट गये। गरम हवा आ रही थी पर नींद आ गयी। तीन से साढ़े चार बजे तक सोते रहे। जब उठे तो पंखा चल रहा था, फिर भी शरीर पसीने से भीगा था। सबेरे मुंशी आये थे। मालूम हुआ, उनके यहां कल दिन भर बिजली गायब थी। हां, तो अपने कमरे से उठ कर हम उसी सोफे पर आ गये हैं और चिट्ठी आगे बढ़ा रहे हैं। अखबारों के अनुसार ८ वर्षों में मानसून इतना विलम्बित नहीं हुआ जितना इस बार। जुलाई समाप्त होने को है और हवा में मई की सी गर्मी है। उधर चीन के उत्तरी और मध्य भागों में नदियां उफना रही हैं, पांच सौ से अधिक जानें जा चुकी हैं। हजारों सैनिक बचाव कार्य में लगे हैं। विज्ञानी लोग ऐटमी हथियार बनाने के बदले दुनिया में

उचित समय पर मानसून भेजने की व्यवस्था कर दें, बाढ़ के इलाकों पर जो बादल बरस रहे हों, उन्हें सूखे के इलाकों पर भेज दें तो भारत के लोग ही नहीं, चीनी भी मलारें गाने लगें।

जमीन से चिपके रहने का आइडिया बहुत अच्छा है। पर ध्यान रखना, बरसात के बाद धरती कुछ नम हो गयी है, वर्ना बदन के जलने का खतरा है। हम आजकल सुकरात पर लिख रहे हैं। एथेन्स के लोकतंत्र ने उन्हें मृत्युदंड दिया था। मृत्युदंड से २४ साल पहले सुकरात के विरुद्ध नाटक लिखा गया था। सुकरात नास्तिक है, देवताओं का अपमान करता है। नौजवानों को बरगलाता है—इस प्रचार के बाद नाटक के अन्त में लोग उन पर पत्थर फेंकते हैं और घर में आग लगा देते हैं। सुकरात अपने शिष्यों सहित भाग खड़े होते हैं।

धरती गरम हर तरह होती है!

मुंशी को तुम्हारा पत्र पढ़वा दिया था। हमारे कमरे में इस साल कूलर लगा है। समय कट जाता है। हवा चलती रहे तो बिजली के चले जाने पर भी गर्मी सह ली जाती है। कुबेरदत्त<sup>1</sup> से फोन पर सम्पर्क नहीं हुआ। हुआ तो तुम्हारी बात याद रखूँ गा। छतरपुर साहित्य अकादमी ने सम्मान के लिए बुलाया है। नहीं जा सकते, न सही। नगद रूप में सम्मान वहीं मंगवा लो। हमारे पोतों में छोटे चिन्मय प्रथम श्रेणी में पास हो गये हैं। इनकी माता जी इनका टी० वी० देखना नियंत्रित किये रहती हैं। बड़े, तन्मय वैसे ही पढ़ाकू हैं। टी० वी० चलता रहे, वह अलग पढ़ते रहेंगे। कोई खास मनपसंद प्रोग्राम [प्रोग्राम] हो, तभी देखते हैं। ३ अगस्त को उनकी यूनिवर्सिटी खुलेगी। इनके यहां सैमेस्टर सिस्टम है। सालाना परीक्षा का एक बारगी भार नहीं पड़ता। तुम्हारा एक अंग्रेजी में लिखा पत्र हमने बांदा में सुनाया था। उसी शैली में अपनी कविताओं पर बोलो। बढ़िया रहेगा। हम पसीने में लथपथ हैं। पर चिट्ठी पूरी कर ही दी। और अब घूमने जा रहे हैं।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

सी-३५८, विकासपुरी,

नयी दिल्ली-११००१८

५-८-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/७ का पत्र मिला था। गर्मी ज़ोरों पर थी। बिजली दो दो तीन तीन घंटों को गायब होती रही। कल थोड़ा पानी बरसा था। आज आसमान साफ है। फिर भी राहत है। तन्मय लम्बी छुट्टियाँ बिताने के बाद तीन दिन हुए, पंतनगर गये। विजय

1. कवि। दूरदर्शन केन्द्र, दिल्ली से चीफ़ प्रोड्यूसर के पद से रिटायर हो चुके हैं। [अ० त्रि०]

तन्मय को अपना काफी समय देते हैं। अक्सर उन्हें अपने साथ दफ्तर ले जाते थे। तन्मय ने वहां कम्प्यूटर की सहायता से कई टरबाइनों के कागज़ पर डिजाइन बनाये और हमें दिखाये। जाने से पहले तन्मय सब लोगों के साथ दो तीन दिन तीसरे पहर वाला सिनेमा देख आये। हम घर पर आराम करते रहे। इस महीने के तीसरे हफ्ते विजय कलकत्ता जायेंगे। बंगाल के बिजली बोर्ड की ओर से व्याख्यान के लिए निर्मंत्रित हैं। आकाशवाणी के अन्तर्गत युववाणी के एक प्रतिनिधि ने विजय के दफ्तर जा कर उनके काम के बारे में भेंट वार्ता रिकार्ड की। चार-पांच दिन हुए, वह प्रसारित हुई थी।

भारत की फौज लंका पहुँच गयी है। दक्षिण एशिया की राजनीति में यह एक नया मोड़ है। लंका में पाकिस्तान और इसराइल के जरिये अमरीकियों को घुसपैठ करने में कठिनाई हो गी। ईरान की खाड़ी में बढ़ते हुए तनाव के सन्दर्भ में इस घटना को देखना चाहिए। वैसे कठिनाइयाँ भारतीय सेना और भारत सरकार के सामने कम नहीं हैं। तमिल टाइगरों का कहना है, हथियार तो सौंप देंगे पर तमिल राज्य बनाने का लक्ष्य कायम रखेंगे। एक तरफ तमिल अलगाववाद, दूसरी तरफ भारत विरोधी लंकाई अंध राष्ट्रवाद, अमरीकी साम्राज्यवाद के ये दो राजनीतिक अस्त्र हैं जिन्हें लंका और भारत के कम्युनिस्ट ही विफल कर सकते हैं।

अजय २३/७ को इधर आने वाले थे। आये नहीं। इलाहाबाद गये थे। लौट आये होंगे, पर अभी भेंट नहीं हुई। २३/७ को इब्बार रब्बी आये थे। अपनी दो कविता पुस्तकें दे गये थे। मुंशी से जब तब भेंट हो जाती है। भेंट होने पर उन्हें तुम्हारे पत्र पढ़वा देता हूँ। इसलिए उन्हें समय पर न लिख पाओ तो चिन्ता की बात नहीं है। तुम T. V. पर साक्षात्कार दे आये, प्रसन्नता की बात है। दो कालेजों में काव्य पाठ हो गा। कविता पर चर्चा हो गी। बढ़िया। यदि आयोजन हिन्दी छात्रों के सामने हो, तो कोई कठिनाई न हो गी। पहले वहां मेरे आगरे के परिचित डा० शंकर राजू नायडू हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। पता नहीं अब भी हैं या कोई और है। आयोजन हिन्दी छात्रों के सामने न हो तो कुछ कविताओं का अनुवाद किसी से तमिल में करा सकते हो, ऐसे ही कविता पर एक वक्तव्य का। पहले हिन्दी में कविता पढ़ी, तुरत किसी ने तमिल में अनुवाद सुना दिया। तथैव वक्तव्य। अस्तु। अब समाप्तव्य।

सस्नेह रामविलास

मद्रास/1-9-87

प्रिय डाक्टर,

देर से उत्तर दे रहा हूँ। पत्र 7/8 को पा गया था। रोज सोचता था लिखूँ—पर टलते-टलते अब नौबत आई। लंका के और भारत के सम्बन्ध सही और सुदृढ़ होते चले जायें। यही कामना करता हूँ। देखो, क्या होता है? आजकल तो टीचर्स की हड़ताल

238 / मित्र संवाद

चल रही है—पकड़-धकड़ हो रही है। गोष्ठी हुई अनुशीलन संस्था की ओर से। ठीक रहा सब। काव्य पाठ तो था ही। कविता पर चर्चा भी हुई। खुराना सा० ने पुस्तक भेंट की। कवियित्री [कवयित्री] डा० वसंता ने भी अपनी पुस्तक दी। नायडू सा० रिटायर हो चुके हैं। ऐसा पता चला। मैं गाजियाबाद पहुंच रहा हूँ। सितम्बर के पहले पखवारे में। किरन के घर चोरी हो गई है। अब वह है और उसकी पुत्री बेबी है। टोनी कलकत्ते नौकरी में गये। वहां रह कर फिर भेंट करूंगा। फिर बांदा जाऊंगा। मैं हमेशा तो गाजियाबाद नहीं रह सकता—न मद्रास में। विजय-चिन्मय व सब परिवार के सदस्यों को मेरी नमस्ते। शुभकामनाएं।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

६-९-८७

प्रिय केदार,

१/९ का कार्ड मिला।

सितम्बर के पहले पखवारे में इधर आ रहे हो। जल्दी ही भेंट हो गी। मैं १५-२० अक्टूबर तक यहां हूँ। फिर बनारस जाऊं गा।

३१/८ को लखनऊ में बड़े भैया का निधन हो गया। तीन चार साल की उम्र से लेकर अब तक जीवन में सबसे दीर्घकालीन सम्पर्क उन्हीं से रहा। लखनऊ से मैं कल लौटा।

दिवाली से कुछ पहले बनारस जाऊं गा, होली तक रहूँ गा।

तुम्हारा  
रामविलास

मद्रास/12-9-87

प्रिय डाक्टर,

—पत्र मिला। बड़े भैया के निधन का समाचार जान कर शोक-संताप हुआ। उनसे लखनऊ में इस बार मिल आया था। यह अच्छा हुआ। वरना उनसे न मिलने की कलक बनी रहती।

—2/9 को विजय आये थे। पुस्तक और फोटो दे गये थे। किताब पढ़ी। इसके लेख तो पहले भी पत्रिकाओं में पढ़ चुका था। अच्छा हुआ कि अब कर्णसिंह<sup>1</sup> ने एक जगह संग्रहीत [संगृहीत] कर दिये।

---

1. डॉ० कर्णसिंह चौहान : प्रगतिशील समीक्षक। [अ० त्रि०]

मैं यहां से तामिलनाडु से रात को 22/9 को नई दिल्ली के लिए चलूंगा। AC 2 Tier में आरक्षण हो गया। वहां से गाजियाबाद जाऊंगा। चिन्ता न करना भेंट अवश्य करने आऊंगा। कुछ दिन बेटी के घर रह कर बांदा जाऊंगा। ऐसा विचार है।

आशा है कि सपरिवार सकुशल होओगे। मुंशी के घर के सभी लोगों को भी याद करता हूँ। तुम सबको नमस्कार।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी,  
नयी दिल्ली-११००१८  
२१-९-८७

प्रिय केदार,

१२/९ का कार्ड यथासमय मिल गया था।

तीन चार दिन हुए अजय आये थे। उन्हें तुम्हारा कार्ड दिखा दिया था। इधर वह पत्नी की बीमारी से परेशान थे। अध्यापकों की हड़ताल में भी व्यस्त थे। भोपाल के अखिल भारतीय जनवादी लेखक सम्मेलन में गये थे। शायद अब तक लौट आये हों।

विजय एक हफ्ते को कश्मीर गये थे। एक हफ्ते बाद जर्मनी-आस्ट्रिया जाने को हैं। वहां से लौटने के बाद १९-२० अक्टूबर तक हम सब बनारस जायेंगे।

शेष कुशल।

सस्नेह  
रा० वि० शर्मा

गाजियाबाद

12-10-87

प्रिय डाक्टर,

आज अभी तुम्हारा 21/9 का पोस्टकार्ड मद्रास से यहां आया।

उस दिन लगभग 6 $\frac{1}{2}$  [साढ़े छः] बजे शाम बस मिली और 7 $\frac{1}{2}$  [साढ़े सात] बजे घर पहुंचा। बेबी साथ थी। इस बार न जाने क्यों घर पहुंच कर थकान और कमजोरी मालुम हुई। आराम कर रहा हूँ। अब 20/10 [को जाने] की सोच रहा हूँ। भरसक प्रयास करूंगा कि एक बार और मिल लूं। फिर कभी मिलना हो सके या न हो सके। यहां घर में सब ठीक है। बूंदियां आज भी खाई-कल भी खाई। मुझे बेहद पसन्द आई। उस दिन खूब मज़ा आया। तुम भी खूब प्रसन्न दिखे। यही चाहिए। बनारस से तो पत्र बांदा भेजोगे ही। चि० चीनू व घर के सभी लोगों को मेरा नमस्कार। मुंशी-मुकुल-धनो जी को भी नमस्कार कहना।

सस्नेह तु०  
केदार

न्यू जी ३३, हैदराबाद  
बी० एच० यू० वाराणसी  
२८-१०-८७

प्रिय केदार,

अब तक बांदा पहुंच गये हो गे और यथारीति सबेरे उठ कर झाड़ पोंछ में लग जाते हो गे। हम लोग यहां २१ को आ गये थे। दिवाली पर काफी हल्ला गुल्ला रहा। एक दिन बाद कानपुर से शोभा सुरेश भी बच्चों के साथ आ गये थे। २६ तक सब यथास्थान गये। यहां के पुस्तकालय में हमारे काम की काफी सामग्री है। उसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। घूमने के लिए यह स्थान बहुत अच्छा है। चाय पीना हमने फिर शुरू कर दिया है।

सस्नेह रामविलास

बांदा

2-11-87

प्रिय डाक्टर,

मुझे अजय गाजियाबाद से अपने घर लाये। मैंने वहां से टैक्सी ले कर उनके साथ यात्रा की। शाम पहुंच गया था। रात भर और दूसरे दिन ३ १/२ [साढ़े तीन] बजे तक रह कर फिर टैक्सी से निजामुद्दीन उनके व उनके पिता श्री के साथ पहुंचा। यहां ४ बजे शाम आरक्षित स्थान पर कब्जा मिला, यानी २३-१०-८७ को। और फिर तो कुतुब गाड़ी सरसराती ऐसी उमंग से चली कि ३ बजे सुबह से पहले, बांदा स्टेशन पहुंच गई। तार तो दे चुका था पर वह बांदा समय से न मिला था इससे कोई भी स्टेशन न आया और मुझे कुली करके रिक्सा [रिक्शा] करना पड़ा और अपने घर के फाटक पर ठक-ठकाकर आवाज लगानी पड़ी। वह खुला और मैं सकुशल बिना कष्ट-श्रम के, घर पा गया। तबसे यानी २४/१० से वही कार्यक्रम चालू है। तुमने ठीक ही लिखा है कि पुस्तकें झाड़ने-पोंछने में लगा रहता होऊंगा। यह तो बिला नागा वाला क्रम है। ठीक हूं। सभी कुछ ठीक है। अब यहीं रहूंगा पर्याप्त दिनों तक। दिवाली तो गाजियाबाद में ही पड़ी थी। घूमो-चाय पियो घोखो और सोना खोद कर दो। परन्तु ऐसा न हो कि इतने गहरे डूबो कि हमारी याद ही न रहे। बहुत-बहुत सनेह सहित।

केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद, बी० एच० यू०  
वाराणसी-१२-११-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/११ का कार्ड एक हफ्ते बाद यहां मुझे मिल गया। गाजियाबाद से दिल्ली, दिल्ली से निजामुद्दीन, वहां से बांदा-ये यात्राएं तो सुखद रहीं, कष्टकारक रही

बांदा स्टेशन से उसके पिछवाड़े तुम्हारे घर तक की यात्रा। कुली, रिक्शा, फिर तीन बजे रात को फाटक ठकठका कर आवाज़ लगाना। खैर, तुम सकुशल घर पहुँच गये। बांदा तुम्हें बहुत प्रिय है, सारा यात्रा कष्ट भूल गये; झाड़ने पोंछने का काम आलोचक का है, पर तुम कवि होने के साथ वकील भी हो, इसलिए उचित है। वैसे यह बीमारी आचार्य महावीर प्रसाद द्वि० को भी थी। यहाँ पड़ोस में एक अंध संस्कृत अध्यापक हैं, ३५-४० के होंगे, उनसे साहित्य पर चर्चा होती है। एक बंसल परिवार है। उनसे इतिहास और Technology पर बातें होती हैं।

अपना काम ठीक चल रहा है।

सस्नेह—रामविलास

बांदा

१७-११-८७

प्रिय डाक्टर,

12-11 का पोस्टकार्ड मिला।

श्री वीरेन्द्र यादव ने (सी० 855 इंदिरा नगर, लखनऊ, 226016 से) लिखा है कि मैं तुम्हारी 12-15 कविताएं (अपनी पसन्द की) 'प्रयोजन' पत्रिका के लिए भेज दूँ। 'रूपतरंग' तो है मेरे पास। मैंने आज ही लिखा है कि वह स्वयं तुम्हारे ऊपर के पते पर इसके लिए लिखें—मैं न दे सकूँगा। वह 'प्रयोजन' के एक अंक को तुम पर केन्द्रित करना चाहते हैं।

मैं 26/11 को कुतुब से दिल्ली जा रहा हूँ। वहाँ साहित्य अकादमी के उस आयोजन में दिनांक 27/11 को 5<sup>1</sup>/<sub>2</sub> [साढ़े पाँच] PM सम्मिलित होना है। बच्चन का जन्म-दिन मनाया जा रहा है। बच्चन ने मुझे बुलवाने को कहा था। जाना पड़ रहा है। आरक्षण करा लिया है।

विकासपुरी में सब ठीक होगा। शायद ही मैं वहाँ इस बार जा सकूँ।

सबको यथायोग्य। परिवार के सदस्यों को और तुम्हारे पास के लोगों को।

सस्नेह तु०

केदार

न्यू जी ३३, हैदराबाद

बी० एच० यू० वाराणसी

२९-११-८७

प्रिय केदार,

१७-११ का कार्ड यथासमय मिल गया था। टी० वी० में बच्चन वाले कार्यक्रम में तुम्हारी एक झलक देखी थी। 'प्रयोजन' के वीरेन्द्र यादव ने 'रूपतरंग' से कविताएं उद्धृत करने के लिए अनुमति मांगी थी। वह मैंने उन्हें भेज दी है। अजय तिवारी को

242 / मित्र संवाद

तुम्हारे कार्यक्रम के बारे में जानकारी थी। अवश्य मिले होंगे। जब तक यह कार्ड बांदा पहुँचेगा, तब तक तुम दिल्ली से लौट आये होगे। मार्क्स और एंगेल्स के लेखों आदि का एक संकलन ब्रिटेन पर है। यहाँ वैसा ही एक संकलन अमरीका पर मिल गया। पहले वे अमरीका को बहुत प्रगतिशील राष्ट्र मानते थे, बाद को उसके हिंसक दमनकारी रूप का बहुत अच्छा विश्लेषण किया। इसका उपयोग अपनी एक पुस्तिका के लिए करूँगा।

सस्नेह  
रा० वि०

बांदा

५-१२-८७

प्रिय डाक्टर,

—आज सबेरे ३ बजे यहाँ सकुशल आ गया। अजय वहाँ आते रहे। स्टेशन भी आये। ठीक है। वहाँ का कार्यक्रम ठीक ही रहा। राजन के घर की गोष्ठी में प्रिय विजय भी आये रहे। बड़ी खुशी हुई। वह सकुशल हैं। प्रसन्न थे।

अच्छा हुआ कि तुमने यादव को अनुमति दे दी।

खूब जम कर लिखो—हमें भी पढ़ने को मिलेगा।

बच्चन कमजोर हैं। पर गोष्ठी में भी अपने आप सपत्नीक आये थे। तेजी जी ने उनकी कविताएं सुनाईं। एक गीत भी सस्वर सुनाया। नामवर भी—केदारनाथ सिंह भी—कन्हैयालाल नन्दन—रमानाथ अवस्थी भी आये रहे। मैंने भी नई कविताएं सुनाईं। बेटी के पास न जा सका।

मेरा जाना जरूरी था। न जाता तो बच्चन को दुख होता।

सस्नेह तु०  
केदार

बांदा

६-१२-८७

प्रिय डाक्टर,

आज रेडियो से समाचार मिला कि तुम्हें D. Lit. की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है। सच तो होगा ही। हार्दिक बधाई लो। एक पत्र परसों लिख चुका था। मिला होगा।

—सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल



मित्र संवाद / 243

न्यू जी ३३, हैदराबाद

बी० एच० यू०, काशी

१७-१२-८७

प्रिय केदार,

५ और ६ दिसम्बर के दोनों कार्ड मिले। दिल्ली हो आये, अच्छा किया। बच्चन ८० के हुए। पहले से कमजोर होंगे ही। राजन जी के यहां की गोष्ठी का समाचार विजय और अजय के पत्रों से मिला था। साहित्य अकादमी वाले समारोह के टी० वी० प्रदर्शन में एक झलक तुम्हारी भी मिली थी। डी० लिट्० वाला समाचार सही है। यात्रा कष्ट से बचने के लिए नहीं गया। चौबे ने सूचना दी है, कुछ अखबारों ने छापा है कि मैं बीमार हूँ, इसलिए नहीं जा सका।

आज सबेरे घनघोर कुहरा था। और दिन में ६ बजे घूमने जाता था आज ७ बजे गया। आम के पत्ते, पीपल के पत्ते, बरगद के पत्ते, सबसे ओस की बूंदें टपकने का स्टाइल अलग-अलग था। कल भुवन ने दिखाया, दिन के तीन बजे भी गोभी के पत्तों पर ओस की बूंदें ठहरी हुई थीं।

सस्नेह रामविलास

बांदा

26-12-87

210001

प्रिय डाक्टर,

-7/12<sup>1</sup> का पत्र मिला। वहां बच्चन जी पहले से कमजोर हैं। पर अभी बात करने में कोई कष्ट नहीं होता। आवाज साफ है। वैसे वह ठीक-ठाक हैं शरीर से। क्षीण तो हो ही रहे हैं। आंखों को मैंने देखा। देख कर कुछ चिन्ता हुई। हो सकता है कि मेरा भ्रम हो। पुतलियों की चमक कम लगी थी।

-विजय के आ जाने से मुझे बहुत खुशी हुई थी।

मेरे प्रकाशक ने Nova T. V. Portable भेज दिया है। मैंने कहा था जब वह और डा० अशोक 'आत्मगंध' की पांडुलिपि लेने आये थे। दो दिन रहे थे। अच्छा है। एकाकीपन टूटता है। वैसे मैं तो 9 बजे रात तक सो जाता हूँ। शरीर चल रहा है। खींचे

---

1. सही तिथि 17/12 है। [अ० त्रि०]

244 / मित्र संवाद

रहता हूँ अपनी गाड़ी। पाण्डुलिपि ले गये। भूमिका भी आज भेज रहा हूँ। लम्बी नहीं; न छोटी; सिर्फ माकूल।

—मैं तो घूमने नहीं जाता। पहले ही कारण बता चुका हूँ। घर के सामने ही चहलकदमी कर लेता हूँ। कभी-कभी स्टेशन के बाद बाहर, लल्ला के मेडिकल स्टोर में दोपहर को चला जाता हूँ।

—और यहां के लोग—मित्रगण भी ठीक हैं।

नागरी प्रचारक पुस्तकालय में आज कार्यक्रम है। कल भी था। मैं न कल गया। न आज जाऊंगा। कुछ ठोस तो होता नहीं।

आशा है दिल्ली में घर में—सब ठीक-ठाक होगा। सबको नव वर्ष की शुभकामनाएं।

यहां भी ओस देर तक पेड़ों पर चमकती रहती है।

सस्नेह तु०

केदार

न्यू जी ३३, हैदराबाद

काशी ८-१-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/१२ का कार्ड मिल गया था। एक दिन टी० वी० पर शमशेर और त्रिलोचन को देखा। शमशेर काफी कमजोर लगे। उन पर शोध करने वाली महिला उन्हें चम्मच से खाना खिला रही थी। तुम्हारे प्रकाशक ने तुम्हारे लिए टी० वी० की व्यवस्था कर दी। बहुत अच्छा हुआ। टी० वी० में जो कुछ तुम देखो गे, उससे तो एकाकीपन टूटे गा ही, कुछ लोग टी० वी० देखने जरूर आयें गे। वे भी एकाकीपन तोड़ें गे। तुम्हारी कविताओं की पाण्डुलिपि इलाहाबाद के लोग ले गये और भूमिका भी तैयार हो गयी, यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

विजय, सन्तोष, तन्मय, चिन्मय यहां पहली जनवरी को कलकत्ता, पुरी घूमते हुए आये थे। चार को वापस गये। गाड़ी उस दिन चार घंटे लेट थी, आधी रात को दिल्ली पहुँचे हों गे। यहां विश्वविद्यालय के शिव मन्दिर में बाहर के बहुत दर्शनार्थी, बसों में, बैलगाड़ियों में आते हैं। रात को जमीन पर रजाई ओढ़ कर सो जाते हैं। ईंटों के चूल्हे बना कर खाना पकाते हैं। आस-पास सड़क किनारे हाजत रफा करते हैं।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा

Pin 210001

Dt. 22-1-88

प्रिय डाक्टर,

—8/1 का पत्र मिला।

—शमशेर का जो प्रोग्राम T. V. में आया था वह मैंने भी देखा था। पर लोगों ने जो कुछ कहा वह समझ में नहीं आया था। वह कमजोर तो है ही।

—अपने नये आये T. V. से थोड़ा मन बहलाव हो जाता है। मैं तो देर रात तक जागता नहीं इससे देर रात के प्रोग्राम नहीं देख पाता।

—मेरे यहां T. V. देखने वालों के आने का प्रश्न ही नहीं उठता। एक तो भतीजों के सामने घर में भी है। बच्चे वहीं देख लेते हैं। मेरे पास अन्य लोगों के आने की बात ही नहीं है।

—डा० अशोक त्रिपाठी ने सूचित किया था कि पुस्तक कम्पोज हो रही है। शायद अब तक छपने भी लगी हो। फरवरी के पुस्तक मेले में प्रकाशक इस पुस्तक को दिल्ली ले ही जायेंगे, ऐसी सम्भावना है।

—दिल्ली के T. V. से काव्य गोष्ठी का प्रोग्राम relay हुआ था। देखा ही होगा।

—शिव मन्दिर का विवरण वैसा ही है जैसे यहां मुअक्किलों का होता है।

—हां, 6/3 से 12/3 तक मुझे इलाहाबाद में रहना पड़ेगा। मेरे दामाद के बेटे का वहां ब्याह है। बुलाया है। जाना ही पड़ेगा। शायद मद्रास से वे लोग भी आयें।

सस्नेह केदार

काशी

११-२-८८

प्रिय केदार,

२२/१ का कार्ड मिल गया था। दिल्ली में पुस्तक मेला चालू है। आशा है, तुम्हारी नयी कविता पुस्तक उसमें प्रदर्शित हुई हो गी। दिल्ली से काव्यगोष्ठी का प्रोग्राम यहां के परिचितों में बहुतों ने देखा। हम नहीं देख पाये। हम नियमित टी. वी. दर्शक नहीं। यह भी संभव है, कुछ लोग आ गये हों और हम उनसे बातें करते रहे हों। पोता-पोती कभी-कभी पढ़ने में लगे होते हैं और टी. वी. बंद रहता है। तुम्हें मार्च के दूसरे हफ्ते में इलाहाबाद ब्याह में शामिल होने जाना है। भुवन को अगले हफ्ते एक ब्याह में शामिल होने कानपुर जाना है। वह हमें १८/२ को दिल्ली छोड़ देंगे, फिर कानपुर जायें

246 / मित्र संवाद

गे। यहां का शीतकालीन प्रवास समाप्त हुआ। मच्छरों के झुंड हमला करने लगे। आम के पेड़ों से पुराने पत्ते गिर रहे हैं। नई कोपलें फूटने को हैं। वसंत आ गया है।<sup>१</sup>

तुम्हारा  
रामविलास

काशी  
१९-२-८८

प्रिय केदार,

कल दिल्ली चलने की तैयार [तैयारी] कर ली थी पर गाड़ियों की अव्यवस्था को देखते रुक गये। अब मई तक हम यहीं हैं।

सस्नेह  
रा० वि० शर्मा

आजकल त्रिलोचन यहीं है।

रा० वि०

केदार नाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स,  
Pin 210001 बांदा (उ० प्र०)  
दिनांक २४-२-८८

प्रिय डाक्टर,

कई दिनों के इन्तजार में रहा कि तुम्हारा पत्र आये। आज आ ही गया। छोटा है तो [भी] कोई बात नहीं है। उसको सामने पा कर मैंने तुम्हें सशरीर देख लिया और पा लिया। लेकिन मेरे बोलने पर भी चुप ही बने रहे। अब पत्र लिख कर बोलोगे ही।

—इधर त्रिलोचन-वाचस्पति और अवधेश<sup>२</sup> आये थे। ५ घंटे रहे। बस से चले गये। कोई विशेष बात न हो सकी। तुमसे जरूर बातकही हुई होगी। वह यानी त्रिलोचन काशी में हैं सो सम्भावना है कि चर्चाएं होती ही होंगी।

—मेरे प्रकाशक ने 'आत्मगंध' की एक प्रति दिल्ली जाते समय भेज दी थी। पता नहीं कि तुम्हें अभी तक मिली या नहीं? लिखूंगा कि भेजें। अभी तो इन्दौर और फिर हैदराबाद जायेंगे।

---

1. पोस्टकार्ड के पते वाले हिस्से में नाम तो केदारजी का है, पर पता रामविलासजी का। यह पत्र Redirect होकर पहुँचा था। (अ० वि०)

2. श्री अवधेश प्रधान, ब० हि० विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक—लेखक। [अ० त्रि०]

—अब मौसम बसन्ती हुआ है। आंगन में गेंदे खूब फूले हैं। ऊंची बोगन बेलिया लाल हुई लहलहा रही है—झूम रही है। सूरज धूप देते-देते थक जाता है और चला जाता है।

—मैं मार्च के दूसरे सप्ताह में इलाहाबाद में रहूंगा। वहां शादी है। ४/६ दिन रहना पड़ेगा।

—ऊपर की डाढ़ें (6) उखड़वा दी हैं। नीचे की एक ओर वाली बची है। पहले से कमजोर हुआ हूं। दवा खा रहा हूं कि घाव भर जाये—दर्द न हो। दाल-दरिया चलता है। रात दूध व डबल रोटी व उबाला सेब खाता हूं।

—यह 'समकालीन कविता' क्या है? बड़ी चर्चाएं सुन पड़ती हैं?

—दिल्ली में व काशी में परिवार के सभी लोग स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

—पुस्तक पूरी लिख चुके होओगे।

—कल T. V. में गिरजा कुमार माथुर और तीन लोगों से काव्य चर्चा चल रही थी। साफ-साफ बातें उभर कर नहीं आ पातीं। हो सकता है कि मैं न समझ पाया होऊं। उत्तर देना।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद

बी० एच० यू० काशी-२२१००५

२६-२-८८

प्रिय केदार,

विजय के पत्र से मालूम हुआ, हमने तुम्हें एक कार्ड अपने दिल्ली के पते पर भेजा था। नाम तुम्हारा, पता हमारा। उपचेतन का खेल। वह कार्ड उन्होंने लिफाफे में रख कर तुम्हारे पास भेज दिया है। पांच-छह दिन त्रिलोचन पड़ोस में रहे। कल सागर गये। काशीनाथ सिंह<sup>1</sup> ने उन्हें व्याख्यानों के लिए बुलाया था।

वैसे मेरा कार्यक्रम यहां आधी मई तक रुकने का है। इसमें कोई परिवर्तन हुआ तो सूचित करूंगा। आमों की पुरानी पत्तियां गिर रही हैं, नयी पत्तियां आ रही हैं और बौर भी आने लगे हैं। शेष कुशल।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

---

1. कथाकार, बनारस विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक। अवकाश प्राप्त। [अ० त्रि०]

न्यू जी ३३, हैदराबाद  
 बी० एच० यू० वाराणसी-२२१००५  
 १५-३-८८

प्रिय केदार,

आज भारत बन्द है। डाक बँटी है। इसका मतलब है, यह पत्र भी समय से निकल जाये गा। रेडियो से सुना, बंगाल, केरल, कर्नाटक में बन्द भरपूर है। अन्य स्थानों में थोड़ा बहुत। बंगाल से चलने वाली लम्बे फासले की गाड़ियाँ निरस्त कर दी गयी हैं। कल जो चली थीं वे कुछ विलम्ब से यहां पहुँच रही हैं। ऐसी एक गाड़ी से मेरी भतीजी के पति कलकत्ते से अभी-दोपहर के दो बजे-आये हैं। दिल्ली में रहते हैं, कृषि विशेषज्ञ हैं। यहां आनुवंशिकी पर विश्वविद्यालय में उनका भाषण है। याद नहीं तुम्हें लिखा था या नहीं, वाचस्पति ने टेप में तुम्हारी बातचीत सुनायी थी। उन्होंने यह समाचार बड़ी प्रसन्नता से सुनाया कि त्रिलोचन उस बातचीत के दौरान चुप ही रहे। सुना है, निकट भविष्य में फिर इधर आने को हैं, हां मुझसे बहुत बातें हुईं। अधिकतर शब्दों की चर्चा करते रहे। वह जम कर काम नहीं कर पाते, नहीं तो बहुत कुछ कर चुके होते। इस बार काव्य चर्चा कम हुई। 'आत्मगंध' की प्रति मुझे नहीं मिली। आगे-पीछे मिल ही जायेगी। अजय तिवारी इस समय इलाहाबाद में होंगे। सम्भव है दो चार दिन में इधर आयें। यदि वहां प्रकाशक से मिलें तो मेरे लिए एक प्रति ला भी सकते हैं। तुमने गेंदे फूलने और बोगन बेलिया के लाल-होने की बात लिखी है। आमों के बिना बसन्त क्या-कालिदास से निराला तक बहुत से कवि गवाह हैं। यहां आम खूब बौराये हैं। दो तो हमारे कम्पाउण्ड में ही हैं। इधर तीन चार दिन कई बार आंधी आयी, पानी बरसा। काफी बौर जमीन पर आ गये। अमिया आते ही यहां चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के बालक बालिका गण पथराव शुरू कर देते हैं। आकाश की उपल वृष्टि से बचे तो नीचे शुरू। हम घूमने के लिए दूसरी सड़कें तलाश कर लेते हैं। तुम इलाहाबाद शादी में गये होगे। अशोक त्रिपाठी, शिवकुमार सहाय-किसी न किसी से अजय को पता लगा तो वह तुमसे मिल लेंगे-यदि तुम्हारे चल देने के बाद वहां न पहुँचे। यह पत्र तुम्हें विलम्ब से यह सोच कर लिख रहा हूँ कि जब तक पहुँचे, तब तक तुम बांदा लौट आये हो।

दांत उखड़वाने से ज़रूर कमजोरी आयी होगी। मैं तो डर के मारे हिलते दांतों को भी पाले रहता हूँ। एक तरफ ऊपर के दांत हैं, नीचे के नहीं हैं। दूसरी तरफ नीचे के हैं, ऊपर के नहीं। अगर दोनों एक तरफ होते तो क्या बात थी। लेकिन ऐसी स्थिति में, जैसा कि किसान कहते हैं-काहे लागै, तो जीभ को काफी परिश्रम करना पड़ता है। And burst joy's grape against palate fine—कीट्स ने लिखा था। हम जीभ और दांत के बीच दबाकर मटर का दाना बर्स्ट कर देते हैं। प्रतापनारायण मिश्र ने बुढ़ापे पर कविता लिखी थी। शायद तुमने पढ़ी हो। उनका हाल हमसे भी बुरा था, और पचासा

पार करने के पहले ही। खैर, बुढ़ापे से बचने और हमेशा जवान बने रहने की तलब जैसी हमारे वैदिक कवियों को थी, वैसी आज के लोगों को नहीं है। उनके लिए ब्रह्माण्ड में दो तरह के जीव हैं। मर्त्य और अमर। देवता अमर ही नहीं हैं, अजर भी हैं—चिर युवा। अग्नि देव नित्य नवीन हैं, उसी प्रकार उषा देवी नित्य नवीना हैं। यूरुप के रोमान्टिक कवियों ने प्रकृति और मनुष्य में जो वैषम्य देखा है, चिरन्तन सौन्दर्य की जो कल्पनाएं की हैं, वे मानो अपने आदिम रूप में सबकी सब ऋग्वेद में विद्यमान हैं। और दो एक ने जहां चिन्ताओं पर लिखा है, वहां लगता है, सारा आधुनिक काव्य पानी भरता है। यानी हम इधर ऋग्वेद भी पढ़ते रहे हैं। इति०

तुम्हारा रा० वि०

अपना पिनकोड फिर लिखना। २१० के बाद अंक 'बांदा' में विलीन हो गये हैं।

रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)

२३-३-८८

Pin 210001

प्रिय डाक्टर,

—बातचीत वाचस्पति ने बांदा में त्रिलोचन के सामने ही सम्भवतः रेकार्ड की थी। चुप रहे थे। शायद वह सागर छोड़ कर वह वहां से कहीं अन्यत्र आसन जमायें। इधर वह तो काफी चर्चित हुए। नामवर ने उन्हें चित्र का नहीं चरित्र का कवि कहा है। भाषा की प्रशंसा की है। पता नहीं चरित्र बिना चित्र (रूप) के कैसे दर्शन देगा। तुलसी बाबा से पटरी बिठाई है। अच्छा है जो होता है। हम तो इस सबसे दूर हैं। कोई कुछ कहे तो भी हम पर असर नहीं पड़ता। हम तो कविता—अच्छी कविता—कर्मठ आदमी की—उसके प्रेम—परिवार की—दैनिक आस्था की कविता—को पकड़ना चाहते रहे हैं। वही करेंगे। सन्तुष्ट रहेंगे। एक दृष्टि—सत्य की—प्राप्त करते हैं। चेतना विकसित करते हैं। कविता अत्यन्त कठिन तपस्या मांगती है। जो लिखना है कि वही उभर कर नहीं आता—तब फिर ऐसी रचना की क्या महत्ता? मार्क्सवाद ने मुझे आदमी बनाया। फिर कविता की ओर चला। वहां भी अब तक जूझता रहता हूँ। बहरहाल मैं गलत रास्ते पर नहीं हूँ। अगर कोई मुझे गलत बतायेगा तो इतना तो है ही कि उसे अपनी रचना से और सटीक उत्तर से पछाड़ दूंगा। करें तो आलोचना के महा पंडित।

'आत्मगंध' की प्रति को भी आज लिख रहा हूँ कि वह तुम्हारे पते पर भेजें।

अजय इलाहाबाद में मिले थे। ठीक हैं। शायद ही बनारस पहुंचे। दिल्ली जाने की बात कह रहे थे।

250 / मित्र संवाद

—कीट्स की पंक्ति खूब है। आज के चरित्र लेखक ऐसा लिखें तो हम दाद दें। कविता घसीट कर नहीं स्थापित की जाती। ऋग्वेद पढ़ रहे हो—बढ़िया काम है। हम तो संस्कृत न पढ़ पाये। सुनकर ही—चर्चा से ही जान लेते हैं—सूँघ लेते हैं उस मुक्त प्रकाश के पुष्प को।

—इधर तो ऐसा लगता है कि सम्मानित होने की नई राह बनायी जा रही है। यह भी हो [,] कुछ तो सामने आये।

हम देवता तो नहीं—पर अपनी अग्नि जलाये, लौ चूमते—भेंटते रहते हैं। तभी तो बुढ़ापे में भी युवा उम्रों से झूमता रहता हूँ। ऐसा मन न बनाता तो कब का चल बसा होता। मुझे किसी के सामने कुकुआना अच्छा नहीं लगता। होगा। हम क्रतई चिन्तित नहीं हैं। हम तो अब भी बालक को हंसते देख कर उसी पर कविता रचने की सोचते रहते हैं। वह हंस रहा है जैसे हंसी के पंख फैलाये, मानसरोवर के हंस अवनी और आकाश को एक कर रहे हैं।

ठीक हूँ। आशा है कि ठीक होओगे। प्रिय भुवन का परिवार भी ठीक होगा। सबको यथायोग्य। विजय ने तुम्हारा पत्र भेजा—अपने पत्र के साथ।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद, काशी २२१००५

३१-३-८८

प्रिय केदार,

परसों तुम्हें टी० वी० में देख कर आनन्द आ गया। आवाज़ दबंग, बात दमदार; भीतर और बाहर दोनों तरफ़ मज़बूती। 'मगन रहु चोला।' सामगान की बात बढ़िया थी। वेद पढ़ने या गाने वालों में वह ऊर्जा न मिलेगी जो ऋचाओं की शब्द योजना में निहित है। ऋग्वेद में कुछ कुछ कविताएं वर्णनात्मक हैं जैसे जुआरियों वाला सूक्त : कुछ देवताओं या गृह पतियों से लेन देन वाली हैं। अन्य और सर्वश्रेष्ठ — कर्मकाण्ड का खंडन करने वाली, दार्शनिक चिन्तन और कवि कल्पना के सीमान्तों को मिलाने वाली। कवि-दार्शनिक और पुरोहित का संघर्ष ऋग्वेद में शुरू हो गया है। पुरोहित देवताओं की चापलूसी करता है। घी, सोमरस आदि की घूस देता है। कवि यज्ञ को, देवताओं को, प्रतीक बना देता है, अद्वैत की कल्पना से पुरोहित और यजमान को धूल चटा देता है, अपने यथार्थवादी चिन्तन से भौतिकवाद की नींव डालता है। ऋग्वेद का



संपादन करते समय पुरोहितों ने जरूर कारीगरी की है। जैसे सांख्य में उन्होंने ईश्वर का प्रवेश कराया है, वैसे ही अनेक सूक्तों में दान दक्षिणा की बातें जोड़ी हैं। जिसे वह ईश्वर की वाणी कहते हैं, उसमें अपना स्वर भी मिला देते हैं। फिर भी बहुत सा प्राचीन काव्य यहां है और संसार में केवल यहां है—ऊर्जा के विचार से। २३-३ का पत्र मिला।

सस्नेह रामविलास

बांदा (३० प्र०)

Pin 210001

Dt. 8-4-88

प्रिय डाक्टर,

—पोस्टकार्ड मिला। पढ़कर तबियत में जान पड़ गई। तुमने कार्यक्रम देखा और सुना यह भी याद रखने की बात हो गई।

—वैसे आजकल जहां देखो समकालीनता की आड़ में ऐसा-ऐसा लिखा जा रहा है जो न लोकधर्मी है—न जन मानसिकता को बनाने वाला है। बेहद लचर लिखा जा रहा है और प्रतिष्ठित किया जा रहा है। सब बकवास है। जो कविता आदमी को अच्छा आदमी बनाने की ओर नहीं ले चलती वह तो कूड़ा होकर काल कवलित होगी। स्वभावोक्ति सहजता सरलता देती है पर मानसिकता को नई दृष्टि और दिशा नहीं देती। तात्कालिक प्रतिक्रिया मात्र होकर रह जाती है। वह भाव-विह्वलता नहीं देती जो हृदय में पैठ जाये। ख़ैर।

तुम्हारी कविताओं का संकलन 'सदियों के सोये जाग उठे' कल डाक से प्रकाशक ने भेजा है। पढ़ंगा। छपा तो बढ़िया है। भूमिका पढ़ने लगा तो फिर तुम्हारे गद्य की पंक्तियां ऊर्जा देने लगीं। इतना सधा-संतुलित, तार्किक, परिपुष्ट, और दृढ़ होता है तुम्हारा गद्य कि दूसरे लिख ही नहीं सकते। ठीक हूं। 'आत्मगंध' को लिख दिया था। मिली या नहीं ? प्रकाशक बाहर रहे हैं। पत्र भी नहीं आया।

सस्नेह तु० केदार

काशी-२२१००५

१५-४-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा ८/४ का कार्ड अभी दोपहर को मिला। हम चूंकि अनियमित कवि हैं। इसलिए गद्य की तारीफ सुन कर खुश होते हैं। अब तुम कविताएं पढ़ो चाहे न पढ़ो। हम तो तुम्हारे भूमिका पढ़ लेने से ही सन्तुष्ट हैं। इसका एक विशेष कारण भी है।

252 / मित्र संवाद

भूमिका लिखते समय हम अक्सर तुम्हारे बारे में सोचने लगते थे। तुमने समकालीन कविता पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी है। हम तो यह सब पढ़ नहीं पाते पर जैसा जो कुछ लिखा जा रहा हो गा, उसकी कल्पना हमने कर ली। यहां न चाहने पर भी लोग कविताएं सुना जाते हैं। उन पर हमारी वैसी ही प्रतिक्रिया होती है जैसी तुम्हारे कार्ड में है।

कार्ड के साथ ही अशोक त्रिपाठी की भेजी 'आत्मगंध' की प्रति मिली। सबसे पहले ढूँढ़ कर पृ० ८८-८९ पर छपी कविता पढ़ी। बाकी फिर पढ़ूँ गा। इसी महीने की २४ को दिल्ली जा रहा हूँ। २२ को विजय आ रहे हैं। चलने से पहले यहां का फैला हुआ काम समेट लेना चाहता हूँ। विष्णु चन्द्र ने लिखा है, नागा० जहरीखाल<sup>1</sup> गये। वाणी प्रकाशन ने लिखा है, शमशेर आने वाले हैं। इति।

सस्नेह रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

9-5-88

प्रिय डाक्टर,

—अब तुम व्यवस्थित हो गये हो।

—दिल्ली में पानी का संकट है, ऐसा रेडियो से पता चला था। मैं समझता कि तुम लोग भी इस संकट के शिकार हुए होओगे। अब कैसी स्थिति है। हमारे घर में तो ऐसा कोई संकट नहीं है। भतीजों के घर में ट्यूब वेल से बराबर पानी आता रहता है। बिजली भी कम नखरे करती है।

'सचेतक' के दो अंक मिले। पर मुंशी का इधर बहुत दिनों से एक पत्र भी नहीं आया। तबियत तो ठीक है न? तुम्हारे परिवार के और मुंशी के परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। तुम सबको मेरा यथायोग्य।

—तुम्हारे काव्य-संग्रह की सभी कविताएं पढ़ गया। तब की राजनीति का परिवेश फिर आंखों के सामने आ गया। तब की साहित्यिक चेतना ने पुनः धर दबोचा। इन कविताओं का सामने आना अत्यन्त आवश्यक था। इनका महत्व बहुत है।

नागार्जुन और शमशेर भी दिल्ली पहुंच गये होंगे। उनकी याद आती है। पर पहुंच नहीं सकता।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

---

1. श्री वाचस्पति के पास। उन दिनों वाचस्पतिजी वहीं कार्यरत थे। [अ० त्रि०]

सी-३५८, विकासपुरी,  
नयी दिल्ली-११००१८  
१५-५-८८

प्रिय केदार,

९/५ का कार्ड मिला। मुंशी फिट हैं। सबेरे आये थे, उन्हें तुम्हारा कार्ड पढ़वा दिया था। जरा चिट्ठी लिखने में काहिल हैं। संपादन कार्य में व्यस्त रहते हैं। 'नया साहित्य' (६) में निराला का अभिनन्दन करते हुए तुम्हारी एक लघु गद्य रचना छपी थी। वह तुम्हारे किसी संकलन में आयी या नहीं? 'रूपाभ' में तुम्हारी रचनाएं छपी थीं क्या? कब, कौन कौन सी? 'रूपतरंग' के दूसरे संस्करण की भूमिका में 'रूपाभ' की चर्चा करना चाहता हूँ। 'हंस' में तुम्हारी रचनाएं कब से छपने लगी थीं? कितनी छपी होंगी—एक मोटा अंदाज़? वाणी प्रकाशन ने नागा०-त्रिलोचन-शमशेर भी बुला कर एक बड़ा साहित्यिक आयोजन किया था। अशोक महेश्वरी ने कहा था, मैं सबेरे आदमी भेजूंगा, उसके साथ शाहदरा मेरे घर आ कर उनसे मिल लीजिएगा। वह आदमी दोपहर को डेढ़ बजे आया। उस समय उतनी दूर जाना असम्भव था। समारोह में जाने को मना कर ही चुका था। सो किसी से भेंट नहीं हुई। सस्नेह

रामविलास

पानी की किल्लत हमारे यहां नहीं है।

बांदा

20-5-88

प्रिय डाक्टर,

—१५/५ का पोस्टकार्ड अभी मिला। उत्तर दे रहा हूँ। प्रिय मुंशी का पत्र आया था। उत्तर उन्हें भेज चुका हूँ।

—निराला पर मेरी गद्य रचना 'नया साहित्य' में छपी थी। वह मेरे किसी संकलन में नहीं छपी।

—'रूपाभ' में मेरी एक कविता 'स्टैच्यू' छपी थी। वह 'युग की गंगा' में थी। बाद को प्रकाशक ने सम्भवतः 'गुलमेंहदी' में दी हो।

—'हंस' में मेरी रचनाएं मेरे वकील होने के बाद यानी १९३८ के बाद अमृत-नरोत्तम नागर-त्रिलोचन-शमशेर ने छपी थीं। कमासिन वाली बड़ी कविता 'हंस' में छपी थी, शिवदान सिंह तब सम्पादक थे। मेरी अनुमति के बिना शमशेर से लेकर छपी थी। सन् तो याद नहीं है। ज्यादातर 'हंस' में ही भेजता था। मेरा लम्बा अनुवाद भी

254 / मित्र संवाद

शांति वाले अंक में छपा था। चेकस्लाविया [चेकोस्लाविया] की कविता थी।

—आज 'रूपाभ' की File देखी तो कोठरी में न खोज पाया। पता नहीं कहां है? ठीक हूं। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८

२५-५-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा २०/५ का कार्ड मिला। निराला पर तुम्हारी गद्य रचना किसी संकलन में जरूर आनी चाहिए। मैं इधर वाल्ट व्हिटमैन पढ़ रहा था। अमरीकी गृह युद्ध के दौरान उसने अस्पताल में नर्स का काम किया था। उस समय लिखे हुए उसके कुछ पत्र बहुत मर्मस्पर्शी हैं। जो दर्द वहां लोगों ने सहा वह इतिहास में कभी न लिखा जाये गा, यह सारतत्व है। वैसे तो व्हिटमैन की रचनाओं का स्तर ऊँचा-नीचा है पर कुछ ऐसी हैं जिनका गद्य सांचे में ढला है। गद्य के अलावा और कोई भी छंद रूप वहां फिट न होता। मैं कभी-कभी सोचता हूं, मन में बहुत-सी बातें हैं, कविता लिखने में आलस लगता है। यों ही गद्य में लिख डालें। हमारे कवि पुरखे भी बड़े जबर्दस्त थे। अथर्ववेद के वशीकरण-मारण रोगोपचार मंत्रों के बीच अचानक कविता फूट पड़ती है। इन्द्र यशा (यशस्वी), अग्नि यशा, सोम (चंद्र) यशा उत्पन्न हुआ है। संसार के सब प्राणियों में मैं (=मनुष्य) यशस्तम (सबसे अधिक यशस्वी) हूं।

सप्रेम

रामविलास

बांदा/11-6-88/Pin 210001

प्रिय डाक्टर,

—इधर गरमी अपने प्रचंड रूप में रही यहां। तापमान 49° को पार कर गया। भवानी ने पूरे प्रकोप से जड़-चेतन सब पर आक्रमण किया। हम भी घबराये पर कूलर चलाये कमरे में कैंद सजा काटते रहे। अब बच गये। तब पत्र लिख रहे हैं।

—मेरी गद्य कविता यदि पास में हो तो भेज दो—प्रकाशक को संकलन में छापने को लिख दूंगा। मेरे पास न मूल है—न मुद्रित। व्हिटमैन के मर्मस्पर्शी पत्रों को मैं भी खोज कर पढ़ने का प्रयास करूंगा। मुझे तो वह तब पढ़ते समय मोह लेता था। महान तो है ही। गद्य भी निश्छल लिखा हो तो वशीभूत कर लेता है। सब जगह न गद्य चलता है—न छंद। आदमी की आत्मीयता फूट पड़ती है—शब्दों को स्वयं यथानुरूप साध लेती है—जो

न कहा जा सके वह कह देती है। यह सब कला से आगे की बोली बानी है। कभी-कभी मिल जाती है—धन्य कर देती है। परन्तु रहस्य नहीं होती। जीवन के गहन स्तर में घूम आई—बाहर निकल आई—खिलखिलाती हंसी की तरह छा जाती है—न भूलती है—न मिटती है। हमारे पुरखे प्रकृति के परिवार के सिद्ध सदस्य थे। तुम तो शहद की एक बूंद टपका देते हो फिर चुप हो जाते हो पागल बना कर। मैं भी व्हिटमैन निकाल कर फिर सूंघूंगा।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (३० प्र०)

२८-६-८८

६ बजे सबेरे

प्रिय डाक्टर,

अभी तक मद्रास नहीं जा सका। अब जल्दी जाना सम्भव नहीं है। आरक्षण कराने में देरी लगती है। झांसी से कराना होता है।

—अब पत्र बांदा के पते पर ही जरूर देना। ठीक होओगे। मैं ठीक हूँ।

‘नया पथ’ का अंक देखा। अच्छी सामग्री चयन की गई है।

कभी Transistor कभी T.V. का सहारा लेता हूँ। अकेलापन पास नहीं आ पाता। वैसे पढ़ता हूँ—पर कुछ समय तक, आंखों की वजह से। कुछ लिखता भी रहता हूँ। रोज-ब-रोज। जो सोच-समझ में आया लिख लेता हूँ। कुछ मजेदार चीजें आ गई हैं। लोग चौकेंगे। कुछ की सराहना है। नयों की। कुछ की खबर ली है। पुरानों की। सब ‘डायरी कविता’ के अन्तर्गत आयेंगी। और भी हाल-हवाल हैं। देश-विदेश हैं। आदि-आदि। सबको यथायोग्य। अब तो पानी का संकट कम हो गया होगा? आज सबेरे से बरस रहा है। कल तक तो यहां गरमी धूल उड़ाती रही है। आज दिन ठंडा होगा ही। वाल्ट व्हिटमैन के हाल लिखना।

सस्नेह तु० केदार

नयी दिल्ली-१८

३०-६-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड यथा समय मिल गया था। इस बीच मैं बड़ौदा हो आया। विजय संतोष तन्मय चिन्मय भी साथ गये थे। भुवन-माधुरी गौरव और गीतिका (मेरे पोते और पोती) के साथ वहां बनारस से बंबई होते हुए पहले पहुंच गये थे। चार-पांच दिन खूब

आनन्द रहा। २३ को हम लौटे। भरतपुर में स्वाति अपने दोनों बच्चों अनन्त और मयङ्क के साथ मिल गयी। कल वह बीकानेर गयी। एक दिन पहले भुवन, पत्नी और बच्चों के साथ, बनारस गये। आज विजय अपने दफ्तर गये। कल संतोष स्कूल जायेंगी। छात्रों अध्यापकों का संवत्सर समाप्त हुआ। हमारे कमरे में कैलेन्डर नहीं है। तारीख लिखने में गड़बड़ हो जाती है। मन यह स्वीकारना नहीं चाहता, आधा साल बीत गया है। इसलिए ऊपर लिखा है ३० जून। होना चाहिए पहली जुलाई।

इधर हम शतपथ ब्राह्मण पढ़ रहे थे। अथर्ववेद में जहां तहां थोड़ा गद्य है। उसके बाद शतपथ का गद्य ही संस्कृत का सबसे पुराना गद्य है। इसकी भाषा वैदिक भाषा से मिलती है, इसलिए 'संस्कृत' नहीं है। वाक्य छोटे-छोटे हैं जैसे लोक कथाओं में होते हैं। समझाने के लिए बात दोहरायी भी जाती है। शतपथ कर्मकाण्डी पुरोहितों का ग्रन्थ है, किधर को मुँह करके बैठना, चमचा या समिधा उठाते हुए कौन से मंत्र पढ़ना यह सब ब्यौरा उबाने वाला है। ऋग्वेद की मूल धारा कर्मकाण्ड-विरोधी, उच्चकोटि के दार्शनिक काव्य की है। पर उसकी झलक जहां तहां शतपथ में भी है और उस काव्य की व्याख्या के अनमोल सूत्र भी जहां तहां इस ग्रंथ में हैं। उसे पढ़ते हुए सोचने लगता हूँ, वे दार्शनिक कवि आपस में कुछ इसी तरह के गद्य में बातें, करते होंगे।

सस्नेह

रामविलास

११ जून वाले कार्ड के बाद २८ जून का कार्ड भी मिला। दोनों में तुमने मन के भीतरी कोठे का द्वार खोल दिया है। भीतर उजाला देख कर चित्त प्रसन्न हुआ। जियो, कविता के साथ जियो। अपनी जीवंत परंपरा की समर्थ कड़ी बने रहो। ह्विटमैन का हाल बाद में लिखेंगे। पहले अपने देव कवि का हाल सुन लो। यह महाशय रीतिवादी दलदल में फँस गये थे अथवा छोटे बड़े राजाओं के यहां चक्कर लगाते लगाते इन्होंने स्वयं को उस दलदल में फँसा दिया था। पर भीतर से थे कवि—अपनी (निराला + केदार की) परंपरा को कवि।

हैं उपजे रजबीज ही तें बिनसे हैं सबै छिति छार के छांड़े।

एकसे देखु, कछू न बिसेखु ज्यों एकै उन्हारि कुँभार के भांड़े।

तापर आपुन ऊंच ह्वै, औरन नीच कै पाय पुजावत चांड़े।

वेदन मूँदि करी इन दूँदि, सो सूद अपावन, पावन पांड़े

बड़ी पते की बात यह कही है कि विप्रवर्ग वेदों को मूँद कर ही यह पांय पुजावन की दुंद मचा सकता था। वेदों के बारे में यह सही समझ थी। चुनौती का स्वर तो सराहते ही बनता है।

रा० वि०

३/७

बांदा,

७-७-८८

प्रिय डाक्टर,

—३० / ६+१-७-८८ का पत्र मिला। पाकर बेहद खुश हुआ कि तुम पूरे परिवार के साथ दूर-दूर के महत्वपूर्ण नगरों तक यात्रा कर आये, आनन्द से रह आये वहाँ और सकुशल-नवोल्लास को लिये-लिये सी-३५८ में आ गये। सबके हाल मिले। आशा है कि तुमने सबको मेरे बारे में भी दो-चार शब्द अवश्य कहे होंगे। मुझे तो सबने इतनी आत्मीयता दी है कि कभी भूल ही नहीं सकता। बस होता तो बीच-बीच में सबसे मिलने-गप्प मारने पहुंच जाता।

‘शतपथ’ का अर्थ होता है सौ रास्ते। यह शब्द उस युग में कैसे पहुंच गया? क्या तब भी कोई छायावादी कवि पंत का समानधर्मी-प्रभावित कर रहा था? अरे, हटाओ इन शतपथ गामियों को। देखो इस युग के गोर्बाचोव को। क्या शान से नयी पहल कर रहा है और वहाँ की रूसी जिन्दगी को हंसने-बोलने-पसन्दगी से जीने-जागने, नाचने-गाने, और मेल-मिलाप के अवसर उपलब्ध कराने का माहौल बना रहा। मैं तो खुश हूँ कि इससे आधारभूत शोषण ही [न]-समता-न्यायप्रियता वाली व्यवस्था, जो ऊपरी असंगतियों से मटमैली हो रही थी, कायम रहेगी और असंगतियां चालाकियां-सब तरह की-समाप्त होंगी। यानी कि अपनी जिन्दगी में ऐसी नागरिक क्रान्ति होते देख कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। अरे, मेरे यार, बी० बी० सी० वाला तंत्र और वायस आफ अमरीका वाला तंत्र-दोनों ही-समस्वर में शंकालु होने का बोध व्यक्त करते हैं। हम हैं कि मस्त हैं-झूम रहे हैं।

देव कवि की रचना सटीक सत्य को व्यक्त करती है। परन्तु कितने हैं इस हिन्दी-प्रदेश में जो इस सत्यवती से आंख लड़ाते हैं और इसे गले से लगाते हैं और परित्यक्त नहीं करते। तुम सराहते हो-हम भी सराहते हैं।

‘अभिवादन’ की प्रति भेजी तुमने। आभारी हूँ। नाहक कष्ट उठावाया तुमसे। कल शाम पुंडरीक<sup>1</sup> से कोठरी में घुस कर नया साहित्य निकालने को कहा। बेचारे ने धूल में धंस कर अंक निकाल [निकाले] लाये<sup>2</sup> और ‘अभिवादन’ वाला अंक भी हाथ आ गया। मैंने खोजा था-तब न मिला था। अब हाथ लगा।

—एक दिन-परसों 4 A.M. अचानक मेरे सिर का Balance डगमगाया-सा लगा और ऐसा मालुम हुआ कि अब खाट पकड़ कर पड़े रहना पड़ेगा। परन्तु धैर्य और साहस से सम्हाले हुए अपने तन को और मन को उस Imbalance पर विजय पा सका। कल

1. नरेन्द्र पुंडरीक—युवा कवि

2. संशोधन के बाद ‘लाये’ अनावश्यक हो गया है

258 / मित्र संवाद

दिन-भर आराम करता रहा। कम खाया-पिया। आज ठीक है सब कुछ T.V. भी देख सका। हाँ, दो दिन लिख नहीं सका। आज कुछ लिखने को कलम उठाऊंगा।

—सबको यथोयोग्य।

—‘अभिवादन’ सहाय’ के पास, त्रिपाठी? के पास भेज दूंगा—छापने को लिख दूंगा। शेष कुशल है। पानी कल खूब बरसा—कई दिन से बादल घिर रहे थे।

केदार

नयी दिल्ली-१८

१७-७-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा ७/७ का पत्र मिला। ‘सिर का बैलेंस डगमगाया’—चक्कर आया? ब्लड प्रेशर लो हो तो चक्कर आते हैं। चैक न कराया हो तो करा लेना। यदि लो ब्लड प्रेशर हो तो डाक्टर को पूछ कर कुछ टानिक लेते रहना।

‘नया साहित्य’ वहां मिल गया। प्रसन्नता हुई। और भी जो पुरानी सामग्री हो संभाल कर रखना। कभी काम आयेगी। पानी यहाँ भी बरसा है। मौसम अच्छा है।

इन दिनों जिस पुस्तक की सबसे ज्यादा चर्चा होनी चाहिए उसके बारे में लोग चुप्पी साधे हैं। वह पुस्तक है लेनिन की—‘साम्राज्यवाद’। इजारेदार पूंजी का केन्द्रीकरण, बड़े डाकुओं द्वारा दुनिया का बँटवारा, दुनिया की जातियों का साहूकार और कर्जदार—दो तरह की जातियों में बँट जाना, यह सब लेनिन ने अच्छी तरह समझाया है। सन् ४५ के बाद पूंजी का केन्द्रीकरण भारी पैमाने पर हुआ है। इसका गढ़ है अमरीका। सबसे पहले यूगोस्लाविया ने इजारेदार पूंजी को आमंत्रित किया। उसके बाद पोलैंड, हंगरी, रूमानिया आदि ने। इन सबके बाद चीन इस रास्ते पर चला और अन्त में रूस ने भी इजारेदार पूंजी के प्रवेश के लिए द्वार खोल दिये। सबसे पहले टिटो ने कहा था—आज के जमाने में पूंजीवादी और समाजवादी देश परस्पर निर्भर हैं। अब यह बात सोवियत नेता भी कहते हैं। जनतंत्र का नाटक पहले पोलैंड में हुआ। वहाँ ऐसा विद्रोह फैला कि मार्शल लॉ लागू करना पड़ा। अमरीकी दखलअन्दाज हर जगह जातीय विद्वेष भड़काते हैं। कजाकस्तान में सेना ने दंगे शान्त किये थे। आर्मीनिया—अज़रबैजान विवाद में फिर सैन्य बल की जरूरत पड़ रही है। यूरोप में जनतंत्र का विकास सामंतवाद के विरोध की

---

1. केदार साहित्य के एकमात्र प्रकाशक श्री शिवकुमार सहाय

2. अशोक त्रिपाठी



बुनियाद पर हुआ था। समाजवादी जनतंत्र के विकास की बुनियाद साम्राज्यवाद का विरोध ही हो सकता है। इजारेदार पूंजीपति अपने सहयोग की कीमत चाहते हैं। उनकी खुलेआम मांग है निजी पूंजी के प्रसार को छूट मिले। जिन समाजवादी देशों ने अपनी यहां मार्केट इकानॉमी चलाई है, वहां कीमतें बढ़ी हैं और जनता में असन्तोष फैला है। इस असन्तोष से इजारेदार लाभ उठाते हैं। सोवियत संघ में बेशक जनतांत्रिक सुधारों की जरूरत है। पहला काम यह होना चाहिए कि सोवियतें राज्य सत्ता का अधिष्ठान हों लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव गोर्बाचोव रेगन से यों वार्ता करते हैं मानो सोवियत [सोवियत] संघ के अध्यक्ष या प्रधानमंत्री वही हों। जहां तक मालूम है, क्यूबा और उत्तरी कोरिया इजारेदार पूंजी के प्रवेश का विरोध कर रहे हैं। इति०

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

सस्नेह

रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

16-9-88

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूं। पहले तबियत ठीक नहीं रही। फिर कमजोरी रही। अब कुछ अच्छा हुआ हूं। इसलिए लिख रहा हूं। आशा है कि तुम ठीक होगे और लिखने-पढ़ने में व्यस्त रहते होगे।

मद्रास नहीं गया। अभी निकट भविष्य में भी जाने का इरादा नहीं है। यहीं रहूंगा।

लिख-पढ़ तो सकता हूं पर न लिखा जाता है—न पढ़ा जाता है। आंखों को कष्ट होता है। इससे कलम और आंखों को कष्ट नहीं देता। फिर कविता भी तो पकड़ में नहीं आती। इधर छुआई नहीं देती। विश्वास है कि आगे कभी पकड़ लूंगा।

मौसम दिन में बहुत गरमाता है। धूप धारदार होती है। रात कई-कई बार बिजली दगा दे जाती है। कमरे में सोता हूं। ४ बजे उठ बैठता हूं फिर वही पुराना काम करने लगता हूं। नहा-धोकर ८ बजे तक निश्चित हो जाता हूं। आजकल बड़ी बेटी श्याम आई हुई है। भतीजे के बच्चों को दो दिन से दोपहर के बाद पढ़ाने लगता हूं।

आशा है कि प्रिय विजय और परिवार के सदस्य अच्छे होंगे। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु०

केदार

नयी दिल्ली-१८

२५-९-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/९ का कार्ड काफी प्रतीक्षा के बाद मिला। तुम्हारी तबियत गड़बड़ा गयी थी, यह जान कर दुःख हुआ। तुम कलम और आंखों को कष्ट नहीं देते, यह बहुत अच्छा करते हो। मैं तो खाली समय रेडियो के स्वरों से भरता रहता हूँ, आंखों (टी० वी०) से ज़्यादा कानों (ट्रानज़िस्टर) से काम लेता हूँ। कई बार सोचा, मन में नया विचार आये तो टेप कर लूँ। पर यहां सड़क चालू रहती है। बसों, ट्रकों, कारों, स्कूटरों की आवाजें भी टेप में गूँजने लगेंगी। जब सड़क चालू नहीं होती, तब घर के लोग सोते होते हैं। सन्नाटे में मेरे बोलने से जागें नहीं, इससे चुप रहता हूँ। तुम्हारे यहां शान्ति है। जब मन करे, टेप में बोल कर अपनी बात सुरक्षित कर सकते हो।

आज श्रीमती आइन्डे के चिली लौटने का विवरण बीबीसी से सुना। बहुत मर्मस्पर्शी था। मेक्सिको में चक्रवात से हजारों घरों का विनाश, बांग्लादेश में बाढ़ से हजारों गांवों का लोप, नेपाल में पहाड़ों की धरती के स्खलन से सैकड़ों मनुष्यों की मृत्यु—मानो शेक्सपियर के किसी महानाटक में मनुष्यों के नृशंस काण्डों की यह प्राकृतिक पृष्ठभूमि हो। हम सब लोग कुशल से हैं। आशा है, बच्चों को पढ़ाना जारी हो गा।

तुम्हारा

रामविलास

बांदा/19-10-88/Pin-210001

प्रिय डाक्टर,

२५/९ का पोस्टकार्ड मिल गया था। डाक व्यवस्था गड़बड़ थी—इससे देरी से पत्र मिलते थे।

आंखों का आपरेशन कराना है। देखो कब और कहां सम्भव होता है। लिखूंगा।

रेडियो और T.V. से समय बीत जाता है। वैसे अपने मन और शरीर को साधे रखता हूँ। शान्ति तो यहां है ही। टेप करना मेरे बस की बात नहीं है। उलझन महसूस करता हूँ। चकल्लस मालूम होती है। जो कहना था, कह चुका। और जो कहना होगा बड़े अक्षरों में लिख लूंगा।

मुंशी को 'आत्मगंध' की प्रति भेजी थी। पत्र नहीं आया कि उन्हें मिली या नहीं। डाक की व्यवस्था का बुरा हाल रहा है।

देश-विदेश के समाचार सुनता-समझता हूँ। प्रदूषण भयंकर है।

मित्र संवाद / 261

मद्रास में सब कुशल-मंगल है। बड़ी बेटा श्याम इलाहाबाद से आई-१-१/४  
[सवा] महीने रही-गई। ठीक रहा सब कुछ-नमस्कार सबको।

सस्नेह तु०

केदार

नयी दिल्ली-१८

२५-१०-८८

प्रिय केदार,

१९/१० का कार्ड मिला। 'आंखों' का आपरेशन कराना है। दोनों आंखों का? मोतियाबिन्दु? दिल्ली या मद्रास में आपरेशन कराना मेरी समझ में ठीक हो गा। मुंशी की पत्नी-धन्नो को भी एक आंख का कराना है। मोतियाबिन्दु अभी पका नहीं है। 'रेडियो और T.V. से समय बीत जाता है।' T.V. देखने से आंखों पर ज्यादा जोर न पड़े, तुम इसका ध्यान रखते ही हो गे। टेप करने में उलझन जरूर हो गी जब अकेले में यह काम करना हो। पर कोई दूसरा सामने हो, तुम उससे बातें करो, वह टेप रिकार्डर का ध्यान रखे तो उलझन न हो गी। बाद में बातीचत उतार कर कोई उसका संपादन कर सकता है। राजनीति से लेकर साहित्य तक बहुत से विषय हैं। जिन पर तुम्हारी बातचीत पाठकों के लिए रोचक हो सकती है। मुंशी पत्र लिखने में काहिल हैं। 'आत्मगंध' की प्रति उन्हें मिल गई थी। अम्बिकापुर (म० प्र०) से एक पत्रिका 'साम्य' निकलती है, उसके ११वें अंक में तुम्हारे ऊपर कमलाप्रसाद का एक छोटा-सा लेख है। शायद देखा हो। इस वर्ष सोवियत भूमि पुरस्कार विशम्भरनाथ उपाध्याय को मिला है। हरसिंगार के फूल गये। शरद जा रही है।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

23-11-88

प्रिय डाक्टर,

ठीक चल रहा हूं। विदिशा नहीं जा सका। न खैरागढ़ जा सकूंगा। मेरे वश की बात नहीं है कि इधर-से-उधर लुढ़कता फिरूं और अचानक चल बसूं। अभी बहुत दिनों तक जीने की लालसा बलवती है। आयोजनों में अब कुछ होता नहीं। व्यर्थ बकवास होता है। न साहित्य का भला होता है-न काव्य का। उत्सवधर्मी लोग मिल बैठ कर

चुहल कर लेते हैं। कमला<sup>1</sup> का पत्र आया है। बहुत आग्रह किया है। उन्हें भी न पहुंचने की सूचना दे रहा हूं। बेटे का पत्र गोवा से आया है। शूटिंग में गया था। अब मद्रास लौट आया होगा। फिर पहली दिसम्बर को शूटिंग पर जायेगा 'कोडड कैनाल', 15 दिन के लिए। घर पर वहां ठीक है। बच्चे पढ़ते नहीं। उसे यही परेशानी रहती है। उसकी पत्नी चारों बेटों के साथ बड़े दिन की छुट्टी में बांदा आयेंगे [आयेगी]। चलो कुछ दिन सबके साथ बीतेंगे। फरवरी में बेटे किरन के बेटे मिन्टी (चेतन) की शादी दिल्ली में होगी। बेटे वाला वहीं आ जायेगा। किरन ने बुलाया है। पर वहां भी पहुंच पाना असम्भव है। यात्रा में Balance बिगड़ जाता है दिमाग के केन्द्रों का। आशा है कि तुम सपरिवार ठीक होओगे। सबको यथायोग्य। कमला का लेख देखा है। खुशी हुई।

सस्नेह  
केदार

नयी दिल्ली-१८

१२-१२-८८

प्रिय केदार,

बनारस से ९/१२ को लौटा। अगले दिन अवस्थी<sup>2</sup> के बेटे का ब्याह हुआ। कुछ लोग कल, बाकी आज यथास्थान गये। बनारस में ७-८ दिन लायब्रेरी में काम किया। कुछ पुस्तकें साथ ले आया। तुमने 'उत्सवधर्मी' लोगों की बात खूब कही है। मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूं। जिसे कुछ समझना समझाना होता है, वह घर आ कर बात कर लेता है। बाकी आयोजनों में 'व्यर्थ बकवास' होती है। विदिशा नहीं गये, यह भी अच्छा किया। शरीर का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। 'अभी बहुत दिनों तक जीने की लालसा बलवती है' हमारा प्यारा दोस्त ज़िन्दाबाद। उसकी बलवती कामना अवश्य सफल हो गी। बच्चों को अब माताएं ही पढ़ा सकती हैं। संतोष, शोभा और स्वाति-ये तीनों अपने बच्चों को पढ़ाने में काफी समय खर्च करती हैं। इसमें उनके धैर्य की परीक्षा भी होती है। ब्याह बारात में जाने पर असभ्यता की नुमाइश देखने को मिलती है। जी घिनाता है, हम पैसे वाले हैं, हमारे ठाट देखो, महिलाओं की चमकदार साड़ियां देखो, दालदा में सना पकवान चखो। भीतर से सब खोखले। मेरा हाल ठीक है। कल से नियमित पढ़ाई-लिखाई चालू हो जायेगी।

सस्नेह-रा० वि०

---

1. डॉ० कमलाप्रसाद [अ० त्रि०]

2. मेरे सबसे छोटे भाई।

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

Dt. 2-1-89

डियर,

नये साल की शुभकामनाएं। आजकल मद्रास से बहू और पोते आये हुए हैं। ४/१ को इलाहाबाद जायेंगे—वहां से 9/1 को मद्रास वापस जायेंगे।

दिनांक 12/12 के पत्र का उत्तर इसीलिए विलम्ब से दे रहा हूं।

शरीर को साधे रखता हूं।

चहल-पहल है घर में।

क्या पढ़-लिख रहे हो?

दिल्ली भी खूब ठंडी होगी।

बांदा भी गल रहा है मारे जाड़े के।

इधर कुछ लिख नहीं सका। एकाग्र होने पर फिर लिखूंगा।

रामजी पाण्डेय<sup>1</sup> ने महादेवी के बारे में मुझसे संस्मरण मांगे थे। लिख कर भेज चुका हूं। उनकी तब की फोटो भेजना है। तयार होने जाने पर भेज दूंगा। मुंशी महाशय क्या कहीं खो गये हैं? कुछ पता नहीं चला। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

१६-१-८९

प्रिय मुंशी,

—कल नव वर्ष की शुभकामना का तुम्हारा कार्ड मिला। खुशी हुई। कृतज्ञ हूं।  
आभारी हूं।

—कहो सब कुछ ठीक है न?

—डाक्टर भी जमे होंगे लिखने में।

—परिवार के सभी सदस्यों को मेरा नमस्कार।

---

1. महादेवी जी के अभिन्न। आलोचक श्री गंगाप्रसाद पांडेय के सुपुत्र। [अ० त्रि०]

264 / मित्र संवाद

इधर मौसम शीत का है।  
धूप दगा दे जाती है।  
आती है—चली जाती है।  
बेवफाई करती है।  
रुक कर अपनाये नहीं रहती।  
अब धन्नो जी कैसी हैं? तबियत ठीक हुई या नहीं?

23/1 को भोपाल के सर्वभाषा कवि सम्मेलन में हिन्दी की कविता का पाठ करने पहुंचना है। यहां से 21/1 को जाऊंगा। तब वहां पाठ कर सकूंगा।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

२५-१-८९

प्रिय डाक्टर,

—10/1 का पत्र मिला।

—यहां भी गलन ग्रस्त किये हैं।

—बहू और बच्चे 11/1 को मद्रास पहुंच गये। कल पत्र आया। वहां जाड़ा की मार कहां!

—पुस्तक का पहला अध्याय अब तक पूरा लिख गया होगा।

—त्रिलोचन का 19/1 का लिखा हुआ पत्र मिला। पत्नी के चल बसने के बारे में था। मैंने पहले ही उन्हें पत्र लिख दिया था।

दूसरा पत्र 20/1 का कल आया कि 4 और 5/3 के साहित्य समारोह में सागर पहुंचूं। मैंने उन्हें आज ही अपनी असमर्थता का पत्र लिखा है।

—बेटी किरन के बेटे शेखर का ब्याह दिल्ली में 5/2 को है। वहां भी न जा सकूंगा।

बेटा दिल्ली गया 17/1 को मद्रास से। फिर वहां से कश्मीर जायेगा। 23/1 तक वापस मद्रास पहुंचने की बात बहू ने लिख भेजी है। उसने कोई तमिल फिल्म बनाई है वह अच्छी बनी है। फरवरी में वहां प्रदर्शित होगी।

—यहां वही हाल है।

—दिन की धूप तो तेज होती है। पर रात गलन बहुत हो जाती है। ठीक हूं।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

c/o Ashok Kumar  
19, Thirumoorthy, Street  
'T, Nagar, Madras 17'

Madras, 12-2-89

11.30 A.M.

प्रिय डाक्टर,

कल मद्रास से 7/21PM उड़ा-हैदराबाद 9 PM पहुंचा-वहां से 45 मिनट बाद उड़ा तो मद्रास 10 : 30 PM पहुंचा-रास्ते में प्लेन पर ही पेट भरा-मद्रास से पहले ही, हैदराबाद की उड़ान के समय फिर काफी और बिस्कुट का दौर। पोर्ट पर बेटा व उसका मित्र हरीश त्रिवेदी मोटर लेकर आये थे। सामान लेने में कुछ समय लगा। घर 11 : 30 PM बजे पहुंचा। रात में नींद रफूचक्कर रही। सबरे 5 AM उठ बैठा। फिर दैनिक कार्यक्रम शुरू। T.V. में लड़के जुते हैं। इतवार है न। शायद कल शान्ति रहे। आज शाम बेटे की तेलगू फिल्म एक महाशय के घर में देखूंगा। सबको यथायोग्य। सबरे ठंडक थी। प्लेन में सवारियां खचाखच भरी थीं।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८

२०-२-८९

प्रिय केदार,

१२/२ का कार्ड यथासमय मिल गया था। तुमने जाते ही कार्ड लिखा इससे बहुत प्रसन्नता हुई। तुम्हारे नाती नतेहू, बहुत मिलनसार, हमें बहुत अच्छे लगे। वहां तो वे अलग रहते होंगे। अब तक तुम्हारा जीवन सामान्य हो गया हो गा और पोतों में मन रम गया हो गा। वहां किताबें झाड़ने का नित्य कर्म तो तुम कर नहीं सकते। शायद जांघिया बनियान धोने पर भी पाबन्दी लगी हो। तुम्हारी कुछ पुरानी कविताओं में मद्रास के किसी पार्क का सन्दर्भ है। वहां घूमने अब तक न गये हो तो जाने वाले हो गे। यहां अब भी सर्दी काफी है। चार-पांच दिन हम सूरज निकलने के बाद घूमने गये। पटना से कर्मेन्दु शिशिर ने लिखा है, तुम्हारा एक कविता संकलन कोर्स में लग गया है, सम्भवतः जो बड़ा संकलन हमने किया था यह उसी का छोटा संस्करण है। अजय

266 / मित्र संवाद

तिवारी बीमारी की चपेट में आ गये थे। अभी तक ठीक न हुए। शायद अगले हफ्ते कालेज जायें। तुमसे मिल न पाने पर काफी दुखी हैं। हमसे भेंट नहीं हुई। यह सब उनके दो कार्डों के आधार पर लिखा है। विजय भूस्खलन पर कई पुस्तकें ले आये हैं, उनसे ऋग्वेद के कुछ अंश समझने में सहायता मिली है। सब लोगों को स्नेह सहित—

रा० वि० शर्मा

19 Thirumoorthy Street

'T' Nagar, Madras 17

Dt. 23-2-89

4 : 30 P.M.

प्रिय डाक्टर,

—२०/२ का पत्र आज दोपहर बाद मिला। पढ़ने में बड़ा मजा आया। खूब हंसा। सबेरे का राष्ट्रीय श्रम यहां भी करता हूँ। पुस्तकें तो मुझे देख कर पुकारने लगती हैं। भले ही वह मेरे पोतों की हूँ [हों]—मेरी न हों। यह तो प्राणवंत बनाये रहता है, दिन भर। पार्क आज गया था 7 A.M.। नाम हैं 'पनगल' पार्क। पर वहां रुका नहीं। फिर एक दिन भीतर जाऊंगा। 'नागलिंगम' फूल देखूंगा। यहां सरदी नहीं है। दिन में घर के अन्दर पंखा खाता हूँ और तुम्हें याद करता हूँ। ऋग्वेद [ऋग्वेद] की चर्चा तुमने घर में की थी। 'दान' की वजह से दानव बना। मैंने समझ लिया। पटना में पाठ्य-क्रम में प्रवेश पा गई 'श्रम का सूरज' नाम की पुस्तक। मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। तुम्हारा श्रम सार्थक हुआ। अजय को मेरा नमस्कार लिख देना। मेरे पोते+पतोहू तुम्हें भले लगे। उन्हें लिख भेजूंगा। और मेरे घर वाले तो तुमसे कतराते हैं—तुम्हारी विद्वता की वजह से। बेटे का [की] एक तेलुगू फिल्म देखा [देखी] 'बरसात में लगी आग'। अभी रिलीज नहीं हुई। बढ़िया है। बहू के घुटने में गठिया का प्रकोप होता रहता है। वैसे ठीक है।

सस्नेह तु० केदार

नयी दिल्ली-१८

१-३-८९

प्रिय केदार,

२३/२ का कार्ड मिला। वैदिक कवियों के लिए जो महत्व सरस्वती का था, वही या उससे मिलता जुलता महत्व तुम्हारे (और तुम्हारी कविता के पाठकों के) लिए केन का है। एकाचेतत् सरस्वती नदी नाम्-नदियों में 'यह एक ही सरस्वती नदी चेतनायुक्त सी चल रही है' (सातवलेकर) अर्थात् उसके किनारे जो लोग रहते हैं, उनकी चेतना जाग्रत है। हो सकता है बांदा में जाग्रत चेतना वाले एक से अधिक न हों, पर एक भी हो



तो क्या कम है। अब केन की याद आने पर मद्रास से भाग खड़े मत होना। मैं केन के बारे में केवल इसलिए लिख रहा हूँ कि अखिल भारतीय स्तर पर नदी जलों के उपयोग की योजना में (येन केन प्रकारेण) केन भी शामिल कर ली गई है। इस योजना पर विजय की संक्षिप्त वार्ता दस मार्च को सबेरे पौने सात बजे आकाशवाणी दिल्ली ए से प्रसारित होगी। उसमें केन का भी उल्लेख है। २३ मार्च को दोपहर साढ़े बारह बजे दिल्ली ए से संतोष की वार्ता भी प्रसारित होगी—पर किसी रासायनिक विषय पर! तुम पार्क हो आये, जान कर प्रसन्नता हुई।

सबको स्नेह सहित—रा० वि०

मद्रास/15-3-89

प्रिय डाक्टर,

—पत्र मिल गया था।

—मैं यहाँ प्रिय विजय की वार्ता दिल्ली ए के आकाशवाणी कार्यक्रम को न सुन सका इसका खेद है। मेरा रेडियो इसे पकड़ नहीं सका। मैं यहाँ से प्लेन के द्वारा कोयम्बटूर गया—वहाँ से कार द्वारा 'ऊटी' गया और बेटे अशोक के साथ सवाय ताज होटल में ५-६ दिन तक रहा। यात्रा अपने ढंग की रही। इधर का पर्वतीय सौन्दर्य—प्रसार देखने को मिला। ऊंचे नीचे धरातल पर लोगों के घर बने देखे। बड़ी सुखद नयी अनुभूति हुई। अब कल ही शाम को प्लेन से वापस घर आया हूँ। तुम बहुत याद आये। मौसम सुहावना रुचिकर था। लिखना कि वार्ता में क्या कुछ आ पाया। उत्सुक हूँ। जानने को। शायद सन्तोष<sup>1</sup> जी की वार्ता भी उस दिन न सुनाई पड़े। यह दक्षिण है—यहाँ उत्तर की आवाज़ देर से पहुंचती है, सिर्फ दक्खिन ही दक्खिन बोलता रहता है।

शरीर सधा है। चिन्ता न करना। अभी बांदा न जा सकूंगा। यहीं रहना है कुछ दिनों तक। पत्र अवश्य देना। सबको राम राम।

सस्नेह तु०  
केदार

नयी दिल्ली-१८

१७-३-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा परसों का लिखा कार्ड हमें आज यहाँ मिल गया। पढ़कर चित्त खूब प्रसन्न हुआ। खूब घूमो। दक्षिण भारत के अनेक प्रदेश बहुत सुन्दर हैं। केरल में प्रकृति का

---

1. सन्तोष—मेरे पुत्र विजय मोहन की पत्नी।

वैभव, तमिलनाडु में स्थापत्य और संगीत की समृद्धि—जितना ही देखो, उतना ही और देखने का मन होता है। जो सुख कविता पढ़ने में है, वही सुख बेटे के साथ रहने में है। जितने दिन बांदा से बाहर रह सको रहो, 'बड़ी सुखद नयी अनुभूति हुई।' प्राणवन्त कवि कभी बूढ़े नहीं होते। हिमालय की नदियों के जल ग्रहण क्षेत्र की तरह उनकी प्रतिभा नयी अनुभूतियां संजोती रहती हैं। विजय की वार्ता—नदियों की कविता से दूर, उनके उपयोगितावाद से संबन्धित थी; इनकी जलराशि का समुचित उपयोग कैसे किया जाये इस विषय पर थी। इसमें तुम्हारी केन नदी को किसी और नदी—शायद चंबल—से जोड़ कर उसे जल से और भर देने की योजना थी। मद्रास तो इतनी दूर है, हमें बनारस में भी दिल्ली कम ही सुनाई देता था। लेकिन उस दिन तो दिल्ली में ही कुछ ऐसी गड़बड़ हुई कि थोड़ी देर बाद इधर उधर की आवाजें आने लगीं और वार्ता सुनाई ही न दी! दो ट्रान्जिस्टरों पर अलग-अलग एक सा हाल था। अच्छा होली की शुभकामनायें।

रा० वि०

19 Thirumoorthy Street

T Nagar, Madras 17

2-4-89

प्रिय डाक्टर,

—'ऊटी' ने मन मोह लिया। दक्षिण निश्चय ही बहुत सुन्दर है। केरल तो नहीं देख सका। अब क्या जाऊंगा? यहां का स्थापत्य तो पहले ही मन में स्थापित हो चुका था। संगीत भी सुनता रहता हूँ अपने ट्रान्जिस्टर से। यहां तो बच्चे लोग कैसेट लाते और पश्चिमी धुनें बजाते और मांसल महामोद की छवियों से अभिभूत होते हैं। लड़कपन अभी बेलगाम दौड़ में दौड़ने को उत्सुक रहता है। पूरा देश इसी का समर्थक बनता जा रहा है।

प्रिय मुंशी और उनके परिवार के सभी सदस्यों का बधाई और शुभकामनाओं का कार्ड मिला। खुशी हुई। उत्तर दे रहा हूँ। वाचस्पति ने खटीवा से पत्र भेजा बधाई का—तुम्हें भी याद किया है। जो कविताएं 88 में लिखी थीं उन्हें सुधार कर नई कापी में उतार रहा हूँ।

प्रिय नरेन्द्र चले गये। T.V. से सुना था। मन उदास हुआ। फिर उबार सका। डा० मुरली मनोहर प्रसाद सिंह<sup>1</sup> का पत्र बांदा गया था—हाशमी वाली घटना पर मेरा वक्तव्य मांगा था। देर हो गई थी न भेज सका।

[केदारनाथ अग्रवाल]<sup>2</sup>

1. समीक्षक और शिक्षकनेता। [अ० त्रि०]

2. इस पत्र के अन्त में केदारजी के हस्ताक्षर नहीं हैं। [अ० त्रि०]

मित्र संवाद / 269

नई दिल्ली-१८

११-४-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/४ का कार्ड यथासमय मिल गया था। दो दिन पहले मौसम काफी गरम हो गया था। फिर हिमाचल प्रदेश में हिमपात हुआ और यहां भी ठंडक हो गयी। साढ़े चार बजे, तीसरे पहर की नींद पूरी करने के बाद तुम्हें यह कार्ड लिख रहे हैं। आधे खुले दरवाजे से भीतर आती हल्की धूप में गुलमुहर की पत्तियां छायानृत्य कर रही हैं। (छायानृत्य में छायावाद की गंध आये तो पाठान्तर इस प्रकार है, पत्तियों की छायायें नाच रही हैं! जो और भी घटिया है। खैर जाने भी दो। बाहर कहीं जुही का पेड़ लगा है। देखना है, फूल आये या नहीं, शरद में तो हर सिंगार ने खूब फूल दिये।) किसी प्रोड्यूसर के दिमाग में जरूर आया होगा, कुछ दृश्यों की शूटिंग कन्याकुमारी के समुद्र तट पर होनी चाहिए। किसी हिन्दी फिल्म में देखा भी था। क्या पता अशोक के साथ तुम्हें उधर जाना ही पड़े। (अच्छा अब चाय पी रहे हैं) पिछले महीने किरण ने फोन पर सूचना दी थी कि बेबी का संबंध पक्का हो गया है, मई में विवाह कार्य सम्पन्न होगा। दिन निश्चय होने पर लिखना, तुम इधर कब तक आओगे। ११ से १८ मई के बीच विजय सन्तोष के साथ, साढ़ू की बेटी के ब्याह में टाटा नगर जायेंगे। शेष कुशल।

सस्नेह रा० वि०

(सी-३५८ विकापुरी, न० दि०)

19 Thirumoorthy Street

T Nagar, Madras 17

24-4-89

3 P.M.

प्रिय डाक्टर,

अब मेरा व मेरे पोतों का शादी में सम्मिलित हो सकना असम्भव हो गया है। यहां से ट्रेन में आरक्षण के लिए 13/5 से पहले की किसी तारीख के लिए बहुत भागदौड़ की गई। २ माह पहले से जगहें भर गई हैं। हम लोगों को दुख हुआ। किरन को पत्र लिख रहा हूं। वह बेचारी व बेबी बहुत दुखी होवेंगी। अब अशोक अकेले ही हवाई जहाज से जायें आयेंगे। इसी में बहुत धन खर्च होगा। हम लोग ऐसे जायें तो दिवाला पिट जायेगा। अब अभी जल्दी भेंट न हो सकेगी। दुःख हुआ। उमंग और उत्साह सब बह गये। गरमी पड़ रही है। यहीं रहूंगा। दर्शन वाली पुस्तक कहां तक पहुंची? जब छपे तो

270 / मित्र संवाद

एक प्रति मैं भी पाने का हकदार हूँ। कुछ कविताएं लिखी थीं—उन्हें ही सुधार सका हूँ।  
तुम तो दिल्ली से बाहर नहीं जा रहे?  
मुंशी को बता देना।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

मद्रास/27-4-89

प्रिय डाक्टर,

अब किरन की बिटिया की शादी ७/५ को दिल्ली में प्रगति मैदान की फुलवारी में होगी। पहले 13/5 थी। अब तो यहां से कोई भी न पहुंच सकेगा। 13/5 के लिए ट्रेन में आरक्षण न मिला किसी भी 13/5 से पहले की तारीख का। मुन्ना अकेले ही प्लेन से पहुंचते 13/5 को शामिल [होते]। अब वह दुबारा अपनी शूटिंग भी आगे पीछे, नहीं करा पा रहे। सबके हाथ-पांव फूल गये। किरन का पत्र कल आया था तभी 7/5 का पता चला। उसे भी आज यही मजबूरी लिख रहा हूँ। फिर भी मुन्ना कोशिश में हैं कि सम्भव हो जाये तो वह प्लेन से 7/5 को शामिल होने के लिए पहुंच जायें। परन्तु यह असम्भव दिखता है। डियर, तुम भी पत्र पाते ही किरन को गाजियाबाद को फोन करके यह सूचित कर देना। किरन का फोन नं० है : 45217, शायद।

आशा है कि सब कुशल क्षेम होगी तुम्हारे यहां। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

३-५-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारे २४/४ और २७/४ के कार्ड मिले। विजय ने गाजियाबाद को फोन पर सूचना दे दी थी। तुमने कुछ कविताएं लिखी हैं, यह सुखद समाचार है। दर्शनवाली पुस्तक अब लगता है ऋग्वेद पर ही केन्द्रित रहेगी। भारतीय दर्शन की धाराएं उससे कहां जुड़ी हैं, [इसका अध्ययन विचित्र]<sup>1</sup> हो सकता है। यह काम जितना धीमा है उतना ही आनन्ददायक भी है। काम दस साल पहले उठाया होता तो इसे तीन खण्डों में पेश करते

---

1. कोष्ठक के अन्दर की सामग्री अनुमान से दी गई है। यहाँ पत्र पर पानी गिर गया है। [अ० त्रि०]

: १) ऐतिहासिक सामाजिक पृष्ठभूमि, २) दार्शनिक धाराएं, ३) आदिम काव्यात्मक सांचे। पर समय कम है, इसलिए एक ही खंड में जो बन पड़े गा, कह डालेंगे। काम पूरा होने में देर है। छपने पर प्रति तुम्हें अवश्य मिलेगी। गर्मियों में अभी तो कहीं जाने का कार्यक्रम नहीं है। यदि गये तो ८-१० दिन को आगरा जाएंगे। विजय ११/५ को एक हफ्ते के लिए एक ब्याह में शामिल होने टाटा नगर जायेंगे। सब लोगों को स्नेह सहित।

रा० वि० शर्मा

नयी दिल्ली-१८

१२-७-८९

प्रिय केदार,

मैंने पिछला कार्ड तुम्हें ३ मई को लिखा था। मई-जून-जुलाई (लगभग आधी) में तुम्हारा कोई पत्र मुझे नहीं मिला। इधर कई लोगों के पत्र डाक की गड़बड़ी से इधर उधर हो गये। अजय तिवारी ने इलाहाबाद से पत्र लिखा था। वह मुझे नहीं मिला। सम्भव है, तुम्हारे पत्र के साथ भी यही हुआ हो? अजय को फोड़ों ने परेशान कर रखा है। कई महीने से भेंट नहीं हुई। मेरा हाल ठीक है। गर्मी यहां अब भी तेज है। मानसून का आगमन नहीं हुआ। आशा है मद्रास का मौसम यहां से अच्छा हो गा और तुम अभी वहीं होंगे। मुंशी ठीक हैं। अपना समाचार देना। वहां सब लोगों को स्नेह सहित-

रा० वि० शर्मा

19 Thirumoorthy Street,

T Nagar, Madras 17

17-7-89

प्रिय डाक्टर,

-12/7 का पत्र 15/7 को मिला। तुम कुछ चिन्तित रहे क्योंकि मैंने पत्र नहीं लिखा था ३ मई के बाद से। मैंने सोचा कि तुम्हें आगरे आदि जाना है। इसलिए जब फिर दिल्ली पहुंचने की सूचना दोगे तो पत्र लिखूंगा। ठीक ही हूं। बेटे के नये ३ बेडरूम वाले फ्लैट में 15/7 को पूजा हुई-16/7 को सामान लाद कर सबेरे नये फ्लैट में आ गए। ग्राउण्ड फ्लोर है इससे सीढ़ी चढ़ने का प्रश्न नहीं उठता। पुराने घर में आफिस रहेगा बेटे का। पत्र वगैरह अभी उसी पते पर आते-जाते रहेंगे। रात नींद आई। दो दिन से जुकाम-ज्वर (हल्का) चल रहा है। गला खराब है। ठीक हो जायेगा।

अब अभी बांदा जाना न हो पायेगा। कम से कम July भर तो निश्चय ही।

अजय इलाहाबाद में भी रहे—अशोक त्रि० ने लिखा था—न पत्र—न कुछ। शायद कष्ट में रहे हों। फिर भी पत्र दो लाइन का तो लिख ही सकते थे। न मन चला होगा।

लिफाफा नहीं है। इससे दो पोस्टकार्ड से काम चलाता हूँ।

डा० जगदीश गुप्त ने। 1 to 3/8 की अध्यक्षता—कवि दिवस—के लिए आमंत्रित किया। मैंने इनकार किया। हिन्दुस्तानी अकादमी [इलाहाबाद] में कार्यक्रम था। नरेन्द्र शर्मा की बड़ी बेटी वासवी ने संस्मरण मांगे। युवा जीवन के—तब के संस्मरण लिख भेजे। दुर्ग के महावीर प्रसाद ने कई प्रश्नों के उत्तर चाहे। मैंने इनकार किया। फिर ४ के उत्तर चाहे। लिख भेजा।

नया फ्लैट ठीक है। अभी साज-सज्जा में समय लगेगा। घर में यहां सभी स्वस्थ और प्रसन्न हैं। बेटे को भी जुकाम है। पर काम में व्यस्त है। यह फ्लैट दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के पास ही है। पास में एक पार्क है। स्थान ठीक है।

....10/5 को अनुवाद कार्यशाला के कार्यक्रम में सभा वाले ले गये थे—सम्मानित किया। भले लोग हैं। इधर तुम बाहर गये—क्या हाल हैं चौबे के और भुवन वगैरह के—बेटियों के। अब गरमी कम हुई है—पानी बरसा है यहां भी।

दिल्ली की साहित्यिक गति कैसी चल रही है। त्रिलोचन ने पत्र लिखा कि रूपतरंग छप रही है। तुम्हारी दर्शन वाली पुस्तक कहां पहुंची? घर में सबको यथायोग्य। मुंशी आदि को भी।

तु० केदार

मद्रास/२५-७-८९

प्रिय डाक्टर,

—कल बहुत दिक्कत के बाद, मेरा आरक्षण हो सका। ३१/७ को 7<sup>1</sup>/<sub>2</sub> [साढ़े सात] P.M.G.T. से झांसी के लिए Ac slipper [Sleeper] से प्रस्थान करूंगा। सम्भवतः 1/8 को ही—दिन भर के बाद—रात को झांसी पहुंचूंगा। सबरे 2/8 को बांदा की ट्रेन पकड़ूंगा। आशा करता हूँ कि यात्रा का कष्ट झेल जाऊंगा।

अब पत्र बांदा ही लिखना। नये फ्लैट का पता अभी मुझे नहीं मालुम। वैसे पुराना घर ही दफ्तर है। वहीं के पते से पत्र आयें जायेंगे।

शेष ठीक-ठाक है।

पत्र बांदा के पते पर अवश्य जल्दी ही लिखना। घर में सबको यथायोग्य। मुंशी भाई को सलाम। उनके परिवार के सदस्यों को भी नमस्कार।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नई दिल्ली-१८

२५-७-८९

[२७-७-८९]

प्रिय केदार,

तुम्हारे १७/७ के कार्ड मिले। परसों अजय आये थे। बहुत झटक गये हैं। स्कूटर चलाने में कठिनाई होती है, इसलिए कुछ मित्रों के साथ बस से आये थे। मैंने तुम्हारे कार्डों के बारे में उन्हें बता दिया था। उनके पिता को गुवाहाटी में किसी अखबार में काम मिल गया है। २५/७ को ही तुम मुझे कार्ड लिख रहे थे! आज २७/७ को वह मिल गया। तो अब तुम बांदा आ रहे हो। राम करे, कुशल से वहां पहुंच जाओ, कल यह कार्ड निकल जाये गा; आशा है मद्रास से चलने तक पहुंच जाये गा। उधर तो बहुत पानी बरसा है। खास तौर से महाराष्ट्र और आंध्र में बाढ़ से बहुत लोग मरे हैं। इधर पानी कम बरसा है, धूप काफी तेज होती है। विजय कश्मीर गये हैं शनिवार तक लौटेंगे। तन्मय पंतनगर पहुंच गये। चिन्मय कालेज जाने लगे हैं। मुंशी से इधर भेंट नहीं हुई। दो तीन दिन बाद तुम्हें बांदा के पते पर कार्ड लिखूंगा। वहां सब लोगों को स्नेह सहित-

रा० वि० शर्मा

बांदा

३-८-८९

प्रिय डाक्टर,

-तुम्हारा पोस्टकार्ड मुझे ३१/७ का मद्रास में मिल गया था। उसी दिन मैं G.T. से A.C. में सवार होकर १०<sup>१</sup>/<sub>४</sub> [सवा दस] बजे रात स्लीपर में आराम से बांदा को चला। झांसी पहुंचा 1/2-8-89 को 4<sup>1</sup>/<sub>4</sub> [सवा चार] बजे सुबह-वहां बांदा से पंडित जी आ गये थे। दिक्कत नहीं हुई। ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [साढ़े सात] सुबह चम्बल से २/८ को बांदा चला और ११ बजे दिन को पहुंच गया-सकुशल। अब तुम्हारी चिन्ता दूर हो जायेगी। साथ में कोई दूसरा था नहीं लेकिन मैं घबराया नहीं। आराम से आया। यहां सब ठीक है। कल फिर सफाई करता-कराता रहा घर में। आज फुरसत से आराम कर रहा हूं। अजय को मेरा नमस्कार कहना। उन्हें हो क्या गया था? अब तो कुछ दिन में ठीक हो जायेंगे। श्रम कम करें। उनके पिता जी गोहाटी गये [।] ऐसा कौन अखबार है? विजय लौट आये होंगे? घर में सबको यथायोग्य। मुंशी अब दिन भर करते क्या रहते हैं। सुना नामवर ने इलाहाबाद में ढेले फेंके।

सस्नेह तु०

केदार

274 / मित्र संवाद

बांदा

७-८-८९

८ बजे सुबह

प्रिय डाक्टर,

—तुम्हारा 1/8 का पोस्टकार्ड मुझे 4/8 को मिल गया। मैं यहां 2/8 को 11 A.M. सकुशल पहुंचा था।

—आते ही किताबें चिल्लाईं। मैंने उनका मैल छुड़ाया। मेहनत की तो थका पर फिर नहाने पर चंगा हो गया।

हिन्दी अकादमी वालों ने आलोचक सम्राट को नारियल शाल आदि देकर अपना कर्तव्य पूरा कर गये [लिया] बहुत अच्छा हुआ। रुपये तो तुमने पहले ही इनकार कर दिया था। पुनः बधाई।

गिरजा<sup>1</sup> 70 के हुए। वो हम सबसे कई साल छोटे हैं। जन्मदिन में तुम्हें घेर कर ले जाना चाहते हैं। यह भी खूब है। अब तक तो सदा ही दूर बने रहे—अब महत्ता की हड़बड़ी हुई तो तुम याद आये। धन्य हैं। तुम अपने व्यस्त कार्यक्रम में लगे हो। भला जाकर समय नष्ट क्यों करो। ठीक है।

विजय लौट आये होंगे। मैं ठीक हूँ। वहां सब ठीक था। कल मेरे प्रकाशक मुझे पांच ह० [हजार] यहां ५/८ को आकर ११/२ [डेढ़] दिन रह कर दे गये। अशोक त्रिपाठी और बालकृष्ण पांडे<sup>2</sup> भी आये थे। नया संकलन तयार कर दे दूंगा।

तु० केदार

नयी दिल्ली-१८

८-९-८९

[९-८-८९]<sup>3</sup>

प्रिय केदार,

तुम्हारा ३/८ का कार्ड मिला। सकुशल बांदा आ गये, बड़ी खुशी हुई। हमारे समथी पं० राधावल्लभ, कभी-कभी यहां दिल्ली में हमारे दामाद के पास आ जाते हैं। फिर उनको कानपुर की हड़क उठती है और जल्दी ही भाग खड़े होते हैं। शायद तुम भी ज्यादा दिन बांदा से बाहर नहीं रह सकते। वासवी को नरेन्द्र पर संस्मरण कल भेज

1. श्री गिरिजाकुमार माथुर [अ० त्रि०]

2. पुराने कामरेड, वरिष्ठ पत्रकार और लेखक, इलाहाबाद। [अ० त्रि०]

3. यही सही तिथि है। [अ० त्रि०]



दिया। हमारा गेस वर्क : नरेन्द्र, शमशेर ने अंग्रेजी में एम० ए० किया। इन्हें और बच्चन+बालकृष्ण राव को हिन्दी की ओर प्रवृत्त करने का श्रेय अमरनाथ झा और शिवाधार पांडेय को है। तुम्हारी क्या राय है?

तुमने एक दिन घर की सफाई में लगाया, 'आज फुरसत से आराम कर रहा हूँ'-पढ़ कर परमानन्द प्राप्त हुआ। अजय फिर गायब हैं। कम ही मिलना होता है। उनके पिता किस अखबार में गये, पता नहीं। विजय लौट आये। मुंशी अब भी जब तब दफ्तर जाते हैं। बाकी समय पढ़ना-लिखना।

सप्रेम रा० वि०

बांदा १६-८-८९

प्रिय डाक्टर,

-९/८ का पोस्टकार्ड आज डाक से मिला। वहां, मद्रास में, फ्लैट में आंगन नहीं है। कमरे में अकेले कैद हो जाता था। कोई साथी नहीं था। घर के बच्चे जरूर थे। पर दिन-रात उन्हीं उन्हीं की संगत से मन को तृप्ति नहीं होती थी। फिर 6 महीने रहा-कम है क्या यह समय? बांदा का घर-पेड़-पौधे और यहां के मेरे प्रियजन मुझे पुकारते रहते थे। मैं रुक न सका। चला आया। यहां भी कोई चिन्ता नहीं है। मन बहलेगा। अच्छा किया मैंने जो आ गया।

तुमने अच्छा किया जो नरेन्द्र पर संस्मरण लिख कर भेज दिये। वैसे नरेन्द्र तो स्वयं प्रेमगीत गा गा कर हिन्दी के लोगों में पहुंच चुके थे। हां, अमरनाथ झा ने उनकी पुस्तक 'शूल-फूल' की भूमिका लिख कर उन्हें प्रतिष्ठित किया था। शिवाधार के बारे में मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है। वह भी कविता लिखते थे। विभागाध्यक्ष थे अंग्रेजी [के]।

अजय का पत्र कुछ दिन पहले आया था। उत्तर दे दिया था। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु०

केदार,

नयी दिल्ली-१८

२४-८-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारे ७ और १६/८ के कार्ड यथासमय मिले। विकासपुरी के ऊपर से बादल निकल गये, दिल्ली में पानी खूब बरसा, इतना कि जमुना खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं! ३० सितम्बर के भारत बंध [बंद] का मुकाबला करने के लिए सरकारी कर्मचारियों को आदेश है कि परिवहन की असुविधा का भय हो तो २९ को अपने

276 / मित्र संवाद

दफ्तरों में सो रहें!—यह समाचार Voice of America से सुना। आज बेटी आरती के साथ अमृतलाल नागर आये। मुंशी भी सपरिवार आ गये थे। पहले से अच्छे हैं। वृंदावनलाल वर्मा समारोह में अगले महीने फिर आयेंगे। कोई चीज वाणी प्रकाशन को दे रहे हैं। 'रूपतरंग' में नरेन्द्र शर्मा का चित्र दे कर उसके साथ उन पर लिखा संस्मरण देने का विचार है। राजकमल वाले 'आस्था और सौन्दर्य' छापना चाहते हैं। मैंने हां कह दिया है। शेष कुशल।

सस्नेह रा० वि०

बांदा

५-९-८९

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला गया था। उत्तर देने में विलम्ब हुआ।

नरेन्द्र के संस्मरण और उनकी फोटो अपने संग्रह में अवश्य दो। कब तक छप कर आयेगा?

मैं ठीक हूँ। आशा है तुम सब लोग ठीक होओगे।

नागर जी बड़े हिम्मती हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग वाले [ने] मुझे 14-15/10 को दिल्ली पहुंच कर उनके अधिवेशन में मानद उपाधि 'साहित्य वाचस्पति' लेने का आग्रह किया है। प्रभात शास्त्री का पत्र आया है।

पहुंचा तो अवश्य मिलुंगा। शरीर की स्थिति पर निर्भर है।

पत्र अवश्य दो।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८

२०-९-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा ५/९ का कार्ड मिल गया था। अमृतलाल नागर १५/९ को यहां आने का वादा कर गये थे। १४/९ को साहित्य अकादमी के समारोह में आये थे, उसी समय वापस चले गये, शायद वाहन की व्यवस्था नहीं कर पाये। वाणी प्रकाशन बहुत देर लगा रहा है। लगता है अगले साल कभी पुस्तक निकलेगी। नरेन्द्र का एक चित्र मिल गया

है, उसका ब्लाक बन रहा होगा। अमृत के कहने से उनकी बेटी लावण्य ने भेजा है। वह शायद अपने पिता के घर पर ही रहती है। अगले महीने तुम्हारे इधर आने की सम्भावना है। जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई। दिन और समय लिख दो तो विजय स्टेशन पर पहुंच जायेंगे। और सब ठीक है। अजय मौन हैं!

सस्नेह  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

27-10-89

प्रिय डाक्टर,

मैं दिल्ली न पहुंचा। शरीर को सम्हाले बांदा में ही बना रहा। सम्मेलन वाले अवश्य बुरा मान गये होंगे। पहुंचता तो तुमसे मिलता-बातें होतीं-नवोल्लास उत्फुल्ल करता। फिर भी रोज ही तुम्हें याद करता हूं और अपने को तुम्हारी कर्मठता से अपने को जीवित और जागृत रखता हूं। तुम न होते तो पता नहीं कैसे क्या होता?

आशा है कि परिवार में सभी सदस्य मुझे याद करते होंगे और स्वस्थ होंगे। मैं जानता हूं उन्हें मेरी फिकर रहती है। उनसे भी न पहुंचने की विवशता व्यक्त करता हूं।

सभी को मेरा सलाम देना।

गुना भी नहीं गया। वजह मेरी शारीरिक दुर्बलता थी।

यहां से दो जने गये थे। हाल चाल मालूम हुआ।

पता नहीं डा० अशोक त्रिपाठी और सहाय साहब वहां पहुंचे या नहीं। और तुमसे भेंट कर चुके या नहीं।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

७-११-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा २७/१० का कार्ड मिल गया था। तुम दिल्ली न आये। बहुत अच्छा किया। इस उम्र में मुख्य बात है शरीर को सम्भाले रहना। सहाय और त्रिपाठी से भेंट नहीं हुई। कर्मेन्दु शिशिर! के पत्र से मालूम हुआ, दोनों सज्जन गुना के प्रगतिशील लेखक सम्मेलन

278 / मित्र संवाद

में गये थे। तुम मुझे याद करते हो, मैं तुम्हें याद करता हूँ; कुछ लोग हम दोनों को एक साथ याद करते हैं; 'रास्ते में बाबू जी केदारनाथ अग्रवाल और आपके दुर्लभ आत्मीय प्रसंगों के संस्मरण सुने।' श्रोता-कर्मन्दु शिशिर; वक्ता-सहाय और त्रिपाठी। तीन-चार दिन पहले त्रिलोचन आये थे, पहले से स्वस्थ लग रहे थे। अभी सागर में टिके रहेंगे।

राजकमल वाले हमारा पुराना निबन्ध संकलन 'आस्था और सौन्दर्य' छापना चाहते हैं। इसके लिए हमने एक नया निबन्ध लिखा है : 'फ्रांस की राज्य क्रान्ति और मानव जाति के सांस्कृतिक विकास की समस्या।' इसमें कुछ बातें गदर और भारतेन्दु युग पर भी लिखी हैं। शेष कुशल।

सस्नेह रामविलास

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001 / 12-12-89

प्रिय डाक्टर,

-7/11 का पत्र 15/11 को डाक से मिला। उत्तर विलम्ब से दे रहा हूँ।

-त्रिलोचन शास्त्री ने अपने एक प्रशंसक को पत्र लिख कर मुझे नमस्कार भेजा है।

-अशोक त्रिपाठी अपने ठौर-ठिकाने से लग पाने के लिए इधर से उधर जाते रहते हैं-अभी कहीं मुस्तकिल तौर से नियुक्ति नहीं पा सके। वैसे वे ठीक हैं। सहाय साहब और वे एक दिन यहां आने को हैं। ऐसा ज्ञात हुआ अशोक त्रिपाठी के पत्र से। पांडुलिपि लेने के लिए।

-तुम्हारा निबन्ध-संकलन जल्दी छप कर आये तो पढ़ूंगा और अपनी मानसिकता को ठीक करूंगा।

-समकालीनता के दौर में अधिकांश रचनाएं व्यक्तिगत दैनिक जीवन की तात्कालिक निजी छोटी-छोटी बातों का उल्लेख मात्र होती हैं-न सामाजिक सरोकार का स्पर्श दे पाती हैं न यथार्थ के निकट जाती हैं। रेला चल रहा है वैयक्तिकता का कविताओं के नाम पर। फिर भी समकालीन कवि सन्तुष्ट दिखते हैं। मैं यह सब ठीक नहीं समझता।

आजकल बड़ी बिटिया श्याम इलाहाबाद से आई हुई है। दो-एक दिन में वापस जायेगी। ठीक है। मन बहला।

आशा है परिवार के सभी सदस्य सकुशल होंगे। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदार

बांदा (उ० प्र०)—Pin 210001—12-12-89

प्रिय भाई,<sup>1</sup>

—बहुत दिन बीत गये। 'सचेतक' तो आया ही करता है पर तुम्हारा कोई पत्र, भूल कर भी नहीं आया। आखिरकार कुछ तो शब्द मुझे भी पहुंचा दिया करो। अकेले में उन्हें चूसता रहूंगा 'लेमन ड्राप्स' की तरह और बच्चों वाली खुशी से स्फूर्ति पा लूंगा। इतना न बिसारो कि गुम हो जाऊं।

—तुम्हें क्या लिखूं कुछ समझ में नहीं आता। रूस और यूरोप के देशों में बड़ी उथल-पुथल है। गोर्बाचोव भी विरोध के घेरे में घिर जाते हैं। कम्युनिज्म विरोध का दौर जोरों पर चल रहा है। इसका हो हल्ला रेडियो से सुनता रहता हूं। देखो किस करवट ऊंट बैठता है।

अपने देश में नयी सरकार केन्द्र में आ गई है। बदलाव आया। अब गाड़ी कैसे आगे बढ़ती है, यह प्रमुख प्रश्न है।

—साहित्य में भी बड़ी चिन्ताजनक स्थिति है। कोई किसी की सही बात न सुनता है, न मानता है। 'प्रलेस' और 'जलेस' भी इस नये दौर में 'अकाल' की स्थिति में आ-से गये हैं। यहां भी धूल-धक्कड़ का प्रसार है।

—मन न माना इसलिए यह सब तुम्हें लिख कर भेजता हूं (डाक्टर को नहीं क्योंकि वह गम्भीर काम में लगे हैं। उन्हें उचाट न हो जाये) सब को यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

२६-१२-८९

प्रिय केदार,

बड़ी उथल-पुथल हो रही है दुनिया में। रूमानिया में चाउसेस्कू दम्पति को प्राणदंड अभूतपूर्व घटना है। इस समय समाजवाद और जनतंत्र परस्पर विरोधी अर्थ वाले शब्द बन गये हैं। जनतंत्र और पूंजीवाद समानार्थी। पंजाब और कश्मीर में आतंकवाद प्रबल है, उत्तर प्रदेश से लेकर आन्ध्र प्रदेश तक वर्ण युद्ध छिड़ा हुआ है। लंका में अलग मारकाट मची हुई है। दिल्ली की जोड़-तोड़ वाली सरकार हर तरह से कमजोर है।

1. यह पत्र श्रीरामशरण शर्मा 'मुंशी' को भेजा गया है। [अ० त्रि०]

280 / मित्र संवाद

वामपक्ष इस सरकार को सलाह, सुझाव देता रहता है, जन आन्दोलन के बारे में शायद सोचता भी नहीं है। तुम्हारे १२/१२ के कार्ड में : समकालीनता....छोटी-छोटी बातों का उल्लेख मात्र....रेला चल रहा है वैयक्तिकता [वैयक्तिकता] का पूरा-वाक्य समूह एकदम सटीक है। अपना काम ठीक चल रहा है। कल अजय तिवारी आये थे ठीक हैं पर पत्नी अस्वस्थ हैं। इलाहाबाद में है। यहां पानी बरसा, उसके बाद जोरों से सर्दी बढ़ी। एक दिन टी० वी० में सुलोचना बृहस्पति को देखा। संगीत सुनकर जो चित्र बनता है उससे यह रूप उल्टा था।

नये वर्ष के लिए शुभकामना सहित।

सस्नेह तु० रा० वि० शर्मा

बांदा-6-1-90

प्रिय डाक्टर,

-२६/१२ का पोस्टकार्ड मिला। रूमानिया की घटना निश्चय ही अभूतपूर्व रही। समाजवाद [समाजवादी] देशों की हलचल ने सर्वत्र हड़कम्प मचा दिया है। लोग कहते हैं कि मार्क्सवाद समाजवाद मर चुके। कहते हुए इन्हें शर्म नहीं लगती। यह नहीं जानते कि मार्क्सवाद सतत विकासशील मानवीय मूल्यों का जीवन दर्शन है। वह भला कैसे मर सकता है। जो हो रहा है वह उसके अमानवीय क्रियान्वयन का परिणाम है। जनतंत्र कभी, कहीं भी, यथास्थिति को ध्वस्त नहीं कर सकता-वह तो ऐसा भैंसा है जो सब जगह की हरी घास चर लेता है और शासकीय निरंकुशता के सहारे मोटा होता रहता है। लोकतंत्र अब तक कोई जीवन-दर्शन नहीं दे सका। वह तरह-तरह की विसंगतियों [का] पालक और पोषक है। देश-अपना भी-आतंकवाद से ग्रस्त है। वर्ण-युद्ध हो रहा है चारों ओर। सरकार संकट में है। समस्याएं कैसे सुलझेंगी कह नहीं सकता। द्वन्द्व और संघर्ष में जीना पड़ेगा। शान्ति के शुभ लक्षण अभी प्रकट होते नहीं दिखते। अब आन्दोलन कौन करेगा। सभी परोसी पत्तल के सहारे जी रहे हैं। पेट भर रहे हैं। मैंने अपनी नई कविताओं के संकलन का नाम-अनहारी हरियाली-सोचा है। कैसा है? कुछ-न-कुछ लिखता-पढ़ता रहता हूँ। ठीक हूँ। ठंड इधर भी खूब रही और हवा अब भी, धूप में भी, शीत-प्रकोपी है।

सुलोचना बृहस्पति का गायन मैं टी० वी० में देखता पर सो गया था। अरे, हर हमेशा वही सिद्धि नहीं मिलती। संगीत साधना जान ले लेती है।

नया वर्ष तो शुभ होता है। यार है वह मेरा। तुम्हें भी शुभ हो।

सस्नेह केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

16-1-90

प्रिय डाक्टर,

कल, रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजी गई, 'रूपतरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि' की प्रति मिल गई। मैंने [मैं] श्री अशोक महेश्वरी को भी अभी पत्र द्वारा सूचित कर रहा हूँ कि प्रति मिली-आभारी हूँ।

अभी पढ़ना है।

टाइप छोटा है। बिजली भी धीमी आती है।

Rt. पैर में मोच आ गई है। ४ दिन हुए। सेंक रहा हूँ। ठीक हो जायेगा। चलने में दर्द होता है पर कम हो रहा है।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

१९-१-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारे ६/१ और १६/१ के दोनों कार्ड मिले। तुम्हारे पैर में मोच आने की बात जान कर दुःख हुआ। आर्निका बड़ी अक्सीर दवा है। किसी होम्योपैथ से पूछ कर ले सकते हो। मोच आदि में लोग IODEX भी मल लेते हैं। धीमी बिजली में किताब न पढ़ना, दिन में कभी इधर-उधर देख लेना। उतना काफी होगा। जनवरी के सोवियत लैंड में सांकेविच का हिन्दी कविता पर लेख है। नयी कविता का प्रगति विरोधी अभियान राजनीतिक विसर्जनवाद के कितना अनुकूल है, उस लेख से प्रकट होता है। जो काम हिटलर नहीं कर सका, वह अमरीका किये ले रहा है। इन्हीं लोगों के सहयोग से। तुमने अपने कविता संग्रह का नाम 'अनहारी हरियाली' रखा है। सुनने में अच्छा लगता है। लेकिन अनहारी का अर्थ सबके लिए स्पष्ट न हो, यह सम्भव है। अन+हारी को लोग अन+अहारी (न खायी जाने वाली घास) समझें! भूमिका में अर्थ स्पष्ट कर देना। २४ को हम सब लोग जयपुर जा रहे हैं। स्वाति से मिल कर एक दिन को ललित से मिलने सीकर जायेंगे। ३० को मुकुल का ब्याह है। शेष कुशल।

सस्नेह-रामविलास

282 / मित्र संवाद

बांदा

८-२-९०

प्रिय डाक्टर,

कल रेडियो से समाचार सुना तो नाम सुन कर स्तब्ध हुआ-पर उम्र 73 और ग्रन्थों के नाम सुनने के बाद आश्वस्त हुआ-शान्ति मिली कि तुम अभी हमारे साथ हो-पर वाह रे उद्घोषक! इंदौर के रामविलास शर्मा तो कवि हैं-प्रख्यात आलोचक हैं नहीं। खैर। जनवरी का सो० लै० नहीं आया। सांकेविच का [के] लेख का सारतत्व तुमने लिख दिया है। समझ गया। यही चल रहा है नासमझी का दौर। खैर। अकल दुरुस्त हो रही है वहां के दिग्गजों की। कम्यूनिज्म के विरोध में भयंकर हो हल्ला उठ खड़ा हुआ है। सर्वथा गलत है।

भूमिका में स्पष्ट कर दूंगा।<sup>1</sup>

जयपुर वगैरह हो आये हो-वहां सब ठीक है-ललित कैसे हैं? स्वाती भी कुशल से होंगी? मुंशी के यहां मुकुल का ब्याह हो गया होगा सकुशल। अच्छा समय बीता होगा। सबको यथायोग्य।

तु० सस्नेह

केदार

नयी दिल्ली-१८

१२-२-९०

प्रिय केदार,

नेलसन मंडेला की रिहाई पर सब लोग बहुत खुश हैं। इस खुशी में वह गुस्सा खो गया है जो उन्हें सत्ताईस साल जेल में रखने वालों पर आना चाहिए। रंग भेद का आर्थिक आधार द० अफ्रीका में लगी हुई जर्मन-ब्रिटिश अमरीकी पूंजी है। उस आधार को ध्वस्त किये बिना द० अफ्रीका में लोकतंत्र पूरी तरह कायम नहीं हो सकता। आज के टाइम्स आफ इंडिया में एक लेख रूस पर जेम्स ब्लिट्ज़ का है, दूसरा उसी के नीचे विजय सिंह का अल्बानिया पर है। मिलें तो जरूर पढ़ना। सही और गलत मार्क्सवाद का फर्क साफ दिखायी देता है। अल्बानिया के संविधान में विदेशी महाजनों से कर्ज लेने पर प्रतिबन्ध है। ये छोटे देश ज्यादा समझदारी से काम ले रहे हैं। वियतनाम,

---

1. सन्दर्भ : 'अनहारी हरियाली' के अर्थ का है। [अ० त्रि०]



क्यूबा और अल्बानिया के आपसी सम्बन्ध बहुत अच्छे हैं। तुम्हारा ८/२ का कार्ड मिला। स्वाति ठीक है। रेडियो से हमारे नामराशि के बारे में समाचार सुन कर कुछ समय के लिए परेशान रही। फिर टेलीफोन पर हमारी आवाज़ सुन कर आश्वस्त हुई। ललित ठीक हैं। पति-पत्नी दोनों ही रिटायर्ड होने को हैं। मुकुल पत्नी सहित नैनीताल गये हैं। और सब लोग कुशल पूर्वक हैं।

सस्नेह  
रामविलास

बांदा

27-2-90

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा १२/२ का पोस्टकार्ड मिला।

अपने अमृतलाल नागर 23/2 की शाम को लखनऊ के अस्पताल से चल बसे। रेडियो से सुन कर आंखें डबडबा आईं। कहूं तो क्या कहूं। तुम पर क्या बीती होगी। कल्पना कर सकता हूं। उन्होंने जो दिया वह जीवित रहेगा और वह भी स्वयं अपने दिये के साथ जीते रहेंगे। कल 'आज' समाचार पत्र में कुमुद नागर उनकी चिता के पास हाथ जोड़े शोकाकुल दिखे। मान-सम्मान भी मिला। जनता ने भी अपने शोकाश्रु चढ़ाये। प्रसारण के दो-तीन कार्यक्रम आये-देखे-सुने। वह लखनऊ के बारे में बोल रहे थे-अपने अन्दाज में। लगा कि वह गये नहीं हैं-लखनऊ में हैं-बोल जो रहे हैं।

कल मुंशी का पत्र आया। शादी का हाल मिला।

सस्नेह तु०  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

५-३-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारे २७/२ का कार्ड मिला। नागर की आंतों में सूजन [सूजन] आ गयी थी। पहले आयुर्वेदिक उपचार हो रहा था। फिर अस्पताल में भर्ती हुए। ऊपर से वह हंसते थे, भीतर उनके मन में दुख घुमड़ता रहता था। एक छोटे भाई रतन का देहान्त तो काफी पहले हो गया; उनसे छोटे मदन का देहान्त उसके बाद हुआ। उनके बड़े दामाद का देहान्त हुआ और पत्नी भी न रहीं। अपनी पोती दीक्षा की गले की बीमारी से काफी

284 / मित्र संवाद

परेशान थे। उनका पचास वर्षों का सहायक संचित क्षय-ग्रस्त है। वह [उन्होंने] तिहत्तर पूरे करके चौहत्तर में, अपनी समस्त आधिव्याधियों के साथ प्रवेश किया, यही बड़ी बात है। हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए उन्होंने अपनी आयु का भरपूर उपयोग किया, यह नयी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण है। रामचरितमानस के रूसी अनुवादक बरान्निक्वोव की जन्म शताब्दी का कोई आयोजन है। उनके पुत्र दिल्ली आये थे पर उनसे भेंट नहीं हो सकी। शेष कुशल।

सस्नेह

रामविलास

बांदा/२८-३-९०

प्रिय डाक्टर,

-इधर मोच वाली तकलीफ से १ माह से परेशान रहा। अब ३ दिन से डा० भार्गव की दवा से एक ही खुराक में दर्द बहुत कम हो गया। अब खड़ा हो लेता हूँ। स्नान घर जा लेता हूँ। आज मैंने दवा नहीं खाई। डाक्टर ने कहा था बन्द कर दो। मांसल दर्द था-अब भी कुछ-न-कुछ है। पर ठीक हो जाऊंगा। पत्र नहीं लिखा मैंने कि चिन्ता में पड़ जाओगे।

कहो, सादतपुर का कार्यक्रम हो गया? पर्चा तुमने पढ़ा होगा? क्या सुनाया था? संक्षेप [में] लिखना। और सम्मेलन कैसा रहा।

नागर जी पर लेख मांगा है 'उत्तर प्रदेश' ने। हो सका तो कुछ लिख दूंगा।

बारान्निक्वोव को टी० वी० पर देखा था। उनका बेटा चनु बरान्निक्वोव है। सबको यथायोग्य।

सस्नेह

केदार

नयी दिल्ली-१८

५-४-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/३ का कार्ड मिला। लगता है, पिछले दिनों तुम्हें काफी तकलीफ रही। मोच का दर्द पुराना है। कमर मे हो तो तखत पर सोने से 1भ होगा। मैंने अपनी कमर का

दर्द ऐसे ही ठीक किया है। एक होता है ताड़ आसन : दायां हाथ ऊपर उठाओ, पंजों के बल खड़े हो, दायें हाथ से छत को छू लेने का सा प्रयास करो। फिर ऐसे ही बायें हाथ से। हाथों को ऊपर की ओर तानने से कमर पर असर होता है और दर्द चला जाता है। इस आसन से भी लाभ होता है। सादतपुर में शील का अभिनंदन होना है। मैंने कह दिया था—मेरा आना न हो गा। बोले, कुछ लिख कर दे दीजिये। मैंने कहा, वह करदूंगा। परसों लेने आयेंगे। शील और प्रबतिशील समानार्थी है। जब से इनका बिछोह हुआ तब से शील तो शील ही बने रहे पर प्रगतिशील शील विहीन हो गये—कुछ इस ढंग से लिखने का विचार है। बरान्निकेव यहां आये थे। उनके पिता के जन्म शताब्दी समारोह में नहीं गया। मुंशी भी आ गए थे, काफी बातें हुईं। टी०वी० पर उनकी भेंटवार्ता नहीं सुनी। पंजाब की हत्याओं से बढ़ कर दुःखद घटना महाराष्ट्र में उस लड़की को दिन दहाड़े स्कूल में जिन्दा जलानेकी है। देश रसातल को जा रहा है

सस्नेह रा० वि० शर्मा

बांदा-उ० प्र०-Pin 21000—दि० १३-४-९०

प्रिय डाक्टर,

-५/४ का पोस्टकार्ड मिला। मैं पहले से ही तखत पर सोता हूँ। इससे बहुत लाभ हुआ। अब दर्द नहीं रहा। कमरे से चल कर स्नान घर वगैरह हो आता हूँ। नहा लेता हूँ। दैनिक काम भी कुछ कर ही लेता हूँ। अपनी भूख भी मिटा लेता हूँ—दो बार नाश्ता फल वगैरह लेकर [;] सुबह-शाम दो-दो रोटियां-दाल सब्जी खा कर। अब उठ खड़ा हुआ हूँ। प्रकाशक+अशोक त्रिपाठी+राधारमण<sup>1</sup> इलाहाबाद से देखने आये-१<sup>१</sup>/<sub>२</sub> [डेढ़] दिन रहे। त्रिपाठी दिल्ली गये। सहाय प्रयाग। मेरी पांडुलिपि भी ले गये—'अनहारी हरियाली' की।

कसरत मैं नहीं करता—इसके एवज में हाथ-पैर से उतना ही काम कर लेता हूँ।

क्या महाराष्ट्र—क्या कश्मीर क्या पंजाब—क्या उत्तर पूर्व—में हिंसा-हत्या बन्द नहीं हुई। दिन-पर-दिन आतंक वृद्धि पर है। पता नहीं कब स्थिति सुधार पर होगी।

गरमी पड़ने लगी है। दिल्ली भी गरम होगी ही। अपनी तबियत का हाल लिखना अवश्य। मद्रास से बहू+पोते 23/4 को बांदा आयेंगे। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

1. कवि, अनुवादक, [अ० त्रि०]

नयी दिल्ली-१८

२५-४-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा १३/४ का कार्ड मिल गया था। दर्द नहीं है, जान कर खुशी हुई। 'दैनिक काम कुछ कर ही लेता हूँ'-इसमें किताबों की धूल झाड़ना जरूर शामिल हो गा। वह अपने में बहुत अच्छी कसरत है। शिवकुमार सहाय और अशोक त्रिपाठी तुम्हें देखने आये थे और नया कविता संग्रह ले गये, यह अच्छा समाचार है। आशा है अगले साल पहली अप्रैल तक निकल जाये गा। उस समय मेरे साथ तुम्हारा पत्र-व्यवहार छप जाये तो कैसा रहे? अपनी और तुम्हारी चिट्ठियां क्रम से लगा कर जेरौक्स करा लेंगे। निराला जी पर पुस्तक लिखते समय, जो चिट्ठियां मैंने तुम्हें लिखी थीं, मँगवा ली थीं। उसके बाद की चिट्ठियों को जेरौक्स कराके सीधे इलाहाबाद भेज देना या चिट्ठियां मेरे पास भेज देना। एक भूमिका लिख देंगे, जहां आवश्यक हो गा, टिप्पणियां दे देंगे। वहां वे लोग सारी सामग्री टाइप करा लेंगे। अशोक तुम्हारी हस्तलिपि पढ़ने के आदी हैं। प्रेस कापी तैयार करने में उन्हें कठिनाई न हो गी। इस सम्बन्ध में चाहो तो तुम शिवकुमार सहाय को लिखना या फिर हम लिख देंगे। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। बहू पोते आ गये होंगे।

सबको स्नेह-

रा० वि०

केदारनाथ अग्रवाल  
एडवोकेट

सिविल लाइन्स

बांदा (उ० प्र०)

Pin 210001

दिनांक ५-५-९०

प्रिय डाक्टर,

-२५/४ का पत्र मिला।

पत्र व्यवहार छप जाये तो ठीक ही रहेगा। लोग मुझे और घूर-घूर कर देखने लगेंगे। अभी ही कुछ नासमझ लोग नकारने पर तुले हैं। कोई कुछ कहे-करे मुझे ढकेल कर गिरा नहीं सकता। कविता मुझे सिर पर चढ़ाये-उठाये-उठाये-लोक चेतना में ले गई है। मैं खूब खिलखिला रहा हूँ। नकारने वालों को ठेंगा दिखा रहा हूँ। भले मानस, कुछ भी सोचते-समझते नहीं। अच्छी कविताओं की पहचान नहीं कर पाते। उनका दोष नहीं, उनकी 'अकल' कहीं घास चरने चली गई है और पगुरा रही है बँबा रही है। खैर। लिखना न चाहिए था-ऐसा लिख दिया कि तुमसे क्या छिपाना।

(७१) मैं ये चिट्ठियां तुम्हारे पास भेजा रहा हूँ। जो चाहो करो। मेरे बस की बात नहीं है। घर से बाहर निकलता नहीं। जेरौक्स क्या कराऊंगा? अब तुम सहाय साहब को भेजो या न भेजो। तुम्हारी मरजी। भूमिका अवश्य लिखना। टिप्पणियां भी दे देना।

बहुत खोजा-खखोया तब इतने पत्र मिले। न जाने कहां-कहां किस लिफाफे, फाइल में खोये पड़े थे तुम्हारे पत्र। अब और मेरे पास नहीं हैं।

बहू ज्योति और विशाल-आकाश और समीर (पोते) यहां २४/४ को दोपहर झांसी होते हुए आ गये। ७/५ को सबेरे ३ या ४ बजे कानपुर जायेंगे-फिर वहां रह कर-इलाहाबाद-वहां बहू की दो बहनें हैं। ठीक हैं। समय अच्छी तरह से बीत रहा है। न बेटा आया-न बेटे का बड़ा बेटा प्रशान्त आया। मद्रास में ही व्यस्त हैं। एक शूटिंग में-दूसरा घर की देख-रेख में। वे भी ठीक हैं।

इधर डॉ० अशोक त्रिपाठी का पत्र नहीं आया-न सहाय जी का। ठीक ही होंगे।

यह पत्र-प्रकाशन की बात कैसे उठ पड़ी? मैंने तो कल्पना भी न की थी।

सबको यथायोग्य।

आज दो दिन से मौसम ठीक-ठाक है। गरमी की मार से बचा हूँ। कभी-कभी कूलर चला लेता हूँ : पिछले दिनों ट्यूब वेल में मोटर बिगड़ गई तो ४-५ दिन पानी का कष्ट रहा। अब नयी मोटर लगी तो पानी धड़ल्ले से आ रहा है।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

१५-५-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा ५/५ का कार्ड जोरदार और बहुत जानदार था। हमने मुंशी के यहां पारिवारिक गोष्ठी में उसे पढ़ कर सुनाया। सब लोग खूब प्रसन्न हुए। तुम्हें खिलखिलाते नकारने वालों को टेंगा दिखाते देख कर मन उत्साह से भर गया। चिट्ठियां मिल गयीं। पावती की सूचना तुरन्त आवारा जी को भेज दी थीं। अगले साल अस्सी के हो रहे हो। हमने सोचा, जन्मदिवस तक कविता संग्रह के साथ यह पत्र संग्रह भी छप जाये तो अच्छा रहे गा। यहां अजय तिवारी के साथ उनके ससुर जी आये थे। हमने उन्हें सब बातें समझा कर शिवकुमार सहाय जी को सन्देशा भेजा है। अलग से उन्हें और अशोक त्रिपाठी को पत्र भी लिखे हैं। चार महीने में छाप लें तो नवम्बर तक सामग्री भेज देंगे।

सस्नेह

रा० वि०

288 / मित्र संवाद

बांदा

११-६-९०

प्रिय डाक्टर,

-१५/५ का पत्र मिल गया। समाचार मालुम हुए। उत्तर देने की कोई बात नहीं थी। इससे अब तक पत्र न लिख सका। आज मन हुआ-तबियत कुछ ठीक है इसलिए लिख रहा हूँ कि स्वस्थ हूँ। दिन १२ बजे से ५-६ बजे शाम तक का समय काटे नहीं कटता। पढ़ नहीं सकता। हरूफ छोटे होते हैं। रोज कुछ लिखने की आदत नहीं है। बस ट्रांजिस्टर सुनता हूँ-सोचता हूँ-तख्त पर पड़ा सबको याद करता हूँ-कभी-कभी तुम्हारी किताबें पढ़ता हूँ। परन्तु उदास नहीं होता। यह तो बुढ़ापा है-इसे भी जी-जान से प्यार से जिऊंगा।

आशा है कि तुम ठीक होओगे। गरमी तो वहां भी फुफकार छोड़ती होगी। घर में सबको मेरा यथायोग्य। प्रिय मुंशी को तथा उनके परिवार के सदस्यों को मेरी [मेरा] किसानी 'राम राम'।

-डा० अशोक त्रिपाठी का पत्र पहले आया था-तुम्हें भी उन्होंने पत्र लिखा था।

सस्नेह तु० केदार।

नयी दिल्ली-१८

१०-७-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा ११/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था। सेवा के पति आत्माराम के पैर की हड्डी में घाव है। पिछले महीने यहां डाक्टर को दिखाया था। दवा लिख दी थी। चले गये थे। किन्तु फिर आना पड़ा। ७ जुलाई को आपरेशन हुआ। १९/७ को टांके कटेंगे, अभी सेवा और भुवन यहीं हैं। 'सचेतक' ने अपने जीवन के दस वर्ष पूरे किये। नया अंक विशेषांक हो गा। उसके सम्पादन का काम आज पूरा हो गया। कल दूरदर्शन वाले आये थे। भेंट वार्ता रिकार्ड कर ले गये। कहते थे, २०/७ की शाम को पत्रिका में प्रसारित करेंगे। तुम्हारे नाम मेरी काफी चिट्ठियां अशोक त्रिपाठी के पास थीं। उनकी फोटो प्रतिलिपियां उन्होंने भेज दी हैं। शिवकुमार सहाय का पत्र आया है। वादा किया है कि तुम्हारे जन्म दिन तक पत्र संग्रह निकाल देंगे। अजय तिवारी पहले से अच्छे हैं। आज क्षिप्रा के साथ आये थे। ऋग्वेद वाली पुस्तक का काम रुक गया था। कल से फिर शुरू करूंगा। यहां पानी बरसा है। पूर्वी क्षेत्र में तो बाढ़ आ रही है। बांदा का मौसम भी बदला हो गा।

सस्नेह

रामविलास

बांदा (उ० प्र०) Pin 210001

दि० १३-११-९०

डियर,

तीन पोस्टकार्ड भेजे-किसी का भी उत्तर नहीं।

-हे मौन व्रतधारी महाराज अब तो बोलो, हे महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवारि सुमति के संगी। अब तो हमारी कुमति हरो और सुमति का परिचय दो। हमने इस बुढ़ापे में अब हनुमान चलीसा का पाठ किया और जोर-जोर से कहा : जय जय जय हनुमान गुसाई-कृपा करहु गुरुदेव की नाई। 'जो यह पढ़े हनुमान चलीसा। होय सिद्ध साखी गौरीशा'-पर हम न सिद्ध कर सके अपनी साधना-क्या करें कुछ समझ में नहीं आता। हमारी तो अनहारी हरियाली हार मान गई तुमसे।

कुछ तो लिखो-क्या क्या लिख डाला हम भी जानें। खुशी होगी।

हम तो अकेले पढ़े मच्छर मारते हैं। बहुत हो गये हैं। कभी कभार लिख लेते हैं। आंखें अधिक पढ़ने पर कष्ट देती हैं।

आजकल हमारे आंगन में बुलबुलें आने लगी हैं-पानी पीती हैं-फुर्र से उड़ जाती हैं। हम देख कर जी भर लेते हैं।

आशा है कि घर में सब स्वस्थ और प्रसन्न होंगे।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

१६-११-९०

प्रिय केदार,

१३-११ का कार्ड मिला। पढ़ कर आनन्द आ गया। तुम्हारी लिखावट पहले से ज्यादा सधी हुई दिखाई दी। फिर तुम्हें हनुमान चालीसा पढ़ते देख कर तुम्हारे मन की उमंग की कल्पना करके हमारी बांछे खिल गयीं, (बांछे क्या होती हैं?) तुम्हारे तीन कार्ड हमें नहीं मिले। पिछले दिनों आरक्षण विरोधी अभियान के समय यहाँ डाक की गड़बड़ी रही है। तीन दिनों में मिलने वाले पत्र पन्द्रह दिनों में मिले और कुछ मिले ही नहीं। इन्हीं के साथ तुम्हारे तीनों कार्ड भी शहीद हो गये। क्या-क्या लिखा, इसके बारे में आगे कभी लिखेंगे। इस समय वामपक्ष के बारे में जो हम सोच रहे हैं वह लिखते हैं। सारा वामपक्ष लोहियावादी हो गया है। सामाजिक न्याय वर्गों के आधार पर नहीं,

290 / मित्र संवाद

जाति-बिरादरी के आधार पर देना है। इसलिए वी० पी० सिंह को समर्थन देना ठीक। यदि बी० जे० पी० वी० पी० सिंह का समर्थन करे तो ठीक, यदि कांग्रेस चन्द्रशेखर का समर्थन करे तो गलत। इस समय अमरीका ने लाखों सैनिक सऊदी अरब में जमा किए हैं। उधर अच्छी फसल के बावजूद रूस में अकाल पड़ रहा है। अमरीका और उसके पिट्टुओं के हौसले बुलन्द हैं। सब लोग यहां ठीक हैं।

सस्नेह-रामविलास

नयी दिल्ली-१८

२६-११-९०

प्रिय केदार,

कल विजय ने 'हिन्दू' में पढ़ कर सुनाया, तुम्हें म० प्र० सरकार का मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार मिला है। बहरे सुनने लगे, अंधे देखने लगे, हार्दिक बधाई।

एक प्रकाशक हमारे राजनीतिक निबन्ध छाप रहा है। उस संकलन के लिए हमने एक नया निबन्ध लिखा है : 'स्वाधीनता आन्दोलन की गदर परम्परा और स्वदेशी।' इसमें गदर से ले कर गांधी जी तक स्वदेशी आन्दोलन की रूप रेखा है तथा वर्तमान परिस्थितियों में उसकी प्रासंगिकता का विवेचन है। आरक्षणगत जातिवाद, सम्प्रदायवाद और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर भी कुछ बातें कहीं हैं। राजपाल एण्ड संस अमृतलाल नागर की रचनावली छाप रहे हैं। उसकी भूमिका लिखनी है। आधी लिख ली है। दो एक अच्छी पुस्तकें दर्शन और पुरातत्व की मिल गयीं। उन्हें पढ़ कर टिप्पणी लिख रहा हूँ। उसे इतिहास-दर्शन पुस्तक में शामिल कर लूँ गा। लगता है, राजीव गांधी के दबाव से सरकार की पंजाब सम्बन्धी नीति बदली है।

शेष कुशल/सस्नेह

रामविलास

बांदा-१-१२-९०/Pin 210001

प्रिय डाक्टर,

-तुम्हारा एक पत्र १६/११ का और दूसरा २६/११ का मुझे मिला।

-तुम ठीक हो। काम कर रहे हो। यह जान कर बेहद खुशी हुई। मैं तो तुम्हारे मौन से त्रस्त हो गया था। अब पत्र पा कर खिल उठा कि तुम न रुष्ट हो, न उदासीन।



तुम्हें मेरा ध्यान सदैव बना रहता है, डियर, यही तो मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि मैं तुम्हें पा सका और आदमी बन सका। न भ्रष्ट हो सका—न गर्त में गिर सका। तुम्हारी पुस्तकें समय-समय पर फिर-फिर यहां-वहां से पढ़ लिया करता हूँ और भ्रम और भटकाव से बचा रहता हूँ।

—पुरस्कार की तुम्हारी बधाई भी बेहद प्यारी रही और हृदय को झनझना गई। वैसे मुझे किसी सम्मान या पुरस्कार की लालसा कभी नहीं रही। मेरे पास तो तुम हो। यही मेरे जीवन का लक्ष्य था—मैंने पा लिया है।

—हां, जो पुस्तकें तुम प्रकाशित करो उनकी एक-एक प्रति अवश्य भेजवाना। पढ़ूंगा ही। अपनी मानसिकता सुधारूंगा ही। सबको यथायोग्य। मुंशी को भी नमस्कार कहना।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

७-२-९१

प्रिय केदार,

नये साल का पहला महीना बीत गया। तुम्हारा कोई समाचार नहीं। हमने पिछले साल २६/१२ को तुम्हें पत्र लिखा था, वह तुम्हें मिला या नहीं? हम ठीक हैं। 'नव जागरण की परम्पराएं और क्रान्तिकारी आन्दोलन' लेख पूरा किया है। पलासी के युद्ध के बाद बंगाल में दुर्भिक्ष, सन्यासी विद्रोह, वन्देमातरम् का गीत और आनन्दमठ यह एक परम्परा है। गुजरात में बाघेर जनजाति ने १८५७-५९ में अंग्रेजों से युद्ध किया। स्वामी दयानन्द इससे परिचित थे और सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने बड़े शानदार ढंग से बाघेरों की वीरता का उल्लेख किया है। रामप्रसाद बिस्मिल तो आर्य समाजी थे ही भगतसिंह के बाबा भी आर्य समाजी थे। १६/२ को जयपुर जाने का प्रोग्राम है। २३/२ तक लौटेंगे, और सब ठीक है। अपना समाचार लिखो।

सस्नेह

रामविलास

बांदा—(उ० प्र०) Pin 210001

दि० १२-२-९१

प्रिय डाक्टर,

—७/२ का पोस्टकार्ड आज मिला।

—तुम्हारा पहले वाला पत्र मिला था। मैंने उत्तर भी दे दिया था। पता नहीं वह क्यों तुम्हें न मिल सका। वैसे कोई खास बात नहीं थी उस पत्र में। नये साल का आना क्या

292 / मित्र संवाद

हुआ कि खाड़ी युद्ध शुरू कर दिया मिस्टर 'झाड़ी' ने। इतना भयंकर 'खूंखार' आक्रमण तो वियतनाम में भी न हुआ था। उफ़! इतनी बमबाजी-इतना संहार किसी भी तरह से न्याय संगत नहीं है। अमरीकी शासनाध्यक्ष तो यमराज हो गया है।

तुमने अपना लेख पूरा किया पढ़ कर प्रसन्न हुआ। छपेगा कब तक?

-तुम १६/२ को जयपुर जा रहे हो। वहां सबको मेरी शुभ कामनाएं देना। बहुत याद आता है मुझे जयपुर। लौटने के बाद तो पत्र लिखोगे ही। वहां से भी एक पत्र डाल देना।

यहां १५/२ को श्री विश्वम्भर नाथ उपाध्याय आ कर मुझसे मिलते हुए चित्रकूट जायेंगे।

-मैं ठीक ही हूं। कभी-कभी पढ़ने में दिक्कत बहुत होती है।

सस्नेह तु० केदार

नयी दिल्ली-१८

२४-२-९१

प्रिय केदार,

तुम्हारा १२/२ का कार्ड मिला। इससे पहले वाला पत्र डाक की गड़बड़ी से नहीं मिला, इसका दुःख है। खैर, तुम्हें तस्वीरें मिल गयी थीं, यह प्रसन्नता की बात है। राजनीतिक निबन्धों का एक संकलन छपने वाला है उसी में लेख आये गा। हां, नये साल के साथ खाड़ी युद्ध आया। तैयारी तो अमरीकी इजारेदार बहुत दिन से कर रहे थे। कोरिया के युद्ध में चीनी लड़े, वियतनाम में अकेले वियतनामी लड़े, पर समाजवादी देशों से उन्हें मदद मिलती रही थी। इस समय समाजवादी देश मार्केट इकॉनोमी के निर्माण में लगे हैं। इराकी अकेले पड़ गये हैं। फिर भी लड़ रहे हैं। कोरिया-वियतनाम-इराक की लड़ाइयां एक ही शृंखला की कड़ियां हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद जितना ही विश्व प्रभुत्व की ओर बढ़ता है, उतना ही विश्व जनता से उसका अन्तर्विरोध बढ़ता है। हार आखिर में उसी की हो गी। पाकिस्तानियों ने बड़ा जोर लगाया, पर काबुल सरकार को गिरा न पाये। रूस में अभी मार्क्सवादी हैं। सही नीति के लिए वे भी लड़ रहे हैं। बेशक अभी कम्युनिस्ट विरोधियों का पलड़ा भारी है।

और सब ठीक है।

सस्नेह-रा० वि०

---

1. अमेरिकी राष्ट्रपति बुश का हिन्दी अनुवाद। [अ० त्रि०]

बांदा (उ० प्र०)/Pin 210001

दि० १४-३-९१

प्रिय डाक्टर,

-२९/२ का पोस्ट कार्ड मिला।

-खाड़ी युद्ध खा गया आदमियों को। ध्वंस कर धरती का तेलक्षेत्र, अमरीका ने अपना नरसंहारी रूप प्रकट कर दिया और अब तो दुष्टों का सरदार बन कर विश्व को हथिया रहा है। मुझे तो शुरू से इसके शासनाध्यक्षों से घृणा रही है। 'झाड़ी' ने हद कर दी। हवाई बमबारी से तबाही ला दी। उधर गोर्बाचोव पर आफत आये दिन मंडराती है। वाह रे वहां के उदंड निवासी जो सो० सं० छोड़ कर अपना स्वतंत्र राज्य बनाना चाहते हैं। भला कहां रह पायेंगे ये अकेले पड़ गये लोग? वह भी विदेशी पेट में एक-न-एक दिन समा जायेंगे।

पर द्वन्द्व तो निरन्तर चलता ही रहेगा। कभी कम या ज्यादा-क्या कोई भी सिद्धान्त न जी सकेगा-न जिला सकेगा? वाह रे आदमी। वाह रे पेट-पूजा-वाह रे व्यक्ति स्वातंत्र्य? राम बचाये हमको इस बीमारी से। जब तक जियें उन्नत मस्तक सत्यार्थी रह कर जियें।

ठीक हूं। पर ढलता सूर्य हूं। देखो कब तक टिका रहता हूं। जीने की लालसा और संसार का अनुराग बरकरार है। सबको यथायोग्य।

सस्नेह केदार

पुनश्च-

कल नया 'सचेतक' मिला-पढ़ डाला पूरा-केदार

नयी दिल्ली-१८

२५-३-९१

प्रिय केदार,

पहली अप्रैल ज़िन्दाबाद! अशोक त्रिपाठी ने लिखा है कि उस दिन वह बांदा पहुंचेंगे। उनके साथ कुछ लोग अवश्य आयेंगे। बांदा के मित्र भी इकट्ठे होंगे। आशा है। दिन अच्छा बीतेगा। हम उस दिन स्वाति के पास जयपुर में होंगे और तुम्हें याद करके मिठाई खायेंगे। २७/३ को चिन्मय यहां आ रहे हैं। ३१/३ को हम उनके साथ जायेंगे, दस बारह दिन में लौट आयेंगे। तुम्हारा १४/३ का कार्ड मिला। सोवियत संघ में गर्बाचेव गणतंत्रों की आर्थिक स्वाधीनता का समर्थन करते हैं। उनकी अलग अलग कम्युनिस्ट पार्टियां बनाने का समर्थन करते हैं-सोवियत पार्टी से पृथक रूस ने अपनी पार्टी बना ली है। सोवियत पार्टी अब अनेक कम्युनिस्ट पार्टियों का ढीला ढाला संघ

294 / मित्र संवाद

रह गयी है। इसी तरह सोवियत संघ गणतंत्रों का ढीला ढाला संघ है। जो चाहे रहे, जो चाहे न रहे। योजनाबद्ध विकास का सबसे ज्यादा विरोध गर्बाचेव करते हैं। २७वीं और २८वीं पार्टी कांग्रेसों में गर्बाचेव की रिपोर्टों में जमीन आसमान का फर्क है। एक में समाजवाद है, दूसरी में उसकी शवयात्रा।

सस्नेह रामविलास

बांदा/25-4-91 / २१000१

प्रिय डाक्टर,

—मद्रास से मेरी बहू ज्योति और मेरा पोता समीर हवाई जहाज से बांदा आये।

—खजुराहो तक प्लेन में—फिर वहां से यहां तक भतीजे की कार में। १0 दिन रहे। आज सबेरे ४ बजे की ट्रेन से दोनों कानपुर गये। वहां ज्योति की बड़ी बहन तिलक नगर में रहती है। परसों दोसा बनाया—खिलाया, इडली भी खाई। सांभर भी बना। स्वाद से खाया। मौसम गरम है। बिजली कभी—कभी दगा दे जाती है। पर आ जाती है। कूलर जल गया था। सात दिन बाद कूलर बन कर लग गया। अब चलाऊंगा। वैसे मैं कम ही चलाता हूं। ठीक हूं।

—इधर पहली अप्रैल को जन्म दिन मनाया गया। इलाहाबाद से दूधनाथ सिंह आ गये थे—प्रकाशक और डा० अशोक त्रिपाठी। रात ग्यारह बजे तक कार्यक्रम चला। ठीक रहा। मना किया था पर यहां के मित्र न माने। फिर १४/४ को दूसरा कार्यक्रम रहा। तीन सत्र में। डा० कमला प्रसाद, डा० मोहन अवस्थी आये थे। पाठशाला में यह कार्यक्रम हुआ डा० द्विवेदी उरई से आये थे। चर्चा होती रही। हां, यहां के जड़िया ने गीत शास्त्रीय स्वर में गाया—‘मैं घूमूंगा केन किनारे’। बड़ा बढ़िया गायन हुआ। मुग्ध हो गये लोग। गदगद हो गया। आशा है कि सपरिवार सकुशल होओगे। मुंशी की याद आती है। कह देना।

तु० केदार

नयी दिल्ली-१८

१५.५.९१

प्रिय केदार,

तुम्हारे कार्ड से जन्म दिवस समारोह के हाल मिले। उससे पहले अशोक त्रिपाठी के कार्ड से खबर मिल गयी थी। एक दिन अशोक ने फोन पर वहां के हाल चाल सुनाये। यहां के दूरदर्शन में काम करने आ गये हैं। मुंशी उनका और तुम्हारा, दोनों के कार्ड उठा ले गये हैं। ‘सचेतक’ में, कुछ निकालेंगे। जहां तक मालूम है, अंग्रेजों के

अभ्युदयकाल में उनके विरुद्ध सबसे ज्यादा कविताएं राजस्थान में लिखी गयीं। आओ<sup>1</sup> गोरा हट जां भरतपुर की लड़ाई पर रचा हुआ बड़ा शानदार लोक गीत है। बांकी दास और सूर्यभट्ट<sup>2</sup> प्रतिष्ठित लेखक थे। इन्होंने १८५७ में और उससे पहले साम्राज्य विरोधी कविताएं लिखी हैं। आश्चर्य की बात यह है कि वहां सामंतों के विरुद्ध भी कविताएं लिखी गयी हैं। वहां कुछ जोरदार किसान आन्दोलन भी हुए। जैसे तेलंगाना का आन्दोलन १९०७ तक निजाम शाही के खिलाफ था, अंग्रेजी राज के भी, वैसे ही ये आन्दोलन राजाओं-जागीरदारों के विरुद्ध थे और अंग्रेजों के भी। इस सब पर भी निबंध तैयार किया है। चन्द्रशेखर ऐसे कदम उठा रहे हैं, जिससे राष्ट्रीय एकता टूटेगी। आये दिन चुनाव में खड़े होने वाले लोग मारे जाते हैं और ये वहां जनवादी प्रक्रिया जारी करने में लगे हैं। अकाली दल (बादल) और भा०ज०पा० में समझौता हो गया है। हो सकता पंजाब का यह गूट अगली लोक सभा में महत्वपूर्ण हो जाये। शेष कुशल।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

३.६.९१

प्रिय डाक्टर,

—१५/५ का पोस्टकार्ड मिल तो गया, पर न जाने कैसे उस पर स्याही के दाग जमे बैठे हैं और पढ़ने नहीं देते। बड़ी कठिनाई से कुछ पढ़ सका।

—राजस्थान में तब बहुत बढ़िया कविताएं लिखी गईं। तुमने ऐसा लिखा है—हम कैसे जानें? होगा शानदार लोकगीत—हमने तो न उसे पढ़ा है—न सुना है। साम्राज्य और सामंतों के विरुद्ध तो सदैव ही आम जन में चेतना रही है। हां, वह पढ़े-लिखे नहीं होते, इसलिए सोच-समझ कर चुप रह जाते हैं। जो लेखक होता है वही तब लिखता है या तो जब उस विरुद्ध मानसिकता का होता है या कि जब कोई उससे लिखवाता है। निजाम रहे हों—चाहे अंग्रेज—चाहे महंत—मठाधीश, सभी तो गुलछरें उड़ते रहे हैं। यह आदमी की नैतिक वृत्ति होती है। विश्व में जो रवैया चल रहा है, वह भी ठीक से न चला तो 'झाड़ी' का जंगल उगेगा और आदमी न बचेंगे—सब शेर-चीते-लोमड़ी-सुअर और भेड़-बकरी हो जाएंगे।

—डा० अशोक त्रिपाठी आए होंगे? पत्र आया था—काम बहुत है, ऐसा लिखा है।

1. यह शब्द इसी रूप में पढ़ा जा रहा है। [आ० त्रि०]

2. सही नाम सूर्यमल्ल मिश्रण हो सकता है। [अ० त्रि]

296 / मित्र संवाद

—चुनाव का चक्कर तो पूरी तरह से चक्कर के माहौल में चल रहा है—सभी तरह के जीव जी उठे हैं। देखो कौन देश को हथियाता है।

सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

[२१-६-९१]

यो जागार तं ऋचः कामयन्ते-जो जागता है, उसे ऋचाएं चाहती हैं।

यो जागार तं उ सामानियन्ति-जो जागता है, सामगीत उसके पास आते हैं।

यो जागार तं अयं सोम आह-जो.... उससे यह सोम कहता है :

तव अहं अस्मि सख्ये निओकः-तुम्हारी मित्रता में मेरा घर है। (ऋग्वेद ५.४४.१४) तीन बार योजागार की आवृत्ति से वक्तृत्व कला का प्रदर्शन। जागार की अर्थगरिमा पर जोर। जागार=inspired कवि की मनोदशा। कवि है, योगी भी है। दूसरों के लिए जो रात है, उसके लिए वह दिन। उघरहिं विमल विलोचन ही वह दशा है। वह ऋचाओं के पीछे नहीं दौड़ता। ऋचाएं उसे चाहती हैं। सामगीत उसके पास आते हैं। कहीं मूर्ख राजाओं से दक्षिणा पाने वाले पुरोहित भी inspired होते हैं? ऋग्वेद के ये कवि कविता तो करते ही हैं, अपने मन को भी देखते हैं, वह क्या कर रहा है जैसे हजारों साल बाद बर्डस्वर्थ और शेली करते थे। inspiration का स्रोत है सोम-मनुष्य की चेतना में अपृक्त का निर्झर सच्चा कवि एक बार inspired हो कर फिर जड़ हो गया, ऐसा नहीं होता। inspiration से उसकी दोस्ती हो जाती है। इस दोस्ती में ही सोम का निवास है। सोम घोट कर पीने वाली पत्नी नहीं है, मानव की अंतर्तम चेतना का केंद्र है। कवि का अहं इस इंद के संपर्क में रहता है। संपर्क से नशा तो होगा ही। सबरे जब से यह मंत्र पढ़ा, हमें भी नशा है। इसलिए यह कार्ड। तुम्हारा कार्ड मिल गया था।

रा. वि.

२१ जून ९१

बांदा

२७.६.९१/Pin २१०००१

प्रिय डाक्टर,

‘मित्र संवाद’ की भूमिका (डा०) अशोक त्रिपाठी ने, जेराक्स करा कर भेज दी, मुझे वह उनके पत्र के साथ २५/६/९१ को मिल गई। मैंने उसे पढ़ा। पढ़ कर प्रसन्न हुआ। तुमने इतनी मेहनत और धैर्य से सभी पत्रों को पढ़ा, यही क्या कम बड़ी बात है। मैं तो

ऐसा कभी न कर पाता। तुमने बड़ा अच्छा काम कर डाला। यह संवाद हिंदी के हित का है। लिखने में कष्ट हुआ होगा। संभाल कर लिखा है तुमने प्रत्येक शब्द और पंक्ति को। मैं पढ़ सका—कष्ट न हुआ।

आज ही अशोक को भी इसके पाने की सूचना दे रहा हूँ।

सहाय साहब भी दिल्ली-२२-२३/६ को-गए होंगे तो मिले भी होंगे—पुस्तक वहीं दिल्ली से छपाने की बात लिखी है। मद्रास से बेटे ने जुलाई में आने को लिखा है।

तुम्हारे घर में सभी ठीक होंगे। यथायोग्य कहना।

मैं ठीक हूँ। गर्मी खूब है। कूलर से रक्षा होती है।

— केदार

नयी दिल्ली -१८

११.७.९१

प्रिय केदार

तुम्हारा २७/६ का कार्ड मिल गया था। तुमने आधी भूमिका पढ़ी है। उसमें एक 'पुनश्च' और है। अशोक त्रिपाठी ने वह तुम्हें अभी नहीं भेजा। हम अपने साथ मित्रों को सुनाने के लिए कुछ पत्र बांदा ले गए थे। पहले वे मिले न थे, बाद में मिल गए। उन्हीं को लेकर भूमिका में 'पुनश्च' जोड़ा है। सहाय से भेंट नहीं हुई। अशोक से ही उनके समाचार मिल गए थे। अशोक कहते तो हैं, सितंबर में निकाल देंगे पर अभी प्रेस कापी तैयार नहीं हुई। बड़ा मोर्चा वही है। संग्रह दिल्ली में छपे गा, इसलिए शायद काम कुछ जल्दी हो जाए। इधर लेनिन के लेखों का संकलन बनाया है। विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए जो लेख बहुत प्रासंगिक लगे, उन्हीं को लिया है। आजकल उसी संकलन की भूमिका लिख रहा हूँ। और सब ठीक है।

सस्नेह,  
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)/Pin-२१०००१

२४.७.९१

प्रिय डाक्टर

—११/७ का पोस्टकार्ड मिल गया था।

—'पुनश्च' भी लिख कर तुमने अपना काम पूरा कर दिया। अब अशोक त्रिपाठी व्यस्त हो गए होंगे, टाइप कराने में। उन्होंने लिखा कि बुढ़ौती की पोल खुल रही है—खूब डूब-डूब कर पत्र लिखे हैं। उन्हें रोमांच हो जाता है।

298 / मित्र संवाद

—मुझे नया [नये] कव्य संकलन को भेजने की बात भी लिखी है कि सहाय जी उसे भी वहां छाप लें ताकि वह भी Sept...में प्रकाशित हो जाए। पर अभी इतनी कविताएं नहीं हैं कि संकलन तैयार कर भेज दें। मैंने यह बात उन्हें आज ही लिख कर भेज दी।

—खोये पत्र मिल गए, यह भी उपलब्धि रही। वह भी छपें।

—सितंबर तक सामने आएगा ही 'मित्र-संवाद'।

—लेनिन के लेखों का वह संकलन तैयार कर लिया है तुमने जो आज के लिए अत्यावश्यक है। बढ़िया उपलब्धि होगी यह। ठीक हूँ। अच्छे होओगे।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ

नई दिल्ली-१८

१.९.९१

प्रिय केदार,

२१/७ का तुम्हारा कार्ड मिला गया था। 'बुढ़ौती की पोल खुल रही है'—गलत। अपना तो खुला खेल फरुक्काबादी है। पोल है ही नहीं तो खुले गी क्या? 'खूब डूब-डूब कर पत्र लिखे हैं'—यह बात नहीं है। 'उन्हें रोमांच हो आता है'। हमने अशोक से कहा है, पत्रों पर अपनी प्रतिक्रिया लिख कर पुस्तक में एक नोट दे दें। अगस्त आज से शुरू। सितंबर में नई कविता संकलन कैसे निकले गा। तुम्हारे पत्रों की कुछ कविताएं हमने बांदा में अशोक को लिखा दी थीं। उन्हें दे सकते हैं। पर वे शायद पत्र संग्रह में वैसे ही आ जाएं।

हां, खोए पत्र मिलने से बड़ी प्रसन्नता हुई। तुम्हारे कुछ बहुत अच्छे पत्र इन्हीं में थे। आजकल एक लेख लिख रहा हूँ : 'संगीत का इतिहास और हिंदी नवजागरण की समस्याएं।' मूल सूत्र : मध्य देश के लोकनृत्यों से जुड़ा था ध्रुपद गायन। उसे भक्तों ने अपनाया। फिर वह दरबार पहुंचा। स<sup>1</sup>-काल में उससे ख्याल पैदा हुआ। बाकी हाल ठीक है।

सस्नेह

रामविलास

---

1. 'स' के पहले का अक्षर गायब है। (अ० त्रि०)



मित्र संवाद / 299

बांदा

५.९.९१

प्रिय डाक्टर,

—मैं इधर पत्र नहीं लिख सका। चिंता न करना। ठीक हूँ।

—अशोक त्रिपाठी वगैरह यहां आए थे—२/९ को वापस आए। वह एक पुरस्कार के निर्णय के लिए आए थे—सहाय सा० भी आए थे—हैदराबाद के डा० बिजेंद्र भी थे, ठीक हैं।

—मेरी बड़ी बिटिया श्याम (हेमा) कल वापस इलाहाबाद गई। कुछ दिन रही—अच्छा रहा।

—अब कुछ-कुछ कभी-कभी अधिक शिथिल महसूस करने लगता हूँ। पर आशा करता हूँ कि शरीर को सम्हाले रहूंगा।

—यहां तो रोज ही मेघ महाराज बरसते हैं।

—तुम्हारी याद तो रोज ही करता हूँ। तुम्हारी कोई न कोई पुस्तक उलट-पलट लेता हूँ। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

१३.९.९१

प्रिय केदार,

५/९ का कार्ड मिला। करुणा और स्नेह में डूबा हुआ। पूरी कविता है। मैं कल शोभा के यहां जा रहा हूँ। वहां दो दिन रहूँगा। १७/९ को मुंशी के साथ लखनऊ जाऊँगा। चौबे भी पहुंच रहे हैं वहां (२९ अलका पुरी, अलीगंज) दस बारह दिन सब भाई गपशप करेंगे। फिर मैं २९/९ को बनारस जाऊँगा। वहां (न्यू जी ३३, हैदराबाद, बी० एच० यू०) महीना भर रहूँगा। अशोक त्रिपाठी ने लिखा है, इलाहाबाद वाला कार्यक्रम २०-२१/१० को रखा जा सकता है। तुम्हारा मन करे तो मेरे साथ बनारस आ जाना। जब तक इच्छा हो रहना, फिर भुवन तुम्हें इलाहाबाद या बांदा छोड़ आयेंगे।

यहां तो वर्षा बंद है। धूप में काफी तेजी है। सबेरे हवा में शरद की ठंडक का अनुभव होता है। हर सिंगार में फूल आने को हैं पर तब हम बनारस हो गे।

सस्नेह

रामविलास

बांदा/१९.९.९१  
सवा ग्यारह बजे दिन

प्रिय डॉक्टर,

—१३/९ का तुम्हारा पोस्टकार्ड डाकिए ने लाकर दिया। पढ़ते-पढ़ते उल्लसित होने लगा—उत्तर लिखने लगा।

—तुम सब लोग 'अलकापुरी' पहुंच गए। मुझे कालिदास याद आ गए। मेघदूत के यक्ष का स्मरण हो आया। वह विरही था। उसने वहां से प्रिया को संदेश भेजा। संदेशवाहक मेघ था। तुम सब लोग तो यक्ष नहीं हो। पर कारण बन गए यक्ष की भाव-विह्वलता के। मैंने काव्यानुभव से अपने को धन्य किया। फिर इस 'अली' ने याद दिलाई—'अली-कली में ही रम्यो, आगे कौन हवाल'। खूब मजा आया, हां, तुम राम हुए। तुम्हारी 'शरण' में मुंशी हुए। वह अब सकुशल 'विलास' करेंगे। यह भी खूब रही मेरे मन की भीतरी बात। लखनऊ तो लक्ष्मणपुरी भी कहा जाता है। सो मुंशी हो गए तुम्हारे छोटे भाई। नए नाम से लक्ष्मण। अच्छी बनक बनी। और चौबे तो पुष्टांग शिखर शरीर हैं। वही तो बन गए वह स्थान जहां मेघ उमड़ आया था और उसे ही, वहां से, यक्ष ने, अपना संदेश-वाहक बनाया था। सच मानो जैसे-जैसे यह सब सोचता रहा मारे खुशी के फूल कर कुप्पा होता रहा। यह हुआ और मैं अकेले में भी अप्राप्य सुख भोगता रहा। दिन जी भर प्रफुल्लित जिऊंगा और एक क्षण को भी विचलित न होऊंगा। और तो और, रात को भी इसी आनंद से सराबोर, दुनियाबी तटबंध तोड़ता रहूंगा। बड़े भाग्य से यह सुयोग मिला। यह सुख-योग अधिकाधिक मिलता रहे, यही हार्दिक कामना है।

—तुम लोग वहां 'गपशप' करते रहोगे, शायद गप्पों के दौरान लखनऊ के गोलगप्पे भी खाते रहोगे। मजा तुम सब लोगों को मिलेगा। यहां, यह मजा, मुझे भी, बिना खाए, मिलता रहेगा। बहुत-बहुत बधाई इस 'आई-पाई' चिट्ठी के लिए।

—मैंने 'तुम्हारे साक्षात्कारों' वाली पुस्तक इधर फिर से पढ़ी। फिर से अपने को पुष्ट पाया।

—कल रात (यानी १८/९ को) दस बजे दिल्ली रेडियो के 'साहित्य-दर्पण' कार्यक्रम के अंतर्गत मेरा यह वक्तव्य रिले हुआ जो, डॉ० अशोक त्रिपाठी, यहां आकर, टेप कर ले गए थे। निवेदिका थी डा० इंदु जैन। उन्होंने मुझे 'सूर्य' कहा। चलो अच्छा हुआ कि दर्पण के दौरान सूरज-चांद एक ही समय में एक हो गए।

—पता नहीं कि मैंने तुम्हें लिखा था कि नहीं कि मेरे पुत्र ने मद्रास से मेरा एक गीत—दलबंधा मधुकोष गंधी-पं० जसराज से गवा कर टेप किया है। एक और गीत-माझी न बजाओ बंशी—बंबई में गवा कर टेप कराया है। बाकी २ गीत और कराएगा। कोई 'सामना' फिल्म डाइरेक्ट कर रहा है। उसी के लिए। अभी टेप मेरे पास नहीं पहुंचे। भेजने की बात लिखी है।

मित्र संवाद / 301

—बस एक ही कसक है मेरे मन में जो सालती रहती है। वह है बेटा किरन की स्थिति। वह गाजियाबाद में अकेले है। पहले पति काले के बेटे टोनी की दयनीय दशा से चिंतित रहती है।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद  
काशी-२२१००५  
९.१०.९१

प्रिय केदार,

तुम्हारा १९/९ का पत्र लखनऊ में मिल गया था। मुंशी तो २३/९ को खिसक गये थे, चौबे को तुम्हारा पत्र पढ़वा दिया था। बुढ़ापा उनका भी शुरू हो गया है और शरीर में तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है। कुल मिला कर दस बारह दिन लखनऊ में बहुत अच्छे बीते। एक दिन अशोक त्रिपाठी और शिवकुमार सहाय आये थे। २०/१० वाला आयोजन अब २६/१० को हो गा। हम दूसरे दिन सबेरे लौट आयेगे। तुम यहां साथ रहना चाहो तो हमारे संग आ जाना। बहुत अच्छी जगह है। घर के साथ की जमीन में भुवन ने खेती कर रखी है। घूमने को शान्त साफ सुथरी सड़कें हैं। तुम्हारे गीतों के टेप सुनने की उत्सुकता है। इलाहाबाद लेते आना।

सस्नेह  
रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)  
पिन २१०००१  
१५.१०.९१

प्रिय डाक्टर,

—९/१० का पत्र डाक से ११ ए० एम० प्राप्त हुआ। चुप्पी टूटी। खुश हुआ।

—इधर शिथिल रहता हूं, कभी-कभी। अभी यह पूरी तरह से नहीं कह सकता कि मैं भी तुम्हारे साथ काशी चल सकूंगा। इच्छा तो प्रबल है। इलाहाबाद में ही कह सकूंगा कि शरीर चल सकेगा या नहीं।

302 / मित्र संवाद

- कैसेट अवश्य लेता आऊंगा। भला तुम्हें न सुनाऊंगा तो और किसे सुनाऊंगा।
- अशोक का पत्र दिल्ली से आया था। तुम्हारे यहां जाने पर हाल भी लिखा था।
- दो कविताएं और आज अपने बेटे की मांग पर भेज रहा हूं। एक : 'इसी जनम में इस जीवन में', दूसरी : 'वह जन मारे नहीं मरेगा'।
- मिलने की तीव्र लालसा है। स० म० कहिए और नई कविताएं लाऊंगा।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

काशी-२२१००५  
३१.१०.९१

प्रिय केदार,

तुम्हारी ८५वीं सालगिरह पर प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के बारे में मैंने एक योजना बनायी है। सब से पहले तुम्हारी आत्मकथा। इसमें गांव की रामलीला से लेकर कचहरी और हिन्दी साहित्य संसार तक अपने अनुभव लिख सकते हो, संस्मरण, रेखाचित्र, परिवेश चित्रण, आत्म विश्लेषण—सबका मज्जा इस एक पुस्तक से मिले गा। एक दो पृष्ठ रोज़ लिखो तो अगले दो साल में पूरी हो जायेगी। मेरी समझ में तुम्हारे उपन्यास की तुलना में इसका पूरा होना ज़्यादा जरूरी है।

इलाहाबाद से लौटते हुए मैंने चंद्रबली सिंह से 'केदारनाथ अग्रवाल और प्रगतिशील कविता का संघर्ष' पर लिखने को कहा है। वह तैयार हैं। अशोक त्रिपाठी को लिख रहा हूं कि वह 'के० ना० अग्र० जीवन झांकी और साहित्य शिल्प' विषय पर लिखें। शिवकुमार सहाय को मैंने लिखा है, तुम्हारे ८५वें जन्म दिवस तक ये तीनों पुस्तकें प्रकाशित कर दें।

आशा है, प्रसन्न हो। मैं आठ नवंबर को दिल्ली जाऊं गा।

सस्नेह  
रामविलास

बांदा/उ० प्र०/पिन २१०००१  
Dt. ८.११.९१/प्रातः ९ : ३० ए० एम०

प्रिय डाक्टर,

—काशी से लिखा, तुम्हारे दि० ३१/१०/९१ का पोस्टकार्ड ४-११-९१ को मिला। तुम्हारी योजना बढ़िया है। मैं अपनी जीवनी—आत्मकथा—लिखूं। प्रयास अवश्य करूंगा। कई दिन से सोच रहा हू कि कैसे शुरू करूं। वैसे मैंने पहले ४३ पृष्ठ—अपने गांव

व वहा के घर की भौगोलिक स्थिति के बारे में एवं अपने परिवार के सदस्यों के विषय में—उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक की तारीखें लिख डाली थीं। वह मेरे व्यक्तित्व के मूल तत्वों का आधार हैं। उन्हीं से अब आगे अपने निजी जीवन-क्रम को आगे तक ले जाना है। प्रयत्न करूंगा कि जैसा भी-जिस तरह जीता रहा हूँ वह सब व्यक्त हो जाए। पता नहीं पूरा कर सकूंगा या नहीं।

—श्री चंद्रबली सिंह अवश्य ही समय निकाल कर अवश्य ही लिख सकेंगे। वह भी तो मुझे पहले से जानते हैं। बनारस से दिल्ली पहुंच गए होओगे। घर में ठीक-ठाक होगा। सबको यथायोग्य। मुंशी को भी।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-११००१८  
१५.११.९१

प्रिय केदार,

८/११का तुम्हारा कार्ड मिला। पता नहीं, किसी ने इलाहाबाद में विद्यानंद मुद्गल से तुम्हारी भेंट करायी या नहीं। वह तुम्हें देख तो नहीं सकते, सुन अवश्य सकते हैं। पचास के आसपास हैं, संस्कृत साहित्य के आचार्य हैं, निराला के गीत गाते हैं, हार्मोनियम बजाते हैं, भतीजी साधना के सहारे अध्ययन करते हैं, एक विद्यालय में पढ़ाने जाते हैं। बनारस में हमारे पड़ोसी थे। रोज शाम को मिलना होता था। 'मित्र संवाद' और तुम्हारी कविताओं से परिचित हैं। तुम से मिलने बांदा आना चाहते हैं। मैंने इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। अपनी जीवनी (+ संस्मरण) एक आधा पृष्ठ रोज लिखो तो साल दो साल में पूरी हो जायेगी। पहले की लिखी सामग्री उसमें शामिल कर सकते हो। वैसे जब तक जीवन है, तब तक जीवनी है। जितनी भी लिख जाये ठीक है। हम यहां ९/११ को आ गये थे। सेवा बेटी २१/११ को आने वाली है। स्वाति भी आयेगी। उस के पति आस्ट्रेलिया में हैं। वह भी आस्ट्रेलिया जायेगी और पति के साथ अगले महीने लौट आयेगी। मुंशी अभी नहीं मिले।

सस्नेह  
रामविलास

बांदा-४.१२.९१

प्रिय डाक्टर,

—१५/११ का पत्र ३/११ को मिल गया था।

—श्री विद्यानंद मुद्गल से मेरी भेंट वहां हाल में हुई थी। बड़े नम्र स्वभाव के थे—सहज भाव से मिले थे। मैं उनके बारे में कुछ न जान सका था। उन्हें मेरी ओर से

304 / मित्र संवाद

स्नेहाभिवादन भेज देना। बांदा आने में उन्हें कष्ट होगा।

—इधर लिख नहीं पा रहा।

—२५/११+२६/११ की रात को मेरे पिछवाड़े से चोर आकर मेरा दस हजार रुपया + मेरी जेब घड़ी + सौ० लैंड का मेडल चुरा ले गया। सबेरे पता चला। मैंने रिपोर्ट कर दी थी—पता नहीं कौन था। पीछे के पड़ोसी का पुत्र ही होगा। खैर।

—प्रिय सेवा और स्वाति आ गई होंगी। उन्हें मेरी शुभकामनाएं। मुंशी मौन हैं।

—मैंने मद्रास चोरी की सूचना दे दी थी—मिल गई थी। वह यहां १३/१२ को दिल्ली की एक शादी में शामिल होकर एक दिन को आएगी।

—मैं कुछ उदास हुआ हूँ—पर फिर जीवंत हो रहा हूँ।

—चिंता न करना।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८  
९.१२.९१

प्रिय केदार,

यह जान कर दुःख हुआ कि तुम्हारे यहां चोरी हो गई थी। संतोष की बात इतनी है कि तुम्हारे शरीर को क्षति नहीं पहुंची। दिल्ली में यह आम बात है। हर महीने ऊंचे दर्जे की कालनियों में दो-चार बूढ़ों और बुढ़ियों की हत्या करते ही रहते हैं। बांदा के लिए चोरी, डकैती, कत्ल नई चीज नहीं हैं। समय ऐसा है, पैसे के लिए लोग कुछ भी कर सकते हैं। अच्छा हो कि तुम किसी भरोसे के आदमी को सुलाया करो। इस उम्र में अकेले रहना निरापद नहीं। यहां विजय, संतोष कभी बाहर जाते हैं तो रात में मुकुल सोने आ जाते हैं या हम घर बंद करके शोभा के यहां चले जाते हैं। सेवा पिछले महीने दो दिन को आई थी, फिर बड़ौदा चली गई। स्वाति के पति आस्ट्रेलिया गए थे, अपने प्रशिक्षण के सिलसिले में। बाद को स्वाति भी वहां पहुंच गईं। अब ये लोग वापस आने वाले हैं। आज स्वाति ने सिंगापुर से टेलीफोन किया था। इन दिनों आस्ट्रेलिया-वेस्टइंडीज-भारत के क्रिकेट मैच चल रहे हैं। हमें मैच देखने की बीमारी है। लड़कपन में मैदान में देखते थे, अब टी० वी० पर देखते हैं। टी० वी० पर नहीं आता तो रेडियो से कमेंटरी सुनते हैं। पढ़ना-लिखना बंद है।

जान है तो जहान है, यह सोच कर अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना।

सस्नेह  
रामविलास

मित्र संवाद / 305

बांदा/उ० प्र०/पिन २१०००१

२५.१२.९१

प्रिय डाक्टर,

—६/१२ का पोस्टकार्ड मिल गया था।

—इधर मौसम खराब चल रहा है। बहू भी आई थी—२१/१२ को इलाहाबाद गई—अब मद्रास पहुंच गई होगी। वह ठीक है। मद्रास में सब ठीक है।

—बेटा 'पतवार' फिल्म बना रहा है। मेरे कई गीत रेकार्ड कराए हैं। हिंदी में है फिल्म—कैंसर को लेकर कहानी लिखी गई है, ऐसा बहू कह रही थी—कर्ज लेकर बना रहा है। मैंने पत्र लिख कर मना किया है। किसी कम्पनी के साथ यह काम करेगा। बड़ा खर्च होगा : न चली तो कहीं का न रहेगा। देखो, क्या करता है।

—दिल्ली के समाचार से अवगत हुआ। आतंक ही आतंक है चारों ओर, क्या देश—क्या विदेश—सभी जगह।

—ठीक हूं। चिंता न करना। ठीक से रहना।

—अब तक स्वाति लौट आई होगी। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा

केदार

सी-३५८, विकासपुरी

नई दिल्ली-११००१८

१०.१.९२

प्रिय केदार,

तुम्हारा २५/१२/९१ का कार्ड यथासमय मिल गया था। २६/१२ को टी० वी० पर तुम्हें देखा, तुम्हारी बातें सुनीं, सारा प्रोग्राम घर के लोगों ने बहुत पसंद किया। फिल्म बनाने के बारे में तुमने पुत्र को उचित सलाह दी है। कर्ज लेकर ऐसा धंधा करने की बात मेरी समझ में भी नहीं आती। चार दिन हुए अजय तिवारी आए थे। गृहस्थी के झंझटों से परेशान हैं। कल चंद्रबली सिंह आए थे, उनके पुत्र का आपरेशन होना है। पेशाब की नली में तकलीफ है। अन्य पारिवारिक चिंताएं भी हैं। मैंने उन्हें पुस्तक लिखने की याद दिला दी थी। तुमने २५/१२ के कार्ड में मेरे घर का नंबर ३५४ लिखा है। सही नंबर मैंने इस कार्ड के ऊपर लिख दिया है। शीत लहर की चपेट में नाक काफी बही, थोड़ी खांसी भी आई। सबेरे का घूमना जारी है। ठीक हूं। अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

२०.१.९२

प्रिय डाक्टर,

—१०/१ का पोस्टकार्ड मिला।

—मैं यहां से ११/२ को अपने पुत्र के भेजे आदमी व सहाय साहब इत्यादि सनेहियों के साथ शाम की गाड़ी से झांसी जाऊंगा—वहां से भोपाल—फिर १३/२ को भारत भवन में ६-१/२ बजे शाम मुख्यमंत्री से पुरस्कार लूंगा। फिर १५/२ को ४५ मिनट तक चुनी कविताओं का पाठ, ११-१/२ बजे दिन तक करूंगा। मैंने पहले ही स्वीकृति भेज दी थी। वह वहां पहुंच गई। श्री एस० के० मिश्र, सांस्कृतिक मंत्री का पत्र उपरोक्त आशय का मिला है।

अब फरवरी के अंत तक मद्रास से पत्र लिखूंगा। चोरी का कोई पता न लगा।

—अब टंड का क्या हाल है? नाक बहना रुक गया होगा। खांसी मिट गई होगी। मैं तो जैसे-तैसे ठीक चल रहा हूँ। अब श्री चंद्रबली के प्रिय पुत्र का आपरेशन ठीक से हो गया होगा? अजय तिवारी परेशान हैं—मिलें तो मेरी नमस्ते कह देना। तुम सब लोगों को टी०वी० कार्यक्रम पसंद आया। मेरा सौभाग्य है।

—बेटे का फोन आया था कि चिंता न करूं। वह ठीक से कर रहा है।

—प्रिय मुंशी को सलाम। कार्ड मिला। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा

केदार

बांदा-उ० प्र०-पिन २१०००१

दि० २९.१.९२

प्रिय डाक्टर

—कल रात, राष्ट्रीय प्रसारण के 'विविधा' कार्यक्रम को सुनकर मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि तुम्हें 'व्यास' पुरस्कार दिया गया है, भाषा की पुस्तक पर। लाख-लाख बधाई स्वीकार करो।

—आशा है सानंद होओगे।

—परिवार के सभी लोग भी कुशल-क्षेम से होंगे।

—एक पत्र कई दिन पूर्व, लिख कर भेज चुका हूँ—मिला होगा।

—श्री अजय तिवारी का पोस्टकार्ड भी इधर बहुत दिनों पर आया कि अब घर के बीमार लोग ठीक हैं। वह अब तुम्हारे कहे मुताबिक लेखन कार्य में लग गए हैं। उनका एक लेख 'साम्य' में आया है। मैंने पढ़ा। बढ़िया विवेचन किया है। और भी लेख लिख रहे हैं।



- मौसम उतार पर है। ठंडक कम हुई है।
- ठीक हूं।
- प्रिय मुंशी अब इधर चुप हैं। क्या कर रहे हैं?
- ‘सचेतक’ मिला था। पढ़ा। राय साथ ले गए।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

नयी दिल्ली, ११००१८

२.२.९२

प्रिय केदार,

२९/१ का बधाई कार्ड, उससे पहले २०/१ का कार्ड भी, मिले। कल बिड़ला फाउंडेशन के बिशन टंडन, चयन समिति के सदस्य अजित कुमार के साथ आये थे। पुरस्कार क्यों नहीं लेते? मेरा कहना है; हिंदी प्रदेश की पिछड़ी हुई जनता की निरक्षरता और गरीबी के लिए यहां के पूंजीपति और उनकी सरकारें ज़िम्मेदार हैं; बड़े बड़े पुरस्कार बांट कर वे दिखाना चाहते हैं, साहित्य के लिए वे बहुत कुछ कर रहे हैं। उन्हें यह धनराशि जनता को साक्षर बनाने पर खर्च करनी चाहिए। बिशन जी ने वादा किया है, वे बिड़ला जी से कहकर पुरस्कार के बराबर और रकम लगा कर एक स्थायी साक्षरता प्रसार निधि कायम करेंगे और छात्रों को वजीफा देकर साक्षरता प्रसार कराया जायेगा। सम्मान (प्रशस्ति पत्र आदि) लेने में न जाऊंगा। वे यहां आ कर दे जायेंगे। मुंशी सोना बेटा के पास टनकपुर गये हैं। मेरा जुकाम ठीक है, पर इधर पानी बरसा, फिर ठंडी हवा चली और जब सबेरे घूमने जाते हैं, तब नाक से पानी टपकने लगता है। कल धूप निकली थी। आठ दस दिन में मौसम बदल जायेगा। विजय बहुत व्यस्त रहते हैं। आज इतवार है। सबेरे दफ्तर गये थे। रात साढ़े नौ तक नहीं लौटे हैं! शेष कुशल।

सस्नेह

रा० वि० शर्मा

17, Thirumoorthy Street

'T' Nagar

Madras 17

Dt. २०.२.९२

प्रिय डाक्टर,

—भोपाल से पुरस्कार लेकर—काव्य-पाठ करके यहां १७/२ को पहुंच गया—ठीक रहा कार्यक्रम।

308 / मित्र संवाद

—यहां खैरियत है। मैं भी ठीक हूँ।

—सबको यथायोग्य।

—हाल लिखना।

सस्नेह तुम्हारा।

केदारनाथ अग्रवाल

17, Thirumoorthy Street

"T" Nagar

Madras 17

Dt. २५.२.९२

प्रिय डाक्टर,

—मैं, दि० १७/२ को २ पी० एम० यहां आ गया—भोपाल से १६/२ को सदरन से चल कर—वहां ठीक रहा सब। लेखकों-साहित्यिकों से भेंटवार्ता हुई।

—यहां परिवार के सभी लोग पाकर खुश हैं। बेटा कल बंबई गीत रेकार्ड कराने गया है। कल रात वापस आएगा।

—ठीक हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। अभी काफी समय तक, यहीं रहूंगा।

—घर के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं।

—पुरस्कार की समिति राष्ट्रीय साहित्यिक समिति बने और वह प्रांत-प्रांत में भी हो। चयन वहीं से हो कृतित्व के आधार पर। उसके अतिरिक्त सरकार अपनी (अपना) साक्षरता अभियान चलाए। स्वीकृति बनाए।

पुरस्कार की राशि से वह अभियान नहीं चल सकता।

पुरस्कार तो नाममात्र की धनराशि से दिया जाता है। लेने वाला उपयुक्त हो तो सब ठीक है, वरना नहीं।

—मैं अभी घर से बाहर मद्रास घूमने नहीं गया—जाऊंगा कार में ही।

सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

मित्र संवाद / 309

C-३५८ विकासपुरी, नयी दिल्ली ११००१८

२७.२.९२

प्रिय केदार,

तुम्हारा २०/२ का कार्ड मिला। भोपाल में तुम्हारा कार्यक्रम ठीक रहा, यह जान कर प्रसन्नता हुई। अब मद्रास में जब तक मन लगे, वहीं रहना। कल अजय की पत्नी ने फोन पर बताया—एक कार अजय के स्कूटर से टकरायी और उनके चोट आ गयी। आज विजय उन्हें देखने जायेंगे, अस्पताल से घर आ गये हैं। अशोक त्रिपाठी पूना गये हैं। दूरदर्शन का काम सीख रहे हैं। मुंशी लखनऊ गये थे भतीजे के ब्याह में। हम यहीं रहे।

शेष कुशल

सस्नेह

तुम्हारा २५/२ कार्ड भी मिल गया।

रा० वि० शर्मा

नयी दिल्ली ११००१८

७.४.९२

प्रिय केदार,

पहली तारीख को हमने तुम्हें खूब याद किया। स्वाति ने लिखा है, 'कल केदार चाचा का बर्थ डे था हम लोगों ने उन्हें खूब याद किया। आप जब उन्हें पत्र लिखें तो हमारी देर से ही सही बधाई लिख दीजिये गा,' सो हम स्वाति की बधाई अग्रसारित कर रहे हैं। एक पत्र वाचस्पति का आया है—नींद के बादल के आवरणपृष्ठ की फोटोकापी, उस पर इक्यासी पूरे करने वाले सार्थक जीवन के कवि को प्रणाम और शुभ कामनाएं हैं। नीचे वाचस्पति तथा और बहुत से लोगों के हस्ताक्षर हैं। वाचस्पति ने यह सब बांदा के पते पर भेजा है। पता नहीं, तुम कहां हो बांदा या मद्रास। मेरा हाल ठीक है। अपना समाचार देना।

सस्नेह

रामविलास

१९, थिरुमूर्ती स्ट्रीट, टी नगर

मद्रास

११.४.९२

प्रिय डाक्टर,

—आज ११/४ को तुम्हारा ७/४ का पत्र मिला। पहली को यहां भी बेटे ने मुझे ५९०/- का कुरता पायजामा पहना कर मुझसे केक कटवाई और 'हैप्पी वर्थ डे टु बाबा' का डंका बजाया और भी लोग थे। बांदा में भी मेरे ही घर में वही सब जमा हुए और जमकर जन्म दिन मनाया—पत्र भेजे हैं।

310 / मित्र संवाद

—यह जान कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बेटी स्वाती ने जयपुर में मेरे जन्म दिन पर खूब याद किया मुझे सबने। अब उससे ज्यादा खुशी मुझे हुई कि वह आत्मीयता से मुझे अपनाए हुए हैं। उन्हें मेरी शुभकामनाएं और शुभाशीष और बच्चों को प्यार।

वास्पति ने भी वैसे ही पत्र की प्रतिलिपि मुझे भी भेजी थी। वह मिली थी। मैंने उन्हें उत्तर दे दिया है। श्री हरिपाल त्यागी का पत्र भी था। उन्हें भी उत्तर दिया।

मैं तो तुम्हें पत्र लिखकर डाल चुका हूँ। मुंशी के पत्र में भी तुम्हें याद किया था। अब अभी अरसे तक यहीं रहूंगा। ठीक हूँ। बेटा शूटिंग में राजस्थान गया है—आया नहीं। यहां घर में ठीक हैं।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

केदारनाथ अग्रवाल  
C/o Ashok Kumar  
56, Venkatnarayan Road  
'T' Nagar, Madras 17  
अप्रैल १२

प्रिय डाक्टर,

—पत्र मिला। पुस्तक मिल गई। तुमने पढ़ भी लिया और मुझे अपनी बातें भी लिख भेजीं। प्रसन्न हुआ मैं भी।

अब ऊपर लिखे पते पर ही पत्र भेजना—मुंशी से भी, मिलने पर यही पता बता देना। बेटा ढाई माह के लिए शूटिंग पर यहां से बाहर जा रहा है। आफिस बंद रहेगा।

ठीक हूँ।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-११००१८  
३.५.१२

प्रिय केदार,

तुम्हारा ११/४ का कार्ड मिल गया था। इससे पहले वाला पत्र अवश्य कहीं खो गया। बांदा में तुम्हारे घर में तुम्हारा जन्मदिन मनाया गया, इसका मतलब है, घर में कोई

रहता है या तुम किसी को चाभी दे आये हो। तुम अरसे तक मद्रास में रहो गे, यह शुभ समाचार है। जितने दिन बने वहीं रहो और समुद्र देखो। कभी महाबलिपुरम् हो आये कभी मदुरई। हमें तो तमिलनाडु बहुत याद आता है। बांदा आओ तो वहां भी किसी को अपने साथ रखना। एक दिन अजय तिवारी कनाडा के एक मार्क्सवादी प्रोफेसर को लेकर आये थे। ७६के हैं; बीवी दो साल बड़ी है; एक दर्जन नाती-पोते हैं, अमरीका की खूब आलोचना करते हैं। दो दिन हुए सुमन आये थे। पहले से स्वस्थ दिखे। पर राजनीतिक रूप से भटके हुए। यह भी ७६ के हैं। पर हमें कनैडियन प्रोफेसर में बड़ी जिंदादिली मिली। मुंशी से भेंट हुई थी। अगले सचेतक में तुम्हें याद कर रहे हैं।

शेष कुशल

सस्नेह  
रामविलास

मद्रास  
१३.५.९२

प्रिय डाक्टर,

—3/५ का पत्र मिला। बेहद खुशी हुई। वाचस्पति के पत्र से भी हाल मिले— तुम्हारे हस्ताक्षर थे उसमें।

—अपने दफ्तर की चाभी पंडित रामसंजीवन पांडे को दे आया था कि कमरा में रात सोयें और झाड़ू लगवा दिया करें। हां, अभी तो यही रहूंगा। जाड़े में शायद बेटे वगैरह वहां चलें, तब मैं भी वहां पहुँचूंगा।

—एक दिन सागर के दर्शन करने गया था—फिर नहीं—गरमी बहुत पड़ती है। घर में ए० सी० में रह कर सोचता रहता हूँ।

पाडुंलिपि सहाय को भेजी है। भूमिका भी भेजी है। नाम है—‘खुली आंखें—खुले डैने’?

—अरे, सुमन तो नाम है उनका। वह तो भटकटैया के पेड़ हैं—सदा से ही उलट-पलट कर जाते हैं। नई बात नहीं है।

—परिवार में तुम सभी लोग सकुशल सानंद होंगे। गरमी तो खौलाने वाली पड़ रही है। काम में लगे हो। यही जीवन है।

मैं यहां नया नहीं लिख सका।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

नयी दिल्ली ११००१८

२९.५.९२

प्रिय केदार,

१३/५ का कार्ड मिला था, बांदा के घर की व्यवस्था के बारे में जानकारी हुई। तुम जाड़े तक मद्रास में रहो गे, यह प्रसन्नता की बात है। पानी बरसे तक एक बार सागर के दर्शन फिर कर आना। कन्याकुमारी न गये हो तो एक बार अवश्य हो आना। सागर के दृश्य-अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तरह के होते हैं। हिमालय पर तो काफी लिखा गया है पर हिन्द महासागर पर बहुत कम। इस बार यहां गर्मी ज्यादा नहीं पड़ी। कमी बादल मँडराये कभी आंधी आयी। आशंका है, मानसून कमजोर रहे गा। अन्नकष्ट के साथ पीने के पानी का संकट भी बहुत जगह रहे गा। हम लोग ३ जून को बेटी सेवा के पास बड़ौदा जा रहे हैं। १० जून को लौटेंगे। मद्रास वि० वि० में डा० कुप्पुस्वामी हिन्दी पढ़ाते हैं। इधर उनसे पत्र व्यवहार हुआ है। उन्होंने पुराने तमिल साहित्य पर पुस्तक लिखी है 'शिलप्पदि हारम्' मजेदार काव्य है। हिन्दी में अनुवाद हो गया है। कहीं मिले तो उलट-पलट कर देखना। शेष कुशल।

सस्नेह

रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८

३.७.९२

प्रिय केदार,

कुछ दिन हुए हम मुंशी के यहां गये थे। वहां पता चला, हम जयपुर से मद्रास पहुँचने वाले थे। शायद तुम अब भी हमारे वहां पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे हो, इसलिए पत्र न लिखा हो। अधिक संभव है, जब तुमने मुंशी को कार्ड लिखा था, तब हमें भी लिखा हो, डाक की गड़बड़ी से न मिला हो। अस्तु हम १० जून को बड़ौदा से लौट आये थे। बेटी-दामाद दोनों पहले से स्वस्थ थे। कुछ दिन यहां विजय के दोनों पुत्र, भुवन के पुत्र-पुत्री, शोभा के बच्चे एकत्र होते रहे। खूब धूम रही। कभी मुंशी के यहां, कभी शोभा के यहां, कभी हमारे यहां गोष्ठी जमती रही। अब सब यथास्थान हैं। चिन्मय परसों जयपुर जायेंगे, तब हम लोग पूर्ववत् तीन प्राणी अपने-अपने काम में लगे होंगे। आशा है स्वस्थ और प्रसन्न हो।

सस्नेह

रामविलास

19, Thirumoorthy Street  
'T' Nagar, Madras 17

८.७.९२

प्रिय डाक्टर,

—कल तुम्हारा ३/७ का पोस्टकार्ड मिला। पा कर—समाचार जान कर मन शांत हुआ। हां, मद्रास पहुंचने की तारीख के दिन और एक दिन बाद तक हम तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहे। जब न आए तो समझ गए कि ट्रेन को पकड़ने के लिए ऐसा होना स्वाभाविक रहा। कोई बात नहीं। मुंशी के सचेतक की प्रतियां मिल गई थीं। पढ़ लिया था। फिर मन मस्त हो गया था। मैंने तुम्हें तब पत्र लिखा था कि नहीं, यह याद नहीं। बड़ौदा में बेटी सेवा और दामाद सब पहले से स्वस्थ हैं—यह शुभ समाचार है। घर में धूमधाम रही—यह सब तुम्हें बांधे रहा—लिखा-पढ़ी के 'जंगल' में नहीं खोए, यह तो शुभ समाचार रहा। हम भी ऐसे ही रह रहे हैं। विजय वगैरह को मेरी शुभकामनाएं। कभी मुंशी—कभी तुम्हारे यहां गोष्ठियां जमीं, और भी सुख मिला होगा।

अब पूर्ववत् आंखें गड़ाए—कलम रगड़ रहे होओगे। यह भी तो अत्यावश्यक है। ठीक हूं। अभी यहीं रहूंगा।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

नयी दिल्ली-१८

२२.७.९२

प्रिय केदार,

८/७ का कार्ड मिल गया था। घर में धूमधाम हो तो मन बंधा रहता है। 'हम भी ऐसे ही रह रहे हैं'—यह पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। लेकिन हम लिखा-पढ़ी के जंगल में आंखें गड़ाये कलम रगड़ते रहते हैं—यह बात गलत है। लिखा पढ़ी के जंगल में हम सबेरे से दोपहर तक रहते हैं। उसके बाद अगले सबेरे तक मौज में रहते हैं। इसके सिवा हफ्ते में कम से कम एक बार हम लोग शोभा या मुंशी के यहां एकत्र होते हैं। वे लोग भी इधर आते रहते हैं। आज धन्नो मुंशी आने वाले हैं। मुंशी से मिलने पर तुम्हारी चर्चा अवश्य होती है। हमारे यहां मजेदार बातें करने वालों की कमी नहीं है। इनमें सर्वश्रेष्ठ हैं हमारे दामाद सुरेश। विजय से इनके डायलोग सुनने लायक होते हैं। उनके पुत्र आठ-नौ साल के सुकेत श्रेष्ठ अभिनेता हैं, खास तौर से माता और पिता की बढिया नकल करते हैं।

तो हमारी लिखाई-पढ़ाई के जंगल के आसपास काफी हरियाली है।

सस्नेह  
रामविलास

314 / मित्र संवाद

19, Thirumoorthy Street

'T' Nagar, Madras 17

२०.९.९२/शाम

प्रिय डाक्टर,

तुम विजयी हुए। प्राणघातक आक्रमण ध्वस्त हुआ। यह सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। तुम्हें अभी हमारे बीच बने रहना है ताकि हम सत्यदर्शी जीवन जीते रहें और दायित्व निर्वाह करते रहें। तुम्हें मेरी हार्दिक बधाई और परम आत्मीय शुभकामनाएं। उन सबको भी बधाई जिन्होंने तुम्हारी सेवा-सुश्रुषा की और रात-दिन लगे रहे। स्वास्थ्य की कामना करते रहे।

मैं तो सूचना पाकर घबड़ा गया था। बाद को प्रिय मुंशी के पत्र से सुधार होने की बात जान कर जी में जी आया था।

कल ही अशोक त्रिपाठी के पत्र से पता चला कि अब कुछ चल-फिर लेते हो, खाना भी खा लेते हो। बेहद खुशी हुई। रोक न सका अपने को तो अब पत्र लिख रहा हूँ।

सस्नेह तुम्हारा

केदार

नयी दिल्ली-११००१८

२५.९.९२

प्रिय केदार,

२०/९ का कार्ड मिला। हां, ठीक हो रहा हूँ—धीरे-धीरे। दिमाग में तो मानो नयी ताकत आ गयी है पर शरीर उतना ही कमजोर हो गया है। अधिक समय संगीत सुनने में जाता है। कर्णाटक संगीत के काफी कैसेट विजय ले आये हैं।

इधर बांदा में बहुत पानी बरसा। रेडियो से विनाश के समाचार निरंतर मिले। किसी इमारत की छत पर बचाव के लिए बैठे पचास आदमी मरे। संतोष यह था, तुम मद्रास में हो।

सस्नेह

रामविलास



मित्र संवाद / 315

Kedar  
19, Thirumoorthy Street  
'T' Nagar, Madras 17  
२.१०.९२ (गांधी जयंती)

प्रिय डाक्टर,

—२५/९ का पत्र २८/९ को मिल गया। मैं सोचता था मेरा पत्र ७ दिन में पहुंचेगा और तुम्हारा उत्तर ७ दिन में आएगा। पर कमाल हो गया कि मेरा पत्र ३ दिन में दिल्ली पहुंचा और तुम्हारा पत्र भी ३ दिन में आ गया।

—पत्र पाकर, वह भी तुम्हारे हाथ का लिखा देख कर, बेहतर खुशी हुई। मैं तो हर्ष से विभोर हो गया। शरीर में भी ताकत आएगी। समय तो लगेगा ही। बड़ी तकलीफ उठाई तुमने। अब चिंता से मुक्त होकर स्वास्थ्य-लाभ कर लो। संगीत अवश्य सुनो-बड़ी मानसिक शांति मिलेगी। कर्नाटक संगीत तो विशेष प्रभाव का होता है। प्रिय विजय ने बहुत ठीक किया जो कैसेट-उस संगीत के—ले आए।

बांदा में भयंकर विनाश लीला हुई—पानी बहाव—फिर बांध का पानी छूटा। दोनों ने मिल कर कहर ढा दिया। पत्र वहां से आए थे। हाल मिले थे।

अरे, मैं अभी न मरूंगा। वहां भी होता तो भी नहीं। प्रकृति मुझ पर कृपालु है।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

न० दि०-११००१८

१३.१०.९२

प्रिय केदार,

इस बार २/१० का तुम्हारा कार्ड ८/१० को मिला। ९ और १० को यहां काफी भीड़ हुई। परिवार के प्रायः सभी सदस्य आये थे। गोष्ठियां जमीं। खूब गप्पें हुईं। मुंशी विशेष रूप से सक्रिय थे। हमने नयी ताजगी पायी। सेवा के स्कूल की छुट्टियों का क्रम बदल गया था। अतः उसे एक बार बड़ौदा वापस जाना पड़ा। ११/१०<sup>1</sup> को फिर आ रही है और दिवाली तक रहेगी। हम इस शनिवार (१७/१०) को चेक अप के लिए अस्पताल जायेंगे। लगता है कर्नाटक संगीत तुम्हें भी पसंद है। आज कल नादस्वर और वायलिन सुनने पर हमारा जोर है। गायकों में G.S. Mani के कैसेट मिलें तो सुनना। शेष कुशल।

सस्नेह  
रा० वि० शर्मा

---

1. यह तिथि 13/10 के बाद की होनी चाहिए। [आ० त्रि०]

प्रिय केदार,

१०/११ के पत्र के साथ खुली आंखें : खुले डैने कविता संग्रह परसों मिला। 'घर में ही रहता हूँ, बाहर नहीं जाता कि गिर पड़ा तो हड्डी टूट जायेगी।' अपना भी लगभग यही हाल है। घर में काफी जगह है। सबेरे शाम यहीं टहलता हूँ। थोड़ा व्यायाम भी कर लेता हूँ।

तुम्हारी कविता पढ़ कर बड़ा आनंद आया। तुम्हारा भदेसपन बड़ा सशक्त है। तुम प्रकृति से लोक जीवन से तो शक्ति खींचते ही हो, लोकभाषा से तुम्हारा अमित लगाव भी तुम्हारी शक्ति का स्रोत है। तुमने लोकलय में कविता के झूमने की बात कही है (६२) भदेसपन के साथ लोकलय मिल जाती है तो पाठक झूम उठता है। 'दाल भाता खाता है कौआ' (२३) 'उनको महल मकानी, हम को छप्पर छानी' (२३) 'गदगद-गदगद गिरा दौंगरा' (८६) 'धूप धुपाया' दिन (९१) 'चक्कर मक्कर की बन आई' (९७) में हमें तो युग की गंगा का स्वर सुनायी देता है। देह भले बुढ़ा गयी हो, मन तो अब भी जवान है।

वह जवान है कई तरह से। उसे चैत की चांदनी अच्छी लगती है; 'चैत चांदनी फगुआई है।' (५५) अर्चना के निराला याद आये—फागुन की आभा अट नहीं रही है।' खजुराहो के शिल्पित प्रेमी—'आलिंगन में आबद्ध किये, एक दूसरे को चूमते, प्रेमासक्त विभोर' (७८) उसे अच्छे लगते हैं। 'देख आया चंदगहना' की याद आ जाती है। और 'बिजली बनी कांच की चूड़ी' (१०१) पढ़ कर आंखे चौंधिया गयीं।

प्रकृति से विशेष कर सूर्य और वृक्षों से तुम्हारा लगाव अटूट है। केन अब भी किशोरी है (८२)। जो पहाड़ 'सिंह पुरुष की तरह खड़ा है' (९२) वह अवश्य केन के पास वाला टुनटुनिया पहाड़ा हो गा। दिन पर तुम्हारी सभी कविताएँ बहुत सुन्दर हैं। तुम उसे देखते ही नहीं स्पर्श भी कर लेते हो। जाड़े में ठंडी हवा से मार खाते हुए भी 'पीठ अपनी सेंकता हूँ' (१०५) बढ़िया अनुभव है। अमलतास वाली कविता में प्रकृति प्रेम और काव्य प्रेम घुलमिल कर एक हो गये हैं। (५८) इसी तरह तुम्हारी अपनी कविता और क्रांति में तुम्हारी आस्था—दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं। मालवा में तुम्हारे गीत गूँजें और क्रांति का भूचाल लायें (९५) बहुत उचित आकांक्षा है। चारों ओर जब समाजवाद का मर्सिया पढ़ा जा रहा हो तब जोरदार शब्दों में लेनिन (५०) और द्वंद्वत्मक भौतिकवाद (४७) का महत्व घोषित करके तुमने तमाम पराजयवादियों को चुनौती दी है।

देह दंड भोगते हुए युवा कवियों की रचनाएँ सुनना चाहते हो (४४)। इससे हिन्दी कविता में तुम्हारी आस्था व्यक्त होती है। देह के बिना चेतना नहीं है। 'देह का दुर्लभ दिया' (५७) जब तक बने जगाये रहो क्योंकि 'चेतना से ज्योति की जीवंतता से तम यही तो हर रहा है'। अनगढ़ दुनिया को सोच-समझ कर गढ़ना है, इसके लिए हर संकट से डट कर क्षणक्षण लड़ना है (५१)। इसी में जीवन की सार्थकता है और कविता

की सार्थकता है। जो आता है, वह जाता है, यह निश्चित है, जो अनिश्चित है, वह हमारे हाथ में है। तुम अपने कविकर्म से अनिश्चित को निश्चित में बदल रहे हो।

‘जाते (-जाते) भी जीने का अंत न होगा, बना रहेगा मेरा जीना, जीवन से जीवंत, प्रतिभा का पौरुष का पुंज, काव्यकला का कूजित कुंज’ (५३)। सौ जान से हम कहते हैं—एवमस्तु, तथास्तु!।

सस्नेह  
रामविलास शर्मा

56, Venkatnarayan Road  
"T" Nagar  
Hill Crest, Madras 17

१.१.९३

प्रिय डाक्टर,

—नए वर्ष की शुभकामनाएं स्वीकार करो। गया वर्ष तो साम्प्रदायिकता का माहौल दे गया।

पत्र का उत्तर तभी भेज चुका हूं।

यह तो नववर्ष की हार्दिक अभिव्यक्ति का है।

बेटा मनाली से २८/१२ को वापस आ गया है। सकुशल है। एक महीने जाड़े की वहां की ठंडे में रहा।

घर में सब ठीक है। आशा है तुम सपरिवार आनंदपूर्वक होओगे।

हां, यहां परसों डा० विश्वनाथ त्रिपाठी, डा० नामवर सिंह, डा० रामजन्म शर्मा, निर्मला जैन और एक सज्जन मेरे घर आए। डा० अशोक त्रिपाठी पहले ही मिल गए थे। सबको देख कर मन को प्रसन्नता मिली। ये लोग आई० टी० आई० के कार्यक्रम में आए थे।

मैंने २८/१२ को द० भा० हि० प्र० सभा में ‘समकालीन साहित्य’ पर भाषण दिया। ठीक रहा। यह महेंद्र कार्तिकेय का आयोजन था। तबियत का हाल लिखना। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

नयी दिल्ली-११००१८

६.१.९३

प्रिय केदार

पिछले साल तुम्हें पत्र लिखा था। शायद मिला हो। इस बीच तुमने कार्ड भेजा हो तो हमें मिला नहीं। मुंशी भी कह रहे थे, महीने भर से तुम्हारा पत्र नहीं मिला। आज विश्वनाथ त्रिपाठी ने बताया, वह तुमसे मिले थे। यह जान कर प्रसन्नत हुई, तुम मजे में हो। मुंशी के यहां सब लोग कुशल से हैं। 'सचेतक' के पुराने मुद्रक दिवंगत हुए। नयी व्यवस्था हुई नहीं। इसलिए मुंशी थोड़ी उलझन में हैं। तुम्हारा नया पता उन्हें मालूम है हम अपनी ऋग्वेद वाली पुस्तक पूरी करने में लगे हैं। अब यहां 'भद्र' जाड़ा पड़ने लगा है। शरीर को कष्ट नहीं है। पहले से मजबूती आयी है।

शेष कुशल।

सस्नेह

राम विलास

नयी दिल्ली-११००१८

२५.१.९३

प्रिय केदार,

नये वर्ष की शुभ कामनाएं स्वीकारी। 'द सेम ट्यू'। मेरा स्वास्थ्य अब पहले से बहुत अच्छा है और काम में खूब मन लगा रहा है। कल मुंशी आये थे, मौज में हैं। जनवरी समाप्त होने को है पर जाड़ा जोरों पर है। मैंने ६/१ को तुम्हें कार्ड लिखा था, आशा है, मिला हो गा। समकालीन साहित्य पर भाषण दिया, बहुत अच्छा किया। हम तो प्राचीन काल में फँसे हैं। गर्भियों तक बाहर निकलेंगे।

सस्नेह

रामविलास

मद्रास

२.२.९३

प्रिय डाक्टर,

—तुम्हारा ६/१ का पत्र, आज नहीं कल, दि० १/२ को मिला। इसके पहले ही दि० २९/१ को तुम्हारा दि० २६/१ का पत्र मिल गया था। दोनों से हाल मालूम हुए। मुंशी को मैंने एक पत्र लिखा था। पता नहीं, क्यों न मिला। विश्वनाथ त्रिपाठी के हृदय में हम दोनों के लिए जगह तो है कि अपने आप तुम्हारे पास पहुंचे और हालचाल बता कर

अपना दायित्व निबाहा। और लोग भी आए पर वे तुम तक न गए। खैर, अपनी-अपनी रुचि है। मैंने 'सचेतक' के मुद्रक के चल बसने की खबर उसी के अंक में पढ़ी थी और मुंशी को अपनी समवेदना भेजी थी। उलझन वाजिब है। दूर होगी। भद्र जाड़ा से दिल्ली जड़ा रही है। यहां तो सुबह शाम कुछ ठंड रहती है—दिन तो नार्मल रहता है। शौरि राजन 'मित्र-संवाद' की प्रति ले गए हैं। बड़े उत्सुक थे पढ़ने को। रामायण मेला में चित्रकूट में उन्हें २ दिन को रहना भी है। लौटने को कह गए हैं।

—जानकर खुश हुए कि तुम शरीर के कष्ट से मुक्त हो, और सुधार हो, यही कामना है। मैं तो उसी तरह हूँ। कमजोर तो हो ही रहा हूँ। चिंता न करना। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

५६, वेंकटनायण रोड  
हिल क्रिस्ट, टी नगर  
मद्रास १७  
२०.२.९३

प्रिय डाक्टर,

मैं यहां से १७/३ को ट्रेन से झांसी होता हुआ दिनांक १९/३ को दोपहर को बांदा पहुंचूंगा। एक आदमी यहां से मुझे वहां भेजने भी जा रहा है। आरक्षण हो गया है।

एक पत्र मैंने लिखा था मिल तो गया ही होगा।

इस पत्र पाने की सूचना दे सको तो देना।

सबको यथायोग्य।

ठीक हूँ। सपरिवार ठीक से होओगे। लिख-पढ़ रहे होंगे।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

न० दि०-११००१८  
२२.२.९३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/२ का कार्ड यथा समय मिल गया था। विश्वनाथ त्रिपाठी से भेंट नहीं हुई, फोन पर उन्होंने तुम्हारा समाचार सुनाया था। अजय तिवारी से भी पहले फोन पर ही बात चीत हुई थी, घर वह बाद में आये थे। ज्यादातर जो लोग तुम्हारी उपेक्षा करते

320 / मित्र संवाद

हैं, वे मेरे विरोधी भी हैं। जो मेरा समर्थन करते हैं, वे तुम्हारा भी करते हैं। मुंशी कल आये थे। मजे में हैं। परसों चेक अप आदि के लिए अस्पताल गये थे। सब कुछ ठीक चल रहा है। अब छह महीने बाद बुलाया है। आजकल सारा दिन क्रिकेट मैच देखने में निकल जाता है। कई हफ्तों से यह सिल सिला चल रहा है। बाकी समय पुस्तक के अगले अध्याय के बारे में सोचा करता हूँ। ऋग्वेद के कवि देवों से सीधे अपने लिए बातें करते हैं। जजमानों से मुख्तारनामा लेकर उनकी ओर से देवों की कचहरी में हारिज नहीं होते। ज्यादातर यज्ञ कवियों के घरों में होते थे। इति सस्नेह

रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८

२६.२.९३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २०/२ का कार्ड मिला। अच्छा ही है, अपने पुराने अड्डे पर आ रहे हो। वसंत उभार पर हो गा, कविता भी उभरेगी। मैंने तुम्हें २२/२ को कार्ड लिखा था, अब तक वह मिल गया हो गा। अगला कार्ड अब बाँदा के पते पर लिखेंगे। तुम किसी को साथ लेकर आओगे, यह बहुत अच्छा है। इस आयु में अकेले लंबी यात्रा करना ठीक नहीं। आज कल यहां हल्की बूदाबांदा हो रही है। ठंड फिर लौट आयी है। मच्छरों के हमले अभी शुरू नहीं हुए। तुमने 'गणानां त्वा गणपति हवामहे' मंत्र सुना होगा। यह वास्तव में (ब्रह्मणस्पति) = गण के सर्वोच्च कवि की स्तुति है। गण समाज में कवि गण का नेता भी होता था, इसीलिए उसे गणपति कहा गया है। ऋग्वेद में कवि सर्वोपरि है!

सस्नेह

रामविलास

२९.४.९३

प्रिय केदार

पहली अप्रैल से कुछ पहले तुम्हें कार्ड लिखा था। तुम्हारे पते पर अशोक त्रिपाठी को भी लिखा था। मुंशी के नाम तुम्हारे कार्ड से जाना, पहली अप्रैल का आयोजन अच्छा रहा। इधर डाक की बहुत गड़बड़ी थी। संभव है, तुमने पत्र लिखा हो और वह गुम हो गया हो।

बांदा में जीवन-क्रम पहले जैसा बन गया होगा।

मेरा हाल ठीक है। अपना हाल देना।

सस्नेह

रामविलास

प्रिय डाक्टर,

—तुम्हारा २७/४ का पोस्टकार्ड मिला। इससे पहले तुम्हारा कोई लंबा पत्र मुझे नहीं मिला। डाक की गड़बड़ी के कारण ही ऐसा हुआ होगा। वैसे प्रिय मुंशी के पत्रों से तुम्हारे हालचाल की जानकारी होती रहती है। डा० अशोक त्रिपाठी इस समय इलाहाबाद में होंगे। ६/५ तक दिल्ली वापस पहुँचेंगे।

—मैं, घर पर ही—अपने दफ्तर वाले बड़े कमरे में—दिन-रात रहता हूँ। गरमी ४४° तक पहुँच गई है—बेहद गरम दिन-रात होते हैं। दिन में दोनों दरवाजे भीतर से बंद कर लेता हूँ। बिजली रही तो पंखा हवा देता है—पलंग पर लेटा-लेटा हवा खा लेता हूँ—न रही तो हाथ का—बांस का बरसों पुराना पंखा घुमा-घुमा कर हवा खा लेता हूँ। परन्तु दिन को पानी वाला कूलर नहीं चलाता—बस रात को ९ बजे से एक-दो बजे तक चलने देता हूँ और मसहरी लगाए सोता रहता हूँ। गरमी को इस प्रकार झेल लेता हूँ। चिंता न करना। ठीक ही हूँ। शिथिल शरीर को समहाले हूँ।

—सुबह ४ या ५ बजे उठ जाता हूँ। नित्य कर्म करता हूँ। फिर वही पुरानी आदत का पालन करता हूँ और सब जगह की धूल-कपड़े से-झाड़ देता हूँ। फिर मंजन-स्नान-शेब करता हूँ। हाथों को ठीक रखता हूँ। कष्ट नहीं महसूस करता।

—नास्ता में, ८ ए० एम० तक, एक चाय-पोहा-दो पीस सेंकी ब्रेड-मिर्चे का अचार (थोड़ा-सा), पना, वगैरह ले लेता हूँ। फिर कमरे में पसर कर सुसताता हूँ। सबको याद करता रहता हूँ। बिजली हुई तो कुछ इधर-उधर का पढ़ लेता हूँ—लिखने का मन नहीं होता। जब मन हुमसेगा तब वह भी कर लूँगा।

—आजकल बड़ी बिटिया (प्रिय श्याम) इलाहाबाद से आई हुई है। बातें होती रहती हैं, अच्छा लगता है। वह ठीक है। साठ की तो हो ही गई होगी। शरीर से ठीक है।

—मद्रास में सब कुछ ठीक ही होगा। बेटे को एक महीने की शूटिंग के लिए 'डलहौजी' जाना था। गया होगा। दोनों बड़े पोते बंगलोर अपनी मौसी के यहां गए हैं। समीर को बहू ऊटी के किसी स्कूल में भरती कराने जाने वाली थी। गई होगी या अब जाएगी। घर में वह पढ़ता नहीं था। आकाश को आर्ट्स कालेज में भरती कराने की बात थी। भरती हुआ हो या न हुआ हो, कुछ पता नहीं। और सब कुछ पूर्ववत् ही हो रहा होगा।

—'इंडिया टुडे' का 'सृजन अंक' परसों पुंडरीक दे गए। देखा। इधर-उधर पलटा। वह तो आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता का प्रतिपादक है। वहां अशोक बाजपेयी का

प्रभाव काम कर रहा है। चाहे कोई कितना ही उछल-कूद करे, साहित्य का सृजन इस सबसे अच्छा-श्रेष्ठ नहीं बन सकता। श्रेष्ठ साहित्य का सृजन चेतना की—मानवीय बोध की—जीवन दर्शन के सत्य की सृष्टि होती है। वह दैनिक जीवन की इंद्रिय बोधी रचना नहीं होता। लिखने को चाहे जो लिखे सब कूड़ा का ढेर हो जाएगा। खैर।

—तुम अपने पढ़ने-लिखने में पूर्ववत् जम कर लगे होओगे। यही चाहिए। जो दोगे वह मानवीय जीवन का सत्य ही होगा।

—पत्र देना। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-११००१८  
१६.५.९३

प्रिय केदार,

बहुत दिनों बाद, लंबी प्रतीक्षा के बाद, तुम्हारा ४/५ का पत्र पाकर परम आनंद प्राप्त हुआ।

गर्मी यहां भी काफी है पर वहां और ज्यादा होगी। बिजली यहां भी जाती है, कभी-कभी घंटों के लिए। तुम्हारे पास बांस का बरसों पुराना पंखा है, हमारे पास उससे कुछ कम पुराना खजूर का है। जरूरत पर उससे काम लेते हैं। कूलर दोपहर तक हम नहीं चलाते। कुछ देर दिन में तीसरे पहर, रात में दूसरे पहर चलाते हैं : मसहरी हम भी लगाते हैं। चार-पांच बजे हम भी उठ जाते हैं। थोड़ी कसरत करते हैं, फिर घूमने निकल जाते हैं। लौटने पर थोड़ा आराम, फिर लिखने-पढ़ने का काम करते हैं।

‘भारतीय नवजागरण और यूरुप’ पुस्तक आधी हो गई है, बाकी आधी साल के अंत तक पूरी हो जाएगी। यूरुप के रैनेसेंस से तुलना के लिए एक अध्याय हम तमिलनाडु के नवजागरण पर लिख रहे हैं। भारत की जातियों में, आधुनिक भाषाओं के माध्यम से, सबसे पहले सांस्कृतिक विकास तमिल जाति का हुआ। इटली की तरह साहित्य के साथ वह कलाओं में भी समृद्ध है। इटली से भिन्न यहां नृत्य कला का भी खूब विकास हुआ। नटराज की मूर्तियों के शिल्पियों ने नृत्य की गति को बांध दिया है, वह अद्भुत है।

बंगलौर में तुम्हारे दोनों बड़े पोते मौसी के यहां गए हैं। हमारा बड़ा पोता तन्मय वहां स्थायी रूप से है—टाटा-आई०बी०एम० में, अभी संतोष ने बताया, महीने भर बाद वह दिल्ली आ जाएगा। उसका छोटा भाई चिन्मय होटल मैनेजमेंट की शिक्षा पूरी करके यहां आ गया है। मुंशी सोना के पास टनकपुर गए थे, लौटने वाले होंगे।



‘जनसत्ता’ वाले शमशेर पर हमारे संस्मरण ले गए थे। आज उसमें शायद छपे होंगे।  
रंजना अरगड़े ने उनकी बड़ी सेवा की।

शेष कुशल।

सस्नेह  
रामविलास

नहीं छपे—रा० वि०

बांदा/२१०००१  
दिनांक ८.६.९३

डियर,

—बेहद गरमी है जानलेवा है। बांदा तो भट्टी हो गया है। धधक रहा है। पर हम भी तन और मन से पुष्ट और प्रवीन हैं कि ठीक-ठाक हैं और सब कुछ ही सहज ही झेल लेते हैं। चिंता न करना। अपने को ठीक रखना। दिल्ली भी बिना बिजली-पानी की हो जाती है। वह भी बांदा जैसी है। यहां तो बिजली कई दिन से गायब रही—फिर आई तो फिर चली गई। कोई लिहाज नहीं करती, किसी भकुवे का।

—इधर कुछ भी नहीं लिख सकता। मन ही नहीं होता।

—शरीर ठीक है साथे रहता हूँ। नित्य कर्म उसी तरह चलता है।

—कुबेर दत्त का पत्र केरल से आया था। तुम्हारा पत्र उन्हें मिल गया है, यह लिख भेजा है। अब तो दिल्ली वापस होने-होने को होंगे। मुंशी का पत्र मुझे मिला था। उन्होंने लिखा था कि तुम अब पहले जैसे स्वस्थ हो गए हो। पत्र देना।

सस्नेह तुम्हारा

केदार

नयी दिल्ली-११००१८  
२१.६.९३

प्रिय केदार,

कार्ड मिला। गर्मी बेशक बहुत पड़ी। बांदा, झांसी, जयपुर आदि तो उसके प्रमुख लक्ष्य थे। ललित आजकल यहां हैं, वर्ना सीकर में तापमान ५०° तक पहुंचा था। यहां दो दिन पहले थोड़ा पानी बरस गया है, इससे तापमान कुछ नीचे आ गया है। विजय ने हमारे कमरे में एयरकंडीशनर लगवा दिया है, सो रात में चादर तान कर सोते हैं, दिन में हम नहीं चलाते; दोपहर तक काम करते हैं, फिर आराम करते हैं। भारतीय दर्शन वाली

324 / मित्र संवाद

हमारी पुस्तक लिखाई की आखिरी मंजिल में हैं। आशा है अगले दो-तीन महीने में समाप्त हो जाएगी। आजकल बेटे-बेटियां, बहुएं, नाती-पोते सब यहीं हैं। खूब चहल-पहल है। स्वाति आने वाली है। मुंशी शोभा के यहां से लोग आ जाते हैं। स्वास्थ्य ठीक है।

सस्नेह  
रामविलास

बांदा  
२१.७.९३

प्रिय डाक्टर,

—विलंब से उत्तर दे रहा हूं। घर की परेशानी-बेटी किरन के बेटे टोनी की बीमारी-थी। वह गाजियाबाद में है—बीमार था। अस्पताल में था। बेटी वहां से इलाहाबाद होती हुई यहां आई थी—उसकी बीमारी का पता यहां फोन से आया तो वह दूसरे दिन ही झांसी होती हुई दिल्ली चली गई थी। अब बेटे की सेवा में गाजियाबाद में होगी।

—यहां तो मेघराज बरसते नहीं : न रोते हैं। दूसरों को—हम सबको रुलाते हैं 'गरमी के मारे'। दर्शन वाली किताब अब पूरी हो गई होगी। शरीर साथ देता रहे, यह देखते रहना। अब घर में भीड़ न होगी। नाती-पोते, बेटियां सब चले गए होंगे। प्रिय ललित भी चले गए होंगे। उन्हें मेरी शुभकामनाएं भेज देना। वह सपरिवार सकुशल होंगे। प्रिय भुवन व प्रिय विजय व शोभा व सेवा व जयपुर का परिवार ठीक होगा। सबको यथायोग्य।

—पत्र देना।

—११-१२/९ को इलाहाबाद रहना होगा सहाय सा. के कार्यक्रम में।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

नयी दिल्ली-१८

३०.७.९३

प्रिय केदार,

२१/७ का तुम्हारा कार्ड मिला। तुम्हारा नाती बीमार था, यह जानकर दुख हुआ। आशा है, गाजियाबाद में इलाज की उचित व्यवस्था हो गई। वहां बहुत पानी बरसा, इससे जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहा। यहां वर्षा थमी हुई है। और लोग चले गए हैं, तन्मय और चिन्मय यहीं हैं। विजय यूरुप गए हैं सरकारी काम से। १५-२० दिन में लौटेंगे। मैं काम थोड़ा-थोड़ा ही करता हूं। इसीलिए दर्शन वाली पुस्तक में अभी और

मित्र संवाद / 325

समय लगे गा। सन् ४२ के आंदोलन पर दूरदर्शन वाले एक छोटी-सी बातचीत रिकार्ड कर ले गए थे। शायद ९ अगस्त को प्रसारित करेंगे। और सब ठीक है।

सस्नेह  
रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८  
१३.९.९३

प्रिय केदार,

२३/८ का कार्ड मिल गया था। विजय लौट आए थे। उसके बाद हम लोग चेक अप के लिए अस्पताल गए। डाक्टर ने पांच महीने तक और दवा खाते रहने को कहा है। वैसे शरीर ठीक है। 'समय काटे नहीं कटता दोपहर के बाद', किसी को बुलाकर जो मन में आए, बोल दिया करो, वह टेप कर लिया करे। निबंधों का संकलन तैयार हो जाए गा। नाम रखना—'समय काटे नहीं काटता'। यहां एक प्रकाशक हमारी आत्मकथा छापना चाहता है। वह एक आदमी भेजे गा, प्रतिदिन बातचीत टेप करने के लिए, अभी तो हम अपनी दर्शन वाली पुस्तक पूरी करने में लगे हैं। दो-तीन महीने बाद आत्मकथा के बारे में सोचेंगे। पानी यहां भी अच्छा बरस गया।

सस्नेह  
रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८  
१०.११.९३

प्रिय केदार,

१५/१० का कार्ड मिल गया था। उत्तर देने में विलंब हुआ। पिछले महीने पार्क में घूमते हुए अचानक दाहिने पैर के घुटने में दर्द होने लगा। डाक्टर ने दवा दी, उससे आराम मिला। एक हफ्ते से फिर दर्द होने लगा। कल डाक्टर ने फिर देखा था, दवा दी है। आर्थ्राइटिस बताते हैं। २४ नवंबर को वृंदावन में ललित के पुत्र नमन का ब्याह है। हम भी जायेंगे, वहां से चार-पांच दिन के लिए अगर [आगरे] जायेंगे। भुवन ललित यहीं हैं। दो-तीन दिन बाद यथास्थान होंगे। परसों मुंशी, मुकुल, सोना आये थे। मजे में हैं। दिवाली पर सब लोग फिर इकट्ठे होंगे।

शेष कुशल।

सस्नेह  
रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८

२३.१२.९३

प्रिय केदार,

कैसे हो? इधर डाक में बहुत गड़बड़ रही। तुमने पत्र लिखा हो तो हमें मिला नहीं। जाड़े में तेजी आ गई है। घर के पीछे वाले हिस्से में हम तीन-चार घंटे धूप में गुजार देते हैं। घुटनों में कभी-कभी दर्द होता है। घर में घूम लेते हैं। कोई खास परेशानी नहीं है। थोड़ी लिखाई-पढ़ाई भी कर लेते हैं। मुंशी सर्दी से थोड़ा अनमने हैं। बाकी लोग ठीक हैं। अपना समाचार देना।

सस्नेह

रामविलास

न० दि० ११००१८

१३.१.९४

प्रिय केदार,

४/१ का कार्ड मिला। मैंने तुम्हें २३.१२.९३ को कार्ड लिखा था। लगता है, वह डाक में गुम हो गया। आगरा में चार दिन खूब गोष्ठीबाजी में बीते। ब्याह काज सब ठीक निपट गया। शरीर ठीक है। तुम्हारा घर चमाचम है—जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। साहित्य एकादेमी में परसों मेरा भाषण था। कल के 'जनसत्ता' (अखबार) में सचित्र विवरण छपा है। सचिव इंद्रनाथ चौधरी ने मेरा परिचय देते हुए तुम्हारे एक पत्र का अंश पढ़ा—सही नाम के गलत आदमी (ऐसा ही कुछ) और एक अंश मेरे पत्र से पढ़ा (उर्वशी की पंक्तियां, भौतिकता, समय, चेतना—अप्रैल ६२ का था)। विश्वनाथ त्रिपाठी, अजय तिवारी आदि बहुत से लेखक थे। सामने नामवर सिंह बैठे थे। कुछ सरदार भी थे। बहुत दिनों बाद लेखकों की सभा में बोलना पड़ा। संयुक्त सचिव रणजीत साहा पुस्तकों आदि से बहुत सहायता करते हैं। उनके आग्रह पर गया था। एक प्रकाशक (किताबघर, दिल्ली) मुझसे आत्मकथा लिखाना चाहते हैं। मुंशी परिवार ठीक है।

सस्नेह

रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८

१९.४.९४

प्रिय केदार,

परसों अशोक त्रिपाठी 'पुष्प दीप' के साथ आए। मालूम हुआ, पहली अप्रैल धूमधाम से मनाई गई। उनसे यह भी मालूम हुआ, पांच आदमियों पर फिल्में बनने वाली हैं। उनमें तुम और हम भी हैं।

अशोक के जाने के बाद हमने 'पुष्प दीप' की भूमिका से शुरुआत की। डेढ़ पन्ना पढ़ा, फिर रहा नहीं गया तो कविताएं पढ़ने लगे। कुछ पर निशान लगाए। शाम को मुंशी आए तो उन्हें वे सुनाई। मुंशी ने पुस्तक लेकर कुछ अपनी तरफ से सुनाई, भूमिका से भी एक अंश पढ़ा। मुंशी के जाने के बाद हमने बाकी भूमिका पढ़ी तो पता चला कि हमने जिन पर निशान लगाए थे, वे अधिकांश वही थीं जिनका विशेष उल्लेख तुमने पृ० ८ पर किया है। भोगिला बैल से लेकर भगौता बढ़ाई तक पुरानी यादें बहुत सजीव हो कर तुम्हारी कविताओं में उतर आई हैं। इनमें तुम्हारे कवि-संस्कारों के निर्माण का इतिहास है।

'प्यार न पाता' बहुत पंसद आई। नया रंग है, लोक कविता का रस है, तुकें भी बोलती हैं। 'आदिकाल से पत्थी मारे' में पहाड़ की पुरातनता, उसका मानवीकरण दोनों ध्वनित हैं। 'दीवार के सहारे' में लालटेन का चलना परी कथा की सी सुघर कल्पना है, व्यंग्य भी सधा हुआ है। 'न उबाल न उछाल' कवि के सीमा बोध का मार्मिक चित्रण है। 'नहीं काटे कटता समय' की ऊब भी वास्तविक है। अच्छा किया इसे भी लिख दिया। 'दौआ बेहना' अयोध्या और भगौता की तरह तुम्हारे संस्कार निर्माताओं में है।

जीवन की जड़ खोदने वाले कैसेट, धुनाधन धुनकी आने वाली ध्वनियां और धोबियापछाड़ स्वरो का संहार—में कवि की प्रतिक्रिया स्नेह में पूर्ण सहानुभूति है, यह अपने अनुभव क्षेत्र की बात भी है।

गगन में ताराओं का महाकाव्य-संक्षेप में उदात्त आदिकाल से अब तक पानी रहा हमेशा पानी, एकदम वैदिक उद्भावना है। 'न यथार्थ, दरकता है, न समाज बदलता है', सच है, पर सन् ९३ के मुकाबले सन् ९४ में कुछ हलचल दिखाई देती है।

सब जो है

उनका है

जिनका आज नहीं है—

इसी आशा में जीते हैं, लड़ते हैं, मरते-खपते हैं और जीते हैं।

इति।

सस्नेह

रामविलास

नयी दिल्ली-१८

३१.५.९४

प्रिय केदार,

नयी दिल्ली उबल रही है, बांदा खौल रहा हो गा। अखबारों में अक्सर छपता है : आज Hottest day है। Hottest के खिताब के लिए कई दिन उम्मीदवार हैं।

328 / मित्र संवाद

मिस यूनीवर्स की तरह इनमें भी ब्यूटी कन्टेस्ट करा दिया जाए। जज क्लिंटन को बनाया जाए, हर रोज दोपहर को यहां सड़क पर एक घंटा खड़े रह कर तापमान अंदाजें। लिखना बंद है। महाभारत पर लिखने के लिए सामग्री जुटा रहा हूं। कभी कोई आ गया तो उससे टेप रिकार्डर पर बात कर लेता हूं। कभी किसी मित्र के लिए अकेले भी टेप रिकार्डर पर कुछ सामग्री तैयार कर देता हूं। मुंशी ठीक हैं। तुम्हारा कार्ड मिल गया था।

सस्नेह

रामविलास

नयी दिल्ली ११००१८

६.७.९४

प्रिय केदार,

अब तक बांदा में पानी जरूर बरसा होगा। राजस्थान में तो कई जगह बाढ़ आ रही है। जयपुर जोधापुर की गर्मी के साथ बाँदा का नाम आता था। बाढ़ और बरसात के सिलसिले में भी आना चाहिए। इधर मुंशी के यहां कई बार आना-जाना हुआ। पी० पी० एच० अब भी जाते हैं। खलीफा लोगों में हैं अब। बाकी समय 'सचेतक' को देते हैं। बड़ी लगन से काम करते हैं। सत्तर पार करने पर आदमी ऐसे किसी काम में उलझा रहे तो स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहता है। छुट्टियों में भुवन पत्नी और पुत्र के साथ आये थे। कल सब लोग बनारस गये। संतोष का स्कूल खुल गया है। 'लाइफ नार्मल' हो गयी है। शेष कुशल।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

२८.३.९५

प्रिय डॉक्टर,

- श्री विष्णु चंद्र शर्मा आए थे। हाल मिला। दो दिन रह कर गोरखपुर गए।
- अपनी तबियत का हाल किसी से लिखवा देना।
- मैं शिथिल हूं पर समहाले हूं।
- सकुशल हूं।
- कोई विशेष बात नहीं है।
- यहां के परिचित १/४ को मेरा जन्मदिन मना रहे हैं। मैंने बहुत कहा कि यह न

करो पर नहीं माने। बाहर से भी लोगों को बुलाया है। पाठशाला में मनाएंगे।

—गरमी पड़ने लगी।

—आशा है कि परिवार के सभी सदस्य ठीक होंगे।

—सबको यथायोग्य।

—प्रिय मुंशी को नमस्ते।

सस्नेह तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-११००१८

२८.३.९५

प्रिय केदार,

अंतरराष्ट्रीय महत्व की तारीख पहली अप्रैल को तुम चौरासी पूरे करो गे, और पचासी में प्रवेश करो गे। इस अवसर पर समझना कि तुम्हारे आंगन में टहलते हुए हम तुम्हें गले लगा रहे हैं। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बांदा का प्र० ले० संघ तुम्हारे घर पर साहित्यिक आयोजन कर रहा है जिसमें भाषणों के अलावा कविता पाठ भी हो गा। बड़े कवियों की ख्याति उपेक्षा और विरोध की मंजिलें पार करके धीर-धीरे बढ़ती है, फिर बढ़ती ही चली जाती है। यही तुम्हारे साथ हो रहा है और हिंदी साहित्य के लिए यह शुभ है।

बहुत-बहुत बधाई और हार्दिक मंगल कामनाओं सहित।

सस्नेह  
रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८

५.४.९५

प्रिय केदार,

२८/३ को तुमने कार्ड लिखा, उसी दिन मैंने तुम्हें लिखा। एक कार्ड पुंडरीक को भी डाला था। आशा है, पहली अप्रैल वाला कार्यक्रम धूमधाम से संपन्न हुआ हो गा। जीवन की एकरसता भंग करने के लिए ऐसे आयोजन अच्छे होते हैं। और तुम्हारा मालिश वाला? आशा है अभी आता हो गा।

मुंशी और उनके घर के सब लोग मजे में हैं।

मेरा हाल ठीक है। लिखाई-पढ़ाई चालू है।

यहां गर्मी कम है। सबेरे तो काफी ठंडक रहती है। मच्छरों का जोर है।

सस्नेह  
रामविलास

नयी दिल्ली-११००१८

५.५.९५

प्रिय केदार,

तुम्हारा ९/४ का पत्र मिल गया था। एक दिन मुंशी आए, हम दोनों ने उसे फिर पढ़ा यानी मुंशी ने हमारी सहायता से तुम्हारी ब्राह्मी लिपि पढ़ ली।

तुम गांव हो आए। बहुत अच्छा हुआ। दो साल हुए हम भी अपने गांव गए थे। घर बाहर खूब घूमे। हरियाली में पहले जैसी तरावट नहीं थी पर गांव में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बढ़ते देख कर अच्छा लगा।

दस पत्र लिखने के बाद मुझे पत्र लिखा, यह अच्छा किया। जिसे फुर्सत में लिखना हो, उसे मैं भी औरों को लिखने के बाद ही लिखता हूँ।

तुमने पहले पैरा में तीन छोटे वाक्य लिख कर एक लंबा पैरा लिखा है—मन साध कर एक ही दिशा में देर तक चलते हुए। फिर उसका चौथाई पैरा, तत्पश्चात् एक-एक दो लाइनों वाले पैरा, विचारों के मोती बिखेरते हुए। तुम्हारा पैराग्राफिंग, उसके साथ डॉट (.) डैश (-) का प्रयोग देख कर हम तुम्हारे मन की गति पहचानते रहे, वह कैसे स्नेह डोर के सहारे आगे बढ़ता गया।

बेटी किरन को समझाते रहते हो, यह उचित है। यहां भी दूसरी पीढ़ी में कुछ लोग अस्वस्थ हैं। उपचार की व्यवस्था की गई है। विजय ठीक हैं। सारी व्यवस्था वही करते हैं। मैं दिन में कुछ देर चिंता करता हूँ। फिर दिमाग की वह खिड़की बंद करके काम में लग जाता हूँ।

अगले साल नाविक विद्रोह को पचास साल हो जाएंगे। विजय गुप्त को लिखा है कि सन् ४६ की अधूरी क्रांति पर 'साम्य' का विशेषांक निकालें, क्रांतिकारी संघर्षों के ऐसे वर्ष हमारे इतिहास में कम ही आये हैं।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

२.११.९५

प्रिय डॉक्टर,

—इधर कोई समाचार नहीं मिले। अवश्य लिख कर भेजो। मन की चिंता दूर होगी। उत्फुल्ल हो जाऊंगा।

सबको यथायोग्य।

सस्नेह

तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल



मित्र संवाद / 331

न० दि०-११००१८

५.१२.९५

प्रिय केदार,

२/११/९५ का तुम्हारा कार्ड आज मिला। हो सकता है, तुमने २/१२ की जगह भूल से २/११ लिख दिया हो। यह भी संभव है बांदा से दिल्ली तक आने में कार्ड को महीना भर लगा हो। दो-तीन दिन हुए, बोधिसत्व नाम के एक शोध छात्र इलाहाबाद से आए थे, पूछने लगे, केदार जी की याद आती है? मैंने कहा, रोज आती है, यह भी कोई पूछने की बात है। आत्मकथा छप रही है। उसके लिए तस्वीरें छांट रहा था। दो-एक तुम्हारी भी हैं। उन्हें देखकर तुम बहुत याद आए।

मेरा शरीर ठीक काम कर रहा है। ३५ मिनट सबेरे, ३५ मिनट शाम को बाहर वाले कंपाउंड में घूम लेता हूँ। मुंशी के यहां सब लोग ठीक हैं।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

१६.१२.९५

प्रिय डाक्टर,

—पत्र मिला। मैंने २/११ को ही लिखा था।

—कल शाम राय साहब ने हृदय विदारक सूचना दी कि चौबे जी चल बसे। मैं सन्न रह गया। मैं कहूँ तो क्या कहूँ। मेरी हार्दिक समवेदना तुम सबको—उनके परिवार के लोगों को। आखिर हुआ कैसे?

सस्नेह

तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

(चौबे जी-मेरे छोटे भाई रामस्वरूप)

न० दि० ११००१८

२५.१२.९५

प्रिय केदार,

चौबे सोते में तख्त से नीचे गिर पड़े थे। सर में चोट आई। एक जगह खून जम गया। सिर का आपरेशन हुआ पर हालत सुधरी नहीं। काफी दिन वह आधी बेहोशी में रहे। मैं एक बार देख आया था। बीच-बीच में विजय, मुंशी वहां जाते रहे। फोन से समाचार

332 / मित्र संवाद

मिल जाते थे। अंत में वह सभी कष्टों से मुक्त हो गए।

हरियाणा में चार सौ छात्र और अभिभावक जल कर मर गए, यह बड़ी दुःखद घटना है। चौबे तो ७८ के थे।

सस्नेह  
रा० वि० शर्मा

बांदा  
४-३-९६

प्रिय डाक्टर,

—बहु दिन के बाद पत्र लिख रहा हूँ। आशा है कि पत्र पाकर उत्तर अवश्य दोगे।

—मैं पूर्ववत् हूँ। शिथिल हूँ पर चिंता नहीं करना। अभी चलता रहूँगा पुराने सिक्के की तरह।

—इधर तुम्हारी आत्मकथा के तीन खंड प्रकाशित हुए हैं—पर मैंने नहीं देखे। क्या प्रकाशक महोदय भेज सकेंगे?

—झांसी से २२-१२ की मानद उपाधि डी० लिट्० की ले आया। वहां के बुंदेलखण्ड वि० वि० ने कार भेज कर बुलाया—वापस भेजा।

—मैंने तुम्हें नहीं लिखा कि कोई विशेष सूचना ऐसी नहीं है कि तुम जान कर मुझे और अच्छा समझने लगोगे। शिथिल तो हूँ। घर पर ही रहता हूँ—मद्रास वगैरह नहीं जा सकता।

—क्या लिख रहे हो?

—प्रिय मुंशी की याद आती है?

—घर के सभी को यथायोग्य।

सस्नेह  
तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

न० दि० ११००१८  
२९.३.९६

प्रिय केदार,

पहली अप्रैल को पांच दिन बाकी हैं। पचासी पूरे होने पर बधाई, हार्दिक अभिनन्दन। मेरे कमरे के पास बाहर गेंदे के बड़े-बड़े फूल खिले हैं। अंगूर की सूखी

टहनियों में हरी-हरी पत्तियां फूट आयी हैं, तुम्हारे आंगन में भी फूल खिले होंगे शायद गेंदे के भी। वसन्त तुम्हें बहुत बार शुभ हो और वसन्ती हवा बुढ़ापे में भी तुम्हें मस्त बनाये रहे।

तुम्हारा  
रामविलास

बांदा  
१५.४.९६

प्रिय डाक्टर,

जन्मदिन की बधाई का पत्र मिला। पढ़ कर खुश हुआ था। जन्मदिन का कार्यक्रम ठीक ही रहा।

—डा० विश्वनाथ त्रिपाठी ने हाल बताया होगा। मैंने उन्हें हाल बताने को कह दिया था।

—मद्रास में बहू का आपरेशन आज ही कल में होना है—पेट का। न जा पाऊंगा। फोन पर बात हुई थी। फोन से ही हाल का पता चलेगा।

—गरमी पड़ने लगी।

—नया संकलन डा० अशोक त्रिपाठी ने संपादित किया, परिमल ने छापा—पुस्तक जिल्द बंधने के लिए प्रयाग में है। आते ही भेजूंगा—नाम है—बसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी।

—घर में सबको यथायोग्य।

—कैसे हो?

सस्नेह  
तुम्हारा  
केदार

नई दिल्ली-११००१८

१२.५.९६

प्रिय केदार,

१५/४ का कार्ड यथासमय मिल गया था। वहां के समाचार विश्वनाथ त्रिपाठी और अशोक त्रिपाठी से मिल गए थे। आशा है बहू के पेट का आपरेशन ठीक से हो गया होगा।

334 / मित्र संवाद

इस साल मई शुरू होते ही गरमी ने तेज़ी पकड़ी। सुना, बांदा में औसत से कम मतदान हुआ। मेरा हाल ठीक है पर अब हाथ बहुत कांपता है। शरीर अभी काम करता जाता है।

सस्नेह  
रामविलास

नई दिल्ली-११००१८  
२४.५.९६

प्रिय केदार,

प्रकाशक ने पुस्तक भेजने का वादा किया था। कई बार याद दिलाने पर भी जब उसने न भेजी, तब मैंने प्रतियां मंगवा लीं। कल तुम्हें एक प्रति भिजवाई है। आशा है, सात-आठ दिन में मिल जाएगी। शेष कुशल।

सस्नेह  
रा० वि०

२८.५.९६

डा० रा० वि०

मैंने आज ही सवेरे पत्र लिखा कि प्रतियां मिल गईं।

केदार  
२८.५.९६

बांदा (उ० प्र०)  
पिन-२१०००१  
दि० २८.५.९६

प्रिय डाक्टर,

—कल डाक से भेजी गई तुम्हारी पुस्तक—अपनी धरती अपने लोग—के तीनों खंड मुझे प्राप्त हुए। बहुत-बहुत खुश हुआ। मन लगाकर पढ़ूंगा—फिर अपने विचार लिखूंगा। ठीक हूँ। शिथिल शरीर को सम्हाले हूँ।

—बेटा दिल्ली गया था—वहां फिल्मों को देखकर, जूरी की हैसियत से, अपना मत व्यक्त करता था—अब मद्रास लौट आया होगा।

- मद्रास में उसका परिवार अब सकुशल है।
- यहा गरमी जोर पर है।
- इधर अशोक त्रिपाठी का पत्र नहीं आया।
- कुबेर दत्त के ३ काव्य-संकलन मिल चुके हैं।
- सबको यथायोग्य।

सस्नेह  
तुम्हारा  
केदार

नई दिल्ली-११००१८  
४.६.९६

प्रिय केदार,

केरल में पानी बरसा है। आशा है, महीने भर बाद यहां भी बरसे गा। २८-५ का कार्ड मिला। आराम-आराम से पुस्तक पढ़ना। पत्र लिखने के लिए जल्दी मत करना।

और सब ठीक।

सस्नेह  
रा० वि० शर्मा

नई दिल्ली-११००१८  
१०.७.९६

प्रिय केदार,

आवारा-कार्ड मिल गया था। कल कविता पुस्तक मिल गई। डिस्पैचर को धन्यवाद।

सस्नेह  
रा० वि०

नई दिल्ली-११००१८  
२.९.९६

प्रिय केदार,

‘बसन्त से प्रसन्न हुई पृथ्वी’, कविता पढ़ कर हम भी प्रसन्न हुए। देर तक चालीस साल पहले के भद्र जवान केदार का साथ रहा। रूप, रस, गंध वाली कविताओं में नारी की (आशा है, श्रीमती केदार की ही) छवि बसी हुई है। झीने चादर से उड़ जाने को

आतुर कपोत जैसे उरोज, तुम्हें सहलाने की स्मृति भी रोमचकारी है। (१८२) चिड़िया की बोली से टपकतीं रसबूंदें तुम्हें कठिनाई से प्राप्त अधरपान की स्मृति में डुबो देती हैं। (२३३) दिन अब भी गरम और गुदगुदा होता है, इसलिए कि प्रकृति की छवि में प्रिया का सौंदर्य समाया हुआ है। (२७३) यह बात तो कालिदास भी कह सकते थे लेकिन प्रिया के साथ रोज सबेरे चलते-चलते—तले हमारे जूतों के बेहाल हो गए—यह तुम्हीं लिख सकते थे। (२३५)

गांव के चक्कर लगाते हुए तुम्हारी निगाह किसानों पर बराबर रहती है। कुटिया में बैठा तकवैया चिंतित है पर अंधेरे में पौधे उग रहे हैं, उसकी चिंता आगे कभी दूर होगी। (२६) भादों के बादर धूप की चादर धोएंगे—अद्भुत कल्पना है। (४६) अंधियर उदसै लाग किरन पूरब मां जनमी—तुम्हारी विरल अवधी कविताओं में है। पढीस की बढ़िया से बढ़िया कविताओं का रस लिये हुए है। (२९) भूमि में जड़ें गड़ाए, फूल-फल-पात से लदा महा विटप तुम्हारी कविता की तरह सदाबहार है। (६४) फाल्गुन ने मोर के पंखों पर पिचकारी मारी, कमाल है, और उसके छींटे तुम्हारी अटारी तक आए। (१३१) जो सावन में अंधे होते हैं, उन्हें हरा-हरा सूझता है। जिनकी आंखें फागुन में खुलती हैं, उन्हें रात में भी सरसों दिखाई देती है। (१६६) खेत में उगते अंखुए, रंग-बिरंगे, अनूठी गंध लिये—आकाश के हीरक नक्षत्रों से झलके, बड़ी बात बहुत सहज भाव से कही गई है। (२५८) सन का खेत, केन पर सूरज का सोना, कठेठी औरतें, गायों—सी रंभाती हुई थकी मांदा,

—छातियों में दूध, नेह नैन में भरे

—करबी का भारी बोझ मूड़ पर धरे—

—कीट्स की 'ओड टु ऑटम' मात है। (३१५)

इनसे कुछ अलग हटकर कुल्हाड़ी चलाता लकड़हारा जिसकी नंगी पीठ सूरज की लपटों में जलती है (५), कीड़ों की घात में दीवार से चिपकी छिपकली (४), तीस साल से धुंआती दीवारें (७), चालीस साल से एक ही जगह खड़ी म्युनिसिपैलिटी की लालटेन जो लोगों को ठोकर खाने से नहीं बचा पाती (८)। चालीस साल पहले तुम क्या-क्या देखते रहे, वह सब तुम्हारे साथ मैं भी देख आया। वी० पी० छुड़ाने के लिए पैसे न होने पर—सिमट गया अपने में जैसे केंचुआ! (६१), कोई बात नहीं, भुना चना तो मयस्सर है, उसी से बहादुर दोस्त ने मौत का किला जीत लिया। (१४०) नज़ीर अकबरावादी पढ़ते तो दांतों तले जीभ दबा लेते।

संग्रह में बहुत-सी राजनीतिक कविताएं हैं। हमें सामाजिक क्रांति की वह कविता बहुत अच्छी लगी जिसमें युवती का प्रेमी अपने साथियों की मदद से पति की मरम्मत करके उसे मुक्त कर देता है। (४०), कविता पर, कवियों पर जो भी कविताएं हैं, बहुत अच्छी हैं। कालिदास, तुलसीदास, निराला सभी हैं, सारी परंपरा तुम्हारे साथ है।

एक निराला मिला दूसरा नहीं मिलेगा।  
ऐसा सूरजमुखी दूसरा नहीं खिलेगा। (८१)  
सच है। यह भी सच है।  
मुझे गर्व है कि मैं उन सबका कवि मित्र हूँ जो निरस्त्र हैं। (२६३)  
ऐसे कवि मित्र पर मुझे भी गर्व है।<sup>1</sup>

सस्नेह  
रा० वि०  
३.११.९६

बांदा  
१६.९.९६

प्रिय डाक्टर,

—तुमने मेरे काव्य संकलन-बसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी—की कविताएँ पढ़ीं और मुझे पत्र लिखकर उनका उल्लेख किया। पत्र पढ़ कर खुश हुआ।

—इधर आंखों में कष्ट की वजह से पढ़ने में दिक्कत होती है। इससे बहुत कम पढ़ता हूँ।

—आंखे अब ठीक हो जाएंगी।

—अपना हाल नहीं लिखा—कैसे चल रहा है शरीर? वैसे अब तो घर पर ही रहते होओगे। घूमने भी न जाते होओगे।

—दिल्ली में मौसम भी अच्छा न रहा है।

—घर पर ही पड़ा रहता हूँ। साथे हूँ तन-मन दोनों को।

—सबको यथायोग्य।

तुम्हारा केदार

नई दिल्ली-११००१८  
६.१०.९६

प्रिय केदार,

१६/९ का कार्ड मिला। जसवीर से भी तुम्हारा हाल मिला था। घर पर ही रहता हूँ। घूमघाम कर शरीर साथे रहता हूँ। उधर जुकाम से गला खराब रहा, पैरों में दर्द रहा। अब सब कुछ सामान्य होता जाता है।

सस्नेह  
रामविलास

(जसवीर—युवा कवि जसवीर त्यागी)

1. इस पत्र में कोष्ठक में दी गयी संख्याएँ कविताओं की क्रम-संख्या हैं—पृष्ठों की नहीं। (अ० त्रि०)

बांदा

१५.१०.९६

प्रिय डाक्टर,

—ठीक हूँ।

—अपने हाल लिखना।

—जन्मदिन की मुझे याद ही न थी। अच्छी तरह से मनाया होगा—त्यागी ने खूब खुशी जाहिर की होगी।

—मुश्किल से लिख रहा हूँ।

—पत्र देना

—सबको मेरी मंगल कामनाएं।

सस्नेह

तुम्हारा

केदार

न० दि० ११००१८

५.११.९६

प्रिय केदार,

१५/१० का कार्ड यथासमय मिल गया था। पहले दशहरे की छुट्टियां, फिर डाकियों की हड़ताल, उत्तर विलंब से दे रहा हूँ। जन्मदिन पर अवस्थी आ गए थे। मुंशी-शोभा के यहां से लोग आए थे, खूब चहल-पहल रही। हाथ कांपता है, पर शरीर काबू में है। कुल मिला कर ठीक हूँ।

ज्यादा लिखने की ज़रूरत नहीं, तुम्हारी दो लाइनें काफी हैं।

सप्रेम

रामविलास

परम प्रिय कवि मित्र केदारनाथ अग्रवाल, बांदावासियों के 'बाबूजी', के छियासी पूरे करने पर हार्दिक बधाई और शांतिपूर्ण सुखद बुढ़ापे के लिए मंगल कामना।

बहुत-बहुत प्यार के साथ

२९.३.९७

रामविलास शर्मा



मित्र संवाद / 339

बांदा

२९.५.९७

प्रिय डाक्टर,

आज श्री जसवीर त्यागी के पत्र से ज्ञात हुआ कि प्रिय ललित का देहांत हो गया है। दुखद समाचार है। पर यह तो हम सब मनुष्यों को भोगना पड़ेगा और हम लोग भी न रहेंगे इस दुनिया में। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इस दुखद घटना से अपना धैर्य न खोओगे और दिल्ली से वहां तक जाने की कोशिश भी न करना। शरीर से पूरे शिथिल हो—किसी तरह जी रहे हो। प्रिय विजय वगैरह पहुंचे होंगे।

—पता नहीं प्रिय ललित के परिवार में वहां कितने सदस्य हैं।

मैं भी शरीर से क्षीण हो गया हूं। कहीं नहीं जा सकता, चाहे किसी परिवार के सदस्य का निधन हो जाए।

बस, थक गया।

सस्नेह

केदार

(६६ वर्ष की आयु में मेरे बड़े पुत्र ललित का देहान्त हो गया था।)

न० दि० ११००१८

९.६.९७

प्रिय केदार,

२९/५ का कार्ड मिला।

मैं कहीं नहीं गया, यही हूं और सब लोग वहां हो आये हैं। वहां बहू दया, पौत्र नमन और उसकी पत्नी हैं। नमन के एक छोटा बच्चा भी है।

अपने शरीर का ध्यान रखना।

तुम्हारा रा० वि०

बांदा

४.९.९७

प्रिय डाक्टर

नमस्कार।

—कैसी तबियत है घर के क्या हाल हैं? सबको मेरी यथायोग्य। अब बहुत शिथिल हूं। वैसे चिंता की कोई बात नहीं है।

340 / मित्र संवाद

प्रिय विजय आदि को मेरी मंगलाशीष।  
पत्र लिखवा कर हालचाल से अवगत कराना।  
इधर पानी बहुत बरसा ४ दिन से, अब भी बादल घिरे हैं।

सस्नेह  
तुम्हारा  
केदारनाथ अग्रवाल

न० दि० ११००१८  
१२.९.९७

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/९ का कार्ड मिला, शरीर का धर्म है, बुढ़ापे में शिथिल होना। मेरा शरीर भी शिथिल है पर काम दे रहा है। मन ठीक है। पढ़ने-लिखने संगीत सुनने में समय कट जाता है। सबेरे लोग निकल जाते हैं। संतोष तीसरे पहर, विजय चीनू शाम को लौटते हैं। टी० वी० चालू हो जाता है। दो-तीन घंटे चहल-पहल रहती है। मुंशी के यहां सब लोग मजे में हैं। पानी बरसा और अप्रैल की तरह सितंबर में मच्छरों का हमला।

सस्नेह  
रामविलास

[८.४.९८]

प्रिय केदार,

युग के श्रेष्ठ कवि केदारनाथ अग्रवाल ने सत्तासी पूरे किए। कविता प्रेमी दूर-दूर से बांदा पहुंच गए। कविता से प्रेम और केदार से प्रेम-एक ही बात है।

दिल्ली में काले बादल छाए हैं। इनमें विष भरा है। लोग कहते हैं, इनसे अमृत बरसेगा। इन पर केदार की कविता बिजली की रेखाएं बनाती है। यह हिन्दी भाषा और साहित्य की ऊर्जा का प्रकाश है।

शरीर अब मन का साथ नहीं देता। मैं दिल्ली में हूँ। मन बांदा में है। आंगन में भीड़ है। केदार प्रसन्न हैं। मैं भी प्रसन्न हूँ। मनाता हूँ, यह दिन बहुत बार आए। आशा और स्नेह जगाए। बादलों पर बिजली की रेखाएं मन शक्ति का सूर्य बन जाएं।

परिपक्व वृद्धावस्था के धनी केदारनाथ अग्रवाल को मेरा अभिवादन, बांदा में एकत्र केदार प्रेमियों और कविता प्रेमियों को मेरा अभिवादन।

रामविलास शर्मा  
८.४.९८

मित्र संवाद / 341

बांदा

२३.५.९८

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों से कोई समाचार नहीं कि मिले। कुछ तो हाल लिखो। मौन न साध कर बैठे रहो। मुझे जिन्दा रहना है—यह तो सोचो। बिना तुम्हारी कृपादृष्टि के कैसे जीवित रह सकूंगा।

चाहे चार पंक्तियां लिखो—लिखो जरूर।

प्रिय विजय और संतोष जी वगैरह को नमस्कार।

मुंशी को भी स्नेह—उन्हें भी फोन पर बता देना।

सस्नेह

तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

३१.५.९८

प्रिय केदार,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा २३/५ का कार्ड पाकर मन प्रसन्न हुआ। ९ अप्रैल के समारोह में दिल्ली के लोग शामिल हुए थे। जसबीर ने विस्तार से तुम्हारे बारे में बताया। ऐसा लगा कि हम भी बांदा हो आये। यहां भयानक गर्मी है। धरती की कोख में धमाके हुए। लू में और तेजी आयी। लू लगने से ५०० से अधिक लोग जान गंवा चुके हैं। कल महावीर अग्रवाल आये थे। कबीर के बाद तुम पर अंक निकालेंगे। और सब ठीक है।

सस्नेह

रा० वि०

न० दि० ११००१८

२१.७.९८

प्रिय केदार,

तुम्हें मई के अंत में जब कार्ड लिखा था, तब भयानक गर्मी थी। अब चारों तरफ से बाढ़ के समाचार आ रहे हैं। अंगूर की बेल में जब पत्ते नहीं थे, तब खूब अंगूर खाये। अब घने हरे पत्तों की बेल ढंक गयी है और अगली ऋतु के लिए रस संजो रही है।

342 / मित्र संवाद

फाटक के पास हरसिंगार की हरियाली है। शरद की चांदनी रातों में उसकी डालों से गंध की फुहारें छूटेंगी। विजय वियतनाम गये हैं। भुवन सेवानिवृत्त होने वाले हैं। मुंशी के यहां सब लोग ठीक हैं। मेरा हाल अच्छा है। आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न हो गे।

सस्नेह

रा० वि०

बांदा (३० प्र०)

२८.७.९८

प्रिय डाक्टर,

—२१-७ का पोस्टकार्ड मिला। बहुत दिनों बाद तुमने मुझे लिखा, पत्र नहीं, यह खिला कमल है जो मुझे उत्फुल्ल करता है और जीवन की जयजयकार करता है।

—सबके बारे में जानकारी मिली। सब स्वस्थ और प्रसन्न रहें, यही मेरी कामना है।

—सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

—हां, प्रिय संतोष, शोभा, स्वाती के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं हुई। सबको मेरी शुभ आशीष।

—प्रकृति ने तुम्हें मुग्ध कर लिया है, यह भी जान सका। बेहद अच्छी बात है। ऐसे पत्र तुमने पहले कभी नहीं भेजे।

—मैं कमर के ऊपर ठीक हूं। घर पर ही रहता हूं। कहीं नहीं जाता।

सस्नेह तुम्हारा

केदार

न० दि० ११००१८

२०.८.९८

प्रिय केदार,

यहां बिजली अक्सर चली जाती है। तीसरा पहर। हम कुर्सी निकाल कर बाहर बैठे। सड़क पर यूक्लिप्टस के पेड़ों पर बादल उठे, बादल क्या थे, धुएं का सागर था जो हरहराता हमारे घर की तरफ चला आता था। हवा चली, हमने स्वयं को हवा को

समर्पित कर दिया। उसने तन-मन का ताप हर लिया। हम हरे हो गए। फिर पानी बरसा और बरसता ही रहा। अंगूर की बेल की पत्तियां लहलहा उठीं। उनका रंग गाढ़ा हो गया, इतना कि कमरे में अंधेरा छा गया। माली ने आकर पत्तियां छांट दीं। आसमान में बादल छंट गए, धूप निकल आई।

तुम्हारा २८/७ का कार्ड मिल गया था।

सस्नेह  
रा० वि०

२१.८.९८

प्रिय केदार,

कल तुम्हें एक कार्ड लिखा था। वर्षा के आनंद में काम की बात रह गई। वाणी प्रकाशन के लिए 'कवियों के पत्र' नाम से एक संकलन तैयार कर रहा हूँ। उसमें मित्र-संवाद' के बाद लिखे तुम्हारे पत्र दे रहा हूँ। 'मित्र-संवाद' के बाद मैंने जो पत्र तुम्हें लिखे हैं, उन्हें (मूल या फोटो कापी) भिजवा दो तो संवाद पूरा हो जाए।

सस्नेह  
रा० वि०

५.९.९८

प्रिय केदार,

कोई बात नहीं, पत्र संकलन में तुम्हारे पत्र तो रहेंगे ही। शरीर को कष्ट देना ठीक नहीं। आत्मानं रक्षितं रक्षेत्—पुरानी बात है। विजय वियतनाम गये थे। वहां की दो बातें मुझे बहुत अच्छी लगीं। दोपहर का भोजन करने के बाद सभी इंजिनियर, राजकर्मचारी घंटे भर को सो जाते थे। घंटी बजने पर फिर सब काम में लग जाते हैं। समाजवादी व्यवस्था की यह रीति हम जवानी से निभाते आ रहे हैं। बच्चे गली-कूचों-मोहल्लों की टीमें बना कर फुटबाल खेलते हैं और उनके मैच टी० वी० पर दिखाये जाते हैं। हम अपना खेल प्रेम क्रिकेट मैच देख कर पूरा करते हैं।

सस्नेह रा० वि०

न० दि० ११००१८

२०.१०.९८

प्रिय केदार,

विष्णुचंद्र शर्मा को किन्हीं तिवारी से मालूम हुआ, तुम्हें चोट लगी है। विष्णु ने हमें बताया पुंडरीक के एक पत्र में महेशचंद्र अग्रवाल का फोन नंबर दिया हुआ था।

344 / मित्र संवाद

आज विजय ने उनसे बात की। कब कैसे गिरे, कहां चोट लगी, सब मालूम हो गया। आंख बच गयी और कहीं फ्रैक्चर नहीं हुआ यह बड़ी बात है। कल हम लोग मुंशी के यहां गये थे सब लोग ठीक हैं।

इस साल दिवाली के पहले काफी पानी बरसा। अमरीका, चीन, पूर्वी पश्चिमी, भारत-बाढ़ से भारी विनाश हुआ। चक्रवात-समुद्री लहरों ने शहरों पर धावा किया। प्रकृति पर नियंत्रण पाना मानव के लिए अब भी दुष्कर है।

शेष कुशल।

सस्नेह  
राम विलास

२२.११.९८

प्रिय केदार,

इन दिनों चुनाव प्रचार से ध्वनि प्रदूषण के साथ विचार प्रदूषण फैल रहा है। कल ध्वनि प्रदूषण बंद हो जाये गा, विचार प्रदूषण जारी रहे गा।

मैं ठीक हूं। पुंडरीक या आवारा आयें तो कहना तुम्हारा समाचार लिख भेजें।

सस्नेह  
रा० वि०

न० दि० 110018

19.7.99

प्रिय केदार,

बहुत दिनों बाद तुम्हारे हाथ का लिखा कार्ड पा कर मन प्रसन्न हुआ। इधर हमने नरेन्द्र पुंडरीक से यह व्यवस्था कर ली थी कि पंद्रह बीस दिन में तुम्हारे हाल लिख दिया करें। तुम्हारे अक्षरों की भीगमाएं जिओमेट्रिकल ड्राइंग के सुन्दर नमूने हैं। हमारा तो हाथ कांपता है इसलिए अक्षरों के डिजाइन बदलते रहते हैं। गर्मियों में भुवन, माधुरी उनके पुत्र सोनू, कुछ समय के (लिए) पुत्री सेवा, चिन्मय और पत्नी मनीषा भी यहां थे। शोभा का परिवार भी आ जाता था। खूब चहल-पहल रही। थोड़ा पानी बरसा, फिर खूब गर्मी पड़ी। आज फिर बरसा है। घर में ही घूम लेता हूं। कहीं आता-जाता नहीं। मुंशी ठीक हैं।

सस्नेह  
रा० वि०

## परिशिष्ट

साहित्य-भण्डार के इस पहले संस्करण के लिए मित्रों ने सलाह दी कि 'मित्र-संवाद' की योजना से लेकर संपादन-प्रकाशन के दौरान केदारजी और रामविलासजी से सुझाव, निर्देश और शंका-समाधान या स्पष्टीकरण के लिए जो पत्राचार हुआ है, उसे भी इसमें शामिल किया जाय, ताकि इस ऐतिहासिक काम की पूरी प्रक्रिया पाठकों के सामने प्रस्तुत हो सके।

मित्रों की इसी सलाह का सम्मान करते हुए, 'मित्र-संवाद' की योजना से लेकर 'मित्र-संवाद' के लोकार्पण तक के पत्र इसमें प्रकाशित किये जा रहे हैं।

मैंने जो पत्र केदारजी और रामविलासजी को लिखे थे—स्पष्टीकरण या शंका-समाधान के लिए—वे मुझे उपलब्ध नहीं हो सके। इसलिए केदारजी और रामविलासजी ने मेरी जिज्ञासाओं के शमन के लिए या फिर 'मित्र संवाद' की सामग्री के संकलन या 'मित्र-संवाद' के लोकार्पण समारोह के सिलसिले में जो पत्र मुझे लिखे थे, उन्हें ही यहाँ तिथिवार दिया जा रहा है। इसमें रामविलासजी के 14 पत्र और केदारजी के 08 पत्र शामिल हैं।

रामविलासजी के पत्रों से यह साफ जाहिर होता है कि वह इस पुस्तक को लेकर कितने सजग और संजीदा थे। जब भी कोई बात उन्हें सूझती थी, तुरन्त मुझे निर्देश देते थे। वह नहीं चाहते थे कि इसमें किसी तरह की गफलत हो। क्योंकि वह जानते थे कि 'मित्र-संवाद' एक अनूठा और ऐतिहासिक दस्तावेज़ है—न भूतो न भविष्यति।

14 जनवरी, 2010

—अशोक त्रिपाठी





सी-३५८, विकासपुरी  
नयी दिल्ली-११००१८  
दिनांक १४-५-९०

प्रिय अशोक,

मैं चाहता हूँ केदार जी के ८०वें जन्म दिवस तक उनका और मेरा पत्र व्यवहार छप जाये। इस सम्बन्ध में मैंने शिवकुमार सहाय जी को लिखा है। तुम भी बात कर लेना। मैं सारे पत्रों की फोटो कापी करा लूँ गा। इनके साथ जहाँ आवश्यक हुआ टिप्पणी दे दूँ गा। आरम्भ में एक भूमिका हो गी। केदारजी के कुछ पत्र शायद कंपोजीटर न पढ़ पायें। उन्हें टाइप करा सकते हो। शेष सामग्री सीधे प्रेस में दी जा सकती है। पाण्डुलिपि मिलने के बाद उसे छापने के लिए चार महीने काफी होंगे या अधिक समय चाहिए? जैसा ठीक समझो, लिखना।

सप्रेम  
रामविलास शर्मा

दिनांक ६-६-९१

प्रिय अशोक

इस लिफाफे में पत्र संग्रह की भूमिका है। उसके साथ तारीखवार कार्डों और पत्रों की सूची है। कार्डों की प्रतिलिपियां एक लिफाफे में हैं, पत्रों की दूसरे में। इन्हें टाइप करा लेना। फिर कार्डों और पत्रों को मिला कर सब को एक जगह व्यवस्थित कर देना।

कार्डों और पत्रों में जिन व्यक्तियों, रचनाओं, आदि की ओर संकेत हैं, उन पर मैंने संक्षिप्त पाद टिप्पणियां लिखी हैं। ये सब पत्रों के साथ नहीं हैं, अलग से कागजों पर एक साथ लिखी हैं। पत्र लेखक का नाम और तारीख इधर है, नीचे टिप्पणी है। जब पत्र टाइप कराओ, तब पत्र के नीचे यथास्थान टिप्पणी दे देना। तुम जहाँ आवश्यक समझो, अपनी ओर से टिप्पणी दे सकते हो टिप्पणी के बाद अ० लिख देना जिससे तुम्हारा योगदान पहचाना जा सके।

कुछ पत्र मैं बांदा ले गया था, मित्रों को सुनाने के लिए। बहुत दूढ़ने पर भी वे मिले

### 348 / मित्र संवाद

नहीं। जब मैं पत्र सुना रहा था, तब कुबेरदत्त ने सारी बातचीत रिकार्ड कर ली थी। उनसे उसे प्राप्त करके साधारण कैसेट पर उतार लेना। फिर उसे लिपिबद्ध कर लेना। पूरी बातचीत के साथ पढ़े गये पत्रों के अंश परिशिष्ट में दे देना।

जहां अपनी ओर से तारीख देना हो, कोई शब्द जोड़ना हो या गलती सुधारनी हो तो यह काम [ ] बड़े कोष्ठकों में करना चाहिए। बड़े कोष्ठक देने में प्रेस को कठिनाई हो तो छोटे कोष्ठकों ( ) से काम लेना।

संग्रह का नाम मित्र संवाद रखा है। चाहो तो उसके नीचे यह इबारत दे सकते हो : केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा का पत्र व्यवहार। हर पत्र के ऊपर बायीं तरफ लेखक का नाम दे देना। पूरा नाम लिखना जरूरी नहीं है केदार और रा० वि० से काम चलेगा। कार्ड या लिफाफे पर पत्र पाने वाले का पता लिखा रहता है। उसे देना जरूरी नहीं है। पत्र लेखक स्वयं जहां अपना पता लिखता है वह दे देना। कहीं चकल्लस, चिंतन आदि के लेटर हेड पर चिट्ठी लिखी गयी हैं। उन पत्रों, संस्थाओं आदि का नाम वैसा ही छपा देना।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

### प्रिय अशोक

जो पत्र मैं बांदा ले गया था, उनके अतिरिक्त भी कुछ और पत्र मिले हैं। सारी सामग्री भेज रहा हूं। साथ में यह पत्र सूची है और कुछ पत्रों पर पाद टिप्पणियां। भूमिका जहां समाप्त होती है वहां पुनश्च जोड़ देना। जिन्हें देखने तुम अस्पताल गये थे, उनके समाचार देना।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

१८-६-९१

### पाद टिप्पणियां

5-11-43 नाटक-शायद जनयुग में प्रकाशित मेरा कोई नाटक।

10-11-43 छमाही प्रकाशन-योजना कार्यान्वित नहीं हुई।

दिसंबर 56 बिटिया का आपरेशन—मझली बेटा सेवा के अपेन्डीसाइटिस का आपरेशन।

24-3-57 संस्मरण—निराला के।

- 17-12-58 हर्जन—उन्नीसवीं सदी के रूसी जनवादी लेखक।  
8-9-64 पानी गिरने से इस पत्र के कुछ शब्द मिट गये।  
1-8-65 शमशेर पर लेख—‘धर्मयुग’ में प्रकाशित।  
4-1-68 धोखार—जानवरों को धोखा देने के लिए खेत में आदमी का पुतला।  
19-11-73 कार्ड में कमल का फूल बनाया था पर शायद वह पहचान में न आता था।  
30-9-56 मेरे पत्र पर उत्तर देने की तारीख केदार ने लिख दी थी।

न० दि० १८

२३-६-९१

प्रिय अशोक

‘मित्र संवाद’ की भूमिका में जहां मुंशी से केदार के अलग वेवलेन्थ पर बात करने की चर्चा है। वहां मैंने लिखा है : दोनों ने उपन्यास अधूरे लिखे और वे प्रकाशित नहीं हुए; वहां नीचे यह पाद टिप्पणी दे दो :

केदार का पतिया उपन्यास १९८५ में प्रकाशित हुआ था। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य के अनुसार उनका अधूरा उपन्यास बैल बाजी मार ले गया शीघ्र प्रकाशित होगा। मुंशी का अधूरा उपन्यास दीनू की दुनिया हमारे पारिवारिक पत्र ‘सचेतक’ में छप रहा है। पर जिस समय केदार मुंशी से उपन्यासों की चर्चा कर रहे थे, उस समय उनके उपन्यास अप्रकाशित थे।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

न० दि० १८

१७-७-९१

प्रिय अशोक

तुम्हारा १२/७ का पत्र मिल गया। पत्र यों छपने चाहिए कि पढ़ने वाले को लगे, पत्र मूल रूप में उसके सामने हैं। अंग्रेजी का जहां जैसा प्रयोग हुआ है, तिथि जहां जैसे लिखी गयी है, सब वैसे ही दो। जहां तिथि अपनी ओर से दी हो, वहां ब्रैकेट में उसे दो। वर्तनी की या तिथि संबंधी गलती हो तो उसे भी वैसे ही छापो। ब्रैकेट में शुद्ध रूप दे दो। लेटर पैड की अंग्रेजी या हिन्दी भी ज्यों की त्यों दो। पता अंग्रेजी में हो तो उसे वैसे ही दो। नाटक में संवाद होते हैं, संवाद के साथ पात्रों के नाम होते हैं, वैसे ही पत्र के ऊपर भेजने वाले का नाम देना उचित है, पर यहां दो जनों का ही संवाद है इसलिए नाम दिये बिना काम चलेगा। पत्र संग्रह के साथ तुम जो परिश्रम कर रहे हो, पत्र पढ़ते

350 / मित्र संवाद

समय तुम्हारी जो प्रतिक्रिया हुई, उस पर अपना वक्तव्य पुस्तक में दे दो। अक्टूबर की जगह नवंबर की तिथि वाले पत्र का ब्यौरा भेजो। पहला वाक्य और अंत में पड़ी तिथि। पुनश्च वाले अंश में 'इति' के बाद ये वाक्य जोड़ दो 'शिवकुमार सहाय हिन्दी प्रकाशकों में परम सौभाग्यशाली हैं कि केदारनाथ अग्रवाल की सारी पुस्तकें उन्होंने छापी हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि यह पत्र संग्रह भी वही छाप रहे हैं। मैं उनके प्रकाशन कार्य की सफलता के लिए मंगल कामना करता हूँ।' सहाय सम्बन्धी वाक्यों के पहले पुनश्च नहीं लिखना।

सप्रेम  
रा० वि० शर्मा

नयी दिल्ली  
१-८-९१

प्रिय अशोक

कल दोपहर की डाक से तुम्हारा २७/७ को डबल कार्ड मिला। आज सबरे की डाक से उत्तर भेज रहा हूँ।

१. १०-२-४३/४६ का मेरा पत्र। मेरे पत्रों में यह नहीं है। यह उन पत्रों में तो नहीं है जिनकी फोटो प्रतियां तुमने भेजी थीं? जो भी हो इसकी फोटो कापी भेजो तब कुछ कहूँ।

२. २२-८-५६ के मेरे पत्र में फ्रान्सीसी कवि का नाम RONSARD .

३. २१-५-४० के मेरे पत्र में 'समर्पण' की पंक्ति : क्रुद्ध जब ज्येष्ठ प्रभंजन, स्रस्त पत्र, संत्रस्त धरित्री धूलिभरा आकाश [स्र = स् + र]

४. मेरे पत्र-१०-९-४२ में

'अमरुद' सा criticism [सा = जैसा]

५. केदार के ५-१-४३ में अशोक = रामविलास शर्मा

६. कान्ता पिप्ती की पुत्री ही होंगी। 'सुनहरे शैवाल' पुस्तक केदार को भेजी हो गी। उन्हें ज्यादा मालूम हो गा।

७. १३-४-४५ के मेरे पत्र में पुस्तकों के नाम :

14. Congress and Communists

19. OREL (Defence of Soviet city. Illustrated)

20. REMINISCENCES of K. Marx

21. MARX : Wage, Labour and Capital

29. A New Germany in Birth

32. ARMY OF HEROES

८. 17.4 (44) का मेरा कार्ड। तुम्हारा आशय 12.10. (44) से होगा। I wanted your MSS [= manuscript) only for suggestions re [= regarding] language & [= and] metre. So glad, you are sending it. Lucknow meeting dates are now 28-29 can you come?

९. केदार के 18.10.47 के पत्र में लाला साहब = केदारनाथ अग्रवाल ठाकुर साहब = वीरेश्वर सिंह ('भारतेन्दु युग' केदार को समर्पित थी)

१०. मुंशी के नाम केदार का 26.8.47 का पत्र। अंत में हस्ताक्षर नहीं है। संभवतः अगला पृष्ठ खो गया है।

११. मेरे 6.9.38 के पत्र के अंत में मेरा हस्ताक्षर नहीं है।

१२. केदार के 1.2.57 के पत्र में Ode to a Nightingale ही है।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

१.८.९१

पुनश्च

(१) तुमने केदार के ५.१.४३ के पत्र का हवाला देकर अशोक के बारे में पूछा है। यह पत्र ५.१२.४३ का है फाइल में लगाने के लिये छेद किया। (२) का अंक कट गया। पृ० २ पर है। घोखा। पृ० ३ पर (घोटते)।

पृ० ४ पर। (उस भदेस में); (और)।

पृ० ५ पर (तुम्हारे) : (सकता) पृ० ६ पर (नागर); (आओगे)।

(२) केदार का एक पत्र १०.?.४४ का है। फोटो कापी में शायद महीने की संख्या लिख दी हो। अनुमानतः पत्र १०.११.४४ का है। १०.११ (?)४४/- ऐसे छाप सकते हो। पत्र के पृ० २ पर कटा अंश (प्रयाग) है।

(३) केदार के २६.८.४७ के पत्र के सिलसिले में तुमने पूछा है : 'चित्त प्रसाद (चित्रकार) कौन हैं?' चित्तप्रसाद चित्रकार हैं, और कौन हैं? उस समय कम्युनिस्ट पार्टी के पत्रों में इनके बनाये चित्र खूब छपते थे। और जहां कठिनाई हो, निस्संकोच लिख देना।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

प्रिय अशोक

तुम्हारा ३/८ का पत्र आज दोपहर की डाक से मिला। केदार का ५.१२.४३ का पत्र : तुम्हारा अनुमानित 'घोखते' सही हो सकता है। मुझे उस समय 'घोटते' ही सूझा था।

केदार का 10.11.44 का पत्र। कापी में 10.2.44 है तो उसे ही ठीक मानो।

अशोक नाम से दो तीन कविताएं लिखी थीं, ज्यादा नहीं। 'एक भूल शायद मुझसे आपको पत्र भेजते समय हो गयी। दरअसल 10.2.46 की जगह 10.2.43 के पत्र के बारे में मेरी जिज्ञासा थी।' शायद का अनिश्चय दरअसल से निरस्त हो गया है। दूसरे पृष्ठ पर नीचे से बारहवीं पंक्ति में 'सत्यशट' नहीं 'सत्यशूल' है।

6.10.(44) के मेरे कार्ड में दूसरी ओर : Send the Mss to me if possible before sending to press. Take suggestions from as many friends as possible. I offer myself as one, yours.

जिस कार्ड के अंत में मैंने 3.11.61 तारीख लिखी है, वह 3.10.61 का है। आगरे और बांदा की डाकमुहरों में 3 OCT. और 5 OCT. स्पष्ट हैं।

मेरे 31.8.38 के पत्र के अंत में 'मुर्गा' इस शीर्षक से केदार का लेख है। तुम इस इतवार को अंग्रेजी में लिखे सारे पत्र पढ़ जाओ। ज्यादा न होंगे। घंटे भर में देख लो गे। यदि कहीं-कहीं अस्पष्ट लगें तो उन स्थानों के बारे में पूछ लो। बहुत जगह अस्पष्टता हो तो पत्र की तारीख लिख दो, मैं पूरा पत्र नकल करके भेज दूंगा। कुछ कार्डों की नकल अग्रिम भेज रहा हूँ।

16.2.45

I Shall send you the Photograph & [= and] books Trans. next week. I am leaving for Allahabad tomorrow to see Nirala ji. I had a very disturbing letter from Narottam. Meet me there Sunday morning if possible. Do try to come. Yours.

Agra

7.3.45

Nirale ji is here for a few days. Come this Saturday if possible. I have called SUMAN also. We will go to Surdas's Runakta on Sat. Do come. Yours [हम लोग रुक्ता सूरदास का स्थान देखने गये नहीं]

मित्र संवाद / 353

28.3.45

I am busy with examination so, I shouldn't be able to leave Agra. Narottam will come here in Easter. Why not you also? Do come. If you do, bring the books for which you have not paid or send me money for them. You will also get books for translation here. Do come. Yours.

569, Wright Town Jubbulpore

5.5.45

I have over stayed here. I have to go to Allahabad & Lucknow. Then if I find time, I shall come to Banda It is likely. I may have to postpone this visit. Hope you will by excuse Leaving here on 9th.

[ आगरा ]

20.12.48

Kindly drop me a line about your writing work, since we last met.

If possible come to LKO on 27th.

Calcutta-29

२४-६-५९

Your Lordship,

It is a matter of gratification to know that you read letter from one end to the other. Be so kind as also to make it clear as to which end you start from. Your Lordship is gracious enough to note that his humble servant is a master of arts of apologies and graceful enough to forget his own Ph. D. is this line.

Mi. Lord's writ of mandamus has arrived on a 5 N.P. post card. May I hope that the order forfeiting my estate would arrive in a [10] N.P. inlander? I look at books only in the library except when I am disturbed by the chattering or whispering of unscholarly maidens around.

नयी दिल्ली-१८

१.८.११

प्रिय अशोक,

कल तुम्हें एक लिफाफा पोस्ट किया है। बाद को मुझे ध्यान आया, 3.11.61 वाले पत्र को 3.10.61 का बनाने के लिए ही तुम्हें प्रेस न भागना पड़े। इसलिए मेरा सुझाव है, जहां ऐसे परिवर्तन हों, उन्हें एक जगह नोट करते जाओ। पुस्तक के अंत में अपनी टिप्पणी दे देना और उसमें उन सब का उल्लेख कर देना, पाठक यथास्थान संशोधन कर लेंगे—आवश्यक समझेंगे तो वैसे शायद 3.11.61 तक अभी न पहुँचे होंगे। तब कार्ड के अंत में 3.11.61 के बाद ब्रैकेट में 3.10.61 दे देना।

विजय दिसंबर में बाहर जा रहे हैं। 2 अक्टूबर को लौटेंगे। उसके बाद मुझे यहां से निकलने में सुविधा होगी। मुझे तीन हफ्ते बनारस रहना है, केदार समारोह से पहले या बाद को। इस बात का ध्यान रखते हुए समारोह की तिथि निश्चित करो तो अच्छा हो गा, समारोह बांदा में हो गा या प्रयाग, इसके बारे में पक्की बात लिखो। रिजर्वेशन में समय लगतता है, इसलिए तारीख की जानकारी काफी पहले हो जानी चाहिए।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

नयी दिल्ली-१८

१३.८.११

प्रिय अशोक

दोहपर को तुम्हारा ११/८ का पत्र मिला। तुम्हारी 'जिज्ञासाएं'

1. विष्णु भगवान = चंद्रबली सिंह (मेरे 30.9.58 के पत्र में)

2. केदार के 1.6.59 के कार्ड की अंतिम पंक्तियां

that you be always prompt in letter writing [,] else all your estate will be forfeited.

(बताना, एक ही पंक्ति छूटी थी या कई छूटी थीं।)

3. मेरा पत्र 12.5.72 का Love at 60 ही है या और कुछ?' और कुछ कैसे हो सकता है जब मैं 72 में साठ का हो रहा हूँ?

4. 'आपके 2.5.90 के पत्र पर स्याही गिर गयी है' यह कार्ड मेरे पास नहीं है। फाइल में अंतिम कार्ड ५.४.९० का है, इसके बाद के और कोई कार्ड हों तो लिखना दूँगा, शायद और कहीं रख दिये हों। वैसे स्याही गिरने से मूल पत्र भी अपाट्य हो गा। जितना समझ में आये, उतना दे देना।

5. केदार का पत्र।



Banda

13.4.45

My dear Sharma,

Excuse me for being late in giving your reply. I shall write to you later on in full detail. At present I am very busy with a murder case which is to last for a fortnight.

Where is Nagar? Has he gone to Bombay for the job? I am sorry to have failed in seeing you there at Agra as I could not reach there.

What news? Where will you go in Summer Holidays ?  
Reply soon.

Your

Kedar

पुस्तक के कुछ अंश कहीं छपाना चाहते हो, छपा दो। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। पिछले पत्र में लिखना भूल गया था। 28.3.45 और 20.12.48 के मेरे कार्ड पुस्तक में देना जरूरी नहीं है।

‘दल बंधा मधुकोश गंधी’<sup>1</sup> जब सुनने को मिले तब है। इधर केदार का पत्र नहीं आया।

संभव है मेरी पुत्रवधू भी अगले महीने बाहर जायें। तब मैं १५ सितंबर तक बनारस पहुंच जाऊंगा।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

न० दि० 18.

दिनांक 30.8.91

प्रिय अशोक,

२५/८ का पत्र परसों मिला। तुम्हारे लौटने तक यह उत्तर पहुंच जायेगा।

मैंने सब अलमारियों के कागज पत्र देखे, ५.४.९० के बाद के मेरे पत्र मेरे पास नहीं

---

1. केदारजी का यह गीत पंडित जसराज ने संगीतबद्ध किया है।

356 / मित्र संवाद

हैं'। एक संभावना यह है कि विजय ने जेरौक्स प्रतियाँ दी हों, मूल पत्र उन्हीं के पास रह गये हों। पर वह तो विदेश गये हैं। १.८.६५ के पत्र की प्रतिलिपि के ऊपर है 'स्वाधीनता' का पता 33 अलीमुद्दीन स्ट्रीट कलकत्ता। सेवा का आपरेशन एक ही बार हुआ था पर उसे और कष्ट भी थे। 'अवतार' प्रबंध काव्य की एक पंक्ति नहीं लिखी। स्व० महावीर प्रसाद मालवीय, पेशे से क्लर्क, बड़े साहित्य प्रेमी, हम सब लोगों के बुजुर्ग मित्र थे। 'मोटे' के बारे में कुछ याद नहीं।

मैं १७/९ को लखनऊ जाऊँगा। दस दिन बाद वहाँ से बनारस। पत्रों के बारे में और जो कुछ पूछना हो, १५/९ तक पूछ लो।

सप्रेम  
रा० वि० शर्मा

नयी दिल्ली-१८  
१२.९.९१

प्रिय अशोक

९/९ का पत्र मिला।

१. संपादक के रूप में अपना नाम अवश्य दो यह तो उचित ही है, मुझे प्रसन्नता होगी।

२. विजय यहाँ नहीं हैं। अपना चित्र भेजना कठिन है। सुझाव: आवरण के पूरे पृष्ठ पर केदार का चित्र दो; पीछे की ओर पूरे पृष्ठ पर मेरा वह चित्र दो जो पहल में छपा था। न मिले तो लिखना, कोई और व्यवस्था करेंगे।

३. पुस्तक के भीतर या बाहर मेरे नाम के साथ 'डॉ०' मत लगाना।

४. चौबे, मुंशी, अवस्थी—मुझसे क्रमशः छोटे भाइयों के नाम हैं, बड़े भाई के दिये हुए।

५. १८, १९, २० की तारीखें ठीक हैं। तुम बनारस से मुझे ले जाना, वहीं छोड़ आना।

६. १५-१६/९ को जनकपुरी (सी-१ए/४३बी) में रहूँगा, १७-२८/९ को २९ अलकापुरी अलीगंज, लखनऊ; २९/९ से ६/१० तक : न्यू जी ३३, हैदराबाद, बी० एच० यू० वाराणसी में।

तुम इस समय काफी परेशानी में हो गे। आगे के दिन कुशल पूर्वक बीतें, मेरी मंगल कामना है।

सप्रेम  
रा० वि० शर्मा

---

1. 'मित्र-संवाद' के प्रकाशनोत्सव की प्रस्तावित तारीखें।

मित्र संवाद / 357

काशी २२१००५

७.१०.११

प्रिय अशोक

३/१० का पत्र आज मिला। शुभ कामनाओं के लिए धन्यवाद। तुम्हारी परेशानियों का कुछ अनुमान पहले से था, पत्र से जाना, वे अनुमान से बहुत ज्यादा थीं। पुस्तक के लिए स्वास्थ्य की बलि देना उचित नहीं। दिवाली तक तो मैं यहां रहूंगा ही। तुम्हारी जिज्ञासाएं : (१) व्यास; संभवतः एच० के० व्यास; जयपुर निवासी; जनयुग संपादक, जन प्रकाशन गृह (पी०पी० एच०) का कार्य भी देखते थे। (२) रणधीर सिन्हा, दिल्लीवासी लेखक, अब स्वर्गीय। मुझ से संबंधित पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई, (३) मालकिन का देहान्त १४ अगस्त को प्रातः काल यहीं काशी में सन् १९८४ में हुआ था। केदार के पत्र में 17.8 ठीक है। 74 की जगह 84 होना चाहिए।

(४) 'अन्य पुस्तकों का विमोचन तो आप करेंगे'। बहुत खूब मैं इस विमोचन प्रथा का सख्त विरोधी हूँ। तुम चाहे जिससे विमोचन कराना; 'मित्र संवाद' का विमोचन न हो गा, मैं केवल उसकी एक प्रति केदार को भेंट कर दूंगा। बस। (५) मैं किसी विषय पर न बोलूंगा, पहले लिख चुका हूँ।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

काशी २२१००३

११.१०.११

प्रिय अशोक

८/१० का पत्र मिला। हमने चंद्रबली सिंह से बात कर ली है। उन्हें तुम्हारा पत्र भी दे दिया है। तुम २५/१० की रात के बदले शाम को बनारस पहुंचो। होटल में ठहरने के बदले तुम सीधे चंद्रबली के यहां आओ। रात को वहीं रहो, वहीं खाना खाओ, सबेरे पांच बजे उन्हें लेकर मेरे यहां आ जाओ। मैं सवा पांच बजे तैयार मिलूंगा। यहां से भुवन को साथ लेकर इलाहाबाद चलेंगे। नित्य कर्मवाला प्रातः कालीन कार्यक्रम वहीं संपन्न हो गा।

वाराणसी स्टेशन के पास इंग्लीशिया लाइन त्रिमुहानी; वहां से लहुराबीर की तरफ बढ़ो; गोल चक्कर वाला चौराहा पार करते हुए ४०० गज फासले पर बड़ा होटल; आगे चौमुहानी; बायीं तरफ की सड़क मलदहिया जाती है। १५० गज पर मोड़; यहां से दायीं तरफ सड़क विवेकानंद नगर को। वहां मकान नंबर ९० के आगे नारियल का पेड़ है। यहीं श्री चंद्रबली रहते हैं। घर के आगे सड़क है, गाड़ी पहुंच जायेगी।

358 / मित्र संवाद

मलदहिया मशहूर कालोनी है, स्टेशन के पास है। वहां किसी से भी विवेकानंद नगर पूछ सकते हो। चंद्रबली को सबेरे समय से साथ ले चलने का एक ही तरीका है— रात को उन्हीं के यहां रहो।

सप्रेम  
रा० वि० शर्मा

बांदा/20-6-91/ पिन- 21000

प्रिय भाई,

पत्र मिल गया—उत्तर विलम्ब से दे रहा हूँ। पुंडरीक को कल डा० R. V. Sharma के 15 पोस्टकार्ड दे दिये थे। वे नकलें + मूल आपके पास भेज देंगे। अब कोई पत्र मेरे पास नहीं है।

अब TV<sup>1</sup> में काम मिल गया तो डटकर काम करना चाहिए। वैसे इधर की याद तो आयेगी ही। दिल्ली के अभ्यस्त नहीं हो, इससे कुछ दिनों ऊब लगेगी। मुझे विश्वास है कि इससे उबर सकोगे।

- दूरियां तो होंगी ही, सब पर विजय पा लोगे।
- डा० शर्मा ठीक ही होंगे। मैं ठीक हूँ।
- आवारा साहब<sup>2</sup> कल अपील के फैसले से जुर्म से छूट गये। अब चैन मिली। कल दोपहर अदालत के फैसले के बाद मेरे घर आकर मुझे सूचित कर गये। शाम नमकीन भी खाने को दे गये।
- मद्रास से कोई पत्र नहीं आया कि वहां क्या हाल है?
- सहाय सा० का पत्र आया था। ठीक हैं।
- यहां पंडित जी वगैरह + सभी परिचित मित्रगण सकुशल हैं।

सस्नेह तुम्हारा  
केदार

1. मैंने 19.4.1991 को दूरदर्शन महानिदेशालय, दिल्ली में सहायक नियंत्रक (कार्यक्रम) का पदभार ग्रहण किया था।
2. एहसान कुरैशी आवारा—उर्दू के शायर केदारजी के शुभचिंतक। सोवियत लैण्ड नेहरू सम्मान से सम्मानित। अब स्वर्गीय।

बांदा/ उ० प्र०/ पिन- 21001

दिनांक 27-6-91 10.00 A.M.

प्रिय भाई,

पत्र के साथ 'मित्र-संवाद' की भूमिका की प्रतिलिपि २५/६ को मिली। एक पोस्टकार्ड भी अलग से मिला। सहाय साहब का एक पत्र भी मिला। जयपुर से लौटकर वह तुमसे २२-२३/६ को मिले होंगे। पुस्तक दिल्ली से ही छपाने की बात लिखी है। मैंने अभी डॉ० शर्मा को भी भूमिका पाने की सूचना दे दी है—उसकी रुचिकर होने की बात भी संक्षेप में लिख दी है। बड़े धैर्य से साफ शब्दों में ९/१० पृष्ठ लिखे हैं। छपेगी तो महत्व की पुस्तक होगी।

मैंने 17 पत्र (Dr. शर्मा) पुण्डरीक को दे दिये थे। उन्होंने कश्यप से उनकी प्रतिलिपियां कराईं और सब सामग्री Reg. डाक से तुम्हें भेज दी हैं। मिल गई होगी। मैं ठीक हूँ चिन्ता न करो। डॉ० शर्मा को भी पत्र लिख कर अपने ठीक होने की इत्तला दे दी है।

वर्तमान साहित्य में (जून में) सत्य प्रकाश मिश्र का लेख मेरे बारे में छपा है। बढ़िया है। पढ़ना।

सस्नेह तुम्हारा

केदार

बांदा (उ० प्र०) 21001

दिनांक ८-७-९१

प्रिय भाई,

3/7 को राष्ट्रीय प्रसारण सेवा में 'अनहारी हरियाली'<sup>1</sup> की समीक्षा प्रसारित न हुई। मैंने इन्दु जैन को कार्यक्रम करते सुना। हो सकता है फिर कभी प्रसारित हो। हो सकता है मेरे सुनने से पहले प्रसारित हो गयी हो। कोई बात नहीं है।

- पुंडरीक ने पत्र की प्रतिलिपियां और पत्र तुम्हारे पास भेजे थे मिले होंगे।
- ठीक हूँ बड़ी गरमी है। मेघ महाराज ने कृपा दृष्टि नहीं की। धरती और हम लोग तड़प रहे हैं।
- आशा है कि तुम अपने काम में पूरे मनोयोग से लगे होओगे।

---

1. केदारजी की कविता पुस्तक

360 / मित्र संवाद

- सहाय साहब पहुंचे थे या नहीं। मुझे तुम्हारे पास पहुंचने की बात लिखी थी। क्या कर गये? कहां से पुस्तक छपेगी।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०) पिन- 21001

दिनांक 24-7-91

प्रिय भाई

- 16/7 का पोस्टकार्ड मिल गया था। अब उत्तर दे रहा हूँ।
- श्री इंंदरराज वैद्य का तबादला मद्रास हो गया—वह वहां पहुंच गये होंगे।
- मैंने 17/7 को Radio नहीं सुना। सो गया था। प्रसारित होगी ही चाहे जब हो।
- 'मित्र संवाद' की भूमिका का 'पुनश्च' भाग भी डा० शर्मा ने तुम्हें दे दिया। पत्रों को भी दे दिया—चलो अच्छा रहा।
- तुम्हें रोमांच हो जाता है, यह भी बड़ा सुखद समाचार है। पाठक भी ऐसे ही पत्र पढ़ कर रोमांचित हों। 'पोल खुले'—डर नहीं है।
- अभी इतनी कविताएं नहीं हुई कि नया संकलन तैयार कर सकूँ और सहाय साहब को भेज सकूँ।
- इलाहाबाद के घर में सब ठीक होगा।
- कुछ कमी हुई गरमी में।
- पानी बरसा [लेकिन] झमाझम नहीं। बादल आये-छाये-गड़गड़ाये-थोड़ा बरस कर रह गये।
- सभी लोग ठीक हैं।

सस्नेह तुम्हारा

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा 5-8-91 - 3 PM

प्रिय भाई

३०/७ का पत्र मिला, अभी 1 P.M.। मैंने अंग्रेजी का वह शब्द बार-बार पढ़ने का प्रयास (किया) पर वह क्या है, मैं नहीं समझ सका। डायरी भी 1956 की खोज

निकाली। पर वहां भी 13-11-56 के आसपास कुछ नोट नहीं है कि लखनऊ में किसलिए जाना था। वही प्रगतिशील लेखकों की कोई बैठक होगी। याद नहीं आता कि कैसी बैठक थी। जैसा लिखा है वैसा ही जाने दो। ठहरो वह PROJECT है।

- मैंने 17/7 को नहीं सुना समीक्षा।
- मैं दिल्ली नहीं आ सकूंगा। विजेन्द्र जी व सहाय जी यहीं आयें। एक पत्र उनका मेरे पास भी आया था। उत्तर दे दिया था। राजेश जोशी को देने की बात भी मैंने लिख दी थी। अब जैसा उचित हो वैसा निर्णय तुम्हारी राय के बाद लिया जाये। जब वे लोग आयेंगे तब बात फिर होगी।
- पुंडरीक से कह दूंगा कि वे मेरी कविताएं लिखकर भेज दें, अगर न भेजी हों।
- मेरा नया संकलन अभी इतनी कविताओं का नहीं है कि पुस्तक के रूप में छप सके।
- आवारा को पत्र मिल गया था—कह रहे थे। उत्तर दिया होगा। ठीक हूँ। वह शब्द अवश्य ही PROJECT होगा।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा ९-८-९१

11 बजे दिन

प्रिय भाई,

- 12 कविताएं कल डाक से लिफाफे में भेज चुका हूँ—मिल जायेंगी। हाल भी लिखे।
- आज अभी डाक से पत्र व 'पुनश्च' मिला।
- 'कान्ता' —यह कल्पना वाले बट्टीविशाल पित्ती की सगी बहन हैं। कविता लिखती थी 'कृति' नाम का मासिक पत्र दिल्ली से नरेश मेहता—श्रीकांत वर्मा के साथ निकालती थीं। वह कविता लिखती थीं। उनके काव्य-संकलन दो हैं—
  1. जो कुछ भी देखती हूँ (1960)
  2. समयतीत (1964)दिल्ली में ग्रेटर कैलाश में रहती थीं। वह बम्बई के अस्पताल में दिवंगत हुईं। मुझे उनकी कविताएं बहुत प्रिय लगती थीं। डा० शर्मा 'अशोक' नाम से लिखते थे या नहीं याद नहीं। उन्हीं से पूछो। किस और नाम से लिखते थे राजनीतिक कविताएं—वह बतायेंगे।

## 362 / मित्र संवाद

‘पुनश्च’ पढ़ लिया।

‘सुनहरे शैवाल’ यह अज्ञेय का काव्य-संकलन है। मैंने पढ़ना चाहा तो कान्ता को लिखा कि एक प्रति भेजवायें। उन्होंने अपने दाम से मुझे भेजा था —अब भी मेरे पास है।

जब रूस जा रहा था तब मुझे अपने घर में खिलाया था।

- मित्रों से हाल बोल दूंगा—आवारा से कह दूंगा।  
कविताएं भेजी हैं। शायद बाद को सुधार करूं।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

## बांदा

८-११-९१

प्रिय भाई,

- अब तुम अपने काम में लग गये होओगे। इलाहाबाद का आयोजन! खूब अच्छा रहा।
- मैं यहां सकुशल सबके साथ चम्बल से दिन के 1 बजे पहुंच गया था—रास्ते में कोई कष्ट नहीं हुआ।
- कल ‘मित्र-संवाद’ में तुम्हारी बात पढ़ी। खूब लिखा है तुमने। गद्य गमक उठा है। बधाई।
- तुमने घनघोर परिश्रम किया, तभी यह आयोजन सफल हो सका।
- रामविलास जी का पत्र आया है कि आत्मकथा लिखूं—करूंगा प्रयास।
- यहां मित्रगण प्रसन्न हैं। पुंडरीक भी खूब खुश हैं।
- सहाय साहब को भी पत्र लिख रहा हूं।
- बेटे ने फोन किया कि वह और गीत बम्बई से रेकार्ड करा लाया है। भेजेगा। बुलाता है; पर अभी तो भोपाल में न जाने कब तक जाना पड़े। शायद दिसम्बर में वहां आयोजन हो।
- एक बार फिर बधाई।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

- 
1. ‘मित्र संवाद’ के लोकार्पण का आयोजन। उसमें रामविलासजी, डॉ० नामवर सिंह तथा डॉ० चन्द्रबली सिंह भी शरीक हुए थे। आयोजन 26 अक्टूबर, 1991 को इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ था।



‘मित्र संवाद’ का पहला संस्करण अक्टूबर, 1991 में प्रकाशित हुआ था। साहित्य भण्डार, इलाहाबाद से यह नया संस्करण 18 वर्ष बाद जनवरी, 2010 में प्रकाशित हो रहा है। 1991 के संस्करण में उस समय उपलब्ध 25.4.1991 तक के पत्र प्रकाशित हैं। 2010 के इस नये संस्करण में 25.4.1991 के पहले के 28 पत्र और शामिल किये गये हैं जो उस समय उपलब्ध नहीं हो सके थे। इन 28 पत्रों में रामविलासजी के 16 पत्र हैं और केदारजी के 08 पत्र। इनके प्रकाशन से संवाद में कहीं-कहीं जो गतिरोध था उसमें काफी हद तक गतिशीलता आ गयी है। रामशरण शर्मा ‘मुंशी’ के 04 पत्र हैं। मुंशीजी के इन 04 पत्रों के प्रकाशन से, इनके साथ केदारजी का एकालाप कुछ हद तक संवाद में तब्दील हो गया है। 25.4.1991 के बाद के 97 पत्र इसमें और संकलित हैं। इनमें से रामविलासजी के 60 पत्र हैं और केदारजी के 37 पत्र।

‘मित्र संवाद’ के 2010 के संस्करण में एक नया अध्याय ‘परिशिष्ट’ जोड़ा गया है। इसमें रामविलासजी और केदारजी के उन पत्रों को संकलित किया गया है, जो ‘मित्र संवाद’ के 1991 के संस्करण के प्रकाशन के दौरान मेरी शंकाओं के समाधान या स्पष्टीकरण के लिए दोनों मित्रों ने मुझे लिखे थे। मैंने जो पत्र दोनों मित्रों को लिखे थे, प्रयास के बावजूद, वे मुझे नहीं मिल सके। इसलिए ‘परिशिष्ट’ में केवल समाधान या सुझावपरक पत्र ही हैं— शंकापरक नहीं। इन पत्रों की संख्या-22 है—14 रामविलासजी के तथा 08 केदारजी के। इस तरह नये संस्करण में कुल 147 पत्र ऐसे हैं जो 1991 के संस्करण में नहीं थे।

- अशोक त्रिपाठी